जिनगीक जीत

जिनगीक जीत

उपन्यास

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवाड़ी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

∴

आमुख

प्रायः चारि-पाँच बर्ख पहिनेक बात थिक जे जगदीश जीक सम्बन्धमे हमरा पहिले बेर जनबाक अवसर भेटल रहय। ओ हमर पुस्तक सभक प्रेमी पाठक छलाह आ ताकि ताकि कऽ हमर रचना पढ़ल करथि। ओहि दिनमे हमर कोनो नव पुस्तक छपल रहय जकरा मादे ओ सुनने रहथि मुदा उपलब्ध नहि भऽ सकल रहनि। ताहि क्रममे हुनक स्फूर्तिवान बालक उमेश हमरासँ भेँट करय पटना आएल रहथि। तखनहि पता चलल छल जे जगदीश जी लिखबो करैत छथि। उमेश अपना संग हुनकर पोथी सभक पांडुलिपि अनने छलाह। हम चकित रही जे विद्याक ई अनुरागी पुरुष कोना साहित्यक मुख्य धारा तँ के कहय जे अवान्तरो धारा सँ एकदम्मे एकात धरि निरन्तर साहित्य साधनामे लागल छथि। पता चलल जे ओ मैथिलीमे पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ गोट बीसेक कथा लिखने छथि। तहिये पहिल बेर हुनकर पांडलिपि सभकें हम उनटा-पुनटा कऽ देखने छेलियनि। तहियो हमरा ई बात स्पष्ट लागल छल जे हुनकर लेखनमे कला भने जेतबे होउक प्रामाणिकता धरि भरपूर छनि।

हम अपना सक्क भरि हुनका मनोबलकें मजगूत आ दृष्टिकें फड़िच्छ करबाक प्रयास केलियनि। मधुबनीमे रही तँ ओ हमरासँ सम्पर्कोमे रहलाह। साहित्यक बिरादरीमे तहिये हुनकर प्रवेश भेलनि। हमरा खुशी अछि जे पछिला दू सालमे ओ आइ बेसी ऊर्जस्वी, आर रचनाशील, आर बेसी निधोख भेलाह अछि। आ आइ श्रुति प्रकाशनसँ हुनकर पुस्तक सभ प्रकाशित भऽ रहलनि अछि। हमरा लेल ई बहुत

खुशीक बात थिक। एहि हेतू हम गजेन्द्र जीकेँ धन्यवाद आ बधाइ दैत छियनि।

जगदीश जीक साहित्यमे मिथिलाक ग्रामीण समाजक अद्भुत चित्र आएल अछि। मैथिलीमे एहि वस्तुक खगता सभ दिनसँ रहल अछि। हमरा लोकनि अक्सरहां चिन्तित होइत रहै छी जे गाम उजरि रहल अछि, गामक सम्बन्धमे जतबे जे किछु लेखन भऽ रहल अछि से निगेटिभ फोर्ससँ भरल अछि, अधिकाधिक हताश करऽ बला अछि। हमरा लगैत अछि जे जीवनमे देखबाक जे दृष्टिकोण जगदीश जीक छनि से आम मैथिली साहित्यकारक दृष्टिकोणसँ फराक छनि तेँ ओ एहन चित्र रचि पबैत छथि जे सामान्यसँ हटि कऽ अछि। हम तँ हुनक लेखनकेँ ग्रामीण समाजक सकारात्मक जीवन-शैलीक डक्यूमेन्टेशनक रुपमे देखैत छी।

हुनकर साहित्यमे जे लोक सभ आएल अछि, से मिथिलाक साधारण लोक सभ थिक– वर्ण आ जातिसँ छोट-छोट लोक सभ। ई लोक सभ मैथिली साहित्यमे पहिनहु आएल छथि। किछु बहुत प्रामाणिक चित्र सभ पहिनहु प्रस्तुत कएल जा चुकल अछि। मुदा, हमर ई असंदिग्ध मान्यता अछि जे जाहिठाम ई छोट लोक अपन सम्पूर्ण मानवीय गरिमाक संग प्रस्तुत भेल होथि, सएह, केबल सएह टा, एहि लोकक प्रमाणिक चित्र कएल जा सकैत अछि। जगदीश जीक कथा साहित्यकेँ देखू तँ ई बात स्पष्ट भऽ सकैत अछि। जे बाहरसँ देखने छोट प्रतित होइत अछि, से लोक सभ वस्तुतः बहुत पैघ-पैघ लोक सभ छथि। हुनका सभक उन्नत सांस्कृतिक आयामकेँ देखल जाय। मानवताक गुणसँ भरपूर ई लोक सभ दया, ममता, सहयोग सद्भावनासँ कते भरपूर लोक सभ छथि!

तखन, एहन अवश्य लागि सकैत अछि जे ई चित्र सभ आजुक मिथिलाक चित्र नहि थिक अपितु अतीतक थिक! मुदा, जाहि देशमे जेट विमान आ कटही गाड़ी एक्के संग चलैत हो, ततय कोन

अतीत आ कोन वर्त्तमान से निर्णय करब कठीन अछि। आ जाहिठाम सकारात्मक जीवन-शैली दस्तावेजीकरणक प्रश्न हो, ततय तँ ई अत्यन्त उपादेय।

जगदीश जीक लेखनक जे सामान्य विशेषता सभ छनि, से सम्पूर्णतः प्रस्तुत उपन्यास 'जिनगीक जीत' मे देखार पड़त। द्वन्द्व आ दुविधाक अन्हारक भीतर किरणमालाक खोज एहि उपन्यासक इष्ट छिऐक। एकर नायक अनेकानेक संघर्षसँ आगू बढ़ैत एकटा सुखी जीवनक पड़ावपर पहुँचैत अछि, जतय ओकरा परम सेहन्ता एहि बातक छैक जे ओकरा 'सुखी जीवन' एकटा 'सार्थक जीवन' सेहो होइक। सुखी बनाम सार्थककेँ अन्तर्संघर्षसँ ओकर जीवन आक्रान्त अछि। एहिठाम कृषि संस्कृति आ सेवा संस्कृतिक अन्तर्द्वन्द सेहो बेस फरिच्छ भऽ कऽ आएल अछि। सदासँ मिथिलाक लोक कृषि कर्म करैत, कृर्षि-संस्कृतिक ताना-बानामे जीबैत आएल अछि। एहि युगमे आबि कऽ नोकरी (सेवा-संस्कृति) प्रधान लक्ष्य भऽ गेलैक अछि तँ स्वाभाविक थिक जे एहिसँ पूर्व-व्यवस्थित जीवन क्रममे विक्षोभ उत्पन्न भेलैक अछि। जगदीश जीक एहि समस्याकेँ नायक (बचेलाल)क पत्नी (रुमा)क पृष्ठभूमिक रुपमे उठौलनि अछि जे नोकरिहारा परिवारसँ कृषक परिवारमे बिआहलि गेलि छथि। हमरा लोकनि देखैत छी जे बचेलाल एहि दू संस्कृतिक बीच समायोजन करबामे ततेक झमारल गेलाह अछि जे मानसिक रुपसँ अवसाद ग्रस्त भऽ गेल छथि। एहि अवसाद (डिप्रेशन)सँ उबारैत छथिन हुनकर माय (सुमित्रा), जे कृषि-संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करैवाली एक सबला मैथिलानी थिकीह। श्रमजीवी समाजसँ आएल एहन स्त्री अबला कदापि नहि भऽ सकैत छथि। आ एहि स्त्री, सुमित्राक द्वारा सम्पन्न कराओल जाइत अछि जिनगीक जीत, जेना कहियो सत्यवतीक द्वारा महाभारत सम्पन्न कराओल गेल छल।

एहन प्रतित भऽ सकैत अछि जे एहि रचनामे पठनीयताक अभाव छैक आ जेना कि एक औपन्यासिक कृतिसँ जिनगीक घात-प्रतिघातकेँ चिन्तित करबाक आशा कएल जाइछ तकरो अभाव छैक। एहिठाम सभ कथू एकदम सरलतासँ, आसानीसँ सम्पन्न होइत देखाओल गेल अछि, तेना वास्तविक जीवनमे प्रायः नहि होइछ। मुदा, एहि कृतिक प्रामाणिकता एकर अभावकेँ भांपि दैत छैक। असलमे साहित्यक तीनटा उद्येश्य होइत छै- रंजन, शिक्षण आ प्रेरण। से हम देखैत छी जे शिक्षण आ प्रेरणक तत्त्व एहिठाम ततेक सक्रिय छैक जे रंजनक कसौटीपर एकर मूल्यांकन कयने रचनाक संग न्याय संभव नहि छैक।

एक बेर फेर हम जगदीश जीकेँ एहि रचनाक लेल धन्यवाद दैत छियनि। ◌

-भभुआ, 9. 3. 2010 तारानन्द वियोगी

एकसत्तैर-

अंक

1.

छोट-छीन गाम कल्याणपुर। गामकेँ देखते बुझि पड़ैत जे आदिम युगक मनुखसँ लऽ कऽ आइ धरिक मनुख हँसी-खुशीसँ रहैए। मनुखेटा नहि मालो-जाल तहिना। एक फुच्ची दूधवाली गाएसँ लऽ कऽ बीस लीटर दूधवाली गाए धरि। बकरियोक सएह नश्ल। एहनो बकरी अछि जेकरा तीन-तीन-चरि-चरिटा बच्चा भेने एक-दूटा दूधक दुआरे मरिये जाइत। आ एहनो अछि जेकरा चारि लीटर दूध होइए। गाछियो-बिरछी तहिना। एहनो गाछी अछि जइमे एकछाहा शीशोए, तँ दोसर बगुरेक। आमो गाछीक वएह हाल। कोनो एकछाहा सरहीक अछि तँ कोनो एकछाहा कलमीक। तेतबे नहि, ओहन-ओहन गाछ अखनो अछि जे दू-दू कट्ठा खेत छेकने अछि तँ ओहनो गाछी अछि जइमे पनरह-पनरहटा आमक गाछ कट्ठे भरिमे फइलसँ रहि मनसम्फे फड़बो करैए।

औझुका जकाँ कल्याणपुर चालीस बरख पहिने नइ छल। ने एकोगो चापाकल छेलै आ ने बोरिंग। त्रेता युगमे जेहने हरसँ राजा जनक जोतने छला तेहने हरसँ अखनो कल्याणपुरक खेत जोतल जाइए। ने अखुनका जकाँ उपजा-बाड़ी होइ छल आ ने बर-बिमारीक उचित उपचार। सवारीक रूपमे सभकेँ दू-दूटा पएर वा गोटि-पँगरा बरद जोतल काठक पहियाक गाड़ी।

अंग्रेजी शासन मेटा गेल मुदा गमैया जिनगीमे मिसियो भरि सुधार नहि भेल। जहिना जत्तामे दूटा चक्की होइत- तरौटा आ उपरौटा, तरौटा कीलमे गाड़ल रहैत, तहिना शहरी आ देहाती जिनगीक अछि। शहरी जिनगी तँ आगू-मुहेँ घुसकल मुदा देहाती जिनगी तरौटा चक्की जकाँ ओहिना गड़ाएल अछि। बान्ह-सड़क, घर-दुआर सभ ओहिना

अछि जहिना चालीस बरख पहिने छल। तँए, कि कल्याणपुरक लोक अंग्रेजी शासन तोड़ैमे भाग नइ लेलक? जरूर लेलक, दिल खोलि साहससँ लेलक। सगरे गामकेँ गोरा-पल्टन आगि लगा-लगा तीनबेर जरौलक। केते गोरे बन्दूकक कुन्दासँ तँ केते गोरे मोटका चमड़ाक जूत्तासँ थोकचल गेला। जहल जाइबलाक धरोहि लगि गेल रहए। केते गोरे डरे जे गाम छोड़ि पड़ाएल ओ अखनो धरि घुमि कऽ नइ आबि सकल। केते गोरेक परिवार बिलटलै तेकर कोनो ठेकान अखनो धरि नइ अछि।

कल्याणपुरक एक परिवार अछेलालक। अगहन पूर्णिमाक तेसर दिन, बारह बजे रातिमे घूर धधका दुनू परानी अछेलाल आगि तपैत रहए। पहिलुके साँझमे मखनीकेँ पेटमे दरद उपकल। प्रसवक अन्तिम मास रहने मखनी बुझलक जे प्रसवक पीड़ा छी। अछेलालोकेँ सएह बुझि पड़लै। ओसरेपर चटकुन्नी बिछा मखनी पड़ि रहल। चटकुन्नीक बगलेमे अछेलालो बैस गेल। दरद असान होइते मखनी बाजल-

"दरद असान भेल जाइए।"

मुँहपर हाथ नेने अछेलाल मने-मन सोचैत जे असगरूआ छी केना पल्हैनक ऐठाम जाएब? केना अगिआसी जोड़ब? जाड़क समए छिऐ। परसौती-ले जाड़ ओहने दुश्मन होइए जेहने बकरी-ले फौती। दरद छुटिते मखनी फुर-फुरा कऽ उठि भानसक जोगारमे जुटि गेल। पानि भरैक घैल लऽ जखने घैलची दिस बढ़ए लगल आकि पति बाँहि पकैड़ रोकैत कहलकै-

"अहाँ ऊपर-निच्चाँ नै करू। हम पानि भरि अनै छी। अहाँ घरसँ बासन-कुसन निकालू। हम ओकरो धोइ कऽ आनि देब।"

मखनी चुल्हि पजारए लगल आ अछेलाल लुड़ु-खुड़ु करए लगल। बरतन-बासन धोइ अछेलालो चुल्हिये-पाछूमे बैस आगियो तापए लगल आ मुस्कियाइत गपो-सप्प शुरू केलक-

"ऐ बेर भगवान बेटा देता।"

बेटाक नाओं सुनि सुखक समुद्रमे मखनी हेलए लगली। मने-मन सुखक अनुभव करैत मनमे उठलै- बच्चाकेँ दूध पिआएब...। तेल-उबटनसँ जाँतब...। आँखिमे काजर लगा किसुन भगवान बना चुम्मा लेब...। कोरामे लऽ अनको अँगने-अँगना घुमैले जाएब...। स्कूलमे नाओं लिखा पढ़बैक विचार एलै आकि जहिना गमकौआ चाउरक भात आ नेबो रस देल खेरही दालिमे सानल कौर मुँहमे दइते ओहन आँकर पड़ि जाइत जइसँ जीह कुचा जाइत तहिना मखनीकेँ भेल। मनक सुख मनेमे अँटैक गेलइ। पत्नीक मलिन होइत मुँह देख अछेलाल बाजल-

"गरीबक मनोरथ आ बर्खाक बुलबुला एक्के रंग होइ छइ। जहिना पानिक बुलबुला सुन्नर अकार आ रंग लऽ जा कि बढ़ए लगैए कि फुटिये जाइए, तहिना।"

मखनीक मनमे दोसर विचार उठलै जे धन तँ बहुत रंगक होइ छै- खेत-पथार, गाए-महींस, रूपैआ-पैसा इत्यादि, मुदा ऐ सभ धनसँ पैघ बेटा-धन होइ छै जे बुढ़मे माए-बापक सवारी बनि सेवा करैए। तेतबे नहि, परिवारो-खनदानोकेँ आगू बढ़बैए। तहूमे जँ कमासुत बेटा तँ जीबतेमे माए-बापकेँ स्वर्गक सुख दइए।

भानस भेलइ। दुनू परानी खेलक। मोटगर पुआरपर चटकुन्नी बिछौल छेलै, तैपर जा मखनी सुति रहल। एमहर थारी-लोटा अखारि, चुल्हि-चिनमारक सभ काज सम्हारि अछेलाल चुल्हिये लग बैस आगि तापए लगल। तमाकुल चूना मुँहमे लेलक। चुल्हिये लग बैसल-बैसल अछेलाल ओंघाइयो लगल। ओंघी तोड़ैले उठि कऽ अँगनामे टहलए लगल। भक टुटिते फेर चुल्हि लग आबि आगि तापए लगल।

मखनी निन पड़ि गेल। मखनीक नाकक अवाज सुनि अछेलाल सोचलक जे जँ राति-बिराति दरद उपकतै तँ महाग-मोसकिलमे पड़ि जाएब। अपने तँ किछु बुझै नइ छी। दशमी डगरक सिदहा दऽ नै सकलिऐ तँए पल्हैनियो औत कि नहि औत..! चुल्हिक आगि मिझाइत

देख अछेलाल जारैन आनए डेढ़ियापर गेल। ओससँ जरनो सिमसल। लतामक गाछपर सँ टप-टप ओसक बून खसैत। अन्हारक तृतीया रहने, चान तँ भरि राति उगल रहत..। मनमे अबिते अछेलाल मेघ दिस तकलक। चान तँ उगल देखैत मुदा ओसक दुआरे जमीनपर इजोत अबिते नहि। पाँजमे जारैन नेने अँगना आएल। ओसारपर चुल्हि रहने सोचलक जे घरेमे घूर लगौनाइ बढ़ियाँ हएत, घरो गरमाएल रहत। अछेलालक पएरक दम्मससँ मखनीक निन टुटि गेलइ। धधकैत घूर देख मखनियोकेँ आगि तपैक मन भेलइ। ओछाइनपर सँ उठि ओहो घूर लग आबि बैसली। बीचमे घूर धधकैत आ दुनू भाग दुनू परानी बैसल। जहिना देहक दुखसँ मखनी तहिना मनक दुखसँ अछेलाल दुखीत। बेवसीक स्वरमे अछेलाल बाजल-

"अदहा राति तँ बिते गेल, अदहे बाँकी अछि। जहिना अदहा बितल तहिना बाँकियो बितबे करत।"

अछेलालक बात सुनि मखनी पुछलक-

"अखन धरि अहाँ जगले छी?"

"हँ, की करब। जँ सुति रहितौं आ तैबीच अहाँकेँ दरद उठैत तँ फटोफनमे पड़ि जइतौं। सौंसे गामक लोक सूतल अछि। केकरा शोरो पाड़बै। एक्के रातिक तँ बात अछि। कहुना-कहुना कऽ काटिये लेब। मनमे होइ छल जे बहिनकेँ विदागरी करा कऽ लऽ अनितौं मुदा ओहो तँ पेटबोनियेँ अछि। तहूमे चारि-पाँचटा लिधुरिया बच्चो छइ। जँ विदागरी करा कऽ आनब तँ पाँच गोरेक खरचो बढ़ि जाएत। घरमे तँ किछु अछि नहि। कमाइ छी खाइ छी।"

"कहलिऐ तँ ठीके। अपना घरमे लोक भूखलो-दुखलो रहि जाइए। मुदा जेकरा माथ चढ़ा अनबै ओकरा केना भूखल रहए देब? दिन-राति चिन्ता पैसल रहैए जे पार-घाट केना लागत। भगवानो सभटा दुख अपने दुनू परानीकेँ देने छैथ। खाएर.., एक पसेरी चाउर घैलामे रखने छी कहुना-कहुना पान-सात दिन चलबे करत तेकर बाद

बुझल जेतइ।"

'पसेरी भरि चाउर' सुनि अछेलालक मनमे आशा जगल। मुहसँ हँसी निकलए लगलै, बाजल-

"जँ हमर बनि बच्चा जनम लेत तँ केतबो दुख हेतै तैयो जीबे करत। नै जँ कोनो जन्मक कर्जा खेने हेबै तँ असुलि कऽ चलि जाएत।"

पतिक बात सुनिते मखनीकेँ पहिलुका दुनू बच्चा मन पड़ल। मने-मन सोचए लगल- जँ नीक-नहाँति सेवा होइतै तँ ओहो बच्चा नै मरितए...। मुदा मनुखे की करत? जेकरा भगवाने बेपाट भऽ गेल छथिन। पैछला बात मनसँ हटबैत मखनी बाजल-

"समाजमे ओहनो बहुत लोक होइत अछि जे बेर-बेगरतामे भगवान बनि ठाढ़ होइए।"

"समाज दू रंगक अछि। एकटा समाज ओहन होइ छै जइमे दोसराक मदैतकेँ धरम बुझल जाइ छै आ दोसर ओहन होइ छै जइमे सभ सबहक अधले करैए। अपने गाममे देखै छिऐ। अपन टोल तीस-पैंतीस घरक अछि। चारि-पाँच रंगक जातियो अछि। एक जातिकेँ दोसरसँ भैंसा भैंसीक कनारि अछि। अपन तीन घरक दियादी अछि। तीनू घरमे सुकनाकेँ दू-सेर-दू-टाका छइ। ओकरा देखै छिऐ जे हदिघड़ी झगड़े-झंझटक पाछू रहैए तँए टोलमे सभसँ बाड़लो अछि। ओकरा चलैत हमरोसँ सभ मुँह फुलौने रहैए। ने केकरोसँ टोका-चाली अछि ने खेनाइ-पीनाइ आ ने लेन-देन। ई तँ भगवान रच्छ रखने छैथ जे सभ दिन बोइन करै छी मौजसँ खाइ छी। नइ तँ एक्को दिन ऐ गाममे बास होइतए।"

अछेलालक बात सुनि मुड़ी डोलबैत मखनी बाजल-

"कहलौं तँ ठीके मुदा जे भगवान दुख दइ छथिन वएह ने पारो-घाट लगबै छथिन।"

मखनीक बात सुनि अछेलाल बाजल-

"सगरे गाममे नजैर उठा कऽ देखै छी तँ खाली बचेलालेक परिवारसँ थोड़-बहुत मेदहा अछि। सालमे दस-बीस दिन खेतियो सम्हारि दइ छिऐ आ घरो-घरहट। पैंच-उधार तँ नहियेँ करै छी। हमर ब्रह्म कहैए जे अगर बचेलालक माएकेँ कहबैन तँ ओ वेचारी जरूर सम्हारि देती। कहुना राति बीतए जे भोर होइते कहबैन। दुखक रातियो नमहर भऽ जाइ छइ। एक्के निनमे भोर भऽ जाइ छेलए, से आइ बितबे ने करैए।"

हाफी करैत मखनी बजली-

"देहो गरमा गेल आ डाँड़ो दुखाइए। ओछाइनेपर जाइ छी।"

मखनीक बात सुनि अछेलाल ठाढ़ भऽ मखनीक बाँहि पकैड़ ओछाइनपर लऽ गेल। मखनी पड़ि रहल। पड़ले-पड़ल बाजल-

"मन हल्लुक लगैए। अहूँ सुति रहू-गे।"

अछेलालक मनमे चैन तँ आएल मुदा तैयो सोचए जे ऐ देह आ समैक कोन ठेकान जे कखन की भऽ जाएत! ..गुनधुन करैत बाहर निकैल चारू-भर तकलक। झल-अन्हारक दुआरे साफ-साफ किछु देखबे ने करैत। मुड़ी उठा मेघ दिस तकलक। मेघमे छोटका तरेगन बुझिये ने पड़इ। गोटे-गोटे बड़का देख पड़ैत। ऐना जकाँ चानो बुझि पड़ैत। डण्डी-तराजूकेँ ठेकना ताकए लगल। तकैत-तकैत पछबारि भाग मन्हुआएल देखलक। डण्डी-तराजू देख अछेलालकेँ सन्तोख भेलै जे राति लगिचा गेल अछि। फेर घुमि कऽ आबि घूर लग बैसल। आलस आबए लगलै। तमाकुल चुना मुँहमे लेलक। बाहर निकैल तमाकुल थुकैर कऽ फेक फेर घुरे लग आबि बोरा पसारि घोकरी लगा बाँहियेक सिरमा बना सुति रहल। निन पड़ि गेल। निन पड़िते सपनाए लगल। सपनामे देखए लगल जे घरवाली दरदसँ कुहरैए। चहा कऽ उठि पत्नीकेँ पुछलक-

"बेसी दरद होइए?"

मुदा मखनी निन छल। किछु उत्तर नहि पाबि। घूरकेँ फूँकि

अछेलाल धधराक इजोतमे मखनी लग जा निंगहारि कऽ देखए लगल। मनमे भेलै जे कहीं बेहोश तँ ने भऽ गेल। मुदा नाकक साँस असथिर रहइ।

कौआ डकिते अछेलाल उठि कऽ बचेलाल ऐठाम विदा भेल। दुनू गोरेक घर थोड़बे हटल मुदा बीचमे डबरा रहने घुमौन रस्ता। बचेलालक माएकेँ अछेलाल भौजी कहैत। दियादी सम्बन्ध तँ दुनू परिवारमे नै मुदा समाजिक सम्बन्धे भैयारी। बचेलालक पिता रघुनन्दन छोटे गिरहस्त मुदा समाजिक हृदए रहने सभसँ समाजमे मिलल-जुलल रहैत। बचेलाल ऐठाम पहुँचते अछेलाल डेढ़ियापर ठाढ़ भऽ बचेलालक माएकेँ शोर पाड़लक। आँगन बहारैत सुमित्रा बाढ़ैन हाथमे नेनहि घरक कोनचर लगसँ देख मुस्कियाइत बजली-

"अनठिया जकाँ दुआरपर किए छी? आउ अँगने आउ।"

अछेलालक मन्हुआएल मुँह देख सुमित्रा पुछलैन-

"रातिमे किछु भेल की? मन बड़ खसल देखै छी?"

कँपैत हृदैसँ अछेलाल उत्तर देलकैन-

"नहि रातिमे तँ किछु ने भेल मुदा भारी विपैतमे पड़ल छी। तँए एलौं।"

"केहन विपैतमे पड़ल छी?"

"भनसियाकेँ सन्तान होनहार अछि। पूर मास छिऐ। घरमे तँ दोसर-तेसर अछि नहि। जनिजातिक नीक-अधला तँ अपने बुझै नइ छी। तँए अहाँकेँ कहैले एलौं जे चलि कऽ सम्हारि दियौ।"

कनी काल गुम्म भऽ सुमित्रा बजली-

"अखन तँ दरद नै ने उपकलै हेन?"

"नहि, अखन चैन अछि। साझू-पहर दरद उपकल छेलै मुदा कनीए कालक पछाइत असान भऽ गेलइ।"

"लोकेक काज लोककेँ होइ छइ। समाजमे सबहक काज सभकेँ होइ छइ। अगर हमरा गेलासँ अहाँकेँ नीक हएत तँ किए ने

जाएब।”

कहि सुमित्रा फुसफुसा कऽ पुछलखिन-

“परसौतीकेँ खाइले चाउर अछि किने?”

अछेलालक मनमे एलै जे झूठ नै कहबैन। कनी गुम्म भऽ बाजल-

“एक पसेरी चाउर घरमे अछि, भौजी।”

‘एक पसेरी चाउर’ सुनिते सुमित्राकेँ हँसी लगलैन। मुदा हँसीकेँ दाबि सोचलैन जे कम-सँ-कम एक मासक बुतात चाही। मास दिनसँ पहिने परसौतिक देहमे कोनो लज्जैत थोड़े रहै छइ। तँए एक मासक बुतातक जोगार सेहो कऽ देबइ। बेर पड़लापर गरीब लोकक मन बौआ जाइ छै तँए अछेलाल एना बाजल। पुरुख जाति थोड़े परसौतीक हाल बुझैए। जखन हमरा बजबैले आएल तँ बच्चाकेँ ऐ धरतीपर ठाढ़ करब हमर धर्म भऽ जाइए। सिरिफ बच्चा जनैम गेलासँ तँ नै हएत...।

दुनू गोरे गप-सप्प करिते छल कि बचेलाल सुति कऽ उठल। खिड़कीक एकटा पट्टा खोलि हुलकी मारलक तँ दुनू गोरेकेँ गप-सप्प करैत देखलक। केबाड़ खोलि बचेलाल दुनू गोरे लग आबि चुपचाप ठाढ़ भेल। पुतोहुक दुआरे सुमित्रा बजली-

“दरबज्जेपर चलू।”

तीनू गोरे दरबज्जापर आबि गप-सप्प करए लगल। अपन भार हटबैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

“बच्चा, अछेलालक कनियाकेँ सन्तान होनिहारि छइ। वेचारा जेहने समांगक पातर अछि तेहने चीजोक गरीब। आशा लगा कऽ अपना ऐठाम आएल हेन। गाममे तँ बहुतो लोक अछि मुदा अनका ऐठाम किए ने गेल। जेँ हमरापर बिसवास भेलै तँए ने आएल।”

मुड़ी निच्चाँ केने बचेलाल माइक सभ बात सुनि बाजल-

“जखन तोरा बजबैले एलखुन तँ हम मनाही करबौ।”

तैपर सुमित्रा बजली-

"सोझे गेलासँ तँ नइ हेतइ। कम-सँ-कम एक मासक बुतातो चाही किने?"

"माए, जखन तूँ घरक गारजने छेँ तखन हमरासँ पुछैक कोन जरूरी? जे जरूरी बुझै छीही से कर।"

अछेलालक हृदैमे आशा जगल। मने-मन सोचए लगल, अखन धरि बुझै छेलौं जे गाममे कियो मदैतगार नइ अछि मुदा से नहि। भगवान केहेन मन बना देलैन जे ऐठाम एलौं...।

मुस्कियाइत अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक-

"बड़ी काल भऽ गेल भौजी, अँगनामे की भेल हएत की नइ। आब नै अँटकब। चलू अहूँ।"

सुमित्रा-

"बौआ, अहाँ आगू बढ़ू, हम पीठेपर अबै छी।"

अछेलाल आँगन विदा भेल। सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

"बच्चा, मनुखेक काज मनुखकेँ होइ छइ। आइ जे सेवा करब ओ भगवानक घरमे जमा रहत। महिना दिन हम ओकर ताको-हेर करबै आ खरचो देबइ। भगवान हमरा बहुत देने छैथ। कोन चीजक कमी अछि।"

बचेलाल-

"माए, तोरा जे नीक सोहाओ से कर, जा कऽ देखही।"

दरबज्जासँ उठि सुमित्रा अँगनाक काज सम्हारए लगली। सभ काज सम्हारि अछेलाल ऐठाम विदा भेली...।

मखनी ओसारपर बिछान बिछा, पड़ल। पहुँचते सुमित्रा मखनीकेँ पुछलखिन-

"कनियाँ, दरदो होइए?"

कर फेड़ मखनी बाजल-

"दीदी, अखन तँ नइ होइए मुदा आगम बुझि पड़ैए।"

मखनीकेँ दूटा सन्तान भऽ चुकल छल तँए आगम बुझैत।

सुमित्रा अछेलालकेँ कहलक-

"ऐठाम हम छीहे। अहाँ पल्हैनक ऐठाम जा बजौने आउ?"

अछेलाल पल्हैनिक ऐठाम विदा भेल। मुदा पल्हैन ऐठाम जाइले डेगे ने उठैत। मनमे होइ जे दशमी डगरक सिदहा नै दऽ सकलिऐ, तँए ओ औत की नइ औत..? मुदा तैयो जी-जाँति कऽ विदा भेल। भरि रस्ता विचित्र स्थितिमे अछेलाल पड़ल रहए। एक दिस सोचैत जे जँ पल्हैन नइ औत तँ बेकार गेनाइ हएत। दोसर दिस होइ जे जाबे हम एमहर एलौं ताबे घरपर की भेल हएत की नहि।

पल्हैनक ऐठाम पहुँचते अछेलाल देखलक जे मालक थैरक गोबर उठा पथियामे लऽ पल्हैन खेत विदा अछि। जहिना न्यायालयमे अपराधीकेँ होइत तहिना अछेलालोकेँ बुझि पड़ैत। मुदा तैयो साहस करैत बाजल-

"कनी हमरा ऐठाम चलू, भनसियाकेँ दरद होइ छइ।"

"माथपर गोबरक छिट्टा नेनहि पल्हैन उत्तर देलक-

"हम नइ जेबैन। डगरक सिदहा हमर बाँकीए अछि। पेट-बान्हि केते दिन काज करबैन।"

पल्हैनक बात सुनि अछेलाल अपन भाग्यकेँ कोसए लगल। भगवान केहेन बनौने छैथ जे जेकरा-तेकरासँ दूटा बात सुनै छी। मुँह सिकुरियबैत फेर कहलक-

"कनियाँ, ऐ साल सिदहा नै दऽ सकलौं तँ कि नइ देब। समए-साल नीक हएत तँ ऐगला साल दोबर देब। समाजमे सबहक उपकार सभकेँ होइ छइ। चलू...।"

खिसिया कऽ डेग बढ़बैत पल्हैन बाजल- "किनौं नै जेबैन।"

एक टकसँ अछेलाल पल्हैनकेँ देखैत रहल। देहमे जेना एक्को मिसिया तागते ने बुझि पड़इ। हतास भऽ दुनू हाथ माथपर लऽ बैस रहल। आब की करब..? आशा तोड़ि घर दिस विदा भेल। आगू-मुहें

डेगे ने उठै, पएर पताइत रहइ। जेना बुझि पड़ै जे आँखिसँ लुत्ती उड़ैए। कहुना-कहुना अछेलाल घरपर आएल।

तेसर सन्तान भेने मखनीकेँ दरदो कम भेलै आ असानीएसँ बच्चो जनमल। अपना जनैत सुमित्रा सेवोमे कोनो कसैर बाँकी नै रखलखिन।

डेढ़ियापर अबिते अछेलालकेँ बुकौर लगि गेलइ। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर टघरए लगलै। अछेलालकेँ देखते मुस्कियाइत सुमित्रा कहलखिन-

"बौआ, केकरो अहाँ अधला केने छी जे अधला हएत। भगवान बेटा देलैन। गोल-मोल मुँह अछि मोटगर-मोटगर दुनू हाथ-पएर छइ।"

आशा-निराशाक बीच अछेलालक मन उगए-डुमए लगल। हँसी होइत सुख निकलए चाहै आ आँखिक नोर होइत दुख।

बेटा जनैमते सुमित्राक अँगनाक टाटपर बैसल कौआ दू बेर मधुर स्वरमे कुचरल। कौआक कूचलव सुनि बचेलालक मुहसँ अनासुरती निकलल- "अछेलाल काकाकेँ बेटा भेल।"

मुहसँ निकैलते बचेलाल आँखि उठा-उठा चारू कात देखए लगल जे कियो कहलक नहियेँ तखन मुहसँ किए निकलल? आँगनसँ निकैल बचेलाल टहलैत-टहलैत डबराक कोण लग आएल। कोणपर ठाढ़ भऽ हियासए लगल जे बच्चाक जन्म भेल आकि दरदे होइ छइ। सुमित्रा ओछाइन साफ करैत रहैथ आ अगियासी जोड़ैले अछेलाल डेढ़ियापर जारैन आनए गेल कि बचेलालपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते अछेलाल थोड़े आगू बढ़ि बचेलालकेँ कहलक- "बौआ, छौड़ा जनमल।"

लड़काक नाओं सुनिते बचेलालक एक मनमे आएल जे जा कऽ देख आबी। मुदा लगले दोसर मन कहलकै, अखन जा कऽ देखब

उचित नहि। चोट्टे घुमि आँगन आबि पत्नीकेँ कहलक- "अछेलाल काकाकेँ बेटा भेल।"

बेटाक नाओं सुनिते मने-मन असिरवाद दैत रूमा बजली-

"भगवान जिनगी देथुन।"

बच्चाक छठियार भऽ गेल। सुमित्रा अपन अँगनाक काज सम्हारि अछेलालक आँगन पहुँचली। गोसाँइ लुक-झुक करैत। पतियानी लगा बगुला पच्छिमसँ पूब-मुहेँ उड़ैत, अपनामे हँसी मजाक करैत जाइत। कौआ सभ धिया-पुता हाथक रोटी छीनैले पछुअबैत। जेरक-जेर टिकुली गोलिया-गोलिया ऊपरमे नचैत। सुरूज अराम करैक ओरिआनमे लगल...।

अछेलालक बीच आँगनमे बोरा बिछा सुमित्रा बच्चाकेँ दुनू जाँघपर सुता जँतबो करैथ आ घुनघुना कऽ गेबो करैथ-

"गरजह हे मेघ गरैज सुनाबह हे
ऊसर खेत पटाबह सारि उपजाबह हे
जनमह आरे बाबू जनमह जनैम जुड़ाबह हे
बाबा सिर छत्र धराबह शत्रु देह आँकुश हे
हम नहि जनमब ओइ कोखि अबला कोखि हे
मैलहि बसन सुताएत, छौड़ा कहि बजाएत हे
जनमह आरे बाबू जनमह जनैम जुड़ाबह हे
पीअर बसन सुताबह बाबू कहि बजाबह हे..।

झुमि-झुमि सुमित्रा गेबो करैथ आ बच्चाकेँ जँतबो करैथ। बच्चाक आँखि-सँ-आँखि मिलते सुमित्राक मनमे जेना सिनेहक बरखा बरिसए लगैन। बच्चाकेँ कोनो तरहक तिरोट ने होइ, मनमे अबिते सुमित्रा बच्चाक मुँह दिस देखए लगैथ। टाटक अढ़मे बैस अछेलाल, सुमित्राक सिनेह देख दुनियाकेँ बिसैर आनन्द लोकमे बिचरैत रहए।

◌

शब्द संख्या : 2652

2.

रवि दिन रहने बचेलाल अबेर कऽ उठल। यएह सोचि बिछानपर पड़ल रहल जे आइ स्कूलो नहि जाएब आ घरोपर कोनो काज नहियेँ अछि। मात्र एक जोड़ धोती, एक जोड़ कुरता आ एक जोड़ गंजीटा खीचैक अछि। दुपहर तक तँ काजो एतबे अछि। बेरू-पहर हाट जा घरक झूठ-फूस कीनि आनब। हाटो दूर नहि गामक सटले अछि...।

सुति उठि बचेलाल नित्य-कर्मसँ निवृत्त भऽ दलानक चौकीपर आबि बैसल। रूमा चाह दऽ गेलैन। दू घोंट चाह पिबते पिता मन पड़ि गेलखिन। पिता मन पड़िते बचेलाल अपन तुलना हुनकासँ करए लगल। मने-मन सोचैत रहए, पिता साधारण किसान छला। पढ़ल-लिखल ओतबे जे नाम-गाम टो-टा कऽ लिखि लैथ। काजो ओतबे रहैन जे कहियो काल रजिष्ट्री ऑफिस जा सनाक बनैथ। भरि दिन खेतीसँ लऽ कऽ माल-जालक सेवामे बेस्त रहै छला। मुदा एते गुण अबस्स रहैन जे गाममे केतौ पनचैती होइत वा केतौ भोज-भात होइ वा समाजिक कोनो दसनामा काज, तँ हुनका जरूर बजौल जानि। तेतबे नहि, बुढ़-बुढ़ानुस छोड़ि कियो नाओं लऽ कऽ शोर नइ पाड़ैत रहैन। अपन संगतुरिया 'भाय' कहैन आ धिया-पुता-सँ-चेतन धरि कियो 'गिरहतबाबा' तँ कियो 'गिरहतकाका' कहैन। परिवारे जकाँ समाजोकेँ बुझैत रहला। मुदा हम शिक्षक छी। अपन काजक प्रति इमानदार छी। बिनु छुट्टीए एक्को दिन ने स्कूलमे अनुपस्थित होइ छी आ ने एक्को क्षण बिलम्बसँ पहुँचै छी आ जेते काल स्कूलमे रहै छी, बच्चा सभकेँ पढ़ैबते छी। जेना आन-आन स्कूलमे देखै छी जे शिक्षक सभ करवनो अबै छैथ, करवनो जाइ छैथ आ स्कूलेमे ताशो भँजैत रहै छैथ...। ओना, हमहूँ केकरो उपकार तँ नहियेँ करै छी किएक तँ

दरमाहा लऽ काज करै छी। आन शिक्षकक अपेक्षा इमानदारीसँ जीबतो अपना पैघ कमी बुझि पड़ैए। ओ कमी अछि समाजमे रहि समाजसँ कात रहब। स्कूलक समए छोड़ि दिन-राति तँ गामेमे रहै छी मुदा ने कियो टोक-चाल करैए आ ने कियो दरबज्जापर अबैए। मनमे सदिक्षन रहैए जे कमाइ छी तँ दू-चारि गोरेकेँ चाह-पान खुआबी-पीआबी। मुदा कियो कनडेरियो आँखियेँ नै तकैए। हमहूँ तँ केकरो ऐठाम नहियेँ जाइ छी। चेतन सबहक कहब छैन जे दुआर-दरबज्जाक इज्जत छी चारि गोरेकेँ बैसब। मुदा से कहाँ होइए। गाम तँ शहर-बजार नइ छी जे एक्के मकानमे रहितौ लोक–आन-आन क्षेत्रक रहने–लोक आन-आन भाषा बजैए आ आन-आन चलि-ढालिमे अपन जिनगी बितबैए, केकरो कियो सुख-दुखमे संग नै होइत। मुदा समाज तँ से नइ छी। बाप-दादाक बनौल छी। एकठाम साइयो-हजारो बर्खसँ मिलि-जुलि कऽ रहैत एला। रंग-बिरंगक जातियो प्रेमसँ रहैए। सभ सबहक सुख-दुखमे संग रहैए। बच्चाक जन्मसँ लऽ कऽ मरण धरि संग पुरैए...।

एहेन समाजमे हमर दशा एहेन किएक अछि? ..जहिना पोखैरक पानिक हिलकोरमे खढ़-पात दहाइत-भँसियाइत किनछैर लगि जाइए तहिना तँ हमरो भऽ गेल अछि! की पानियेँक हिलकोर जकाँ समाजोमे होइ छइ? जँ पानियेँक हिलकोर जकाँ होइ छै तँ हम ओइ हिलकोरकेँ बुझै किए ने छी? हमहूँ तँ पढ़ल-लिखल छी..!

जेते समाजक सम्बन्धमे बचेलाल सोचैत तेते मन मलिन भेल जाइत। मुदा बुझि नै पबै छल। अदहा चाह पीला पछाइत जे गिलासमे बँचलै ओ सरा कऽ पानि भऽ गेल। ने चाहक सुधि आ ने अपन सुधि बचेलालकेँ। जेना बुझि पड़ै जे ओहन बोनमे वौआ गेलौं जेतए एक्कोटा रस्ते ने अछि। ..बचेलाल कखनो गंभीरो होइत आ कखनो बड़बड़ाइयो लगैत।

आँगनसँ सुमित्रा आबि बचेलालकेँ देख पुछलखिन-

“बच्चा, कथीक सोगमे पड़ल छह? किछु भेलह हेन की?”

बचेलालक बाजल-

“नहि माए, भेल तँ किछु नहि मुदा गामक किछु बात मनमे घुरियाइए। जेकर जवाब बुझिते ने छी।”

तारतम करैत सुमित्रा कहए लगलखिन-

“गाममे तँ बहुत लोक रहैए मुदा सभ थोड़े गामक सभ बात बुझै छइ। गाममे तीन तरहक रस्ता छइ। पहिल ओ जइसँ समाज चलैए, दोसरसँ परिवार चलैए आ तेसरसँ मनुख चलैए। मनुख अपन चालि परिवारक चालिमे मिला कऽ चलैए। तहिना परिवार समाजक चालिसँ मिला कऽ चलैए तँए तीनूक अलग-अलग चालि रहनौं एहेन घुलल-मिलल अछि जे सभकेँ बुझैमे नै अबैत।”

मुँह बाबि बचेलाल माइक बात सुनि बाजल-

“माए, तोरो बात हम नीक-नहाँति नहि बुझि सकलौं। मनमे यएह होइए जे किछु बुझिते ने छी। अन्हारमे जेना लोक किछु ने देखैत, तहिना भऽ रहल अछि।”

मुड़ी डोलबैत सुमित्रा बजली-

“अपने घरमे देखहक- दूटा बच्चा अछि, ओकर तँ कोनो मोजरे नहि। तीन गोरे चेतन छी। तूँ भरि दिन स्कूलेक चिन्तामे रहै छह। भोरे सुति उठि कऽ नअ बजे तक अपन सभ क्रिया-कर्मसँ निचेन भऽ खा कऽ स्कूल जाइ छह। चारि बजे छुट्टी होइ छह। डेढ़ कोस पएरे अबैत-अबैत साँझ पड़ि जाइ छह। घरपर अबैत-अबैत थाकियो जाइत हेबह। पर-पखानासँ अबैत-अबैत दोसर साँझ भऽ जाइ छह। दरबज्जापर बैस कोनो दिन ‘रमायण’ तँ कोनो दिन ‘महाभारत’ पढ़ै छह। भानस होइ छै खा कऽ सुतै छह। फेर दोसर दिन ओहिना करै छह। अहिना दिन बितैत जाइ छह। दिनेसँ मास आ मासेसँ साल बनै छइ। कोल्हुक बरद जकाँ घरसँ स्कूल आ स्कूलसँ घर अबैत-जाइत जिनगी बित जेतह। मुदा जिनगी तँ से नइ छी। जिनगी तँ ओ छी,

जेना वसन्त ऋृतु अबिते गाछ-बिरीछ नव कलश लऽ बढ़ैए तहिना मनुखोक गति अछि। जिनगीक गतिये मनुखकेँ ब्रह्माण्डक गतिसँ मिला कऽ लऽ चलै छइ। अज्ञानक चलैत मनुख ऐ गतिकेँ नहि बुझि छुटि जाइए। छुटैक कारण होइ छै, बेकतीगत, परिवारिक आ समाजिक जिनगी। जे सदिकाल आगूक गतिकेँ पाछू-मुहेँ धकलैत अछि। जइसँ मनुख समैक संग नै चलि पबैए। मुदा तइसँ की। बाधा केतबो पैघ किए ने हुअए मुदा मनुखोकेँ साहस कम नै करक चाही। सदिखन सभ अँगकेँ चौकन्ना करि कऽ चललासँ सभ बाधा टपि सकैए। पुतोहुएजनीकेँ देखहुन। भरि दिन भानस-भात आ धिये-पुतेक आइ-पाइमे लगल रहै छथुन। हमरो जे सक्क लगैए से करिते छी। घर तँ कहुना चलिऐ जाइ छह। मुदा परिवार तँ समाजक एक अँग छी माने परिवारेक समूह ने समाज छी, तँए समाजक संग चलैले परिवारकेँ समाजक रस्ता धड़ए पड़त। से नै भऽ रहल छह। जहिना रेलगाड़ीमे ढेरो पहिया आ कोठरी होइ छै जे आगू-पाछू जोड़ल रहै छइ। मुदा चलै काल सभ संगे चलैए। तहिना मनुखोक होइ छइ।”

माइक बात सुनि बचेलालक जिज्ञासु जकाँ बाजल-

“अपन परिवारक की गति अछि?”

मुस्कियाइत सुमित्रा कहए लगलखिन-

“अपन परिवार ठमकल छह। ओना बुझि पड़ैत हेतह जे आगू-मुहेँ जा रहल छी मुदा नहि। तोरा बुझि पड़ैत हेतह जे शिक्षक छी, नीक नोकरी करै छी, नीक दरमहो पबै छी। मुदा अपनो सोचहक जे जखन हम पढ़ल छी, बुधियार छी तखन हमरा बुधिक काज कए गोरेकेँ होइ छइ। जे कियो नहियेँ पढ़ल अछि ओहो तँ अपन काज, अपन परिवार चलैबते अछि। कनी नीक आकि कनी अधला सभ तँ जीबे करैए। आइ तोरा नोकरी भऽ गेलह तँए ने, जँ नोकरी नै होइतह तखन तँ तोहूँ ओहिना जीवितह जहिना बिनु पढ़ल-लिखल जीबैए। अहिना पुतोहुजनीकेँ देखहुन, जेना घरसँ कोनो मतलबे ने छैन।

..हमरो बिआह-दुरागमन भेल छल, हमहूँ कनियाँ छेलौं मुदा आइ जे घरमे देखै छिअ तेना तँ नइ छल। जखन हम नैहरसँ ऐठाम एलौं तखन भरल-पूरल घर छल। सासु-ससुर जीबते रहैथ। जखन चारि दिनक पछाइत चुल्हि छुलौं, तहियासँ सासु कहियो चुल्हि दिस नै तकलैन। ने कोठीसँ चाउर निकालि कऽ दैथ आ ने किछु कहैथ। जेहने परिवार नैहरक छल तेहने एतुक्को। जे सभ काज नैहरमे करै छेलौं सएह सभ काज अहूठीम छल। अपन घर बुझि एकटा अन्न आकि कोनो वस्तु दुइर नै हुअ दइ छलिऐ। अखन देखै छिअ जे पाँचे गोरेक परिवार रहनौं सभ सभसँ सटल नहि, हटल चलि रहलह हेन। सटि कऽ चलैक अर्थ होइ छै सभ सभ काजमे जुटल रही। ई तँ नै कि कियो काजक पाछू तबाह छी आ कियो बैसले छी। परिवारक सभकेँ अपन सिमान बुझि चलक चाही, से नै छह। हम खेलौं कि नहि, तूँ खेलह कि नहि। भनसिया-ले धैनसन। की खाएब, कोन वस्तु शरीर-ले हितकर आ कोन अहितकर हएत तइसँ सभकेँ बुझैक कोनो मतलबे नहि। जे खाइमे चटगर लागत, भलेँ ओ अहितकरे किए ने हुअए, वएह खाएब। जइसँ घरमे बिमारी लधले रहै छह। जहिना सुरूजक किरिणकेँ देखै छहक जे अनेको दिशामे चलैए तहिना परिवारोक काज, सभ दिशाकेँ जोड़ैए, से नइ भऽ रहल छह।"

बिच्चेमे बचेलाल बाजल-

"माए, नीक-नाहाँति तोहर बात नहि बुझि रहलौं हेन?"

तारतम करैत सुमित्रा बुझबए लगलखिन-

"बच्चा, देखहक जहिना गाममे किछु परिवार आगू-मुहेँ ससैर रहल अछि तँ किछु परिवार पाछू-मुहेँ। किछु परिवार ठमकल अछि जइसँ गाम आगू-मुहेँ नै बढ़ि रहल अछि। तहिना परिवारोमे होइ छइ। परिवारोमे किछु गोरे आगू बढ़ैक चेष्टा करैए तँ किछु गोरे अदहा-छिदहामे रहैए आ किछु आलस अज्ञान आदिक चलैत पाछू-मुहेँ ससरैए। तँए परिवारकेँ जइ गतिमे चलक चाही, से नै भऽ रहल अछि।

तेतबे नहि, ई रोग मनुखक भीतरोमे अछि। किछु लोक अपनाकेँ समैसँ जोड़ि कऽ चलए चाहैए तँ किछु लोक समैक गति नहि बुझि पाछुए-मुहेँ ढुलकैए। ई बात जाबे नीक नहाँति नै बुझबहक ताबे ने मनमे चैन हेतह आ ने आगू-मुहेँ परिवार बढ़तह।"

माइक बातसँ बचेलालक मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। की नीक, की अधला से बुझबे ने करैत। माथ कुरियबैत बाजल-

"माए, जखन मन असथिर हएत तखन बुझा-बुझा कहिहेँ। एक बेरे नै बूझब, दू बेरे बुझैक चेष्टा करब। दू बेरे नै बूझब तीन बेरे चेष्टा करब। मुदा बिनु बुझने तँ काज नै चलत।"

बचेलालक बात सुनि मुस्कियाइत सुमित्रा कहलखिन-

"बच्चा जखन तोहर पिता जीबते रहथुन तखन घरमे पाथरक बटिखाड़ा छल। ओइसँ जोखै-तौलै छेलौं। एक दिन अपने आबि कहलैन जे आब लोहाक पक्की सेर आ अढ़ैया-पसेरी सभ आएल। हम पुछलयैन जे पथरक जे सेर, अढ़ैया अछि तेकरा फेक देबै? ओ कहलैन, 'फेकबै किएक। लोहाक सेरकेँ पथरक सेरसँ भजाइर लेब। बटिखाड़ा कम-बेसी हएत सएह ने हएत, ओकरा अपन बटिखाड़ा हिसाबसँ मानि लेबै और की हेतइ। ...बौआ अखन तोरो मन खनहन नै छह, जा तोहूँ अपन काज देखह। हमरो बहुत काज अछि। जखन मन खनहन हेतह तखन आरो गप करब।"

अनोन-बिसनोन मने बचेलाल कपड़ा खीचैले विदा भेल। आँगन जा बाल्टीन-लोटा, कपड़ा आ साबुन नेने कलपर पहुँचल। कपड़ा, साबुनकेँ कातमे रखि पहिने कलक चबुतरा साफ केलक। बाल्टीनमे पानि भरि सभ कपड़ाकेँ बोरलक। एकाएकी कपड़ा निकालि दुनू पीठ साबुन लगा-लगा, बगलमे रखैत। जखन सभ कपड़ामे साबुन लगौल भऽ गेलै तखन पहिलुका साबुन लगौलहा कपड़ा निकालि-निकालि खीचए लगल...।

सुमित्रा खन्ती लऽ ओल उखाड़ए बाड़ी दिस विदा भेली। बाड़ीमे पतियानी लगा ओल रोपने छेली। तीन-सलिया ओल! कएटा गाछ फुलाएलो! बाड़ी पहुँच सुमित्रा हियासए लगली जे कोन गाछ खुनी। सभ गाछ डग-डग करैत। पतियानीक बीचमे एकटा गाछक अदहा पत्ता पिरौंछ भऽ गेल। पातकेँ पीअर पात देख सुमित्रा वएह गाछ खुनैक विचार केलैन। ओल कटि ने जाए तँए फइलसँ खूनब शुरू केलैन। सात-आठ किलोक हैदरावादी ओल। टोंटी एकोटा ने। टोंटी नै देख सुमित्रा मने-मन सोचए लगल जँ टोंटी रहैत तँ रोपियो दैतिऐ मुदा से नहि भेल। ..ओलक माटि झाड़ि गाछकेँ टुकड़ी-टुकड़ी काटि खाधियेमे दऽ ऊपरसँ माटि भरि देलखिन। सुमित्रा चाहैथ जे ओलो आ खन्तियो ऐके बेर नेने जाइ मुदा से गरे ने लगैन। दुनू हाथसँ ओल उठा एक हाथमे लऽ दोसर हाथसँ खन्ती लिअ लगैथ कि ओल गुड़ैक कऽ निच्चाँमे खसि पड़ैन। कएक बेर चेष्टा केलैन मुदा नहियेँ सम्हरलैन। तखन हारि कऽ पहिने दुनू हाथे ओल उठा कल लग रखि, खन्ती आनए गेली। खन्तियोमे माटि लगल आ ओलोमे। तँए दुनूकेँ नीक-नाहाँति घुअ पड़तैन...।

माएकेँ ठाढ़ देख बचेलाल हाँइ-हाँइ कपड़ा पखाड़ए लगल। कपड़ा लऽ बचेलाल चारपर पसारए गेल।

सुमित्रा ओलकेँ कलक निच्चाँमे रखि कल चलबए लगली। गर उनटा-उनटा दस-पनरह बेर कल चलौलैन। मुदा तैयो सिरक दोग-दागमे माटि रहबे केलइ। तखन ओलकेँ घुसुका बाल्टीनमे पानि भरि लोटासँ ओलो, खन्तियो आ अपनो हाथ-पएर धोलैन। आँगन आबि सुमित्रा पुतोहुकेँ कहलखिन-

“आइ रवियो छी, बच्चो गामेपर रहता तँए ओलक बरी बनाउ। बड़ निम्मन ओल अछि तँए दू चक्का तड़ियो लेब।”

सुमित्राक बात सुनि मुँह-हाथ चमकबैत पुतोहु कहलकैन-

“हिनका हाथमे सरर पड़ल छैन तँए कब-कब नै लगै छैन। हमरा तँ ओल देखिये कऽ देह-हाथ चुलचुलाए लगैए। अपना जे मन फुरैन से बनबौथ। हम चुल्हि पजाइर ताबे भात रन्है छी। सभकेँ नवका चीज नीक लगै छै हिनका पुरने नीक लगै छैन।”

पुतोहुक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली जे जवाब दिऐन कि नहि। समैपर जँ जवाब नै देब तँ दबब हएत। मगर जवाब देनौं तँ झगड़े हएत! अपना जे इच्छा अछि वएह करब मुदा बाता-बाती भेने तँ काजे रूकत। जेते बनबैमे देरी हएत तेते भानसोमे अबेर हेतइ। तैयो जवाब दइले तनफनाइते रहली। ओलकेँ बीचो-बीच काटि चारि फाँक करए लगली, ओलक सुगन्ध आ रंग देख बजली-

“कनियाँ, जे चीज सभ दिन नीक लागल ओ आइ अधला केना भऽ जाएत? जाबे जीबै छी ताबे तँ खेबे करब। तूँ जेकरा अधला बुझै छहक ओ अधला नइ छी। दुनू गोरेक नजैरमे अन्तर छह। जे अन्तर नीक-अधलामे बदैल गेल छह। दुनू गोरेक नजैर ऐ दुआरे दू रंग भऽ गेल छह जे दुनू गोरेक जिनगी दू रंग बितल। तूँ नोकरिहारा परिवारक छह हम गिरहत परिवारक। तोहर बाप नगद-नरायण कमाइ छेलखुन जइसँ हाट-बजारसँ समान कीनि आनि खाइ छेलह। मुदा हम तँ समान उपजबैबला परिवारमे रहलौं। कोन वस्तु केना रोपल जाइ छै, केना ओकर सेवा करए पड़ै छै से सभ बुझै छिऐ। हमर नीक आ तोहर नीकमे यएह अन्तर छह।”

दुनूक गप-सप्प बचेलालो दरबज्जापर सँ सुनैत। बीच आँगनमे बैस सुमित्रा ओल बनबैत रहैथ आ घरमे पुतोहु भनभनाइत रहैन, से सुमित्रा नीक नहाँति सुनबो ने करैथ। तखने बच्चा नेने मखनी आएल। कोरामे बच्चाकेँ देख सुमित्रा दबारैत मखनीकेँ कहलखिन-

“मासे दिनक बच्चाकेँ अँगनासँ किए निकाललह! जँ रस्ता-पेड़ामे हवा-बसात लगि जइतै?”

हँसैत मखनी कहलकैन-

"दीदी, ऐ आँगनकेँ अनकर अँगना कहै छथिन, हमर नइ छी। अपनो अँगना अबैमे संकोच हएत?"

मखनीक बात सुनि सुमित्रा मने-मन अपसोच करैत बजली-

"अनकर अँगना बुझि नै कहलौं। अखन बच्चा छोट अछि तँए बँचा कऽ राखए पड़त। बेटा धन छी। घरसँ तँ निकलबे करत...।"

बिच्चेमे पुतोहुकेँ शोर पाड़ैत कहलखिन-

"पहिले-पहिल दिन बच्चा अँगना आएल। तेल-उबटन दहक। अगर उबटन घरमे नै हुअ तँ तेलेटा नेने आबह। ताबे चुल्हि मिझा दहक। पहिने बच्चाकेँ जाँति-पीचि दहक।"

घरसँ रूमा तेल आ बिछान नेने आबि अँगनेमे बिछौलक। तेलक माली लगमे रखि बच्चाकेँ कोरामे लेलक। दुनू पएर पसारि जाँधपर बच्चाकेँ सुतौलक। बच्चाक मुँह देख रूमा मने-मन बजली-

"मखनी केहेन भाग्यशाली अछि जे भगवान एहेन सुन्नर बच्चा देलखिन।"

बच्चाकेँ उनटा-पुनटा कऽ देखैत रूमाक मनमे उठलै- केना लोक बजैए जे फल्लाँक कपार खराब छै आ फल्लाँक नीक। जँ कपार अधला रहितै तँ बेटी होइतै आ जेकर कपार नीक रहै छै ओकरा खाली बेटे होइतै। भगवानक नजैरमे सभ बरबैर अछि। सभ तँ हुनकेँ सन्तान छी। कोन पापी बाप एहेन हएत जे अपना सन्तानकेँ दूजा-भाव करत। अनेरे लोक कपार गढ़ि भगवानकेँ दोख लगबै छैन।

ओल देख मखनी बाजल-

"ओल अण्डाएल रहु माछ जकाँ बुझि पड़ैए। दीदी, 'हाथ धोइ लौथु, हम बना लइ छिऐन।"

सुमित्रा हाथसँ ओलो आ कत्तो लऽ मखनी ओल बनबए लगली।

सुमित्रा हाथ धोइ कऽ दुनू हाथमे करूतेल लगा अपना पएरमे हसोंथि लेलैन। हाथक कबकबी मेटा गेलैन। बिछानपर जा पुतोहुकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बच्चा लाउ। हम जाँति दइ छिऐ। अहाँ चुल्हि लग जाउ।”

सासुक कोरामे बच्चाकेँ दऽ रूमा चुल्हि पजारए गेली। सुमित्रा बच्चाकेँ जाँधपर सुतबैत मखनीकेँ कहलखिन-

“कनियाँ, बीचला चक्का ओरिया कऽ काटब। ओ तड़ब। कतका सभ उसैन कऽ बरी बनाएब।”

मुस्की दैत मखनी कहलकैन-

“तेहेन सुन्नर ओल छैन दीदी जे चुल्हिपर चढ़िते गलबला जेतैन। खेबोमे तेहने सुअदगर लगतैन जे किछ कहौ ने..। ऐ आगूमे दुदहो-दहीक कोनो मोल नहि।”

सुमित्रा बच्चाकेँ जँतबो करैथ आ घुनघुना-घुनघुना गेबो करैथ-

“कौने बाबा हरबा जोताओल,
मेथिया उपजाओल हे।
कौने बाबी पीसल कसाय
ओ जे बच्चाकेँ उङारब हे।
बड़का बाबा हरबा जोताओल
ओ जे सरसो उपजाओल हे।
ऐहब बाबी तेल पेरौली
बच्चाकेँ उगहारैथ हे।”

जाबे मखनी ओल बनौलक ताबे सुमित्रो बच्चाकेँ जाँति-पीचि चानिमे काजरक टिक्का लगा निचेन भेली। मखनीकेँ कोरामे बच्चा दऽ सुमित्रा एक-डेढ़ सेर चाउर आ तीमन जोकर ओल दऽ देलखिन।

◌

शब्द संख्या : 2410

3.

अधरतियेमे सुमित्राक निन टुटि गेलैन। ओछाइनपर सँ उठि आँगन आबि मेघ दिस हियासए लगली। अन्हरिया राति। साफ अकास। सिंगहारक फूल जकाँ तरेगन चमकैत। घरसँ थोड़े हटल, पुबारि भागमे बँसबिट्टी। बाँसक झोंझमे मेना सबहक खोंता। एकटा मेनाकेँ बाझ पकैड़ उड़ि गेल। बाझकेँ उड़िते आन-आन मेना गदमिशान करए लगल। मेना सबहक अवाजकेँ सुमित्रा अकानए लगली। भिनसुरका बोली नहि बुझि सुमित्राक मनमे उठलैन- 'जनु किछु भऽ गेलइ तँए एना बजैए।' ..कनी काल ठाढ़ भेलोपर रातिक ठेकान नै पाबि सुमित्रा फेर ओछाइनपर आबि पड़ि रहली। अनासुरती मनमे एलैन, जहिना अछेलाल समाजमे रहितो समाजसँ अलग अछि तहिना तँ बचेलालो अछि। ओइ दिन वेचारा सते कहलक जे ने केकरो ऐठाम जाइ छी आ ने कियो हमरा ऐठाम अबैए। ने केकरोसँ गप होइए आ ने गामक कोनो बात बुझै छी...। तखने रूमा उठि कऽ लगमे एलैन। पुतोहुकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन-

"जखन दुरागमन भऽ ऐठाम आएल रही तखन दू-तीन साल अँगनेमे रहलौं। सासु अँगनासँ बाहर नइ हुअ दैथ। बाहरक काज अपने सम्हारैथ। कातिक मासमे छठिक परातेसँ दुनू सासु-पुतोहु शामा गीत गाबी। समाजक सभ स्त्रीगण अपन-अपन अँगनामे सामाक गीत गबैत। ओ आगू-आगू गबथिन आ हम पाछू-पाछू। तीन साल अहिना बितल। चारिम सालक गप छी, शामा भँसौन दिन हुनकर मन खराब भऽ गेलैन। तेते जोर कफ आ उकासी होनि जे बजले ने होइन। भँसौन दिन रहने छोड़लो केना जइतै। बेरूए-पहर ओ एक पाँज धान काटि अनलैन। ओकरा मिड़लौं। अदनार धान तँए ताड़ै-भाड़ैक जरूरते नहि। सासु घानी लाड़ैथ हम उक्खैर-समाठ लऽ कूटी। चूड़ा कुटलौं।

बाटीमे अरबा चाउर भीजैले दुपहरे दऽ देने रहिये। ओकर पीठार पीसलौं। गोसाँइ लुक-झुका गेल। काजो बहुत रहए तँए हाँइ-हाँइ करी। तहूमे सासुक मन खराबे रहैन मुदा तैयो संग-साथ दैथ। ने अखन धरि समा रंगने छेलौं आ ने वृन्दावनक चुगला झड़काबैले बनौने छेलौं। किएक तँ घरमे सोन रहबे ने करए। हाँइ-हाँइ शामा-चकेबा सभकेँ पीठारसँ ढोरलौं आ सुखैले चँगेरामे दऽ देलिऐ। शामा रंगैले एक्केटा पुड़िया गुलाबी रंग रहए। एके रंगसँ तँ रंगल ने जाएत। कम-सँ-कम लाल, हरिअर, पीअर आ कारी रंग तँ जरूर चाही। दुनू गोरे गुनधुनमे पड़ल रही। अनासुरती हुनका मनमे एलैन जे सीमक पात तोड़ि हरिअरका आ सिंगहारक फूलक डन्टीसँ पीअरका रंग बनौल जा सकैए। मन पड़िते ओ दस-बारहटा सीमक पात तोड़ि आनि हमरा पीसैले कहलैन आ अपने सिंगहारक गाछ लग जा बसिया फूल बीछि अनलैन। हम सीमक पात पीसए लगलौं आ ओ सिंगहारक डन्टी तोड़ए लगली। मनमे सवुर भेल। किएक तँ काजरसँ करिया रंगक काज चलि जाएत। रंग तैयार होइते दुनू गोरे रंगलौं। रंगल जखन भऽ गेल तखन हुनका मन पड़लैन जे झाँझी कुत्ता, ढोलिया आ लड़ुबेचा तँ बनेबे ने केलौं! आब की हएत? वीध तँ पुरबए पड़त।”

कनी रूकि फेर बाजए लगली-

“गुनधुन करैत सासु कहलैन- कनियाँ, कनी माटि सानि तीनू बना लिअ। मुदा धड़फड़मे सूखत केना? तैयो तीनू बनेलौं। काँच दुआरे ओकरा नै ढोरलौं आ ने रंगलौं। सभकेँ चँगेरामे सेरिया कऽ रखि भानसक जोगारमे लगि गेलौं। सासु मालक घरमे ओछरा दइले गेली आ हम भानस करए लगलौं। भानस भेलो ने छल कि उत्तरबारि टोलमे शामा-गीत शुरू भेल। बाबूओकेँ[1] आ हुनको[2] खुआ दुनू गोरे[3] खेलौं।

---

[1] ससुर

[2] पति

[3] सासु-पुतोहु

थारी-लोटा, बरतन-बासन अखारि रखि देलिऐ आ दीप जरेलौं। दुनू गोरे गीत गबए बैसलौं। जहाँ ओ[4] गोसाउनिक गीत उठौलैन कि उकासी हुअ लगलैन। एक लखाइते बड़ी काल धरि खोंखी करिते रहली। उकासी बन्ने ने होइन। हम हुनकर छाती दाबि-दाबि ससारए लगलौं। तखन उकासी बन्न भेलैन। उकासी बन्न होइते कहलैन- कनियाँ, हमरा गौल नै हएत। आइ भँसौन छी तँए छोड़बो नीक नै हएत। जएह अबैए सएह गाबि वीध पुरा लिअ। ..सासुक आग्रह सुनि तरे-तर खुशी भेलौं जे हमरो लूरि देखती। पहिने तँ थोड़े नाकर-नुकर केलौं जे हमरा गीत नै अबैए मुदा फेर सोचलौं जे लूरिकेँ झाँपियो कऽ रखब नीक नहि। गाबए लगलौं। आगू-आगू हम कहिऐ आ पाछूसँ ओ धरैथ। उकासी दुआरे घुनघुनेबेटा करैथ। आँगनमे गोसाउनिक गीत गाबि चँगेरा उठा बटगबनी गबैत चौमास दिस विदा भेलौं। चौमास जाइत-जाइत गीतो खतम भेल। चौमासमे चँगेरा रखि शामा गीत शुरू केलौं। पहिल गीत समाप्त होइते सासु कहलैन जे लगले सूरे पाँचटा पुरा लीअ। पहिलुक गीत तँ हुनको अबैत रहैन तँए घुनघुनाइयो कऽ संग पुरि देलैन मुदा दोसर नै अबैत रहैन तँए कखनो घुनघुनाइथ आ कखनो चुप भऽ जाथि। हम देखियो कऽ अपना सूरे गबिते रहलौं। जहिना भरल कोठीक मुँह खोललासँ चाउर भुभुआ कऽ निकलैए तहिना हमरो हुअए। एक्के सूरे दस-बारहटा शामा गीत गाबि लेलौं। गामक जेते शामा खेलेनिहारि रहैथ सभ अपन-अपन शामा भँसा आँगन गेली। हमहूँ शामा भँसा सोहर गबैत अँगना विदा भेलौं। एक्के-दुइए गामक गीत गौनिहारि आबए लगली। पाछू-पाछू ओहो सभ भाँज पुरए लगली। एकटा सोहर गाबि दोसर उठेलौं। सासुक मन खराब रहैन तँए खिसिया कऽ ओ सुतैले चलि गेली मुदा पाँचटा सोहरो गौलौं। नवकी कनियाँ सभ मुँह दाबि-दाबि बजैत जे दीदी नाचमे रहै छेलखिन तँए हाथ चमका-चमका गबै छैथ। ओछाइनपर सँ कखनो-

---

[4] सासु

करवनो साउसो घुनघुना-घुनघुना गेबौ करैत आ चाबस्सियो दैथ। सोहरक पछाइत समदाउन उठेलौं। नवतुरिया सभकेँ भास चढ़बे ने करइ। घरेसँ माए कहलखिन, 'ठी-ठी केने समदाउन गौल जाइ छइ? मनुख जकाँ मन असथिर कऽ कऽ गाओले ने होइ छैन।' अपन कमजोरी मानि मंगली कहलक, भौजी समदाउन छोड़ि एकटा बरहमासा कहियौ। मंगलीक विचारकेँ सभ समर्थन दैत हुँहकारी भरलक। हम बरहमासा शुरू केलौं-

रघुवर जुनि जइयौ मिथिला नगरसँ सिआ कोहवरसँ ना।
अगहन सिआ के बिआह पूस सेजिया लगायब,
माघ सीरक भरबाएब रघुवर क, सिआ कोहबरसँ ना।
फागुन फगुआ खेलाएब चैत माला गाँथि लाएब
बैशाख बेनिया डोलाएब रधुवर क, सिआ कोहवरसँ ना।
जेठ तबे दिन-राति आषाढ़ बरसे दिन-राति
सावन झुला झूला कऽ, सिआ कोहवर से ना।
भादव राति अन्हार आसीन आस लगायब
कातिक चलि जाएब मिथिला नगर से, सिआ कोहवर से ना...।"

रूमा अपन सासुक बात धियानसँ सुनैत। पुतोहुकेँ धियानसँ सुनैत देख सुमित्रा आरो आगू बजली-

"बरहमासा गबैत-गबैत रातियो बेसी भऽ गेलै आ ओससँ सबहक नुओ सिमैस गेल। मुदा तैयो उठैले कियो तैयारे ने होइत। हाँ-हाँ, हीं-हीं सभ करैत। अपनो थाकि गेलौं। तखन दुनू हाथ जोड़ि कहलिऐ, बड़ राति भऽ गेल। आब जाइ जाउ। काल्हिसँ आबि-आबि सुनबो करब आ सीखबो करब। तखन सभ गेल। हमहूँ सुतैले गेलौं। औझुका जकाँ ने पढ़ल-लिखल जनिजाति छल आ ने पढ़ै-लिखैक सुविधा छेलइ। एक-एकटा गीत सीखैमे कए-कए दिन लगि जाइ छेलइ। हमहीं जे सीखलौं ओ माएसँ सीखलौं। काजो करै काल सीखी

आ रातिमे खेला-पीला पछाइत माएकेँ जँतैले जाइ तखनो सीखी। जखन गीत इयाद भऽ जाए तखन माएकेँ गाबि सुना दिऐ। ..दोसरे दिनसँ गीत सीखैले ढेरबासँ लऽ कऽ जुआन कनियाँ धरि आबए लगल। गामक बेटी सभ तँ जखन-तखन आबि जाए मुदा कनियाँ पुतोहु वर्गक दोसैर तेसर साँझमे आबै। अँगनाक काज बरदाइत देख सभकेँ कहि देलिऐ जे साँझू-पहरमे आबह। सएह भेल। छह मास धरि सभकेँ गीत सिखेलौं। जखन अपने[5] मरि गेला तखन घरक भार पड़ि गेल। दुनू बच्चा लिधुरिया। की करितौं। खेती-बारीसँ लऽ कऽ अँगना-घरक काज सम्हारए पड़ै छल। अपने काजमे तेना ओझराए गेलौं जे दोसराक सुधिये ने रहल। समाजमे केतौ बिआह होइ वा उपनाइन तँ हमरो हकार अबै छल। हमहूँ जा कऽ गोसाउनिक गीतसँ लऽ कऽ समदाउन तक गबै छेलौं। जे सभ छुटि गेल। अखनो ओ सभ जँ एमहर अबैए तँ जरूर भेँट करैए। मुदा आब तँ अपने सभकेँ बाल-बच्चा, नाति-पोता भऽ गेलइ। सभ अपने-अपने परिवारमे ओझराएल रहैए। हमहूँ बुढ़ भेलौं तँए पहिलुका जकाँ काजोमे नइ सकै छी। जाधैर गामक लोकसँ लाट रहै छल ताधैर सभ नीक-अधला बुझै छलिऐ। केकरा ऐठाम पाहुन आएल वा केकरा घरमे केते नून-तेल खर्च होइ छेलै सभटा बुझै छलिऐ। समए जिनगीकेँ छोट बना देलक। खाएर.., जाबे जीबै छी ताबे दोसराक भार नै बनिऐ तइले भरि दिन लुड़-खुड़मे लगल रहै छी। अखनो बाड़ी-झाड़ीमे तीमन-साजन उपजैबतै छी, भानसो करिते छी, अँगना-घर बहारिते छी, चिक्कैन माटिसँ घर नीपते छी। ..कखनो ई नहि बुझि पड़ैए जे अथबल भेलौं। जखने काजसँ हटब तखने जिनगी भार बुझि पड़त। जिनगी की छी। जिनगी तँ यएह छी जे हँसैत-खेलैत बिता ली। जे अखन धरि तँ निमहल, आगू बुझल जेतइ।”

रूमा अपन सासुक बात धियानसँ सुनैत रहल। भोर भऽ गेल।

---

[5] पति (बचेलालक पिता)

चिड़ै चुनमुनी जुट बान्हि-बान्हि खोंतासँ निकैल अकासक रस्तासँ पराती गबैत जिनगीक लीला करए विदा भेल।

◌

शब्द संख्या : 1260

4.

अँगना बहारि सुमित्रा दरबज्जा बहारए गेली। दरबज्जा बाहरैसँ पहिने बरदपर नजैर पड़लैन। डेढ़ियापर बाढ़ैन रखि मुँहपर हाथ दऽ बैस देखए लगली। बरदक दशा देख सुमित्राक दुनू आखिसँ नोर टघरए लगलैन। ताबे बचेलालो सुति उठि कऽ दरबज्जापर आएल मने-मन सुमित्रा सोचए लगली, जाबे बचेलालक पिता जीबै छला ताबे जोड़ा बरद खुट्टापर रहै छल। दुनू बरदकें खुआ-पीआ पट्ठा बनौने रहै छला। ने एकटा कुकुर माछी देहपर रहए दइ छेलखिन आ ने एकोटा अठगोरबा रहै छेलइ। जहिना लोक अपन बच्चाक सेवा करैए तहिना ओ गाए-बरदक सेवा करै छला। जखन अपने जीबै छला हमहूँ जुआन छेलौं। दुनू बेकती मिलि घर-अँगनासँ लऽ कऽ खेती-पथारी धरि सम्हारै छेलौं। आब बुढ़ भेलौं आब केना गाए-बरदक सेवा कएल हएत? जँ कहीं अनचोकमे लथारे मारि दिअए वा हूरपेटे दिअए तखन तँ हाथ-पएर तोड़ा घरमे कुहरैत रहब। तइसँ नीक जे ओकरा लग जेबे ने करी। भरि दिन बचेलालो स्कूलेक आइ-पाइमे लगल रहैए। पुतोहुओ जनी तेहेन घरसँ आएल छैथ जे गाए-बरदसँ कहियो भेँट ने। घास-पात दुआरे खुट्टापर बरद कलपैए। ने एक मुट्ठी कियो घास देनिहार आ ने एक डोल पानि नमेनिहार। कखनो एक मुट्ठी घास आगूमे फेक देलिऐ तँ कखनो एक डोल पानि पिआ देलिऐ। ऐसँ गाए-बरद केना पोसल जाएत..?

सुमित्रा सोचबो करैत आ आँखिसँ नोरो टघरैत। दलानक आगूमे बचेलाल दतमैनो करैत आ टहलबो करैत। अछेलालकेँ घरमे चुन नै रहने मुट्ठीमे तमाकुल नेने चुन मांगए आएल। सुमित्राक आँखिसँ नोर टघरैत देख बचेलाल पुछलकैन-

“माए, कानै किए छँह?”

सुमित्रा किछु नै उत्तर देलखिन। दुनू आँखिक नोर आँचरसँ पोछि बचेलाल दिस देखए लगली। हाथमे तमाकुल रखने अछेलालो चुपचाप ठाढ़। ने चुन मंगैक साहस होइ आ ने किछु बजैत। सुमित्राक मलिन चेहरा देख अछेलालोक आ बचेलालोक चेहरा मलिन हुअ लगल। त्रिकोण जकाँ तीनू गोरे। कियो ने किछु बजैत। कनी कालक पछाइत मिड़मिड़ा कऽ अछेलाल सुमित्रासँ पुछलकैन-

“एते सोगाएल किए छी भौजी? कथीक दुख मनमे अछि?”

फेर आँचरसँ नोर पोछैत सुमित्रा बजली-

“एतै आउ। लगमे बैसू। कहै छी। बौआ बचेलाल, तौँहू मुँह-हाथ धोने आबह?”

बचेलाल मुँह-हाथ धोइले कलपर गेल। अछेलाल लगमे आबि सुमित्राकेँ बाजल-

“चुनक दुआरे तमाकुलो ने खेलौं भौजी। मन चटपटाइए। पहिने कनी चुन आनि दिअ।”

“अच्छा बैसू। अँगनासँ नेने अबै छी।”

कहि सुमित्रा आँगन विदा भेली। डेढ़िएपर सँ बचेलाल जोरसँ घरवालीकेँ चाह बनौने अबैले कहलक। दू घुस्सा दऽ अछेलाल तमाकुल चूना ठोरमे लेलक। दुनू गोरेकेँ सुमित्रा कहए लगलखिन-

“एक समैक बात छी। हमरा नैहरमे एकटा गौड़ बाबू देने रहैथ। बड़ सुन्नर बाछी छेलइ। छह मास पोसलौं तखन पाल खेलक। ठीक नअ मास पुरिते बाछी तरे बिआएल। बड़ दूधगर गाए भेल। दू सेर भिनसर आ डेढ़ सेर बेरू-पहर-के दूध हुअए। गाए तँ गाइए छल।

जखन बेगरता हुअए तखन पाभैर-आसेर दुहि ली। बड़ सहठुल छल। एगारह बिआन बिआएल। जहाँ तीन मास बिएना होइ कि पाल खा लिअए। पाल खेलापर छह मास लगबो करए। जखन तीन मास बिआइले बाँकी रहै छेलै तखन अपने दुहब छोड़ि दइ छेलिऐ। जहिना नाओं गाए तहिना सज्जनो। खाइयो पीबैमे कोनो चीज बगै नै छेलइ। लत्ती-कत्तीसँ लऽ कऽ तीमन तरकारीक छाँट-छूँट आगूमे दइते लप दे खा लैत रहए। तीन मास बिएना भेलै कि बड़ जोर दुखित पड़ल। गामक लोक सभ जे-जे दबाइ बतौलक सभ केलिऐ मुदा दुख घटैक बदला बढ़िते गेलइ। मनमे हुअए जे कोन जन्ममे पाप केलौं जे एहेन लागल फुलवाड़ी उजड़ि रहल अछि। दुनू परानीक आशा टुटि गेल। सोगे अन्नो-पानि नीक नै लगए। बच्चाकेँ देख दयासँ हृदए पधिल गेल। गाए अपने दुखसँ तबाह तँ बच्चाकेँ केना लगमे जाइ दैतै। जेना बच्चापर सँ सूर्ता हटि गेलइ। सिरियाक गाए बिआएल रहइ। ओकरेसँ पाभैर कऽ दूध ली आ बच्चाकेँ खुरचनसँ पीआबी। मुदा पाभैरसँ बच्चाकेँ की होइतै? फुलकीबला घास आ खिचड़ीक आदति रसे-रसे लगबए लगलौं। पड़ले-पड़ल गाए डिरियेबो करै आ चारू टाँगो पटकै। मनमे हुअए जे नैहरक गाए छी जँ मरि जाएत तँ नैहराक लोक कहत जे धारबे ने करै छइ। मुहसँ फुफरी उड़ए। हमरोसँ बेसी हुनके (पति) चिन्ता होइन। सोगे हदिघड़ी चौकीपर पेटकानो लधने आ कुही भऽ भऽ कनबो करैथ। बेर टगिते एकटा महात्मा जे दाढ़ी-केश बढ़ौने रहैथ, रस्ते-रस्ते केतौ जाइत रहैथ। महात्माक नाओं देवन छेलैन। गाइक डिरिएनाइ सुनलखिन। थोड़ेखान रस्तापर ठाढ़ भऽ हियासलैन। तखन ससैर कऽ दुआरपर एला। मुड़ी गोंति हम अथाह दुखमे डुमल रही। दुआरपर अबिते देवन निंगहारि-निंगहारि गाएकेँ देखए लगलखिन। कनी काल गुम्म भऽ पुछलैन, केते दिनसँ गाए अस्सक अछि? कँपैत मनसँ कहलयैन, सात दिनसँ। फेर पुछलैन, घरवारी कहाँ

छैथ? हाथक इशारासँ चौकीपर देखा देलिऐन। हाथेक इशारासँ ओहो हुनका लग अबैले कहलखिन।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“लग अबिते मुस्कियाइत कहलखिन, गाए मरत नहि। दुनू बेकती मनसँ दुख हटाउ। कहि अपना झोरासँ कथुक जड़ि निकालि दऽ कहलखिन, एकरा सिलौटपर खूब हलसँ पीसने आउ। ओइ जड़ीकेँ धोइ सिलौटपर सँ पीसने एलौं। भरि गिलास पानिमे ओइ जड़ीकेँ घोरि गाएकेँ पीआ देलखिन। तीनू गोरे गप-सप्प करए लगलौं। कनीए कालक पछाइत गाइक डिरियाएब बन्न भेलइ। आँखि उठा कऽ गाए बच्चा दिस तकलक। बच्चापर नजैर पड़िते हुकरल। बच्चो बोली देलकै। बाछीकेँ खुजले छोड़ि देने रहिऐ। दौग कऽ बाछी गाए लग आबि ठाढ़ भऽ गेलइ। चारू टाँग समैट गाए ओरिया कऽ बैसल। गरदैन उठौलक। उठल गरदैन देख केतौसँ पराण आएल। मनमे खुशी भेल। अपने कहलैन, गाइक रोग छुटि रहल अछि। आब गाए बँचि जाएत। एते कहिते छला कि गाए उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलि। मुदा चारू टाँग थरथराइते रहइ। नेरू गाइक थन दिस बढ़ए लगल आकि अपने डोरी लगा देलखिन। घरसँ घास आनि हम आगूमे देलिऐ। गाए खाए लगल। हमर करेज चमैक उठल। जहिना जाड़क मासमे करिया पहाड़पर ओस पसरल रहैए आ सुरूजक रोशनी पड़िते चानी जकाँ चमकए लगै छै, तहिना भेल।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“तोहर पिता देवनकेँ कहलखिन, महात्माजी, अपने भोजन कऽ लेल जाउ। हँसैत देवन उत्तर देलकैन, भोजन जरूर करब मुदा ऐ गाइक दूधक खीर खाएब। ताबत एक लोटा जल पिआ दिअ। महात्माजीक बात सुनि दुनू परानीक मन बिहुँसि उठल। घरक काते-काते जे घास रहै ओकरा नोचि-नोचि हम गाइक आगूमे दिअ लगलिऐ आ अपने बाँसक पत्ता तोड़ए गेला। आहूल भरि घास गाइक आगूमे

दिऐ आ ओ लप दे खा जाएत। पँजरामे पँजरा जे सटल रहै से अलगए लगलै। इनारसँ पानि भरि अनलौं। आगूमे दइते बाल्टीनो भरि पी लेलक। फेर एक बाल्टीन अनलौं, सेहो पी गेल। ताबे अपनो पात अनलैन। दुनू गोरे पात खोंटि-खेंटि दिअ लगलिऐ। अदहा बोझ पात खा गेल। तखन देवन कहलैन जे आब दुहि लीअ। थन लटैक कऽ ठेहुन लग चलि आएल रहइ। बच्चाकेँ डोरी छिटिका देलिऐ। दौग कऽ बच्चा पिबए लगलै। अपने दुहए लगला। बाल्टीन भरि गेल। दूध देख मनमे भेल जे दुखीत गाइक दूधो तँ दूषिते हेतइ। मुदा देवन-महात्माजी कहलैन जे दबाइक गुण तँ सेहो दूध तक पहुँच गेल हेतइ। तीन दिनक भूखल दुनू परानी रही। जाबे गाए दुखित रहए ताबेतक भूखो नै बुझिऐ मुदा अपनो भूख जगल। हम भानस करए गेलौं आ अपने देवनसँ गप-सप्प करए लगला। सभटा दूधक खीर रन्हलौं। पहिने माहात्माजीकेँ खुआ अपने दुनू बेकती खेलौं। ओइ गाइक जरोह ई बरद छी। जेकर दशा देख पैछला सभ बात मन पड़ि गेलि तँए आँखिमे नोर आबि गेलि।”

रूमा चाह नेने आएल। सभ कियो चाह पिबए लगल। चाह पीब अछेलाल तमाकुल चुनबए लगल। तमाकुल चुना कऽ खा सुमित्राकेँ पुछलकैन-

“तेकर बाद की भेलै?”

सुमित्रा बाजए लगली-

“खेला-पीला पछाइत देवन विदा हुअ लगला। हम झोरा पकैड़ कहलयैन कम-सँ-कम आइ भरि रहि जाउ। काल्हि चलि जाएब। मानि गेला। खा-पी कऽ रातिमे देवन अपन जिनगीक कथा कहए लगला। दुनू परानी सुनिनिहार रही आ ओ कहनिहार। कहए लगला, जखन हम दसे बर्खक रही तखने माइयो आ बाबूओ दुखित पड़लैथ। हम कमाइ-खटाइ जोकर नै रही। माए-बाबूजी कमाइसँ घर चलै छल। अनासुरती दुनू गोरे दुखित पड़ि गेलैथ। खाइले घरमे किछु रहबे

ने करए। एक तँ दुखसँ दुनू गोरे अब-तब करैत रहैथ, दोसर पेटमे अन्न नहि। सिरिफ पानिटा दिऐन। हमहूँ हदिघड़ी लगेमे रहै छेलिऐन। हुनका सभकेँ छटपटाइत देखिऐन तँ हमरो दुख हुअए। मुदा की करितौं? कोनो रस्ते ने सुझैत। पाँचम दिन दुनू गोरे मरि गेला। जाबे दुखित रहैथ ताबे समाजक कियो ने अबै छल आ ने किछु मदैत करए। मुदा जखन मरि गेला तखन जिगेसा करए किछु गोटा एला हमहूँ केकरो ने किछु कहलिऐ। मनमे आएल जे जइ समाजमे कियो केकरो देखैबला नै ओइ समाजमे रहिये कऽ की करब। दुनू गोरे घरेक बिछानपर मुइला? हमरो हड़ल-ने-फूड़ल जेते अँगनाक टाट-फड़क रहए सभकेँ उजाड़ि घरमे दऽ देलिऐ। मनमे आएल जे जरबै काल नव-वस्त्र हेबा चाही। मुदा सोचलौं जे जीबैतमे तँ दुनू गोरे फाटल-पुरान कपड़ा पहिरलैथ मुदा जरैले नव वस्त्रक कोन जरूरी छइ। सभ समान जमा कऽ कऽ घरमे आगि लगा देलिऐ। जखन आगि पजरल तखन अँगनामे एकटंगा दऽ हाथ जोड़ि संकल्प केलौं जे ऐ समाजमे नै रहब। जइ समाजमे लोक अन्न बिनु काहि कटैए, वस्त्र बिनु नाँगट रहैए, दबाइ बिनु रोगसँ मरैए ओइ समाजमे एक्को क्षण रहब कायरता छी। आँगनसँ विदा भऽ गेलौं। जाबे गामक सिमानक भीतर रही ताबे घुमि-घुमि पाछुओ ताकि आगि देखिऐ मुदा जखन गामक सिमानपर पहुँच गेलौं तखन तक घरो जरि गेल छल। गामक सिमानेपर ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि पाँच ठोप नोर चुबा माए-बाबूक सराध कऽ विदा भऽ गेलौं। गामक सिमान टपिते मनमे हिलोर उठए लगल। एकटा फूलक गाछ रस्ताक बामामे भाग देखलिऐ। बड़ सुन्नर गाछ छेलइ। निच्चोमे हरिअर कचोर दूबि पसरल छेलइ। नीक जगह देख ओइ गाछक निच्चाँमे बैस गेलौं। मनमे भेल जे दुनू गोरे–माए आ बाबू- पछुएने आबि गाछपर चढ़ि गेला। आँखि उठा कऽ ऊपर तकलौं। किछु ने देखलिऐ। एकटा भोम्हरा उड़ि-उड़ि फूलक रस पीबैत रहए। सिहकी चलैत रहइ। ओइ सिहकीक लहैरमे किछु अवाज होइत रहइ।

साकांच भऽ कानपर हाथ दऽ ओइ अवाजकैं सुनए लगलौं। अवाज पिताक बुझि पड़ल। अवाज परेखि आरो धियानसँ सुनए लगलौं। बुझि पड़ल जे बाबू किछु कहि रहल छैथ। मुदा स्पष्ट बुझबे ने करिऐ।”

कनी रूकि कऽ फेर बाजए लगली-

“मने-मन कहलयैन, अपन पाँच बून नोर चुबा हम अपन कर्तव्य पुरा कऽ लेलौं। आब हम मुक्त छी। तखन अहाँ किएक पछुएने एलौं। ई सुनि ओहो कनैत-कलपैत स्वरमे कहए लगला, बौआ, तोहर अवस्था दसे बर्खक छह तँए तोहर कोनो दोख नहि। अखन तूँ खाइ-खेलाइ बला छह, कमाइ-खटाइबला नहि। तँए तोहर कोन दोख। बड़ इच्छा छल जे बेटाकैं पढ़ा-लिखा मनुख बनाबी मुदा सभटा मनेमे रहि गेल। मुदा हमरो कोनो दोख नइ अछि। जँ जीबैत रहितौं तखन ने से तँ हमहूँ मरिये गेलौं। तोरा हम असिरवाद दइ छिअ जे जखन घर छोड़ि निकललह तँ दुनियाँ देखह। दुनियेँमे सभ किछु छइ। हदिघड़ी मनुखक बीचमे रहिहह। मनुखेक बीचमे सरस्वती बास करै छथिन। ओइ बीच रहि तूँ पण्डित भऽ जेबह। मुदा एकटा बात हदिघड़ी मन रखिहह जे अपना मेहनतसँ जीवन-यापन करिहह। केकरो एक्को पाइक कर्जदार नै बनिहह। पिताक असिरवादसँ हमरा नव ज्योति भेटल। नव शक्ति जगल। मनसँ चाउर मरूआक भेद मेटा गेल! मेटा गेल गंगाजल आ डबरा पानिक भेद! मेटा गेल सजल-धजल फुलवाड़ीक फूलक सुगन्ध आ जंगलक अनेरूआ फूलक भेद, मेटा गेल उज्जर-कारी मनुखक भेद! ..नव उत्साह जगिते उठि कऽ विदा भेलौं। विदा होइते माइक अवाज गाछपर सँ आबए लगल। रूकि कऽ सुनए लगलौं। माए कहैत रहैथ- ‘बेटा, बड़ इच्छा छल जे भरल-पूरल परिवार देखब। मुदा सभ मेटा गेल। जँ बेटा बनि जन्म भेल हेतह तँ दुनियाँ देखबे करबह नइ तँ तोरा सन-सन बहुतो वौआइत-ढहनाइत मरैए।’ ..भूखसँ देह जरै छल मुदा विवेक रूपी सारथी ओइ रूपे प्रेरित

करै छल जेना नाँगर घोड़ा रथ घिचैए। जाइत-जाइत एकटा गाम पहुँचलौं। जाड़क मास छेलइ। गामसँ हटल एकटा परिवार बाधमे। भिनसुरका समए सुरूज उगि गेल रहए। ओइ परिवारमे दूटा बच्चा। दुनूक उमेर पाँच बरख सात बरख। दुनू नँगटे। दुनू घरक पछुआरमे खढ़ बिछ-बिछ घूर लगबैत। हम रूकि गेलौं। मनमे आएल जे हमहूँ घूर लगबैमे बच्चाक संग दिऐ। हमहूँ नार-पात बिछए लगलौं। एकटा बच्चा अँगनासँ आगि अनलक। घूर सुनगेलौं। तीनू गोरे आगि तापए लगलौं। देह गरमाएल। कनी कालक पछाइत ओइ बच्चाक माए छिपलीमे भात-तीमन नेने आबि आगूमे रखि देलकै। ओ औरत तीस-पैंतीस बर्खक मुदा देखैमे अधबेसू बुझि पड़ैए। हमरा बैसल देख ओ पुछलक, बौआ, कोन गाम रहै छह। हम कहलिऐ, ‘हमर कोनो गाम नइ अछि। माए-बाप मरि गेली। दुनियाँ देखैले जाइ छी। जाबे तक जीबैत रहब ताबे तक चलिते रहब। मुदा बिनु दुनियाँ देखने छोड़ब नहि।’ ..हमरा देख ओइ वेचारीकेँ दया लगलै। बच्चाक आगूक छिपली उठा अँगना गेल। भारामे जे भात-तीमन रहै काढ़ि कऽ नेने आएल। तीनू गोरे संगे-संग खेलौं। मुँह-हाथ धोइ कऽ पानि पीब विदा हुअ लगलौं। तँ ओ औरत कहलक, ‘आइ नै जो बौआ। जहिना दूटा बच्चा पोसै छी तहिना तोरो पोसबो।’ ..औरतक बात सुनि हम रूकि गेलौं। बौआ बचेलाल भरि राति देवन अपन जिनगीक बात कहिते रहल आ हम दुनू परानी सुनिते रहलौं। आब बेरो बहुत भऽ गेल। काजो उदम बहुत अछि। फेर कहियो ऐगला बात कहबऽ।”

जहिना नीन टुटिते, सूतल आदमी विहान देखैए तहिना अछेलालो आ बचेलालकेँ भेल। दुनू गोरेक मुहसँ हँसी निकलए लगल। ओना दुनू गोरे आँखि गड़ा सुमित्रे दिस देखै तकै छल मुदा हृदैमे हिलकोर उठए लगलै। जहिना भुमकमक समए पोखैरक पानि हिलकोरसँ किनछैरमे ऊपरो चढ़ैत आ फेर टघैर अपना जगहपर चलि अबैत तहिना दुनू गोरेक मनमे हुअ लगल...।

अछेलाल सुमित्राकेँ कहलक-

“भौजी, आइ घरि एहेन खिस्सा नै सुनने छेलौं। औझुका खिस्सा सुनलासँ बुझि पड़ैए जेना तरको आँखि खुजि गेल।”

अछेलालकेँ सुमित्रा किछु कहए लगलखिन कि बिच्चेमे पानि पीबैले बरद हुकरल। बरदक हुकरब सुनि बचेलालकेँ सुमित्रा कहलकखिन-

“बौआ, बरद पियासल छह। अँगनासँ बाल्टीन आनि पानि पीआ दहक।”

माइक बात सुनि बचेलाल आँगनसँ बाल्टीन आनि कलपर सँ पानि भरि कऽ आनि, बरदकेँ पीआबए लगल। सौंसे बाल्टीन पानि बरद पीब गेल। फेर दोसर बाल्टीन पानि आनैले बचेलाल कल दिस बढ़ल। पानि पीआ बचेलाल नादिमे कुट्टी लगौलक। नाइदमे कुट्टी पड़िते बरद हपैस-हपैस खाए लगल जहिना भूखल आदमी नूनगर-अनून नहि बुझैत तहिना बरदोकेँ भेलइ। बरदकेँ खाइत देख सुमित्राक मुहसँ हँसी निकललै। हँसैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलक-

“बौआ, तोहूँ जुआन छह आ घरोवाली जुआन छेथुन। मुदा...।”

अकचकाइत बचेलाल पुछलक-

“मुदा की?”

सुमित्रा बजली-

“मुदा, यएह जे कनियाँ जे छेथुन ओ मेहनतसँ हटल रहए चाहै छथुन। हदिघड़ी आरामे करब मनमे रहै छैन। पुरुख-नारीक जे वैवाहिक सम्बन्ध अछि से नै बुझै छथुन। तोहूँ अनका पढ़बै छह मुदा अपन बात बुझबे ने करै छहक। एहेन बात हम ऐ दुआरे कहि रहल छिअ जे आइ चालीस बर्खसँ हम ऐ आँगनमे रहैत एलौं हेन। जइ रूपमे हमर जुआनी बितल ओइसँ बहुत दूर हटल कनियाँक छैन। हमरा खुशी होइए जे बेटाकेँ मास्टर बना ठाढ़ केलौं। तँए अपन

मेहनतकेँ सार्थक बुझै छी। मुदा पुतोहु जनीक जे चालि-ढालि छैन ओइसँ भोगी-विलासीक परिवारक रूप-रेखा बनि रहल छह। मनुख तँ भोगी नै योगी होइए। हम बुढ़ भेलौं। केते दिन जीबे करब। मुदा परिवार देख अधमौगैत भऽ रहल छी। जाबे आँखि तकै छी ताबे घरक अधला केना देखल जाएत? मुदा की करब। हदिघड़ी रक्का-टोकी करब नीक हएत? तूँ असगरे केते करबऽ। लोहाक मशीन तँ नै छह। जेते खेत अखन छह तेतबे पहिनौं छेलह। जइसँ परिवार नीक नहाँति चलै छेलह। परिवारसँ आगू बढ़ि दुनू बेकती समाजसँ जुड़ल छेलौं। अखन दुख होइए जे बहुत निच्चाँ उतैर गेलौं मुदा तूँ दुनू परानी बुझै छहक जे आगू बढ़ि रहल छी। उन्नैत भऽ रहल अछि। अखन घरक आमदनीक दूटा रस्ता भऽ गेल छह- एकटा नोकरी, दोसर खेती। मुदा घुसैक रहलह हेन पाछू-मुहेँ।”

बिच्चेमे बचेलाल बाजल-

“माए, जेते तूँ बुझै छीही तेते हम थोड़े बुझै छिऐ?”

मुस्कियाइत सुमित्रा उत्तर दैत कहए लगलखिन-

“बौआ, आइ बुझि पड़ैए जे तोहर नजैर बदैल रहलह हेन किएक तँ जँ ई बात पहिने बुझितहक तँ सीखैक चेष्टा करितहक। मुदा जखने जागी तखने परात। जिनगीमे सभसँ पहिने सभकेँ अपन सीमा-सरहद बुझक चाही। जाघरि अपन परिचए लोककेँ नइ हेतै ताधैर गरथाहक जिनगीमे रहत। तोरा होइत हेतह जे हम बड़ गरीब छी वा बड़ धनीक छी मुदा जखन अपनासँ आगू-पाछू देखबहक तँ बुझि पड़तह जे हमरोसँ बेसी धनिक लोक अछि आ गरीबो अछि। जेना देखते छहक, जेतबो तोरा छह तेतबो अछेलालकेँ नइ छइ। भरल पेट रहने मनक विचारो नीक होइ छइ। जखन कि जरल पेटमे से केना औत?”

नमहर साँस छोड़ैत बचेलाल बाजल-

“हूँ-उ-उ।”

"हँ, ठिके बुझलहक। भूखल पेट मनकेँ जरबै छइ। जरल मनमे सिनेह केना औत? सिनेह तँ खाली बजने वा उपदेश सुनने नै औत। जाधैर दुनूक बीच सिनेहक पुल नै बनत ताधैर मनुख-मनुखक बीच द्वेष रहबे करतै। जाधैर द्वेष रहतै ताधैर छल-प्रपंच, बेइमानी-शैतानी, मारि-मरौवैल केना मेटाएत।"

निरीह भऽ बचेलाल पुछलक-

"तखन की करब? माए।"

मुस्की दैत सुमित्रा बाजए लगली-

"जहिना अछेलालक बेटाकेँ जनमै काल सेवा केलिऐ तहिना जिनगी भरि करबै। भगवान सभकेँ दूटा हाथ दूटा पएर, साढ़े तीन हाथक देह और सभसँ पैघ सम्पैत बुधिक खजाना सेहो देने छथिन। अपना ऐठाम सभसँ दुखद बात यएह अछि जे किछु गनल-गुथल लोक सम्पैत हथिया नेने अछि जइसँ गरीबी एते बढ़ि गेल अछि। कुम्हराक आबा जकाँ गरीब लोक भूखक आगिमे जरि रहल अछि। जइसँ दुनूक बीच बड़का पहाड़ ठाढ़ भऽ गेल अछि। वेचारा अछेलाल जेहने चीजसँ तेहने समांगसँ आ तेहने बुधियोसँ पाछू पड़ि गेल अछि। अखन धरि वेचारा उजड़ल-उपटल घरमे रहल तँए ज्ञान प्राप्त करैक अवसरे कहिया भेटलै। देवनक देखौल रस्ता हम जनै छी। तँए जहिना तोरा बेटा बुझै छिअ तहिना ओहूँ वेचराकेँ बुझै छी।"

तारतम करैत बचेलाल पुछलक-

"केना अछेलाल काकाकेँ अपन समांग बनाएब?"

"अखनेसँ खेत-पथारसँ लऽ कऽ बरदक सेवा करैक भार अछेलालकेँ दऽ दहक। तूँ नोकरी करै छह मुदा खेती-पथारी तँ मरि गेल छह। अखन भार बुझि पड़तह मुदा नहि, मनुखक भीतर जे सूतल शक्ति अछि ओकरा जगबैक छह। जखने ओ जागि जाएत तखने मनुख अपन बदलल रूप देखए लगत। जे खेत परती अछि ओ सोना

उपजए लगत। जइसँ अपनो परिवारक आमदनी बढ़त आ ओहू वेचाराकेँ परिवार हँसी खुशीसँ चलतै।"

माइक बात सुनि बचेलाल अछेलालकेँ कहलक-

"काका, आइसँ हमर आ अहाँक परिवार एक भऽ गेल। अखनेसँ खेत पथारक तरबदुत शुरू कऽ दिऔ। पाँच कट्ठा बाड़ी अछि, ओहीमे एक भागसँ घर बना लिअ आ बाँकीमे उपजा हेतइ। एकठाम घर रहने चोरो-चहारसँ रक्षा हएत। बच्चा सभकेँ पढ़बैत रहै छी जे एकटा ढेला छल आ एकटा पत्ता। दुनू जखन अपना जिनगी दिस तकैत तँ ढेलाकेँ बुझि पड़ै जे बरखा हएत तँ गलिये जाएब आ पत्ताकेँ बुझि पड़ै जे हवा उठत तँ उधिआइए जाएब। तँए दुनूक जिनगी अनिश्चिते बुझि पड़इ। दुनू सोचलक जे अगर दोस्ती कऽ लेब तँ दुनूक जिनगी हँसैत-खेलैत चलैत रहत। दुनू दोस्ती कऽ लेलक। जखन हवा उठै तखन ढेला पत्ता कऽ दाबि कऽ बँचा लैत आ जखन पानि होए तखन पत्ता ढेलाकेँ झाँपि बँचा लइत। तहिना तँ मनुखोक अछि?"

बचेलालक बदलल विचार सुनि गदगद हृदैसँ अछेलाल कहलक-

"बौआ, गरीबक हृदैमे छल-प्रपंच नै होइ छै आ ने मान-अपमान। कियो जँ हमरा अपमाने करत तँ हम ओकर की कऽ लेबै? हमरा की अछि जइसँ अपन मानक रक्षा करब...।"

सुमित्रा दिस देख-

"हमरो मनमे अछि भौजी जे जहिना अहाँ अपन बुझि बेटाबला बनेलौं तहिना अहूँकेँ माए बुझि सेवा करब।"

◌

शब्द संख्या : 2926

5.

बचेलाल स्कूल गेल। घड़ी पावैन रहने स्कूल तँ खूजल रहै मुदा विद्यार्थी अनुपस्थित छल। पहिने तँ बचेलाल भकचकेमे रहला जे छात्र स्कूल किए ने आएल मुदा किछु कालक पछाइत एक गोरेसँ भाँज लगलैन जे पावैन छी। अपन दृढ़ता रखैत बचेलाल चारि बजेसँ पहिने स्कूल नै छोड़ैक विचार मनमे ठानि लेलैन। स्कूलक ओसारपर कुरसी लगा असगरे बैसल मने-मन अपन जिनगीक सम्बन्धमे सोचए लगला। अखन घरि सोचैक जे प्रक्रिया बचेलालक रहैन ओ माइक विचार सुनला पछाइत बदलए लगलैन। जइ ढंगसँ अखन धरि सोचै छला ओ ढंग बदलने किछु स्पष्ट बुझए लगला। आँखि उठा कऽ आगू दिस तकला तँ सभ किछु बदलल बुझि पड़लैन। माएपर धियान पहुँचते अनासुरती मुहसँ निकललैन-

"माए साक्षात् सरस्वती छैथ। हुनकासँ बहुत किछु सीखैक अछि। जहिना मनुख अपन विशाल शक्तिक भंडार रहितो, अज्ञानवश नहि बुझि पबैत तहिना तँ हमहूँ छी। हर मनुखकेँ अपन लक्ष्य निर्धारित करि कऽ ओइ पाछू जान-पराणसँ लगि जेबा चाही तखने जिनगीक सार्थकता बुझि पड़तै। अखन धरि हमहीं जे बुझै छेलौं ओकरा इमनदारीसँ निमाहै छेलौं मुदा ओ असथिर चालि अछि। जहिना कोनो स्थानपर पहुँचैले कियो धीमी गतिसँ चलैए तँ कियो मध्यम गतिसँ मुदा तेज गतिसँ चलनिहारकेँ जल्दी सफलतो भेटैत आ दोसरो काज करैक मौका सेहो। चालि तेज केना हएत? ई मुख्य प्रश्न अछि। मुदा अपन चलब तँ जिम्मा ऐछे जे अनको बुझाएब ओहने जरूरी अछि जेहने अपना बूझब। मुदा पहिल दायित्व तँ अपन अपने अछि। हम शिक्षक छी। आठ घन्टा समए लगाएब आ बच्चा सभकेँ पढ़ाएब अछि जे चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे एक तिहाइ भेल। अहिना पत्नियोकेँ देखै

छिऐन...। छोटका बच्चाकेँ बेसी काल माइए रखै छैथ। बड़की बच्चिया स्कूलेमे बेसी काल रहैए। अँगना-घर बहारनाइसँ लऽ कऽ भानसोमे संग साथ माइए दइ छथिन। तखन जुआन औरतक काज केते बँचल? जरूर विचारमे केतौ कमी अछि। की पति-पत्नीक जिनगी सिरिफ बच्चेटा पैदा करब छी? की परिवारक खर्च जुटाएब सिरिफ मरदेक जिम्मा छी? की मरद दुनियाँक कोनो कोणसँ पसीना चुबा कमा कऽ अनैथ आ स्त्री घरक छहरदेबालीसँ नइ निकलैथ, यएह प्रतिष्ठा छी? औरत अपना पैरपर नै ठाढ़ होथि आ अइले पुरुखे दोखी छैथ, महिला नहि? की गुलामीक जिनगी सभ-ले कष्टकरे होइ छै सुखद नहि? ..एहेन ढेरो प्रश्न अछि जे सिरिफ वैचारिक समाधानसँ समाधान नहि हएत। किएक तँ प्रश्न समस्या बनि कार्यरूप धेने अछि। जेकर समाधान काजे कऽ सकैए। मुदा काजोकेँ तँ ढेरो बाधा अछि जे काजे ने हुअ दइ छइ। तखन की कएल जाए? ..एते विचार मनमे उठिते बचेलाल कुरसीपर सँ उठि विद्यालयक अँगनामे टहलए लगला। जहिना अधसुखू जारैनकेँ आगिमे देलासँ धुआँ बेसी होइत मुदा धधरा हेबे ने करैत तहिना बचेलालोक मनमे हुअ लगलैन। मुदा बिनु धधरा भेने इजोत केना हएत, अही बिचमे बचेलाल पड़ल छला।"

अखन बचेलाल ने विद्यार्थीकेँ पढ़बैत शिक्षक छैथ आ ने घरवाली-ले पाँच साए नम्बर जर्दा-पत्ती कीनिनिहार। ने अखन किसान परिवार कहौनिहार छैथ आ ने ऑफिसक बड़ा बाबूक जमाए। अखन मनुखक ओइ सघन बोनमे माटिपर पसरल हरिअर-हरिअर दूबि जकाँ छैथ जे घाससँ लऽ कऽ विशाल-विशाल गाछक निच्चाँमे अपन अस्तित्व हँसैत-खेलैत मौजसँ रखने अछि। की ओइ दूबिकेँ अपन जिनगीसँ आनन्द नै छइ? जरूर छै! ओहो सजि-धजि पूर्ण जुआनीमे आबि अपन प्रीतमक प्रतिक्षामे दिन-राति तकैत रहैए जे हमर अखुनका जे पुष्ट शरीर अछि ओ छीलि कऽ लऽ जा ओइ गाइक भोजन बनौत जे दूध सन अमृत दइए। अमृतक सृजनकर्ता हम नइ

छी? ..अनासुरती बचेलालक मनमे उठलैन- अखन हम ओ बतहा बबाजी ने तँ भऽ गेलौं जे शरीरसँ अलग भऽ नचैए? ..टहलल-टहलल बचेलाल कलपर जा मुँह-हाथ धोइ कऽ पानि पीलैन। जहिना धीपल लोहा पानिमे पड़िते सरा जाइए तहिना बचेलालोकेँ पानि पिबते भेलैन। पानि पीब धोतीक खूटसँ मुँह-हाथ पोछि बचेलाल घड़ी देखलैन, तँ चारि बजैत। कुरसी उठा कोठरीमे दऽ केबाड़ बन्न कऽ ताला लगा घर दिस विदा भेला। आन दिनसँ भिन्न मन। जहिना नसेरीकेँ निशाँ कम भेलापर भक् लगल रहैत तहिना बचेलालोकेँ होइन। रस्ताक कोनो सुधिये ने रहैन जे केतए पएर पड़ि रहल अछि। विचारक दुनियाँमे मन वौआइत रहैन। मनमे बेर-बेर उठैन जे हमर शक्ति सूतल अछि ओकरा जागाएब जरूरी अछि, मुदा ओ जागत केना? मनमे आबए लगलैन, डेढ़-डेढ़ घन्टा स्कूल अबै-जाइमे लगैए जँ साइकिल कीनि लेब तँ अदहा समैक बँचत जरूर हएत। अदहा समैक मतलब भेल डेढ़ घन्टा। तेतबे नहि, पाँच-दस मिनट देरियो भेने, तेजीसँ चलि कऽ समए पुरा लेब। नहाइ-खाइमे सेहो डेढ़-दू घन्टा लगि जाइए ओहूमे अदहा समए बँचा सकै छी। भोरू-पहर-के बिछानपर पड़ल रहै छी ओ पहिनौं उठि सकै छी। अगर सभ समैकेँ बँचा एकटा नव काज ठाढ़ कऽ लेब तँ खुशीसँ सम्हारि सकै छी। तेतबे नहि, फजिलाहा समैसँ जेते करब ओइसँ केते बेसी जीवनोपयोगी मशीनक उपयोगसँ हएत। तहूसँ बेसी काजक उत्साह एने सेहो हएत...।

घरपर आबि बचेलाल घड़ी देखलैन तँ आन दिनसँ बीस मिनट पहिने आबि गेल छला। ई केना भेल? मन पाड़ए लगला तँ रस्ताक चलब मने ने पड़ैन। दरबज्जेक चौकीपर कुरता, गंजी निकालि कऽ रखि बिनु हाथ-पएर धोनहि चीत गड़े सुति दुनू बाँहि मोड़ि चाइनपर लऽ आँखि बन्न केने सोचए लगला।

बाड़ीसँ अरुआ उखाड़ि सुमित्रा एक हाथमे खन्ती दोसरमे अरुआ नेने अबैत रहैथ। रस्तेपर सँ बचेलालकेँ देख चुपचाप आँगन

चलि गेली। सुमित्रा मने-मन बुझि गेलखिन जे जहिना साइकिलपर सँ गिरल आदमी हाथ-पएर तोड़ि रोडपर चीते पड़ल रहैए सएह गति बचेलालोकेँ भेल अछि। मुदा अँगनाक टाटक भुरकी देने रूमा बचेलालकेँ देख मने-मन सोचैत जे आन दिन स्कूलसँ सोझे अपना कोठरीमे आबि कपड़ा निकालै छला मुदा आइ एना किएक केलैन। भरिसक रस्तामे किछु भऽ गेलैन। धड़फड़ाइत अँगनासँ निकैल रूमा बचेलालक लगमे आबि पुछलकैन-

"किछु होइए?"

आँखि खोलि बचेलाल रूमाकेँ देख फेर आँखि मूनि लेलैन। रूमाक करेजमे डर सन्हिया गेल। मुँह लग मुँह लऽ जा रूमा फेर पुछलकैन-

"मन-तन खराब भऽ गेल?"

आँखि खोलि बचेलाल मन्द स्वरे मुदा सक्कत शब्दमे बजला-

"नहि! किछु ने होइए। अखन ऐठामसँ जाउ। मनमे समुद्रक लहैर उठि रहल अछि।"

धड़फड़ाइत रूमा सासुकेँ कहैले आँगन गेली। माथपर सँ साड़ी सरकल रूमाक। सासु लग जा कहलकैन-

"अखन अरुआ बनौनाइ छोड़ि देथुन। बेटाक मन खराब भऽ गेलैन। ने बजै छैथ आ ने मन उछटगर छैन। जेना मुँहक रंगो बदलल जाइ छैन। झब-दे चलौथु। देखथुन जे की भऽ गेलैन।"

दुनू हाथसँ अरुआ पकैड़ कत्तामे लगौने सुमित्रा रूमा दिस देख बजली-

"बच्चाकेँ किछु ने भेलैन। स्कूलसँ अबैमे थाकि गेल हेता।"

हड़बड़ाइत रूमा बजली-

"नहि माए! आनो दिन स्कूलसँ अबै छला कि आइयेटा पएरे एला। एना कहाँ आन दिन होइ छेलैन! केहेन बढ़ियाँ आन दिन देखै छेलिऐन!"

सुमित्राक बाँहि पकैड़ रूमा घिचने-घिचने दलानपर अनलकैन। दरबज्जापर अबिते सुमित्रा रूमाकेँ कहलखिन-

"अहाँ, झब-दे चाह बनौने आउ। हम अछेलालकेँ शोर पाड़ै छी।"

रूमा चाह बनबए गेली। सुमित्रा अछेलालकेँ शोर पाड़ए गेली। जारैन-ले अछेलाल सूखल कड़ची टोनियबैत रहए, तखने एकटा कड़ची तौड़ै काल आँगुर कपा गेलइ। जइसँ छर-छर खून बहैत रहइ। ताबे सुमित्रो लगमे पहुँचली। खून बहैत देख सुमित्रा मखनीकेँ लत्ता नेने अबैले कहलखिन। लत्ता नेने मखनी दौगल आएल। मखनीक हाथसँ लत्ता लऽ सुमित्रा अछेलालक ओंगरीमे नुरिया कऽ बान्हि देलखिन। खून बन्न भऽ गेल। टोनियेलहा कड़ची समैट मखनी चुल्हि लग लऽ गेल। अछेलालकेँ संग केने सुमित्रा बचेलाल लग एली। ताबत रूमो चाह नेने एली। सभ कियो चाह पिबए लगला। चाहक चुस्की लैत बचेलाल अछेलालकेँ पुछलखिन-

"काका, ओंगरीमे लत्ता किए लटपटौने छह?"

"अखने कड़ची टोनियबै छेलौं कि काप लगि गेल। अपना टेंगारी नइए जइसँ छकैड़तौं, तँए हाथेसँ तोड़ै छेलौं। खून बहए लगल तँए लत्ता बान्हि देलिऐ।"

बचेलालक गप सुनि-सुनि रूमाक मन असथिर होइत गेलैन। मुदा तैयो आँखि उठा-उठा बचेलाल दिस देखैत रहली। ..अछेलाल बचेलालकेँ कहलक-

"बच्चा, छुच्छे अहाँ खेतीक भार देलौं। बिनु ओजारे खेती केना करब? ने हर अछि आ ने कोदारि, ने घरमे नीक हँसूआ अछि आ ने खुरपी। ने कुरहैर अछि आ ने टेंगारी। तखन छुच्छे हाथे केते काज चलत। गाममे देखते छी जे ने केकरो कियो कोनो चीज दइए आ ने गरीबी दुआरे सभकेँ सभ चीज छइ। तखन केना काज चलत?"

अछेलालक बात सुनि बचेलालक मनमे उठलैन- जहिना साइकिलक दुआरे अपन समए नष्ट होइए तहिना ओजारक दुआरे अछेलाल कक्काक। ..मुस्की दैत सुमित्रा कहलखिन-

"बच्चा, जहिना समाज परिवारकेँ आगू बढ़बैमे सहायक होइ छै तहिना बाधको अछि। ओना कहैले सभकेँ-सभ नीके बात कहैए मुदा बेवहारमे उनटा छइ। अखन जइ सिमानपर ठाढ़ छह पहिने ओते पहुँचैक उपए करह। बुझैमे नै अबैत हेतह मुदा छह ओइसँ बहुत निच्चाँ, तँए अपन सिमानसँ निच्चाँ कोन-कोन रस्तामे पछुआएल छह, पहिने ओ बुझि ओकरा पुरबए पड़तह। जखन औझुका सिमानपर ठाढ़ भऽ जेबह तखन आगू-मुहेँ डेग उठतह। एकभग्गू भऽ आगू डेग उठबए चाहबह तँ केतौ-ने-केतौ लसैक जेबह।"

सुमित्राक विचार सुनि बचेलालक मनमे आशाक टेमी भुकभुकाए लगल। हृदैमे मद्धिम इजोत भेल। मुस्कियाइत बजला-

"माए, तोहर बात मनमे गड़ि गेल। अखन काज करै जोकर चारि गोरे छी, दू परानी अछेलाल काका आ दू परानी अपने। तूँ तँ बुढ़ भेलँह। जखन स्कूलमे छेलौं तखन मनमे उठल जे सभ दिन पएरे चारि कोस अबै-जाइ छी तँए एकटा साइकिल कीनि लेलासँ अदहा समए बँचत। जे समए उगरत ओकर उपयोग आगूक काजमे करब। जाबे आगू बढ़ैक चेष्टा नै करब ताबे आगू केना बढ़ब?"

मुड़ी डोलबैत सुमित्रा बजली-

"बच्चा, अखन दूटा रस्ता पकड़ैक छह। नोकरी करै छह तँ नोकरियो आ दू बीघा खेत छह ओहूमे जान फुकैक छह। जँ दुनू सुढ़िया कऽ चलए लगतह तँ अनेरे घर उठैत देखबहक। बड़ चिक्कन बात अछेलाल बौआ कहलखुन। जाबे खेती करैक ओजार नै रहतह ताबे मुकाबला केना करबहक?"

सुमित्राक बात समाप्तो ने भेल कि बिच्चेमे अछेलाल बाजल-

“भौजी, काल्हि बेरू-पहर जुगाय आबि कऽ डेढ़ियापर बैस रहल। हम अँगनामे बिछानक टुटल डोरी जोड़ैत रही। कनी कालक पछाइत थूक फेकैले उठलौं कि जुगायकेँ बैसल देखलिऐ। चोट्टे आँगन घुमि चक्कापर सँ तमाकुल-चुन लऽ चुनबैत डेढ़ियापर गेलौं। जुगायक सूखल मुँह देख पुछलिऐ जे ‘भाय केमहर-केमहर एलह, बड़ मन्हुआएल देखै छिअ।’ किछु बजैक हिम्मते ने वेचारे के होइ। तमाकुल देलिऐ। अपनो खेलौं। तमाकुल मुँहमे लेला पछाइत जेना बजैक हूबा भेलइ। कहलक, ‘अछेलाल भाय, कहैक तँ साहस नहियेँ होइए मुदा तोहूँ कोनो बिरान नहियेँ छह तँए कहै छिअ। देखबे करै छहक जे समए केते दुरकाल भऽ गेल अछि। लऽ दऽ कऽ चारि बीघा खेत छल। भगवान तीनटा बेटी देने छैथ। जेठकी बेटीक बिआह तँ बाबूए सोझहामे भेलइ। दूटा बँचल। मैझलीक बिआहमे सोमनसँ रूपैआ कर्ज लेलौं। आशा छल जे खेतक उपजासँ कर्जा सठा लेब। मुदा पैछला तीन साल केहेन भेल से तँ बुझले छह। रूपैआ नै देल भेल। एक दिन सोमन तेना ने बाजए लगल जे खीस चढ़ि गेल। मनमे आएल जे एक्को धूर खेत बँचाए वा नहि मुदा पाँच दिनक भीतर ओकर रूपैआ दऽ देबइ। मनमे तामस रहबे करए, डेढ़ बीघा खेत सस्तेमे बेच कऽ रूपैआ दऽ देलिऐ। आब अढ़ाइए बीघा खेत बँचल अछि। छोटकी बेटी पनरह-सोलह बर्खक भऽ गेल अछि। तँए बिआह केनाइ जरूरी भऽ गेल अछि। कथा ठेमाएल अछि मुदा बिनु खरचे दिन-ठेकान केना करब। तेहेन भूत लोककेँ लगल छै जे सभकेँ मचोड़ि-मचोड़ि खाइए। सूदी रूपैआ लैत डर होइए तँए तोरा लग एलौं जे रूपैआक कोनो जोगार लगा दएह।’

जुगायक बात हृदैकेँ पीघला देलक। मुदा गरीबक हृदए पीघलनहि की? अपने तँ तेरह दण्डक सकराँति बितैए तखन दोसरक मदैत की करबै। मुदा मनमे आएल जे बचेलाल तँ नोकरी करै छैथ तँए हुनकेँ कहबैन। समाजक बेटी आ अपना बेटीमे कि अन्तर होइ छइ।

जाबे बिआह-दुरागमन नै भेल रहै छै ताबे माए-बापक समाजमे बेटी रहैए, तेकर पछाइत तँ सदा-सदा-ले चलि जाइए।"

अछेलालक बात धियानसँ सुनि बचेलाल मुड़ी गोंति विचारए लगला। समाजमे हम नोकरी करै छी। रूपैआ कमाइ छी। समाजोक तँ आशा हमरा कमाइमे छइ। अगर रूपैआ हम नहियोँ देबै तैयो कोनो-ने-कोनो तरहेँ बिआह भाइये जेतइ। मुदा हमरा की बूझत? हमरा प्रति केते घृणा वेचाराकेँ हेतइ। जाबे जुआन बेटी केकरो घरमे रहै छै ताबे माए-बापक हृदए तिल-तिल कऽ जरैत रहै छइ। एहेन समैमे मदैत मदैत नहि जिनगीक पैघ बोझ उतारब हएत। हमर रूपैआ बैंकमे अछि। सुदिये केते देत? जेते सुइद देत तइसँ बेसी महगी बढ़तै जइसँ रूपैआक मोले कमत। तखन तँ मुरोसँ कम भेटत। ओइसँ नीक जे बिनु सुदिये रूपैआक मदैत कऽ दिऐ। ..एते बात मनमे अबिते बचेलाल मुड़ी उठा माए दिस तकलैन। सुमित्रो बचेलाले दिस तकैत। दुनू गोरेक विचार आँखिएसँ भऽ गेल। बचेलाल माएकेँ कहलक-

"माए, चारू-भर तँ अभावे-अभाव देखै छी। अभावकेँ बिनु मेटौने लोक केना आगू-मुहेँ ससरत। बेकतीसँ लऽ कऽ परिवार आ परिवारसँ समाज धरि सभ अँटैक गेल अछि। केना ससरत? जहिना नीच जमीनमे बहैत पानि ऊँच जमीनमे नै चढ़ि पबैत, तोहूमे जँ माटिक आड़ि बनल रहए, तखन तँ आरो मोसकिल होइत तहिना तँ जिनगियोमे लोककेँ होइए। जिनगी तँ हवाक गतिसँ नइ चलि सकैए जे ऊपर-निच्चाँक भेद बिनु बुझने चलैत रहत।"

मुस्कियाइत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

"बड़ सुन्नर बात बच्चा कहलह। निच्चाँक पानि जखन जमा भऽ मोटाइए तखन ऊपर चढ़ैक आशा होइ छइ। बाधा रूपी आड़ि तोड़ैले साधनक जरूरत होइ छइ। अखन धरि समाजिक रीति-रिवाज, चालि-ढालि एहेन बना देल गेल अछि जे एकटा डेग उठाउ तँ दोसर लसकत आ दोसर उठाउ तँ तेसर लसकत। मुदा धैर्य आ साहसक आवश्यकता

सभकेँ छइ। एक स्थानपर ठाढ़ भऽ वा बैस कऽ देखलासँ दूर धरि देख पड़ैत मुदा बातकेँ गौरसँ बुझए पड़त जे जहिना आँखिसँ निकलैत ज्योति पहिने लगसँ देखैत दूर तक देखैए तहिना सभसँ पहिने मनुखकेँ अपने देखए पड़तै, जखन अपनाकेँ देख लेत तखन दुनियाँ देखैक रस्ता भेटतै। जखने दुनियाँक रस्तापर चलब शुरू करत तखने थाल-खिचार छोड़ि सक्कत माटिपर पएर पड़तै। अखन तोरा सोझहामे तीन तरहक काज उपस्थित छह, पहिने अपना-ले साइकिल कीनि लएह जइसँ शरीरोक रक्षा हेतह आ समैयोक बचत आ दोसर खेतीक सभ समचा कीनि लएह।"

माइक बात सुनि बचेलाल अछेलाल दिस देखैत बजला-

"काका, काल्हि शनि छी। जँए एते दिन खगल तँए एक दिन आरो खगह। हमहुँ जँए एते दिन पएरे स्कूल गेलौं तँए एक दिन आरो जाएब। परसू रवि छी, छुट्टियो रहत। दुनू गोरे सबेरे जलखै कऽ बजार चलब। साइकिलो कीनि लेब आ खेतियोक सभ ओजार। जुगायोकेँ बेटीक बिआहमे मदैत कऽ देबइ। जे रूपैआ बैंकमे अछि ओ सभ उठा परिवारसँ समाज धरिमे उपयोग कऽ लेब। एक परिवारकेँ आगू बढ़ने तँ समाज नै अगुआएत। समाजकेँ अगुआइले सभ परिवारकेँ अगुआए पड़त। जहिना एकटा इंजन बड़का-बड़का कोठरीकेँ जोड़ि अपना गतिमे चलबैए तहिना जँ समाजोकेँ रस्तापर आनि घिचल जाए तँ ओहो ओइ गतिसँ जरूर चलत।"

बचेलालक विचार सुनि सुमित्रा बजली-

"बौआ, तूँ साइकिल कीनिबह। अपने तँ एक्के बेर स्कूल जेबह एबह। मुदा तेकर बाद तँ साइकिल घरेमे पड़ल रहतह तँए समाजमे केकरो साइकिलक जरूरी हेतै तँ ओकरो दिहक। अपनो काज चलतह आ दोसरोक चलतै। जहिना पहिलुका लोक पोखैर खुनबै छला जइसँ अपनो काज होइ छेलैन आ समाजोक होइ छेलइ। जाधैर समाजमे प्रेम नै बढ़त, एक दोसरकेँ मनुख बुझि मदैत नै करत ताधैर समाज

लड़खड़ाइते रहत। जखन सभ- सभ-ले देहसँ लऽ कऽ चीज धरिसँ ठाढ़ हएत तखन समाज निश्चित आगू-मुहेँ ससरत जइसँ सबहक कल्याण हएत। जुगायक बेटीक बिआहमे रूपैआ जरूर दिहक। ओ जँ खेत भरना दिअ चाहतह तँ ओकरा कहि दिहक जे खेत बटाइ वएह करए। वेचारा सुदियोसँ बँचि जाएत आ उपजो हेतइ। ओकरो तँ परिवार छै, ओहो तँ अन्ने खाएत।"

साँझू-पहर जुगाय अछेलाल ऐठाम आएल। अछेलाल सभ काज सहियारि पोखैर दिस जाइक विचार करिते छल कि जुगायपर नजैर पड़लै, नजैर पड़िते कहलक-

"जुगाय भाय, तोहर काज सुतैर गेलह। जखनसँ तूँ कहलह तखनेसँ मनमे खुटखुटी पकैड़ लेलक। मुदा केकरोसँ कोनो बात करैक समए होइ छइ। समए पाबि बचेलालकेँ कहलिऐ। वेचारा मानि गेल। ओ तोरा रूपैआ सम्हारि देथुन। तूँ निश्चिन्त भऽ बिआहक दिन-ठेकान करह।"

अछेलालक बात सुनि जुगाय बाजल-

"भाय, अखनो दुनियाँमे नीक लोकक कमी नइ छइ। जे अनका बेरपर ठाढ़ हएत ओकरो बेरपर भगवान ठाढ़ हेथिन। हम तँ अपना-मुहेँ हुनका किछु ने कहलयैन तँए संगे चलह जे अपनोसँ बचेलालकेँ कहबैन।"

"अखन तोरा कहैक काज नै छह। नीक हेतह जे परसू रवि दिन संगे बजार चलि रस्तेमे सभ गप करब।"

अछेलालक बात सुनि मुड़ी डोलबैत जुगाय बाजल-

"बड़बढ़ियाँ भाय।"

◌

शब्द संख्या : 2453

6.

देवनकेँ पाबि दीनमा आ भुखनीकेँ वेहद खुशी भेल। भुखनीक मनमे आएल- कमाइबला बेटा भगवान पठा देलैन। मनमे एकटा पैछला बात एलै, हमरासँ एक दिन पहिने दुखनीक जन्म भेल, बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहबो करै छेलौं आ खेलबो करै छेलौं। जब कनी नमहर भेलौं तब संगे पत्तो बीछी, गोबरो बिछ-बिछ आनी आ चिपड़ियो पाथी। घासो छिलैले जाइ आ बकरियो चराबी। बाधमे रखबारक खोपड़ी लग बैस चैरखियो-चैरखी खेली। खेसारी मासमे अँगनेसँ नून नेने जाइ आ खेसारी मुड़ीक झक्खो बना-बना खाइ। आमक जखन टुकले होइ तरवनेसँ बिछ-बिछ खाइ। अँगनेसँ चुन पत्तामे नेने जाइ आ खटहो आममे लगा दिऐ तँ ओहो खट्टा नै लगए। जब ढेरबा भेलौं तब माइए संगे दुनू गोरे धानो-गहुम काटी आ लोढ़बो करी आ खेसारियो मौसरीक बोइनो करी। किछु दिनक पछाइत धानो-मरूआ रोपए लगलौं। हमरासँ पाँच बरख पहिने दुखनीक बिआह भेल। ओ सासुर बसए लगल आ हमर बिआहो ने ताबे भेल। दुखनीक बेटो ढेरबा भऽ गेलै हमर लिधुरिये अछि। मुदा भगवान हमर दुख बुझलैन। कमाइबला बेटा अनासुरती पठा देलैन...।

दीनमा बुझैत जे बाँहि पुरैबला समांग भऽ गेल। दुनू गोरे संगे खेतो तामब आ धानो-मरूआक रोपैन करब। एक जनक बोइन तँ बेसी हएत। जँ कहीं गिरहत बच्चा बुझि देवनकेँ काज नै अढ़ौत तँ ठीक्केपर काज लऽ लेब। अपने कनी बेसी भीर पड़त तँ पड़त, एकटा बोइनो बेसी हएत किने। तीनटा कमेनिहार भेलौं। आब कोनो चीजक दुख नै हएत। कपारमे जाबे दुख लिखल छल ताबे कटलौं। आब सुखक दिन आबि गेल।

पूस-माघक जाड़ दीनमा आ भुखनी केना बितबैत रहए से देवन गौरसँ देखए लगल। ने घरमे सीरक आ ने एक्कोटा कम्मर। फाटल-पुरान साड़ी-धोती पहिर दुनू परानी दीनमा दिन बितबैत। पहिलुका गुदरी-चेथरी साड़ी-धोती सेरिया कऽ साटि, ओकरा सीबि सुजनी बनौने। वएह ओढ़ैत रहए। जइ दिन बेसी जाड़ होइ तइ दिन अखरे पुआरपर सुति बिछानो ओढ़ि लिअए। सात हाथक एक्केटा घर जइमे सभतूर हँसी-खुशीसँ रहैत। ओही घरमे भानसो होइत, चीजो सभ रखैत आ सभतूर सुतबो करैत। एक भाग भानस करैक चुल्ही, दोसर भाग बिछान आ बीचमे सूखल गोबर करसीक घूर लगबैत। ओना घर गरम रहैक नीक बेवस्था छेलै मुदा बिनु लेबल टाटक घर रहने, चारू दिससँ ठंढ आबि घरोकेँ पानि जकाँ ठंढा कऽ दइत। रातिमे जाबे भानस होइ ताबे धिया-पुताक संग दीनमा घूर तपैत।

एक दिन भोरहरबामे पछिया हवा उठल। दीनमाक दुनू ठेहुनसँ निच्चाँ पएर उघारे रहइ। जड़ाएल हवासँ दुनू पएर कठुआ कऽ सुन्न भऽ गेलइ। दीनमाक निन टुटल। ओछाइनसँ उठि बाहर जाइक मन भेलइ। जहाँ उठए लगल कि पएर सोझे ने होइ। उठि कऽ बैस पएर टोबए लगल। ठेहुनसँ ऊपर तँ बुझै मुदा निच्चाँ किछु बुझबे ने करैत। मने-मन दीनमा सोचए लगल एना किए भेल। जँ ठेहुनसँ निच्चाँ पएर दुइर भऽ जाएत तँ चलब केना? डरे दीनमाक छाती धक-धक करए लगलै। घरवालीकेँ उठौलक। मुँह उधारि भुखनी कहलकै-

“बड़ कन-कन्नी अछि, मुँह झाँपि कऽ सुइत रहू।”

कहि भुखनी अपन मुँह झाँपि लेलक। मुँह झँपैत देख दीनमा जोरसँ बाजल-

“हमरा पएरमे भरिसक साँप काटि लेलक, सुन्न बुझि पड़ैए।”

साँपक नाओं सुनिते भुखनी धड़फड़ा कऽ उठल। उठि कऽ चुल्ही लग राखल छोलनी लऽ पएरमे भिरा पुछलकै-

“केहेन लगैए? की भीरौने छी?”

दीनमा जवाब देलकै-

"आँखिसँ तँ छोलनी देखै छी मुदा भिरल किछु ने बुझि पडैए।"

छोलनी रखि भुखनी बिठुआ कटैत पुछलकै-

"केहेन बुझि पड़ैए?"

दीनमा जवाब देलकै-

"किछु बुझबे ने करै छी।"

अखियास करैत भुखनी पुछलकै-

"छुछुनैरो-तुछुनैरोक बोली सुनलिऐ?"

मध्यम तामससँ दीनमा बाजल-

"से कि हम जगले छेलौं। अखन नीन्न टुटल तँ उठिये ने भेल। तब बुझलिऐ।"

भुखनीक मनमे उठलै- हे भगवान एहेन दूरकाल समैमे कोन दुख पठा देलह। दुखे पठबैक छेलह तँ दिन-देखार पठैबतह। एत्ती रातिमे हम की करबै, केना पार-घाट लागत।"

भुखनीकेँ आहि-आलम करैत देख दीनमा बाजल-

"अगियासी करू पछबा बहै छै, भऽ सकैए ठंढी लगि गेल हुअए।"

ओछाइनपर पड़ल-पड़ल देवन सभ बात सुनैत रहए। चुल्हीसँ भुमहुर बला आगि निकालि भुखनी घूर पजारए लगल। शीताएल जारैन रहने घूर पजरबे ने करइ। धुइयेँ बेसी होइ। धुआँक दकसँ खोंखी करैत देवनो उठल। घरमे धुआँ भरि गेल। धुआँ दुआरे कोइ किछु देखबे ने करैत। देवन भुखनीकेँ कहलक-

"मौसी, ओछाइनेक पुआर लऽ कऽ कनी घूरमे देही ने।"

हँथोइर कऽ भुखनी एक मुट्ठी पुआर निकालि घूरमे देलक। धुआँ दुआरे भुखनीकेँ तेते खोंखी उठल जे फुकले ने होइ। तरे-तर दीनमाकेँ तामस उठइ। मनमे होइ जे ऐ मौगियाकेँ दू घरमेचा दुनू कनगोजमे लगा दी, हम उठैबला नइ छी तँए। ऐ मौगियाकेँ कोनो लूरिये ने छइ।

मुदा फेर होइ जे एकटा दुख तँ लधले अछि, दोसर बेसाहब नीक नै हएत। तँए चुप्पे छल। घूर धधकलै। धुआँ सभ हवाकेँ चाटि गेल। घूर धधैकते शीशीसँ भुखनी तरहत्थीपर करूतेल लेलक। दुनू तरहत्थीमे मिला आगिक ताउ लगा-लगा दीनमाक ठेहुनमे रगड़ए लगल। कनी कालक पछाइत दीनमाकेँ ठेहुनक गिरह हल्लुक भेलइ। ठेहुन हल्लुक होइते दीनमा पएर मोड़लक। अपने हाथे पएरक गिरह टोबए लगल। पएर टोबि दीनमा भुखनीकेँ कहलक-

"कनी डिबिया-तेल आ करूतेल मिला तरबा रगैड़ दिअ।"

डिबिया तेल आ करूतेल मिला भुखनी पतिक तरबा रगड़ए लागलि। तरबा रगैड़ते दीनमाक झुनझुनी छुटि गेल। मन हल्लुक होइते दीनमा उठि कऽ बाहर भेल। बाहरसँ आबि भुखनीकेँ कहलकै-

"जाड़क सुख धनीक लोककेँ होइ छइ। गरीब-गुरबाक हिस्सामे अनेरे भगवान जाड़ देने छथिन।"

वसन्तक आगमन भेल। काल्हिये सरस्वती पूजा सेहो छी आ किसान सभ हर ठाढ़ सेहो करता। समए सेहो गरमाए लगल। छोट दिन रसे-रसे नमहर हुअ लगल। केते हरबाह गिरहत बदलैक विचार कऽ नवका गिरहत ठेमौलक। दीनमा ऐठाम सेहो कएटा गिरहत आबि हर जोतैले कहलकै मुदा दीनमा नइ गछलक। किएक तँ वसन्त पंचमीमे जे हरबाह जइ गिरहतक हर ठाढ़ करत ओकरा सालो भरि ओही गिरहतक हर जोतए पड़तै। बन्हुआ काज दीनमाकेँ पसिन नहि। छुट्टा रहने बोनिहार स्वतंत्र भऽ काज करैत। जैठाम काज करैक मन हेतै तैठाम काज करत आ बोइन लेत। अखन धरि गाममे यएह प्रथा चलैत जे हरबाहकेँ पाँच कट्टा खेत बटाइ करैले दऽ दैत आ भरि साल काज करबैत। मुदा ऐ बेर अदहा लोक पंजाब-दिल्ली चलि गेल तँए हरबाहक मंहगी भऽ गेलइ। हरबाहि करैबला सभ अपनामे विचारि लेलक जे हरबाहिक बोइन एक अढ़ैया कच्चीसँ बढ़ा पाँच किलो बोइन लेब नइ तँ हरबाहि नै करब। संगे बटाइ खेतक उपजा अदहा नै देबै,

तिहाइ देबइ। तैपर जँ किसान तैयार हुअए तँ बड़बढ़ियाँ नइ तँ अपन-अपन हर अपने जोतह।

दस बरिससँ भुटकुमरा राधाकान्तक हर जोतैत आबि रहल छल। ऐ बेर हर ठाढ़ करैसँ तीन दिन पहिनहि जवाब दऽ देलकै। हर ठाढ़ होइसँ एक दिन पहिने राधाकान्त भुटकुमरा ऐठाम आबि हर ठाढ़ करैले कहलखिन, तैपर भुटकुमरा हर ठाढ़ करैसँ इनकार करैत कहलकैन-

“गिरहत पाँच किलो बोइन लेब। सभ हरबाह अपनामे बैस निर्णए केलक। जँ पाँच किलो हरबाही बोइन देबै तखन तँ हर ठाढ़ करब नइ तँ नै करब।”

भुटकुमराक बात सुनिते राधाकान्तक आँखि लाल हुअ लगलैन। मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“गामक जँ सभ गिरहत पाँच किलो बोइन तौलत तखन हमहूँ तौलब। जँ से नै देत तँ असगरे हमहीं किए देबइ।”

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमरा बाजल-

“आन गिरहत आ आन हरबाह जे करए मुदा हम पाँच किलो बोइन लेबे करब जँ से नै देब तँ हरबाहि नै करब।”

‘हरबाहि नै करब’ सुनि राधाकान्त आगि-बबुला होइत भुटकुमराकेँ कहलखिन-

“अगर सभ गिरहत पाँच किलो देत तँ हमहूँ देबह। जँ नै देत हमहूँ नै देबह। मुदा काल्हि पावैनक दिन छी तँए हर ठाढ़ करबे करिहह।”

भुटकुमराक मनमे एलै जे ई गिरहत सबहक चलाकी छी। जखने हर ठाढ़ करब तखने बन्हा जाएब। जखने बन्हा जाएब तखने पनचैती बैसा कऽ बलजोरी हर जोतेबे करत। तँए अखुनके फड़िछेलहा नीक रहत। मुँह चोरौने काज नै चलत। खुलि कऽ खेलाइये पड़त। दृढ़ भऽ भुटकुमरा बाजल-

“कियो बोइन दइ आकि नै दइ मुदा हम पाँच किलो नेने बिनु हर ठाढ़ किनौं नै करब।”

भुटकुमराक सक्कत बोली सुनि राधाकान्त अकैड़ कऽ बजला-

“कियो किछु करै मुदा तोरा पुरने बोइनपर हर ठाढ़ करए पड़तह जँ नै करबह तखन बुझल जेतइ।”

जहिना राधाकान्त कठोर होइत बजला तहिना भुटकुमरो कहलकैन-

“ऐ भागक सुरूज ओइ भाग किए ने उगै मुदा भुटकुमरा अपन बात कोनो हालतमे नइ बदलत।”

तेबर बदलैत राधाकान्त-

“हर नै ठाढ़ करबह तँ हमर कर्जा चुका दएह। तोहूँ घर हमहूँ घर। जाबे कर्जा नै चुकेबह ताबे गट्टा पकैड़ हर जोतेबे करबह।”

भुटकुमरा बाजल-

“बहुत गट्टा पकड़निहारकेँ देखलिऐ जँ तोरा हिम्मत हुअ तँ गट्टा पकैड़ कऽ देख लिहह। मरदक गट्टा छिऐ मौगीक नहि।”

राधाकान्त-

“बड़बढ़ियाँ, हर नै ठाढ़ करैक मन छह तँ नै ठाढ़ करिहह। मुदा हमर कर्जा तँ देबह। चलह हमरा ऐठाम। बोहीमे जेते लिखल हएत तेते दऽ दिहह। तोहूँ घर हमहूँ घर।”

राधाकान्तक बात सुनि भुटकुमराक मनमे एलै जे जँ कहीं ओइठाम जाएब आ सभ समांग मिलि मारए तखन तँ नाँहकमे मारि खा जाएब। गुनधुन करैत भुटकुमरा बाजल-

“एतै बोही नेने आबह, जे बाँकी हैतै से दऽ देबह।”

राधाकान्तक मनमे आएल जे जँ ऐठाम बोही लऽ कऽ आबी आ छीनि कऽ निशान फाड़ि दिअए तखन तँ सभ चौपट भऽ जाएत।

दुनू गोरेमे बक-झक चलिते छल कि भुटकुमराक बेटा–गुलेतिया पंजाबसँ आएल। तीन साल पहिने गुलेतिया मामा गामक लोक

सबहक संग दिल्ली गेल। दिल्लीमे नोकरी भेबे ने केलइ। पनरह दिन घुमि-फिर दिल्लीमे ठमौलक। मुदा केतौ गर नै देख पंजाब विदा भेल। गाड़ियेमे एकटा नवयुवक पंजाबी सरदारजी सँ भेँट भेलइ। सरदारजी दिल्लीमे पढ़ैत छल। ओही सरदारजीक संग गुलेतिया पंजाब गेल। सरदारजीक पिता सुभ्यस्त गिरहस्त। जहिना खेती-वाड़ी तहिना मालो-जाल। ओहीठाम गुलेतिया रहि गेल। पंजाब जाइ काल गुलेतिया कोनो चिन्हरबासँ भेँट नै केने रहए। अनका मने गुलेतिया हरा गेल। कियो कहै 'गाड़ीमे चप्पा पड़ि गेलै' तँ कियो कहै 'चोरिमे पकड़ा गेल अखन जहलमे अछि' तँ कियो कहै 'गुलेतिया अरब चलि गेल' तँ कियो कहै 'दलाल ठकि कऽ बेच लेलकै' तँ कियो कहै 'क्रिमिनलक गैंगमे अछि' तँ कियो कहै 'पॉकेटमारी करैए' मुदा भेँट केकरो ने होइ...।

जेना-जेना दिल्लीक लोक गप उड़बै तहिना-तहिना गामोमे समाद आबि-आबि पसरैत। रंग-बिरंगक गुलेतियाक समाचार सुनि दुनू परानी भुटकुराक कान बहिर भऽ गेल। साल भरि गुलेतियाक कोनो चिट्ठी-पुरजी आ रूपैआ गाम नै ऐलै तखन माइयो-बाप छातीमे मुक्का मारि सवुर कऽ लेलक।

जइ सरदार ऐठाम गुलेतिया रहै छल ओ साँझू-पहरकेँ गुलेतियाकेँ खिस्सा-पिहानीसँ लऽ कऽ खेती-पथारी, कुटुम-परिवार सबहक सम्बन्धमे कहइ। मने-मन गुलेतिया तँइ कऽ लेलक जे ने नोकरी करैले दोहरा कऽ आएब आ ने घर रूपैआ पठाएब। जइ दिन बुझि पड़त जे अपन कारबार ठाढ़ करै जोकर कमा लेलौं तइ दिन सभ हिसाब-बारी कऽ, रूपैआ लऽ गाम चलि जाएब। सएह केलक।

..गुलेतियाकेँ देख भुटकुमरा चिन्हियेँ ने सकल। देहमे पंजाबी पैजामा-कुरता आ हाथमे काड़ा पहिरने खूब नमहर-नमहर केश-दाढ़ी गुलेतियाकेँ रहइ। दरबज्जापर अबिते गुलेतिया बैग-एटैची रखि पिताकेँ गोड़ लगलक। माथ ठोकि भुटकुमरा आसिरवाद तँ दऽ देलकै मुदा चिन्हलक नहि। एक बेर मनमे एलै जे गुलेतिया ने तँ छी, फेर भेलै

जे ओ तँ मरि गेल। राधाकान्त गुलेतियाकेँ देख ससैर गेल। ताबे गुलेतियाक माइयो अँगनासँ मुँह झँपने निकैल ओलती लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। तरे-तर गुलेतिया हँसैत मुदा चुप-चाप ठाढ़। टोलक धिया-पुता सभ हल्ला करैत जे 'हींगबला आएल, हींगबला आएल!' हींगबलाक नाओं सुनि-सुनि आरो धिया-पुता जमा हुअ लगल।

कनी कालक पछाइत अचताइत-पचताइत भुटकुमरा गुलेतियाकेँ पुछलकै-

"बौआ, अदहा-छिदहा चिन्हबो करै छिअ आ नहियोँ चिन्है छिअ तँए ठीकसँ अपन चिन्हारे दएह?"

मुस्कियाइत गुलेतिया बाजल-

"गुलेतिया छिअ।"

'गुलेतिया' सुनिते भुटकुमरा हक्का-बक्का भऽ गेल। आँखिसँ नोर टघरए लगलै। माए दौगल आबि दुनू हाथे भरि पाँज कऽ पकैड़ छाती लगौलक। जेना तेज हवाक बीच घनघोर बरखा होइ काल ऊपरसँ ठनका खसैत आ पृथ्वीमे भुमकम होइत तहिना भुटकुमरा ऐठाम बुझि पड़ए लगल।

गुलेतिया मात्र पाइयेटा कमा कऽ नै अनलक। ओ अनलक जिनगी जीबैक ढेरो लूरि, ओ अनलक संकल्प, ओ अनलक कठिन मेहनत करैक उत्साह, ओ अनलक परिवार रूपी मोटाकेँ ऊपर फेकैक उदेस।

राधाकान्त सोझे घर दिस विदा भेला। मनमे एलैन, आइ बेइज्जत भऽ गेलौं। मुदा लगले दोसर मन कहलकैन- इज्जत तँ छिऐ धन तखन बेइज्जत केना भेलौं। जँ ओकरा अपना हाथसँ पाँच किलो बोइन तौल देबै तखन ने बेइज्जती हएत। मनमे हँसी उठलैन- भुटकुमरा कर्जा तरमे दाबल अछि। दाबल मात्र लेलहेमे नइ अछि, ओकर जिनगियो करजेक रस्तासँ चलैए। तखन पानिमे रहि मगरसँ बैर केते काल..!

आन सालक हिसाबे ऐ साल दीनमा दोबर खेत-तमिया केलक। सरस्वती पूजा दिनसँ दीनमा खेत-तमनीमे हाथ लगौलक जे बैशाखक जानकी नवमी दिन धरि तमैत रहल। तमनी तँ किछु दिन आरो चलितै मुदा बिहरिया हाल नै भेने खेत सभ सक्कत भऽ गेलै तँए छोड़ि देलक। आन सालसँ बेसी गरमी ऐ बेरक बैशाखेमे पड़ए लगलै।

दीनमाक घरसँ थोड़े हटि बीच बाधमे एकटा आमक गाछ रहइ। ओ गाछ जेहने नमहर तेहने झमटगर छल। सभतूर दीनमा ओही गाछक निच्चाँमे बैशाख-जेठक रौद बितबैए। अखार चढ़िते घनघनौआ बरखा भेल। बर्खाक आनन्द सभतूर दीनमा बाधेमे लेलक। बर्खाक आनन्द लइ काल दीनमाक मनमे एलै- अनेरे भगवानकेँ लोक बेइमान कहै छैन। जँ ओ बेइमान रहितैथ तँ एते आनन्द गरीब-गुरबाकेँ किए दैतथिन।

असगरे देवन बैस मने-मन जोड़ए लगल, साल लगि गेल। आब ऐठाम एक्को दिन नै रहब। जँ एक्केठाम रहि समए बिताएब तँ दुनियाँ केना देख पएब। ..केकरोसँ किछु कहने बिना देवन नवटोलसँ विदा भऽ गेल।

◌

शब्द संख्या : 2017

7.

नवटोलसँ टपि देवन रस्तो काटए आ मने-मन सोचबो करए जे ऐगला केहेन गाम हएत। दू तरहक विचार देवनक मनकेँ घेरने। पहिल ई जे आगूक मतलब ‘नीकमे आगू’ आ दोसर ‘अधलामे आगू।’ फेर मनमे उठलै जे नीकोमे आगूक मतलब तँ दू तरहक अछि। एकटा होइत ‘देहक सेवामे’ आ दोसर होइत ‘आत्मा-बुधि-विवेकक सेवामे।’

फेर मनमे उठलै, आत्मा तँ प्रकाश स्वरूप होइत तखन बिनु प्रकाशे हएत की? तहिना अधलो दू तरहक अछि। जेकर आधार जाति, धरम आ धन अछि। जेना कोनो गाममे उच्च जातिक बोलबाला होइ छै जे नीच जाति-ले अधला भेल। तहिना नीच जातिक बोलबाला बला गाम उच्च जाति-ले अधला भेल। तहिना धरमो आ धनोक आधारसँ होइत। ..बच्चा देवन जेते सोचए चाहैत तेते ओझराएल जाए। उम्मस रहने जेना लोकक मन औल-बौल करैत तहिना देवनोकें हुअ लगल। रस्ता दिस धियाने ने रहलै। पैछला जेना सभ किछु बिसैर गेल आ ऐगलाक दरबज्जे बन्न देखइ...।

देवन बैस रहल। मनमे कोनो विचार उठबे ने करइ। शरदक समए रहने सुरूजेक किरिणिक संग निनो आबि गेलइ। मनमे किछु रहबे ने करै तँए देह हल्लुके रहै आ निनोकें खुजल दरबज्जा भेटलै, देबनक देहमे घोंसिया गेल। रस्तेपर देवन सुति रहल। ..बुधि-विवेक तँ पहिनहिसँ बच्चे छल, माइक कोरामे सुरूजक गरमी भेटलै, निसभेर भऽ गेल। मुदा छोटके निन छेलइ। ज्ञान तँ जगलै मुदा देह पड़ले रहलै। जेना कियो ज्ञानकें कहलकै-

“ऐ बटोही, सुतने रस्ता कटतह जे दुनियाँ देखबह। तेहेन बाधमे सूतल छह जे खेतक आड़ि सभमे साँपक बिल देखै छहक। जल्दी उठि कऽ रस्ता नापह नइ तँ साँप आबि कऽ धऽ लेतह। पड़ले रहि जेबह।”

देवन उठि कऽ बैसल। चारू-भर आँखि उठा कऽ तकलक। निनाएल आँखि रहने साफ-साफ किछु ने देखलक। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि आँगुरसँ काँची निकाललक। काँची निकालिते फरिच्छ देखए लगल। उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू बढ़ल। किछु दूर आगू एकटा गाम नजैर पड़लै। कातेसँ हियासए लगल जे गाम नमहर अछि कि छोट। जेते गामक लग पहुँचैत जाए तेते आँखि झलफलाइत गेलइ। गाम नमहर अछि की छोट से बुझिये ने पड़इ। दछिनबारि भाग देखलक जे एकटा खूब नमहर कोठा झलकै छइ। खूब नमहर-नमहर

तारक गाछ सभ सेहो छइ। एक टकसँ देख देवन उत्तरबारि भाग तकलक तँ देखलक केते खुलोमे आ केते गाछक निच्चोँ सभमे, दस-बारह हाथ नमती आ चारि-पाँच हाथ चौड़गर टाटकेँ मोड़ि-मोड़ि घर बनौल अछि। अदहा छिदहा खजूरक गाछ आ अदहा-छिदहा लताम, नेबो आ दारीमक गाछ बुझि पड़लै। देवन देखबो करए आ चलबो करए। गाम पहुँचल। गाम पहुँचते रस्ताक दहिना भागमे एकटा औरतकेँ देखलक जेकर बताहि जकाँ बगए छइ। ओ औरत पाँच बर्खक बेटाकेँ कहैत रहइ-

"स्कूल जेमे की नहि?"

तैपर कुही भऽ भऽ कनैत बेटा कहइ-

"मरि जेबो मगर उसकूल नै जेबौ। माहटर सहाएब अपनोसँ नमहर ठेंगा लऽ कऽ मारैए।"

बेटाक बातपर धियान नै दऽ माए पुचकारि कऽ कहलकै-

"बौआ, नै पढ़मे तँ बिआहो ने हेतौ।"

"नइ हएत तँ नै हएत।"

माए-बेटाक बात देवन धियानसँ सुनबो केलक आ सोचबो केलक। थोड़े कालक पछाइत रस्तासँ उतैर देवन ओकरे अँगनाक बाट धेलक। डेढ़ियापर पहुँचते ओ औरत देवनकेँ पुछलकै-

"बौआ, केतए रहै छह?"

परिचित जकाँ देवन बाजल-

"हमरा गाम-ताम नइए। जतइ मन-फूरत रहि जाएब।"

छगुन्तामे पड़ि ओ औरत सोचए लगल। कहैए गाम-ताम नइए! कोराक बच्चा झूठ बाजत! माए-बाप तँ जरूर हेतइ। फेर मनमे एलै जे मनुखो तँ माले-जाल जकाँ जिनगी बितबैए। बगए-बाणिसँ अनाथ बच्चा जकाँ बुझि पड़ैए! ने किछु खाइले छै आ ने भरि देह बस्तर देखै छी! फेर ओ औरत देवनकेँ पुछलकै-

"माए-बाबू केतए छैथ?"

निधोख भऽ देवन उत्तर देलक-

“दुनू गोरे मरि गेल। असगरे छी।”

असगर सुनि कहलकै-

“ऐठाम रहबह?”

मुस्कियाइत देवन कहलक-

“हँ, रहब। मगर जहिया मन हएत तहिया चलि जाएब।”

देवनक बात सुनि ओ मने-मन सोचए लगल- हमहूँ तँ असगरे छी। आदमीक जरूरी हमरो अछि। जँ कनी समरथ रहैत तँ खेतियो-पथारी करैत मुदा तैयो तँ पुरुखे छी। कहलकै-

“बौआ, एतै रहि जाह।”

देवनो रहैले तैयार भऽ गेल। देवनकेँ राजी देख पुछलकै-

“रातिमे खेने छेलह की नहि?”

देवन कहलक-

“हँ, खेने छेलौं अखनी भूख नइए।”

जहिना कोनो फूलक गाछक सभ पात बकरी खा लैत आ खाली डारि आ गोटे आधे फूलक कोढ़ी बचल रहैत जे समए पाबि खिल उठैत तहिना ओइ औरतक मनमे आशा जगल। घरसँ बिछान निकालि देवनकेँ बैसैले कहलक। देवन बिछौनपर बैस गेल। देवनकेँ बैसल देख ओ बच्चा सेहो आबि बैसल आ ओ औरत अँगनाक काजमे लगि गेल।

देवन बच्चाकेँ पुछलकै-

“बौआ, अहाँ अपनो नाओं कहू आ बाबूओक?”

बच्चा उत्तर देलक-

“हमर रमुआ छी आ माइक बुधनी। बाबू मरि गेल”

रमुआक बात सुनि देवनक मनमे एलै जे बपटुगर जकाँ नहि बुझि पड़ैए। मुदा झूठ तँ नै कहने हएत।

वासन-कुसन अखारि, चुल्हि लग जारैन रखि पानि भरि बुधनी देवन लग आबि बैस गेल। बुधनीकेँ ओछाइनपर बैसते देवन पुछलक-

“अहाँक पति कहाँ छैथ?”

पतिक नाओं सुनिते बुधनीक दुनू आँखि नोराए लगल। मुँहक बोलीकेँ सोग धकियबए लगल। दुनू चुप। ने देवन बजैत आ ने बुधनी। मुदा दुनूक चारू आँखि आगू-पाछू, ऊपर-निच्चाँ, दहिना-बामा भाग देखैत आगू बढ़ि एकठाम भऽ गेल। एकठाम होइते बुधनी कहए लगल-

“बौआ, पौरुकाँ सालक गप छी। अखन तँ एकोटा नाँगैर नइ अछि। असगरूआ छी। खुट्टा परहक महींस उठल। बड़ दुधगर छेलए। अपनो सभतूर दूध खाइ छेलौं आ बेचबो करै छेलौं। हाथ-मुट्ठीमे दू-पाइ-चारि पाइ रहिते छेलए। गौंआँ सभ मिलि कऽ एकटा पारा पोसने अछि, हमहूँ पाँच रूपैआ बेहड़ी देने रहिऐ। बड़ सहठुल पारा छइ। महींस उठल तँ पारा लगि गेल। दुनू एक्केमे खेबो करै आ रहबो करइ। साँझ पड़ि गेल। अनहरिया पख। तँए दोसरे साँझसँ अन्हार गुप-गुप बुझि पड़इ। अन्हारेमे एकटा अनठिया पारा चलि आएल आ भैंसक घर पैस कऽ दुनू पारा लड़ए लगल। रमुआक बाप, एकटा भराठ लऽ कऽ अनठिया पाराकेँ भगबए चाहलैन। लड़ब छोड़ि पारा हुनकेँ खिहारि कऽ पटैक सींगसँ हूरा लिअ लगलैन। हम जोर-जोरसँ हल्ला करी- जे हौ लोक सभ रमुआ बापकेँ पारा खून कऽ देलकैन दौगै जा..., जाबे लोक सभ जुटल ताबे हुँनका अघमौगैत कऽ देलकैन। छातीक हाँड़ थोकचा-थोकचा भऽ गेलैन। राति रहइ। की करितौं? भरि राति हुनकेँ टहल-टिकोरामे बित गेल। गाममे डाकदर नहि। ओ कखनो कुहरबो करैथ आ कखनो निष्पराण भऽ जाथि। तखन हुअए जे पराण छुटि गेलैन। हाथसँ किछु-किछु करबो करी मुदा आँखिसँ तेते नोर खसल जे अँचरा भीज गेल। अपनो अहलदिल्ली पैस

गेल। भोरे खाटपर उठा श्रीबाबू डाकदर लग गेलौं। जन्तर लगा-लगा डाकदर साहैब देख कहलखिन-

"जेते दिन रोगी जीअत तेते दिन कष्टे हेतैन। नै बँचता। घरेपर लऽ जैयौन जाबे जीता ताबे सेवा करबैन। डाकदर साहैबक बात सुनि हमरा चौन्ह आबि गेल। भुइयेमे खसि पड़लौं। बड़ी काल तक किछु बुझबे ने केलिऐ। जखन मन नीक भेल तखन बुझलिऐ जे दू-चारि दिनमे मरि जेता। एक्केटा पिलुआ भेल छेलए। मुदा मन नै मानलक। लोको सभ कहलक जे मरथुन नहि। बड़का-बड़का ओझहा गुनी सभ अछि। बह्मोतरा बला ओझहा गाछ हँकैए। ओकरा ऐठाम केकरो पठाबहक। सएह केलौं। ओझहा आएल पूजा ढारलक, भाउ खेलाएल। कहलक जे ठीक भऽ जेतहुन। पान सात साए रूपैआ खर्च भेल। मुदा किछु ने भेलैन। अहिना-अहिना परोपट्टामे जेते धाइम, भगता, तांत्रिक अछि, सबहक ऐठाम गेलौं। मारे खरचो भेल आ छुटबो ने केलैन। सातम दिन मरि गेला। अपना ने खेती करैक लूरि अछि आ ने माल-जाल पौसैक। महींसो चलि गेल। गाछो-बाँस उपैट गेल। आब पनरह कट्ठा खेतेटा अछि। केना जिनगी चलत से बुझबे ने करै छी।"

बुधनीक बात सुनि देवन सोचए लगल, हमहूँ तँ बच्चे छी। अनासुरती मनमे एलै, सिरिफ बुधनीटा तँ खेतवाली नइ अछि। गाममे बहुतो खेतबला अछि। अनको सभकेँ पुछि खेती करब। तइले चिन्ता की करब। समाज समुद्र छी। दोसराक सहारा लऽ पार-घाट लगाएब...।

एते बात मनमे अबिते देवनक मुहसँ हँसी निकलल, उठि कऽ ठाढ़ भऽ बाड़ी दिस घुमैले विदा भेल आ चुल्हि पजाइर बुधनी भानस करए लगल।

थोड़े कालक पछाइत घुमि-फिर कऽ आबि देवन चुल्हिये पाछूमे बैसल। भानस भेल। देवनकेँ बुधनी खाइले देलक। खाइते काल देवन बुधनीकेँ कहलक-

"अहाँकेँ हम दीदी कहब आ रमुआकेँ 'बच्चा'।"

देवनक बात सुनि मुस्की दैत बुधनी बजली-

"तोरा बेटा कहबौ। तीनू गोरेक सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल।

खेनाइ खेला पछाइत देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, जेते खेत अछि ओ बेरू-पहर हमरो देखा देब।"

कनीए दिनमे देवनकेँ संग केने बुधनी अपन खेत देखबए विदा भेली। पनरह कट्ठा खेत जे तीन कोलामे बँटल। तीनू कोला देख दुनू गोरे घुमि कऽ आँगन आएल। आँगन आबि देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, हमरा खेत तामैक लूरि अछि। कोदारि अपना अछि की नहि।"

देवनक बात सुनिते बुधनी घरसँ बीझहेलहा ठेँठी कोदारि निकालने एली। कोदारिकेँ देवन निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। कोदारि रखि देवन सोचलक जे काल्हि भोरे सिलौटपर रगैड़ धरगर बना लेब। दुनू गोरे एक्के कोदारिसँ बेराबेरी तामब।

भोर होइते देवन कोदारि पिजबए लगल आ बुधनी जलखै बनबए लगली। तीनू गोरे जलखै खा खेत विदा भेल। खेत पहुँच देवन तामए लगल। तमबो करैत आ गोलो फोड़ैत। थोड़े कालक पछाइत देवन थाकि गेल। देवनकेँ थाकिते बुधनी तामए लगली। जहिना-जहिना देवन तामि-तामि गोला फोड़ने, तहिना-तहिना बुधनियोँ करए लगली। थोड़े कालक पछाइत बुधनियोँ थाकि गेली कि देवन कोदारि लऽ पाड़ए लगल। दुनू गोरे मिला दस-बारह धूर खेत तामि, गोला फोरि अँगना विदा भेल। रस्तामे देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

"दीदी, कोदारियेसँ हरक काज कऽ लेब। जखन पानि हेतै तँ बीओ पाड़ि लेब।"

देवनक विचार सुनि बुधनी सोचए लगली जे कहुना-कहुना खेती काइये लेब। जखने खेत अबाद भऽ जाएत तँ नहि सोलहन्नी तँ अठन्नियोँ-चैवन्नियोँ उपजा हेबे करत। अदहो-छिदहो उपजा भेने, नइ साल भरि तँ छओ मास गुजर चलबे करत। अँगना पहुँचली। अँगना अबिते बुधनी पैरपर एक चुरूक पानि लऽ घरसँ बिछान निकालि छाहैरमे बिछा देवनकेँ अराम करैले कहलक आ अपने भानसक जोगारमे लगि गेली।

सभ दिन दुनू गोरे खेत तामए लगल। मासो ने लगलै सभ खेत दुनू गोरे मिलि तामि लेलक। जेठ मास। रौदसँ जमीन जरए लगल। गाछ- बिरीछक पत्ता पीअर भऽ-भऽ खसए लगल। इनार पोखैरक पानि किछु उड़ए लगल आ किछु अपन जान बँचबैले पतालक रस्ता पकड़लक...।

तीन बर्खक पछाइत ऐ बेर आम फड़ल। टुकला बिछैले देवन रमुआकेँ संग कऽ गेल आ सभ गाछीक आम देखलक। आम देख देवन बुधनीसँ पुछलक-

“दीदी, अहाँकेँ आमक गाछ नइए?”

आमक गाछक नाओं सुनि बुधनीक आँखिमे नोर आबए लगल। जेहने दुख कमाइबला बेटा मुइने, उपजल जजात दहेने, ढेनुआर गाइक बच्चा मुइने होइत तेहने दुख फड़ैबला आमक गाछ सुखने वा बेचने होइत। करेज असथिर करैत बुधनी बजली-

“बौआ, आमक गाछ तँ अपनो छल मुदा विपैत पड़ल तँ बेच लेलौं।”

बुधनीक बात सुनि देवनक मनमे कचोट भेल मुदा किछु बाजल नहि। मने-मन सोचए लगल जे गाममे तेते आम फड़ल अछि जे मास दिन केतबो लोक खाएत तैयो उगरबे करत। जेकरा बेसी हेतै ओ बेचबो करत। ..देवन बाजल-

“सभसँ बेसी आमक-गाछी केकरा छइ?”

बुधनी बजली-

“नसीवलाल काकाकेँ छैन।”

“हुनका ऐठाम बेरू-पहर जाएब आ कहबैन जे दूटा आमक गाछ हमरा हाथे बेच लिअ। दूटा गाछ कीनने अपनो खाएब आ फजिलाहा बेच कऽ हुनकर दामो दऽ देबैन।”

मेहनतक बले नसीवलाल काका बहुत किछु अरैज लेलैन। साले भरिक जखन छला तँ पिता मरि गेलैन। असगरे माएटा परिवारमे। छोट बच्चाक ममता माइक हृदैकेँ हिला देलकैन। वेचारी सासुरसँ नैहर चलि एली। बेटीक बगए देख माए बताहि जकाँ करए लगली। मने-मन भगवानकेँ गरियेबो करैन जे केहेन चण्ठ छैथ। अखन बेटी खाइ-खेलाइक उमेरक अछि, तखन ओ विपैतक पहाड़ गिरा देलखिन। मुदा पतिक बात मन पड़लैन- ‘जहिना बेटी हमरा घरमे जनमल आ सेवा केलिऐ तहिना जाबे जीब ताबे करबै।’ तखन मन असथिर भेलैन।

नाना-नानीक छाहैरमे नसीवलालक पालन भेल। जहिना आगिमे धिपौल लोहा हथौड़ीक चोट खा नीक वस्तु बनैत तहिना नसीवलालोक जिनगीमे भेल। बच्चेसँ नानाक संग रहि काजक लूरि सीखए लगल। जुआन भेल। नाना-नानी मरि गेलैन। अपन मेहनत आ लगनसँ ओ गुजरो केलक आ खेतो कीनलक। खेतीक आमदनीसँ गाए कीनलक, घर बनौलक, गाछी लगौलक। दिन-राति अपन जिनगीक लीलामे रमि गेल।

तीस बर्खक मेहनतसँ नसीवलाल आइ गामक सभसँ पैघ गिरहस्त छैथ। खेती-वाड़ीसँ समए बँचा कऽ पढ़बो-लिखबो करै छैथ। सदिकाल मनुखक बीच रहए लगला। हृदए एहेन विशाल भऽ गेलैन जे ढेरो मनुखक बीच रहनौं असगरे बुझि पड़ैन। जहिना मेघमे लाखो तरेगन रहनौं सुरूज अलग बुझि पड़ैए, तहिना..!

देवन नसीवलाल ऐठाम पहुँचल। नसीवलाल अपराजित फूलक लत्ती टाटपर बान्हि-बान्हि सरियबैत रहैथ। अनभुआर देवनकेँ देख पुछलखिन-

"तोरा चिन्हलिअ नै बौआ?"

पएर छूबि गोड़ लागि देवन कहलकैन-

"काका, आब हम अहीं गाममे रहै छी। अपना घर-दुआर नइ अछि।"

चौंकैत नसीवलाल पुछलखिन-

"ऐ गाममे केतए रहै छह?"

"बुधनी ऐठाम। वेचारीकेँ चारि-पाँच बर्खक बेटाटा छैन और कियो ने।"

नसीवलाल-

"ऐठाम किए एलह?"

"आमक मास छिऐ। वेचारीकेँ एक्कोटा आमक गाछ नै छैन तँए सोचलौं जे अहाँसँ दूटा गाछक आम मोल लऽ लेब, अपनो खाएब आ बेच कऽ दामो दऽ देब।"

ऊपर-निच्चाँ देवनकेँ निंगहारि कऽ देख कहलखिन-

"दरबज्जापर चलह। बैस कऽ निचेनसँ गप करब। तोहर माए-बाप केतए छथुन?"

माए-बापक नाओं सुनि, देवन उदास भऽ कहलकैन-

"दुनू गोरे मरि गेला। असगर बुझि घरसँ निकैल दुनियाँ देखैले विदा भऽ गेलौं। साल भरि नवटोलमे दीनमा-भुखनी ऐठाम रहलौं। साल पुरिते नवटोलसँ विकासपुर आबि बुधनी ऐठाम छी। वएह वेचारी अपनेक सम्बन्धमे कहलैन, तँए एलौं।"

देवनक बात सुनि, नसीवलाल अपन जिनगीपर नजैर दौगबैत, गंभीर होइत बजला-

“हँ, हमरा बहुत आमक गाछो अछि आ आमो। अगर ओइ वेचारीकेँ नै छै तँ चलह एकटा बरहमसिया आमक गाछी अछि ओ देखा दइ छिअ। बारहो मास फड़बो करैए आ खाइयोमे सुअदगर होइए। ओइमे जे तोरा पसिन हुअ। दूटा गाछ लऽ लिहह। ओकरे ओगरबो करिहह आ तामो-कोर करिहह। सालो भरि आम होइते रहतह।”

नसीवलालक बात सुनि देवनक मन खुशीसँ नाचि उठल। आशाक दुनियाँमे देवन भ्रमण करए लगल। गाछी देखए दुनू गोरे विदा भेला। गाछी पहुँचते देवनकेँ बुझि पड़लै जे आमक ढेरीक बीच आबि गेलौं। नमगर-चौड़गर गाछी। मझोलका गाछक संग बड़को-बड़को गाछ। जहिना गाछ सबहक सुन्नर रूप तहिना आमसँ लदल गहना। एक-दोसर गाछमे एतेक सिनेह जे सभ अपन-अपन बाँहि समैट-समैट हटल। ने बड़का गाछ छोटकापर ओंगठल आ ने छोटका अपनाकेँ हीन बुझि दबाएल, जइ गाछमे जेते बुत्ता तेते बेसी फड़लौ। जहिना नसीवलाल बीच गाछीमे ठाढ़ भऽ हियासि-हियासि देखैथ तहिना देवनो घुमि-घुमि सगरे गाछी देखलक। देखला पछाइत देवन नसीवलालक लगमे आबि कहलकैन-

“अपने धन्य छी काका, जे एते नमहर आ एते सुन्नर गाछी लगौने छी। हम तँ मोल लइक विचारसँ आएल छेलौं मुदा अपने ओहिना दइ छी तँए हम गाछीक ओगरवाहिये कऽ देब आ हमर मेहनतक जे मजूरी हएत तेतबे लेब।”

देवनक जिज्ञासाकेँ अँकैत नसीवलाल बजला-

“अखन तूँ बच्चा छह तँए गाछी लगौनाइ सीखह। ताबे एकटा गाछ ओहिना लऽ लएह आमो खेबह आ आँठीकेँ रोपि अपनो गाछी लगा लेबह। जखन फड़ए लगतह तखन अपन गाछीक सेवा करिहह।”

नसीवलालक गप सुनि हँसैत देवन विदा भेल। घरपर आबि सभ बात बुधनीकेँ कहलक। दोसर दिनसँ देवन टुकला बिछैक विचार केलक। मनमे एलै जे टुकला बिछैले नीक झोरा चाही। मुदा से तँ नइ अछि। तँए दीदीकेँ एकटा झोरा सिबैले कहि दइ छिऐ आ आइ मौनीए लऽ कऽ जाएब। मौनी नेने देवन टुकला बिछए विदा भेल। गाछीमे टुकला पथार लागल। मने-मन देवन सोचलक जे अखन दोसर काजो ने अछि तँए जँ सभ टुकलाकेँ बीछि लेब आ सोहि कऽ आमील बनाएब। माइर पाइ हएत। मनमे अबिते देवन टुकला बिछए लगल। मौनी भरिते देवन विदा भेल। घरपर आबि बुधनीकेँ कहलक-

“दीदी, गाछीमे टुकलाक पथार लगल अछि। अहूँ चलू आ रमुओ चलत। बड़का छिट्टा सेहो लऽ लिअ। मौनीमे बिछ-बिछ छिट्टामे रखब।”

तीनू गोरे टुकला बिछए विदा भेल। टुकला देख बुधनीकेँ अचम्भा लगि गेलैन। भरि छिट्टा बुधनी, मौनीमे देवन आ दुनू हाथमे रमुआ टुकला नेने आँगन आएल। आबि देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

“दीदी, अहाँ अँगनाक काज करू आ हम टुकला सोहै छी।”

देवन टुकला सोहए लगल। बुधनी भानस करए गेली। पनरहे दिनमे, धान-चाउरक पथार जकाँ आमिलक पथार अँगनामे भऽ गेल। आमील सुखा-सुखा बुधनी दू कोठी भरलक।

अन्तिम जेठमे झमझमौआ बरखा भेल। धरतीक ताप आ पानिक ठंढकक बीच हाथा-पाइ हुअ लगल। हाथा-पाइ करैत दुनू अलिसा कऽ सुति रहल। पैछला सालक बात देवनकेँ मन पड़लै, बीआ बाउग करैक समए आबि गेल। मुदा कथीक बीआ बाउग हएत से बुझबे ने करैत। बुधनीए घर लग सजनाक घर। सजन गिरहस्त। देवनक मनमे एलै जे सजन गिरहस्त छैथ तँए हुनकेसँ पुछि लेब नीक हएत। सजन ऐठाम देवन गेल। हाल देख सजन हरक समान, गठुलासँ

निकालि डेढ़ियापर झोल-झाल साफ करै छल। देवनकेँ देख सजन पुछलकै-

“बौआ, केमहर-केमहर एलह?”

देवन-

“अहींकेँ पुछए एलौं जे पानि भेल हेन से कथीक बीआ अखन पाड़बै?”

सजन बाजल-

“बौआ, गिरहस्ती तँ हम जरूर करै छी, सभ काज करैक लूइरो अछि। मुदा पढ़ल-लिखल तँ छी नहि! तँए महिना लछत्तरक ठेकाने ने रहैए। अखन हरक सभ समान जोड़िया लइ छी आ बेरू-पहर नसीवलाल काका ऐठाम जा कऽ बुझि लेब। तोहूँ संगे चलिहह। जे बुझैक हेतह से पुछि लिहौन।”

‘बड़बढ़ियाँ।’ कहि देवन चलि आएल।

बेर टगिते देवन सजनक संग नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। दरबज्जेपर बैस नसीवलाल बेटाकेँ बीआ बाउग करैक सम्बन्धमे कहैत रहथिन। तखने देवन आ सजन पहुँचल। दुनू गोरेकेँ देख नसीवलाल पुछलखिन-

“दुनू गोरे केमहर-केमहर एलौं?”

सजन कहलकैन-

“काका, हम तँ अहींसँ पुछि कऽ खेती करै छी। आइ भिनसरे देवन हमरासँ पुछए आएल। तखन हम हरक समचा जोड़ियबैत रही तँए कहलिऐ जे बेरू-पहर दुनू गोरे चलि कऽ काकासँ बुझि लेब।”

मुस्कियाइत नसीवलाल कहलखिन-

“पहिने तमाकुल खुआबह तखन गप-सप्प करब।”

कहि नसीवलाल चुनौटी निकालि सजनक हाथमे देलखिन। सजन तमाकुलो चुनबैत आ बजबो करैत-

“तेहेन बरखा भेल जे मन खुशी भऽ गेल।”

तैपर हुँहकारी भरैत नसीवलाल बजला-

“छोट-छीन बरखा होइत तँ रस्ते-पेरे रहि जाइत मुदा झमकौआ बरखा भेने जमीनमे तेहेन हाल भेल जे गिरहत बीओ-बाइल खसा लेत आ दस दिन अफारो खेत धरि जोतत। घासो सभ, जे सूखा गेल छल ओहो पौनगत। जइसँ मालो-जालकेँ खोराकी बढ़तै।”

चुटकीमे तमाकुल लऽ सजन नसीवलाल दिस बढ़ौलकैन। बामा तरहत्थीपर तमाकुल लऽ नसीवलाल दहिना औंठासँ दू बेर रगैड़ नाकमे औंठा भीरा नोइस लऽ तमाकुल मुँहमे लेलैन। नोइस लगिते छिक्का भेलैन। छिक्का होइते मन हल्लुक भेलैन। मन हल्लुक होइते बजला-

“जेठ अन्त भऽ रहल अछि। बड़ सुन्नर हाल भेल। पुरना ढंगक गिरहस्तीमे मरूआ, गरमा धान आ नीचला खेतक अगहनी बीआ खसबैक समए आबि गेल। आँखि मूनि कऽ लोक बीआ पाड़त। हमरा तँ बोरिंग अछि तँए मकैयो तिलकैए आ गरमा धान सेहो काटै छी तैसंग बैशाखा तरकारी- सजमैन, रामझिमनी, झिमनी, ठढ़िया साग इत्यादि भरखैर निकलैए। महिना दिन आरो चलत। रामझिमनी बरसातियो होइ छइ। सजमैन झिमनी साग इत्यादि सेहो बरसातियो होइत अछि तँए ओहो सभ लगौल जाएत। मुदा सभसँ पैघ बात अछि जे सभ गिरहतो तँ एक रंग नइ अछि तँए फुटा-फुटा अपन-अपन बुझए पड़तह।”

नसीवलालक बात सुनि सजन सन्तुष्ट भऽ गेल। मुदा देवनक मनमे अनेको सवाल उपैक गेल। बाजल-

“काका, हमरा दीदीकेँ तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि आ दुनू गोरे अनाड़ीए छी। हम केना की करब?”

नसीवलाल-

“तीन गोरेक परिवारमे बहुत जमीन अछि। जँ ढंगसँ उपजा हएत तँ सालो भरि गुजर कऽ कऽ उगरबो करत।”

उगरब सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। नसीवलाल देवनकेँ बैसबैत कहलखिन-

“सभसँ पहिने देवन सालकेँ मनसँ निकालि लएह। तीन तरहक मौसम होइ छै आ तीनू मौसमक फसिल सेहो होइ छै तँए अखन तूँ गरमा धान जे चारि मासमे भऽ जाइ छै आ मरूआ आ तैसंग तीमन तरकारीक खेती शुरू करह। कम्मे समैमे तीमन-तरकारी फड़ए लगतह जइसँ गुजरो चलतह। जँ अपने भरि करबह तँ खेबेटा करबह, अगर जँ बेसी करबह तँ अपनो खेबह आ बेच कऽ गुजरो करबह।”

देवन-

“काका, बीआ केतएसँ आनब?”

नसीवलाल-

“सभ चीजक बीआ हम दऽ दइ छिअ।”

देवन-

“तीनटा कोली हमरा दीदीकेँ अछि। चारि कट्ठाक कोली गहींरगर अछि बाँकी दूटा कोली मध्यम आ भीठ छैन, अपने बुझा-बुझा कहि दिअ कोन कोलीमे कोन अनक खेती करब?”

धियानसँ देवनक बात सुनि नसीवलाल बजला-

“नीचला खेतमे छिपगर धान रोपए पड़तह। किएक तँ ओइमे बेसी पानि बसत। मुदा एमहर जे दूटा कोली बँचलह ओइमे सँ जे मध्यम छह तइमे गरमा धान करह, किएक तँ बहुतो किस्मक धान अछि जे ७० दिनसँ लऽ कऽ १५० दिनक होइए। जँ गरमा धान नीक-जकाँ उपजतह तँ पाँच कट्ठामे कहुना-कहुना सात क्विन्टल धान हेतह। एकटा कोलीमे मरूआ रोपि लएह। मरूआ कम्मे दिनमे होइ छइ। जँ सवारी समए बेसी बरखा हेतै तँ मरूआ काटि कऽ तीन-मासी गरमा कऽ लिहह आ जँ रौदियाह समए हएत तँ राहैर, तेबखा, कुरथीमे सँ कोनो दालि बाउग कऽ दिहक। बाड़ी-झाड़ी छह की नहि?”

देवन-

“घरे लग अछि। पहिने ओइमे दूटा आमक गाछ छेलै जे उपैट गेल।”

नसीवलाल-

“अगर दसो धूर हेतह तैयो सालो भरिक तीमन-तरकारी ओइमे उपैज जेतह। थोड़ेमे साग बाउग कऽ लिहह। थोड़ेमे रामझिमनी रोपि लिहह। एकटा लत्ती सजमैनक लगा लिहह।”

देवन-

“काका, एकटा लत्ती केते फड़त?”

‘केतए फड़त’ सुनि नसीवलालकेँ हँसी लगलैन। मुदा मनमे एलैन जे बच्चा अछि तँए नै बुझैए। बुझबैत कहलखिन-

“बौआ, एकटा सजमैनक लत्ती जँ सम्हैर जाए तँ साए तक फड़त मुदा डेढ़ साए फड़बैले रोपनिहारोकेँ मुश्ताइज रहए पड़तै।”

देवन-

“की मुश्ताइज?”

“जहिना लोक घर बनबैए तहिना ओकरा-ले बाँसक मजगूत खुट्टापर मचान बनबए पड़तह। कीड़ी-फतींगीक देख-भाल करए पड़तह। जइमे छाउर-गोबर, डी.ए.पी. खाद दिअ पड़तह। तेतबे नहि, जखने लत्ती ठमकै आकि यूरिया खाद, टौनिक दबाइ देमए पड़तह। फल नीक होइ दुआरे पोटाश सेहो देमए पड़तह।”

नसीवलालक बात सुनि अपनाकेँ कमजोर आ पछुआएल उपजौनिहार बुझि देवन बाजल-

“काका, अहाँक विचार तँ मनमे जँचैए मुदा अखन तँ हम सभ तरहेँ पछुआएल छी तँए अखुनका हमर स्थिति देख कऽ रस्ता बता दिअ।”

“बौआ, भगवानो गरीबकेँ मदैत करै छथिन। भगवानक बास छैन माटि, पानि हवा आ आरो-आरो जगहमे, जैठाम जे जजात पहिले पहिल लगौल जाएत ओइले माटि, पानि, हवा आ रौद अपन

खजानासँ शक्ति आनि कऽ दऽ दइ छथिन तँए, तूँ ठीक समैमे रोपि देख-भाल, कमठौन, आरो-ओरो जे जोगार छै, तेतबे करिहह। मुदा करह। जखने करए लगबह दुख पड़ाए लगतह। जेते करबह तेते दुख भगतह।”

नसीवलालक विचार सुनि देवन खिलखिला कऽ हँसए लगल। देवनकेँ हँसैत देख नसीवलालक हृदए जहिना जुड़शीतल पावैनमे माए-बाप, बेटा-बेटीक माथपर जल दऽ जुड़बैत तहिना भेलैन। आँखि उठा दुनियाँ दिस देखए लगला। मनमे एलैन जे ई दुनियाँ तँ कर्मभूमि छी। देवन जरूर कर्मनिष्ठ बनत मुदा कर्मनिष्ठोक रस्ता[6] तँ ज्ञानेक संग केने चलैत। अखन धरिक जे अनुभव अछि ओ देवनकेँ जरूर बुझा देबइ...।

देवनकेँ बीआ दैत नसीवलाल बजला-

“बौआ, साग-तरकारीक बीआ अन्दाजेसँ आ धान मरूआक बीआ तौलल छह। पाँच-पाँच किलो धानक बीआ छह। एकरा पँच-पँच धूर खेतमे पाड़ि लिहह।”

‘पाँच धूर’ सुनि देवन पुछलकैन-

“पाँच धूर केना बुझबै?”

देवनक जिज्ञासा देख मुस्कियाइत नसीवलाल कहलखिन-

“बौआ, ऐ गाममे साढ़े छह हाथक लग्गी अछि। एक लग्गी, एक लग्गी एक धूर खेत भेलइ। मुदा पुरुखा सभ तीन-डेग, तीन डेगकेँ एक धूर नपै छला।”

देवन-

“काका, सभ तरहक लोकक डेग तँ एक्के रंग नै होइए?”

देवनक प्रश्न सुनि नसीवलालकेँ खराप नइ लगलैन, कहलखिन-

---

[6] साधना

"बड़ सुन्नर बात बौआ पुछलह। तीन डेगक मतलब, ओहन डेग जे दू हाथसँ कनीक बेसी होइ। दू हाथक डेगक माने ने बड़का धाप आ ने सासुरक डेग। दुनू पएरक दूरी डेढ़ हाथ होइ। किएक तँ एक बीतक पएर होइ छइ। दुनू पएरक नमती एक हाथ भऽ जाइ छइ। तँए डेगमे एक पएरक आ डेढ़ हाथ बीचमे।"

नसीवलालक बात सुनि देवन उठि कऽ ठाढ़ भऽ खिलखिला कऽ हँसबो करए आ दुनू हाथे थोपड़ियो बजबए लगल। ..मने-मन नसीवलाल सोचए लगला जे एते खुशी देवन किए भेल। पुछलखिन-

"बौआ, एना किए करै छह?"

देवन-

"काका, अहाँ हमरा धरती नपैक लूरि बता देलौं। आब हम जरूर दुनियाकेँ नापि लेब।"

धान, मरूआ आ साग-तरकारीक बीआ लऽ देवन विदा भेल। रस्तामे सजन देवनकेँ कहलकै-

"बौआ, तेहेन गामक लोक अछि जे केकरोसँ गपो करब मोसकिल भऽ जाइए। असगरे अपन दुख-धन्धामे लगल रहै छी तँए, नइ तँ कोन जालमे के कखन ओझरा देतह से बुझबे ने करबहक। आब तँ दू भाँइ भेलौं, दुनू गोरे निचेनमे गप-सप्प करब।"

साँझू-पहर सजन टहलल-टहलल बुधनी ऐठाम आएल। बुधनी भानस करै छेली। एक्केटा डिबिया बुधनीकेँ, जे चुल्हि लग बड़ै छल। अँगना अनहार। अन्हारे अँगनामे देवन आ रमुआ बैस एक-दू-सँ-बीस तक गनैत रहए। सजनकेँ देख देवन बुधनीकेँ कहलक-

"दीदी, डिबिया मोख लगमे दऽ दियौ। घरोमे इजोत हएत आ अँगनोमे हेतइ।"

बुधनी डिबिया मोख लग रखि देलखिन। सजनकेँ बैसबैत देवन बाजल-

“भैया, गाममे के केहेन लोक अछि से हमरो बुझा दिअ। किएक तँ आब हमहूँ अही गाममे रहब किने।”

देवनक बात सुनि सजनकेँ मनमे भेलै जे देवन हमरा बेसी मानैए। अपन बड़प्पन बुझि सजन बाजए लगल-

“पाँचिम बर्खक बात छी। जोगिन्दरक गाए बिआएल। बड़ सुन्नर पहिलोठे गाए छेलइ। जेहने रंग तेहने खाँड़। बसुलिया सींग मझोलका थुथुन। आगूसँ देखैमे तेते नीक लगै जे हुअए देखते रही। तहिना पाछुओसँ। ओना लोक कहै छै ‘बरदक आगू गाइक पाछू’, मुदा ओइ गाइक जेहने थन तेहने थुथुन। देशी गाए रहितो जरसीए जकाँ बुझि पड़इ। दूधो बढ़ियाँ होइ। सभतूर मिलि जोगिन्दर सेवा करै छेलइ। पहिलोठ गाए रहने दुहै काल गुदगुदी लगै तँए हनपटा जाइत। ने बच्चाकेँ पिबए दइ आ ने दुहह दइ।

..दोसर दिन जोगिन्दर ननुआकेँ कहलकै। ननुओ गाए पोसैत मुदा अछि नेतघट्टू। जोगिन्दरकेँ ननुआ तेहेन चीज पीयबैले कहलकै जे पीऐबते गाए बगैद गेलइ! ने घास खाइ आ ने पानि पिबइ। ने केकरो लगमे जाए देइ आ ने बच्चाकेँ देखए चाहै। जहिना दारू पीब मनुख करैए तहिना गाइयो करए लगलै। ..दुनू परानी जोगिन्दर हबो-ढकार भऽ भऽ कानल फिड़इ। बच्चा सेहो लर-ताँगर जकाँ भऽ गेल। एक-फुच्ची दूध रतनासँ उठौना केलक। मुदा एक फुच्ची दूधसँ बच्चाकेँ की होइतै। बड़ आशासँ वेचारा जोगिन्दर गाए पोसने छल जे बिआएत तँ दस दिन दूध खा बेच लेब, जइसँ बेटीक बिआहो कऽ लेब आ उगरत तँ एकटा बाछियो कीनि लेब। तेसर दिन जोगिन्दर बुझलक जे ननुआ अन्ट-सन्ट दबाइ दऽ गाएकेँ दुरि कऽ देलक। जोगिन्दर तँ बरदास केने रहल मुदा घरवाली ननुआकेँ गरियाबए लगल। ..घरवालीकेँ गरियबैत देख जोगिन्दर कहलकै, गाइयो दुरि भेल आ मारियो खाएब। चुप रहू। देखै नै छिऐ जे गाममे सभसँ जेरगर दियादी ननुआकेँ छइ। तेहेन-तेहेन

हुरनेठगर समांग सभ छै जे...। मुँह बन्न करू नइ तँ अनेरे मारि खाएब।'

..साए बीघा बाधक बीचमे दू-अढ़ाइ कट्ठाक एकटा परती अछि। परतीपर एकटा साहोरक गाछ। नमहर तँ बेसी नै मुदा सघन। छोट-छीन अछार लोक ओतै बिता लैत रहए। ओइ गाछपर ठनका खसलै। साहोरक गाछपर ठनका खसब सुनि नसीवलाल भोरे देखैले जोगिन्दरे घर लग देने जाइत रहैथ। दुनू परानी जोगिन्दरकेँ कनैत देखलखिन। ससैर कऽ नसीवलाल काका जोगिन्दर लग आबि पुछलखिन, किए दुनू परानी कानै छह? नसीवलाल कक्काक बात सुनि आरो हुचैक-हुचैक दुनू परानी कानए लगल। अँगनामे ढेरबा बेटी लुडुओ-खुडु करै आ आँखिक नोरो पोछैत रहइ। आ जोगिन्दरक बेटा जेठ बहिनकेँ कहै- 'दाय कहए छेलै जे गाए बीएतै तँ दूध देबौ, से कहाँ दइए।' ..छोट भाइक बात सुनि बहिनक हृदए बरफ जकाँ पीघलैत रहइ। मुदा वेचारी की करितए। मुँहपर हाथ सहलबैत कहलकै- 'बौआ, अल्लू पका कऽ रखने छी। ओकरा सन्ना कऽ दइ छी। रोटी आ सन्ना खा लिअ। भगवान कोनो गाम गेलखिन। जब खुट्टापर गाए अछि तँ दूध खेवे करब।' ..अँगनासँ लऽ कऽ दरबज्जा तकक दृश्य नसीवलाल काका देखैत रहैथ। आशा जगबैत नसीवलाल काका जोगिन्दरकेँ कहलखिन- 'कनलासँ की हैतह? एहेन कोन दुख छै जेकर दबाइ नइ छइ। मुँह बन्न करह आ कहह जे की भेलह?' ..तखन नसीवलाल कक्काक बाँहि पकैड़ जोगिन्दर गाइक-बच्चाकेँ देखबैत कहलकैन- 'काका, पाँच दिन गाएकेँ बिएना भेल, एक्को चौठी दूध नै होइए। बच्चोकेँ थन तर नै जाए दइ छइ। पाभैर दूध रतनासँ उठौना लइ छी वएह पीआ कऽ बच्चाकेँ अखन धरि जीऔने छी। नइ तँ ईहो मरि गेल रहैत।' ..मुँहपर हाथ दऽ नसीवलाल काका थोड़े काल गुम्म रहि, पुछलखिन- 'बिएलापर की सभ केलहक?' ..तखन जोगिन्दर कहलकैन- 'थन तर गाए जाइए ने दिअए। तखन ननुआ भैयाकेँ

पुछलिऐ। ओ एकटा दबाइ घरसँ आनि कऽ देलक आ कहलक जे एकरा पीआ दिहक। गाए ठीक भऽ जेतह।' ..मने-मन नसीवलाल काका सोचि-विचारि कऽ कहलखिन- 'नीक भऽ जेतह। दूधो हेतह। कानह नहि। हम बाधसँ साहोरक गाछ देखने अबै छी। तखन संगे डाक्टर ऐठाम चलिहह।' ..कहि नसीवलाल काका बाध दिस विदा भेला। बाधक परतीपर जा साहोरक गाछ देखए लगलखिन। ठनकासँ साहोरक गाछ दू फाँक भऽ गेल छेलइ। दुनू फाँक दुनू भाग खसल। जहिना-जहिना ठनका निच्चाँ-मुहेँ गेल तहिना-तहिना गाछो झड़कल। मनमे एलैन जे अखन धरि सभ बुझैए जे साहोरक गाछपर ठनका नै खसै छै मुदा आँखिक सोझहामे देखै छी। गाछक बगलेमे बैस नसीवलाल काका सोचए लगला। थोड़े कालक पछाइत मनमे एलैन जे ई बात–साहोरपर ठनका नै खसब–गाछी-बिरछीमे भऽ सकैए जैठाम आन गाछ नमहर-नमहर रहै छै आ साहोरक गाछ छोट। मुदा एगच्छामे तँ भऽ सकै छइ। ऐ निष्कर्षपर पहुँच नसीवलाल काका घुमि कऽ घर दिस विदा भेला। दुनू परानी जोगिन्दर, डेढ़ियापर बैस, नसीवलालक प्रतिक्षा करैत रहए। दुरेसँ हिनका अबैत देख जोगिन्दर रस्तापर ठाढ़ भऽ गेल। जोगिन्दरकेँ देखते नसीवलाल काका कहलखिन- 'अखने चलह। घरपर गेलासँ काजमे ओझरा जाएब।' ..दुनू गोरे मवेशी डाक्टर ऐठाम विदा भेला। डाक्टर कमल एकटा महींसक इलाज कऽ कऽ आएले छला, दुनू गोरेकेँ देखते मातर हाँइ-हाँइ कलपर जा हाथ-पएर धोइ कऽ आबि नसीवलालकेँ गोड़ लगलकैन। दुनू गोरेकेँ बैसबैत, आँगन जा घरवालीकेँ चाह बनबैले कहलखिन। डाक्टर कमलक बेवहार देख जोगिन्दरकेँ आश्चर्ज लगइ। डाक्टर कमल नसीवलाल काका लग आबि पुछलखिन। जोगिन्दर सभ बात कहलकैन। अलमारीसँ दबाइ निकालि टेबुलपर रखि, बुझबैत कमल कहलखिन-

"तीन दिनक दबाइ देलौं हेन। छोटका पुड़ियामे बच्चाक दबाइ छी। दुनू साँझ खुरचनमे घोरि बच्चाकेँ देबइ। आ दू रंगक दबाइ गाए-ले देने छी। रोटी संगे गाएकेँ खुआएब। दू खोराक देला पछाइत गाइक मन नीक हुअ लगत। काल्हि साँझसँ दुहबो करब। तीन-चारि दिनमे गाए नीक भऽ जाएत। अगर नै ठीक हुअए तँ फेर आएब।"

..फेर जोगिन्दर डाक्टर कमलकेँ पुछलकैन- 'केते दाम भेल।' ..मुस्की दैत कमल कहलखिन- 'पाँच रूपैआ भेल।' ..रूपैआ दऽ जोगिन्दर नसीवलाल कक्काक संग विदा भेल। घरपर अबिते गाइयो आ बच्चोकेँ दबाइ पिऔलक। जहिना-जहिना डाक्टर कहने रहथिन तहिना-तहिना गाए नीक हुअ लगलै। तेसर दिनसँ बढ़ियाँ जकाँ गाए दुहह देलकै। मास दिन सभ परानी जोगिन्दर दूध खा सात हजारमे गाए बेच लेलक। ओइ रूपैआसँ बेटीक बिआहो केलक आ एकटा डेढ़ सालक बाछी सेहो कीनलक।"

आँखि मूनि देवन सजनक बात सुनैत रहल। जखन सजन चुप भऽ गेल तखन देवन आँखि खोलि बाजल-

"भैया, अहाँ तँ हमर बन्न आँखि खोलि देलौं।"

देवनक बात सुनि जोगिन्दर कहलकै-

"बौआ, एहेन-एहेन खिस्सा सबहक अछि। हम जे केकरो दरबज्जापर नै जाइ छी से अही दुआरे। जखन सौंसे गामक लोकक किरदानी सुनबहक तँ हेतह जे सौंसे गाम लुच्चे-लफंगा अछि। ने कोइ एक्कोटा सत बजतह आ ने केकरो कोइ नीक करतह आ जँ केकरो किछु पुछबहक तँ तेहेन मीठ बोली बजतह जे बुझि पड़तह जे एहेन शुभचिन्तक गाममे दोसर नइ अछि। मुदा तेहेन घुरछी लगा देतह जे पेंपियाइत रहबह।"

भानस कऽ बुधनियोँ आबि बैसल छेली। खिस्सा सुनि बुधनी सजनकेँ कहलखिन-

"भैया, भानसो भऽ गेल आब खा लोथु तखन जइहैथ।"

हँसैत सजन बाजल-

"केतौ आनठाम छी। जहिना ई घर तहिना ओ घर।"

देवन दिस घुमि सजन फेर बाजल-

"बौआ देवन, एहेन-एहेन बहुत बात अछि। दोसर दिन आरो सुना देबह। अखन रातियो बेसी भऽ गेल। तोहूँ सभ खा-पीअ।"

◌

शब्द संख्या : 4807

8.

अधरतियेमे बचेलालक निन टुटि गेलैन। दू बेर खोंखी कऽ ओछाइनेपर पड़ल रहला। एक करोटसँ दोसर करोट उनैट मने-मन सोचए लगला, अखन धरि हमर जिनगी की रहल। जखन तीन बर्खक रही तखने पिताजी स्वर्गबास भऽ गेला। माइक ऊपर परिवारक भार पड़लैन। ओ जेना-तेना घर सम्हारि चलबए लगली। औरत होइतो परिवारकेँ सम्हारि दुनू भाए-बहिनकेँ पढ़ेबो केलैन। मैट्रिक पास करा हमरा शिक्षक बनौलैन। जे बहुत मर्दो बुते नै होइ छइ। एतइ प्रश्न उठैए जे की औरतकेँ मरदसँ शक्तिहीन बुझल जाए? कथमपि नहि। पुरुखसँ औरतकेँ कम बूझब नादानीक शिवा और की भऽ सकैए। हँ, ई बात जरूर अछि जे आइ धरिक जे जिनगी औरतक रहल, ओ कमजोर जरूर बनौलक। जइसँ पुरुख-औरतक बीच नमहर दूरी अबस्स भऽ गेल अछि। जेकरा समतल बनबैमे समए साधन आ श्रमक जरूरी अबस्स अछि। मुदा एकर अर्थ ई नहि जे समतल नै बनि सकत। जहिना पुरुखमे असीम शक्ति होइए तहिना औरतोमे होइए...।

एते बात बचेलालक मनमे अबिते अपन पत्नी दिस नजैर दौगा कऽ देखलैन। रूमाक चालि-ढालि देख मनमे एलैन, अदहा कोन जे चौथाइयो मनुखसँ कम क्रियाशील छैथ। जँ ओ घर सम्हारि लोथु तँ हम नोकरीक संग किछु समाजो-सेवा करितौं। दरमाहासँ परिवारोक खर्च चलैत आ किछु समाजोक उपकार होइत। मुदा से कहाँ होइए...।

एते बात मनमे अबिते बचेलाल देवालमे टाँगल घड़ी दिस चोरबत्ती बाड़ि कऽ देखलैन। रातिक एक बजैत। चोरबत्ती सिरमाक बगलमे रखि फेर सोचए लगला, आइ परिवा छी। परीब रातिक चाँन घसकट्टो हाँसूसँ पातर बुझि पड़ैए। मुदा जहिना-जहिना दिन बढ़ैत जाएत तहिना-तहिना चानो बढ़त। बढ़ैत-बढ़ैत वएह चाँन पुरनिमा दिन सुरूजे जकाँ विशाल भऽ रातिकेँ दिन जकाँ बना लैत अछि। तहिना तँ मनुखोकेँ भऽ सकैए। मुदा मनुखमे चाँनक गति नै भऽ पबैत। वएह चाँन पुरनिमाक परातसँ छोट हुअ लगैत आ छोट होइत-होइत अमावश्या दिन विलीन भऽ जाइए। आखिर ओ चाँन केतए चलि जाइए? जँ केतौ चलि जाइए तँ फेर परातेसँ अबैत केना अछि? की मनुखोकेँ ओहिना होइत? जहिना दुनियाँक बोध घटैत-घटैत बेकती लग पहुँच जाइ छै तहिना तँ शक्तियो कमैत-कमैत एते कम भऽ जाइ छै जे अस्तित्वो मृत्यु प्राय बनि जाइ छै...।

फेर बचेलालक मनमे प्रश्न उठलैन, दुनियाँमे सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुख मानल जाइए आ मात्र मानले नै जाइए। वास्तविक ऐछो। दुनियाँमे जेते जीव-जन्तु अछि ओइमे मनुखेटा केँ विवेक होइ छइ। आन-आन गुण तँ कमोवेश सभमे पौल जाइ छइ। ..आइ धरि मनुख विवेकक उपयोग जेते बजैमे करैए तेकर एकअन्नियो जिनगीमे नै कऽ रहल अछि। ई दुनियाँ कर्मभूमि छिऐ आ मनुख कर्मकार। मुदा से नहि बुझि उधिकांश लोक दोसराक श्रमकेँ लूटि अपन ऐश-मौजक जिनगी बनबै पाछू विवेककेँ ताकपर रखि दइए जइसँ मनुखक बोनमे हदिघड़ी

आगि लगले रहैए। आ ओ आगि ताधैर धधकैत रहत जाधैर विवेकक सीमा मजगूत नै बनत। शुरूहेसँ जेना-जेना मनुख होशगर होइत गेल तेना-तेना अल्लढ़ मनुखकेँ जानवरक श्रेणीमे धकलैत गेल। धकलैत-धकलैत एहेन रस्ते बनि गेल जे सभ-सभकेँ निच्चेँ-मुहेँ धकलैए। धकलाइत-धकलाइत जे सभसँ नीचाँ पहुँच गेल अछि। ओकरा आगू-मुहेँ बढ़ैक कोन बात जे तकलो ने होइ छइ। तकबो केना करत? दुनियेँ उनैट गेल। जिनगीक सभ रस्ता उनैट गेल। उनैट गेल विवेक। जइसँ साहित्य, कला, संस्कृति, धर्म, दर्शन, एक्कोटा बाँकी नै रहल। जँ थोड़-थाड़ बँचलो अछि तँ ओहिना जेना लक्ष्मणकेँ शक्तिवाण लगलापर हनुमानकेँ सिर-सजमनि अनैले कहलकैन आ ओ सिर-सजमनि नै चीन्हि पहाड़े अनैले मजबूर भेला।

..सवाल उठैए जे बिनु अनुकूल दिशामे एने मनुखक कल्याण भऽ सकै छइ? कथमपि नहि भऽ सकैए। मुदा मनुखेक भीतर ओहन शक्ति अछि जे कऽ सकैए। जँ मनुख अपन शक्तिकेँ चीन्हि उपयोग करए, तखन।

ई बात मनमे अबिते बचेलाल केबाड़ खोलि घरसँ निकैल आँगन आबि अकास दिस देखए लगला। सन-सन करैत अन्हार। आँगनसँ निकैल बाटपर आबि उत्तरसँ दच्छिन आ दच्छिनसँ उत्तर-मुहेँ जाइत रस्ताकेँ धियानसँ देखए लगला। एक्केटा रस्ता जैपर उत्तर-मुहेँ चललासँ उत्तरी ध्रुवपर पहुँचैत आ दच्छिन-मुहेँ चललासँ दछिनी ध्रुवपर। रस्ता तँ एक्के अछि मुदा दिशा बदलने स्थानो बदैल जाइए। अहिना तँ जिनगियोक रस्ता अछि। एक दिस गेने लोक पापी बनि जीबैए जखन कि दोसर-मुहेँ गेने धर्मात्मा बनि जाइए। मुदा प्रश्न उठैए, असगर चलब आ समूहक संग चलब। समूहक संग चलने बेवस्था बदलैत जखन कि असगर चलने बेवस्था नै बदलैत...।

एते मनमे अबिते, बड़बड़ाइत बचेलाल घर आबि बिछानपर पड़ि रहला। अपने सवालो उठबैथ आ जवाबो तकैथ। ..रूमाक निन

सेहो टुटि गेलैन मुदा पतिक बड़बड़ेनाइ सुनि गबदी मारि सुनए लगली। पतिक बोलीमे रूमा संकल्प, धैर्य, उत्साह देखैथ। ..जहिना आगिक धधरामे काँच वस्तु पकैत जाइत तहिना बचेलालमे साहस जगए लगलैन। साहसक संग धैर्य सेहो आबए लगलैन। आइ धरि जे बात रूमा पतिक-मुहेँ कहियो ने सुनने छेली ओ सुनए लगली। जिनगीक रस्ता केना बदलल जाए, ई बात बचेलालक मनकेँ झकझोड़ए लगलैन। बिनु रस्ता बदलने आगू बढ़ब कठिन। मुदा रस्तो बदलब तँ असान नहियेँ अछि। ..यएह गुनधुनी बचेलालक मनकेँ धोर-मट्ठा भेल पानि जकाँ केने रहैन। कछमछाइत बचेलाल करवनो पड़ि रहैथ तँ करवनो उठि कऽ बैस रहैथ। मुदा रस्ता देखबे ने करै छला। चीनक एकटा खिस्सा मन पड़लैन। चीनक एकटा पहाड़ी इलाकामे एक गोरे रहै छल। घरसँ निकैल बाहर जेबामे ओकरा एकटा पहाड़ टपए पड़ै छेलइ। एक दिन ओकरा मनमे एलै जे पहाड़ काटि रस्ता बनौलासँ चलबोमे सुगम हएत आ समैयोक बँचत हएत। ओ आदमी छेनी-हथौड़ीसँ पहाड़ काटए लगल। काटिते समए दोसर गोरे देखलक। पहाड़ कटैत देख ओ पुछलखिन-

"एहेन पहाड़केँ केना काटि सकबह?"

छेनी-हथौड़ी रोकि ओ उत्तर देलकैन-

"जिनगी भरिमे जेते कटत ओते तँ असान भऽ जाएत। तेकर उपरान्त बेटा काटत एक-ने-एक दिन पहाड़ कटबे करत जइसँ सुगम रस्ता बनबे करत। जे अबैबला पीढ़ी-ले सुगम हएत।"

खिस्साकेँ धियानसँ सोचि बचेलाल आगूक जिनगी-ले कार्यक्रम बनबए लगला। पतिक बोलीकेँ रूमा धियानसँ अँकैत रहैथ। कोनो बात निक्को लगैन आ कोनो अधलो तैसंग कोनो-कोनो बात बुधिक बखारीमे अँटबो ने करैन। रूमा मने-मन सोचए लगली, भरिसक हिनका कोनो बिमारी तँ ने भऽ गेलैन। मुदा बिमारीसँ जे बड़बड़ेनाइ

होइ छै ओ तँ जेना-जेना रोगक धक्का कम-बेसी होइत तेना-तेना कमो-बेसी होइए जे हिनकामे नइ देखै छिऐन। एक रसमे बजै छैथ।

..अपन दहिना हाथ रूमा बचेलालक छातीपर दऽ धड़कन देखए लगली। छातीपर हाथ पड़िते बचेलाल पुछलखिन-

“अहूँ जागि गेलौं?”

अपन विचार छिपबैत रूमा बजली-

“अखने नीन्न टुटल। अहाँ कखनसँ जागल छी?”

गंभीर स्वरमे बचेलाल कहलखिन-

“बारह बजे रातियेसँ जगल छी, निन्ने ने होइए।”

“हमरो किए ने उठा देलौं?”

“उठबैक मन भेल मुदा सोचलौं जे जाबे अपने नै जागब ताबे दोसरकेँ केना जगा सकब? तँए नै उठेलौं।”

सुमित्रा उठि कऽ मोख लग राखल बाढ़ैनसँ अपन घर बहारि ओसार बहारए लगली। बहारैत-बहारैत सुमित्रा जखन बचेलाल घरक मुँह लग एली तँ बुझि पड़लैन जे घुनघुना कऽ बचेलाल किछु रूमाकेँ कहै छथिन। बाहरब छोड़ि सुमित्रा बोली अकानए लगली।

बचेलाल रूमाकेँ कहैत रहथिन-

“अपना परिवारमे दू गोरे जुआन छी। दूटा बच्चा अछि आ माए बुढ़ छैथ। जखन पिताजी मुइला तखन हम दुनू भाए-बहिन बच्चे रही। जेते खेत अखन अछि तेतबे ओहू समैमे छल। असगरे माए दुनू भाए-बहिनकेँ पोसबो केलैन आ पढ़ेबो केलैन। बहिनकेँ मिड्ल तक पढ़ा बिआहो केलैन। हमरा मैट्रिक तक पढ़ा शिक्षक बनौलैन अपन बिआहमे माइक विचार हम कटलौं। हुनकर मन रहैन जे गिरहस्तक बेटीसँ बिआह करब, जखन कि हम नोकरिया परिवारमे बिआह केलौं। हमहूँ आगू-पाछू नै बुझिऐ। मुदा आब बुझै छी जे गलती केलौं। बिआह तँ सिरिफ लड़के-लड़कीक ने होइए। जहिना उमेरक खियाल लड़का-लड़की, बर-कनियाँमे देखल जाइ छै तहिना परिवारो

आ समाजोक खियाल हेबा चाही। पुरुख-नारीक सम्बन्ध तँ सृष्टिक सृजनक एक प्रक्रिया छी। मुदा ऐसँ भिन्न जिनगी होइ छइ। जे बेकती-परिवार आ समाजसँ जुड़ल रहैए। हम पढ़ल-लिखल लहक-चहक परिवार बुझि बिआह केलौं मुदा परिवार आ समाज दिस नजैरे ने गेल। अखन धरि परिवार साधारण किसानक रहल जखन कि अहाँक परिवार तीन पुश्तसँ नोकरी करैत आएल अछि। नोकरिया परिवारक आ किसान परिवारक चलैक ढंग अलग-अलग होइत। दू तरहक चालि-ढालि, दू तरहक जीबैक ढंग दुनूक बीच होइ छै तँए आब बुझै छी जे माइक विचार नीक छेलैन... ।"

एते सुनिते गहुमन साँप जकाँ रूमा फूफकार कटैत ओछाइनसँ उठि ठाढ़ भऽ बजली-

"हमर बाप-माए, खरचा दुआरे बोइर देलक, नइ तँ नीक शहरमे अफसरनी बनि ठाठसँ रहितौं। ऐ गाममे देखै छी जे ने एक्को बीत पीच सड़क अछि आ ने बिजली, ने एक्कोटा कोठा छै आ ने कोनो गाड़ी-सवारी। दम घोंटि कऽ कहुना-कहुना जीबै छी हम आ उल्टे ठका गेलौं अहाँ। वाह रे दुनियाँ!"

बचेलालकेँ अपन गलती अपने मुहसँ स्वीकार करैत सुनि सुमित्राक मनमे उठलैन- आब बचेलालकेँ होश जगि रहल अछि। होश जगैएमे मनुखकेँ देरी होइए मुदा जगलापर तँ ओ अपन रस्ता बनबैत आगू बढ़ए लगैए। जहिना सलाइक काठीक छोट-छीन आगिक लौ अनुकूल स्थिति पाबि विराट रूपमे बदलए लगैए जे एक घरक कोन बात, गामक-गामकेँ क्षण-पलमे स्वाहा कऽ दइए। ..ई बात मनमे अबिते सुमित्रा ओसारसँ निच्चाँ उतैर अँगना बहारए लगली। ओमहर फूफकार भरल रूमाक बात सुनि बचेलाल बाँहि पकैड़ बुझबैत कहखिन-

"बिगड़ू नहि, बुझू। अखन धरिक जिनगीक जे नीक-अधला भेल ओकरा बिसैर कऽ आबो होशसँ चलू।"

तैपर रूमा बजली-

"हँ, आब पोथी-पतरा उलटा कऽ जोतखी बनू, दिन गुनू आ तकदीर देखू।"

"हँ, जिनगी-ले ज्योतिक ज्ञानक जरूरत सभकेँ होइ छइ। जाधैर मनुखमे ज्योति नै औत ताधैर अनभुआर बटोही जकाँ केतए वौआएत तेकर कोनो ठीक नहि। जाउ, घर-अँगनाक काज सम्हारू। हमरो बजार जाइक अछि। अछेलाल काका सेहो तैयार भेल हेता।"

कहि बचेलाल घरसँ निकैल हाँइ-हाँइ अपन क्रिया-कर्ममे जुटि गेला।

कनी कालक पछाइत अछेलालक संग जुगाय पहुँच गेल। सुमित्रा आँगन बहारि डेढ़िया बहारै छेली। दुनू गोरेकेँ देखते मुस्कियाइत सुमित्रा बजली-

"भोरे-भोर दुनू गोरेकेँ बड़ बनल-ठनल देखै छी, की रातिमे नीन्न नै भेल?"

अछेलाल आश्चर्जमे पड़ि गेल जे भौजी केना बुझि गेली जे रातिमे नीन्न नइ भेल! मुस्कियाइत बाजल-

"बारह बजे रातियेमे निन टुटि गेल भौजी। मन पड़ि गेल जे बजार जाइले बचेलाल कहने छैथ। तखनसँ निनो ने भेल। जहाँ कनी निन आबए आकि चहा कऽ उठी जे भोर भऽ गेल। कौआ डकिते पर-पैखानासँ आबि तमाकुल चुनबैत रही कि जुगाइयो आबि गेल। काल्हिये जुगायकेँ कहि देने रहिऐ जे तोहूँ बजार चलिहह। रस्तेमे निचेनसँ गपो करब आ बजारक काजो करब। दुनू गोरे तमाकुल खा विदा भेलौं।"

दुनू गोरेकेँ दरबज्जापर बैसा सुमित्रा चाहक जोगार करए लगली। जाबे बचेलाल धोती-कुरता पहिर तैयार भेला, ताबे चाहो बनि गेल। सभ कियो चाह पीलैन। चाह पीब तीनू गोरे बजार विदा भेला। गामक सिमान टपला पछाइत बचेलालकेँ अछेलाल कहलकैन-

“बौआ, हम तँ मुरुख छी आ अहाँ पढ़ल-लिखल छी तँए अहाँ जकाँ केना बुझबै मुदा भौजीक गप सुनलासँ मने बदैल गेल। अखनो हुनका देखै छिऐन जे भोरे सुति उठि अपन काजमे लगि जाइ छैथ। सभ काज सम्हारि समैपर नहा-खा कऽ अरामो करि लइ छैथ। ने कोनो तरहक हरहर-खटखट आ ने कखनो मनमे क्रोध आकि चिन्ता रहै छैन। जखन देखै छिऐन तखन ठोरपर हँसीए रहै छैन। ने केकरोसँ मुहाँ-ठुठी होइ छैन आ ने केकरो अधला गप कहै छथिन। गाममे देखै छी जे हुनकर बतारी बुढ़िया सभ भोरेसँ गारि-गरौवैल, उकटा-उकटी शुरू कऽ दइए। गारि सुनैत-सुनैत जखन मन अकछा जाइए तखन भौजी लग आबि अपन दुख-धन्धाक गप-सप्प करए लगै छी।”

अछेलालक बात सुनि बचेलाल पुछलखिन-

“एना किएक होइ छइ? मनुख तँ कुत्ता-बिलाइ नइ छी जे एक-दोसरकेँ देखते आँखि गुड़ैर पटका-पटकी करए लगैए।”

मुँह सकुचबैत अछेलाल बाजल-

“बौआ, देखते छी धिया-पुता सभ खाइले कनैत रहै छै आ मौगी-मरदाबा सभ झगड़ामे लगल रहैए। आश्चर्ज लगैत रहैए। मुदा जँ केकरोसँ पुछबै तँ दोसर कहत जे फल्लाँ-फल्लाँकेँ चढ़बै छइ। तँए केकरो पुछबो ने करै छिऐ। तँए तेनाहे सन लोक सभसँ बज्जो-भुक्की अछि। हदिघड़ी अपन दुख-धन्धामे लागल रहै छी।”

अछेलालक बात सुनि बचेलाल जुगायक उदास चेहरा देख कहलखिन-

“जुगाय, अपनो दुनू परानी आ बेटो-बेटीक नाओंसँ बैंकमे रूपैआ जमा अछि। ओहीमे सँ उठा कऽ अहूँकेँ बेटीक बिआह निमाहि देब आ जँ आगुओ कोनो खगता हएत तँ ओहो सम्हारि देब तँए मनसँ चिन्ता हटा लिअ। एकठाम रहने अहिना सबहक काज सभकेँ होइ छइ।”

बचेलालक बात सुनिते जुगायक मुहसँ हँसी निकलल। बिलाएल आशा मनमे पहुँचलै। जहिना केतौ जाइमे रस्ता बदलैत तहिना जुगायक जिनगीक रस्ता चौबट्टीपर पहुँच बदलए लगल। अपन मजबूरी देखबैत बचेलालकेँ कहलकैन-

“भाय, पाइ दुआरे घरवालीकेँ डाक्टर लग नै लऽ जाइ छी। वेचारी तीन सालसँ दुखकेँ अँगेजने अछि। पाइक लार-चार नै देखैए तँए चुपचाप देह मारने अछि। मुदा अपने तँ देखते छी जे दिनो-दिन खिआइले जाइए। जेते काज वेचारी पहिने करै छल तेकर अदहो आब नै कऽ होइ छइ। मुदा की करब। खरचा दुआरे धिया-पुताकेँ स्कूलो ने जाइ दइ छिऐ। कहुना-कहुना दिन कटै छी। कर्जाक डर होइए। गाममे देखै छी जे तेहेन चण्ठ महाजन सभ अछि जे एककेँ तीन कहि घर-घराड़ी लिखौने जाइए। अखन थोड़े खेत अछि तँए दिके-कि-सिके गुजर कऽ लइ छी। जँ ओहो चलि जाएत तखन तँ अपनो आ धियो-पुतोकेँ भीख मांगए पड़त। गामेमे देखै छी जे जनकाकेँ पहिने जोड़ा बरद छेलइ। कर्जामे फँसि गेल। सभ सम्पैत बोहा गेलइ। अहिना मुनेसरा करजे दुआरे गामसँ भागि नेपालमे बसि गेल। मुदा हमरा कुल-खनदानक मोह लगैए। केना बाप-दादाक धराड़ीपर अनका हर जोतैत देखब। अखन तँ ईहो आशा अछि जे मरबो करब तँ अपन बाप-दादाक लगौलहा कलम-गाछीमे जरौल जाएब। मुइलहा सभ पुरखाक संग एकठाम रहब। जिनगी ने थोड़ दिनक होइत मुदा मृत्यु तँ बेसी दिनक होइए।”

जुगायक बात सुनि बचेलालक मनमे आशा-निराशा आ सुख-दुखक हिलकोर उठए लगल। जहिना शिकारीक तीर लगलासँ कोनो चिड़ै गाछपर सँ छटपटा कऽ निच्चाँ खसैत तहिना बचेलालक विचार कल्पना लोकसँ यथार्थ लोकमे एलैन। यथार्थ लोकमे अबिते बचेलालक हृदए, मोम जकाँ, पीघलए लगलैन, दुनू आँखि उठा जुगायक मुँह देख बजला-

“भाय, बजार लग आबि गेलौं? आब ओ सभ बात छोड़ू। बजारमे जे काज अछि से सभ मन पाड़ि लिअ नइ तँ काज छुटि जाएत। परिवारक गप करैले तँ दुआर-दरबज्जा ऐछे।”

अछेलाल-

“बौआ, स्कूल जाइ-अबैले पहिने साइकिल कीनि लेब। तखन खेती-वाड़ी-ले कोदारि, खुरपी, हँसुआ, कुरहैर, टेंगारी, पगहरिया कीनब। हमरा नजैरमे एतबे अबैए।”

अछेलालकेँ चुप होइते धड़फड़ा कऽ जुगाय बाजल-

“भाय, अपना टोलमे ने एक्कोटा लाइट अछि आ ने दरी। जखन कोनो नमहर काज बजड़ैए तखन अँगने-अँगनेसँ बिछान, लालटेम आ बरतन मांगि-मांगि काज चलैए, तँए ओहो सभ कीनब जरूरी अछि।”

जुगायक बात सुनि मुड़ी डोलबैत बचेलाल बजला-

“जुगाय भाय, अहाँ बड़ सुन्नर काज मन पाड़ि देलौं। मनमे अपनो छल। मुदा सोचै छेलौं जे सौंसे टोल मिला कऽ कीनब, नीक हएत। मगर सभ एक्के रंग तँ नइ अछि। कियो हूबगर छी तँ कियो खगल। तँए चुप्पे रहि जाइ छेलौं।”

बचेलालक बात सुनि मुस्की दैत अछेलाल कहलकैन-

“बौआ, सझिया चीज दू तरहक होइ छइ। एक तरहक जे अहाँ बजलौं। आ दोसर तरहक होइ छै जे असगरे कीनि समाजमे दऽ देब। जेकरा लोक धरम कहै छइ।”

धरमक नाओं सुनिते उत्साहित भऽ बचेलाल बजला-

“ओना हम रूपैआ जुगाय-ले अनने छी मुदा बिआहमे अखन देरियो अछि आ हमरो रूपैआ बैंकमे ऐछे तँए ई काज पाछू करब। अखन जइ समानक चर्चा केलौं से सभ कीनि लिअ।”

बचेलालक बात सुनि अछेलालो आ जुगायोक मनमे खुशी भेल। बजार प्रवेश करिते तीनू गोरे साइकिल दोकानपर जा साइकिल कीनलैन आ साइकिले दोकानपर दूटा लाइटो कीनलैन। साइकिल

गुड़केने लोहा-लक्कड़क दोकानपर एला। दोकानपर आबि सभ लोहाक समान कीनि, बोरामे रखि सुतरीसँ बान्हि साइकिलक कैरियरपर लादि, तीनू गोरे बरतनक दोकानपर गेला। बरतन दोकानमे दूटा पितरिया बरतन कीनि, दरी दोकानपर गेला। बीस हाथ नमती दरी कीनि, दोकानेमे रखि, कपड़ा दोकानपर जा ओही नापसँ जाजीम सेहो कीनलैन। सभ समान कीनि तीनू गोरे हलुआइ दोकानपर आबि जलखै केलैन। सभ समान घरपर केना जाएत। तीनू गोरे गर अँटबए लगला। अछेलालकेँ गर अँटि गेल। बाजल-

"एकटा बरतन हम कान्हपर लऽ लेब आ एकटा जुगाय आ तैसंग एक-एकटा लाइटो दुनू गोरे हाथमे लटका लेब। बाँकी सभ चीज साइकिलपर लेब आ तीनू गोरे गप-सप्प करैत चलि जाएब।"

जिनगीक नव रस्ता भेटने तीनू गोरे बचेलाल-अछेलाल-जुगायक मन उधियाइत रहैन। बचेलालकेँ होनि जे आइ रस्तापर एलौं। अछेलालकेँ मनमे होइ जे जाधैर मनुखकेँ काज करैक साधन नइ हेतै ताधैर लूरि-बुधि रहनौं बेकार रहत। मुदा हाथमे ओजार एने काजोक गति बढ़ैए आ सन्तोखो होइ छइ। ..जखन कि जुगायकेँ होइ जे जइ दुआरे अपनो आ परिवारो अँटैक गेल छल, ओ आगू ससरत। आइ धरिक दुख काल्हिसँ मेटा जाएत। जहिना अन्हार राति समाप्त होइते दिनमे सभ किछु देख पड़ैत तहिना तीनू गोरेकेँ होइत रहैन।

घरपर अबैत-अबैत तेसर साँझ भऽ गेल। घरपर आबिते अछेलाल सुमित्राकेँ शोर पाड़ैत कहलकैन-

"भौजी, लालटेन नेने आउ।"

असगरक दुआरे सुमित्रा आँगन आ दरबज्जाक बीच ओलती लग बिछान बिछा, लालटेनकेँ पछबरिया घरक कोनचरमे टाँगि, बैसल छेली। कखनो-कखनो उठि कऽ रस्तापर आबि-आबि देखबो करैथ।

अछेलालक अवाज सुनिते सुमित्रा लालटेन नेने दुआरपर एली। नव-नव समान देख सुमित्रा मने-मन सोचए लगली, जे काज आइ

भेल ओ बहुत पहिनहि हेबा चाही छेलइ। मुदा देरियो भेने काज तँ भेल। लालटेन रखि चोट्टे घुमि कऽ आँगन जा पुतोहुकेँ कहलैन-

"कनियाँ, बौआ आएल। झब-दे चाह बनाउ।"

कहि दरबज्जापर एली। अछेलाल आ जुगाय ओसारपर बरतन आ लाइट रखि, साइकिल परहक समान उतारए लगल। बचेलाल कुरता-गंजी निकालि चौकीपर आ चप्पलकेँ चौकी तरमे रखि धोतीकेँ खोंसि फाँड़ बान्हि, गर लगा-लगा सभ चीज रखए लगला। ताबे रूमा चाह बनौने एली। रूमाक हाथसँ चाह लऽ सुमित्रा तीनू गोरेकेँ हाथमे दऽ पुछलखिन-

"बौआ, पानियो पीब।"

अछेलाल-

"नहि भौजी, अखन तँ चाह नइ पीबतौं तँ नीक किए तँ गरमा गेल छी। जाबे दू डोल पानि देहपर नै ढारब ताबे ठंढाएब नहि।"

कातमे ठाढ़ भऽ रूमा सभ समान देख-देख तरे-तर जेना जरै छेली। मनमे होनि जे साइकिल लेलैन से बड़बढ़ियाँ, मुदा आन-आन समान लऽ कऽ अनेरे पाइकेँ दुइर केलैन। ..ओना, खुलि कऽ तँ रूमा किछु नै बजली मुदा तरे-तर गुम्हरैत रहली। तामसे आँगन जा चुल्हि लग बैस अन्ट-सन्ट बाजए लगली।

अछेलाल आ जुगाय, चाह पीब दरबज्जाक कोठरीमे सभ समान सेरिया कऽ रखि अछेलाल जुगायकेँ कहलक-

"जुगाय जखन चाह पिबे केलौं तँ तमाकुलो खाइये लएह।"

जुगाय तमाकुल चुनबए लगल। अछेलाल सुमित्राकेँ कहलकैन-

"भौजी, जे मनमे छेलए से आइ पुरा भऽ गेल। भिनसरमे दरियो उघारि कऽ देखा देब। बड़ सुन्नर अछि। यएह दरी तँ केते दिन चलत।"

सुमित्रा मने-मन खुशी होइ छेली। दुनू गोरे तमाकुल खा चलि गेल।

बचेलाल धोती बदैल माए लग आबि बैस सामानोक चर्च करैथ आ दामोक। एक्के परिवारमे हर्ष-विषाद लड़ए लगल..! बचेलाल मने-मन सोचैथ जे परिवारमे कोनो नीक काज भेने, परिवारक सभ समांगकेँ एक्के रंग खुशी किए ने होइ छइ? हँ, ई बात जरूर जे खास बेकतीकेँ खास वस्तुक संग लगाव भेने बेसी खुशी जरूर होइ छै, मुदा दोसरकेँ ओइसँ जलन तँ नइ हेबा चाही। औझुका जे वस्तु अछि ओ तँ बेकतीगत नइ छी? जखन जेकरा जइ वस्तुक जरूरत हेतै से उपयोग करत। तइमे दुख केतएसँ चलि आएल..?

रूमाक अवाज दुनू माय-पुत सुनैत रहैथ। मुस्की दैत सुमित्रा बचेलालकेँ कहलखिन-

“बौआ, जहिना केकरो बिढ़नी काटि लइ छै आ दरदे छड़पटाइए तहिना कनियाकेँ भऽ रहलैन हेन। कमाएल पाइ तोहर खर्च भेलह हुनकर तँ किछु ने भेलैन। तोरा खुशी छह आ हुनका किए एते दुख भऽ रहलैन हेन?”

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल भखरल स्वरमे बजला-

“माए, हमहूँ तँ यएह सोचि रहल छी जे हुनका किए एते दुख भऽ रहल छैन?”

बचेलालकेँ बुझबैत सुमित्रा कहलखिन-

“बौआ, यएह छिऐ सोभाव, मनुखक रोगक जड़ि। जेहेन जेकर सोभाव रहै छै ओ ओहने काजकेँ नीक बुझैए, भलेँ ओ अधले किए ने होइ। अखन तोहूँ थाकल छह। जँ नहाइक मन होइ छह तँ नहा लएह। जँ नहेबह नइ तँ देहे-हाथ धोइ लएह, मन चैन भऽ जेतह।”

“नहाइक मन तँ अपनो होइए। भरि दिन ठाढ़े छेलौं। मुदा सभ काज भऽ गेल।”

सुमित्रा आँगनसँ बाल्टीन आ लोटा आनि बचेलालकेँ देलखिन। बचेलाल नहाइले कलपर गेला, सुमित्रा लालटेनक इजोतमे खुरपी,

हँसुआ देखए लगली। नहा कऽ बचेलाल सोझे अँगना जा खाइले बैसला।

बचेलालकेँ ओसारपर देख रूमा जोर-जोरसँ अन्ट-सन्ट बाजए लगली। गौरसँ रूमाक बात सुनि बचेलाल पुछलखिन-

"एना तामस किएक उठल अछि? कोन अधला चीज देखलिऐ जे एते तमसाएल छी?"

बचेलालक बात सुनि रूमा गरजैत बजली-

"जखन लोककेँ मति खराब भऽ जाइ छै तखन अहिना करैए।"

मने-मन बचेलाल सोचए लगला जे जेते अपन पुरुषत्वकेँ दाबि रखने छी तेते ओ कण्ठपर चढ़ल जाइए। तँए, एक-ने-एक दिन मुँह खोलै पड़त। असथिर मुदा सक्कत शब्दमे बचेलाल रूमाकेँ कहलखिन-

"बहुत सुनलौं। मुँह बन्न रखू। अपन सिमान टपब तँ बुझि लिअ हम पुरुख छी। जेते अहाँकेँ सिनेह केलौं तेते अहाँ हमरा कमजोर बुझैत गेलौं। आबो चेत जाउ!"

बचेलालक बात सुनि रूमा चुप तँ भेली मुदा मुँह..!

◌

शब्द संख्या : 3125

9.

अदहा अखाढ़ बित गेल। जेठुआ बर्खाक पछाइत बीचमे दूटा अछार भेल। सबहक बीआ रोपाउ भऽ गेल। अड़िया-नँघन बरखा भेल। पानि छुटिते गिरहस्त सभ कोदारि लऽ लऽ खेत दिस विदा भेला। कियो अपन खेतक आड़ि बन्हैत तँ कियो अपन खेतक पानि बहबैत। कियो आड़ि-कोण बनबैत तँ कियो हाँइ-हाँइ धानक बीआ उखाड़ैत। एक खेप सजन हरखाड़ा आ चौकी खेतमे रखि आएल आ

दोहरा कऽ बरद आ कोदारि लइले गामपर आएल। अँगना अबिते घरवाली कहलकै-

"रोटियो पाकिये गेल तँए जलखै काइये लिअ। हमहूँ पानि पीब बीआ उखाड़ए चलि जाएब।"

सजन हाथ-पएर धोइ कऽ जलखै करए लगल। जलखैयो करैत आ घरवालीकेँ कहबो करैत-

"तीनकठबा कोली रोपि लेब। हम जाइ छी, खेतो जोइत लेब आ कोणो-काण सेरिया देबइ। अहूँ जा कऽ चारि जोड़ा बीआ खीच लेब आ आबि कऽ भानसो कऽ लेब। अखन बीआ ऊपरेमे हएत तँए उखाड़ैमे देरियो नइ लगत। ओना खेत जोतले अछि तँए हमरो अबेर नहियेँ हएत। अखन जे कदबा आ बीआ उखैड़ जाएत तँ बेरू-पहर दुनू गोरे साँझ धरि रोपियो लेब।"

जलखै कऽ सजन बरद जोड़ि खेत विदा भेल।

दछिनबरिया बाध ऊँच तँए गामक बेसी गिरहस्त ओही बाधमे। हरक जोगार नै रहने देवन कोदारियेसँ खेत तैयार करैक विचार कऽ बुधनीक संग विदा भेल।

बुधनीक खेत सजन-खेतसँ तीन कोला आगू, तँए सजनेक खेतक आड़िपर देने दुनू गोरे देवन-बुधनी जाइत। देवनक कान्हपर कोदारि देख सजन पुछलक-

"देवन, तोहूँ अही खेतकेँ रोपबह?"

"हँ भैया, पाँच कट्ठाक कोला अछि। दू-तीन दिनमे रोपि लेब।"

सजन-

"जा दुनू गोरे बीये उखाड़िहह। हमरो तीनियेँ कट्ठा खेत अछि। लगले भऽ जाएत। तोरो खेत तँ तमले छह। एकटा चास कऽ देबै तेहीमे कदबा भऽ जेतह। पहिल पानि छिऐ, एक रत्ती अबेरे ने हएत मुदा तोरो काज चलि जेतह। कदबा भेल रहतह निचेनसँ रोपैन करैत

रहिहह। जखने खेतमे चौकी पड़ि जाइ छै आकि पानि सुखैक डर कम भऽ जाइ छइ।"

सजनक बात सुनि बुधनी मने-मन सोचए लगली। जे नीक सगुनसँ निकललौं। अदहा काज ओहिना भऽ गेल। एक झोंक जे दुनू गोरे बीआ उखाड़ब तहीमे तँ अदहा खेतक बीआ उखाड़ि लेब। खेतो जोताइए जाएत। बीओ हल्लुके अछि, तखन तँ रोपनियेँ-टा ने रहत। बैस-उठि कऽ दू दिनमे रोपि लेब।

'रोपि लेब' बुधनीक मनमे अबिते, खुशीसँ नाचि उठलैन! सोचए लगली जे पाँच कट्ठा खेत अबाद भेने कहुना-कहुना तीन मासक बुतातक ओरियान तँ भाइये जाएत। तीन मासक बुतात-ले मेहनत केते भेल। अहिना पनरहो कट्ठा अबादैमे आठ-दस दिन लगल।

दुनू गोरे आगू बढ़ल। सजनक खेतक आड़ि टपलापर देवन बाजल-

"दीदी, भरिगरहा काज सम्हैर गेल।"

खेतमे पहुँचते बुधनी साड़ी समैट कऽ खोंसि लेली आ बीआ उखाड़ैमे, भीर गेली। देवन कोदारिसँ खेतक कोण-कान तामए लगल। जाबे देवन तीनूटा कोण, एकटा कोणपर बीये रहै–बनौलक। ताबे बुधनी एक जोड़ा बीआ उखाड़ि लेली। आड़ि बना देवनो बीआ उखाड़ए ललग। हल्लुक बीआ देख बुधनी कहलखिन-

"बौआ, उखाड़लो बीआ आठ दिन तक रहै छइ। अगर सभटा बीआ उखैड़ जाएत तँ रोपनाइयेटा ने रहत। एकटा काज तँ सम्पन्न भऽ गेल रहत। जँ सभ बीआ उखाड़ि लेब तँ खेतो खाली भऽ जाएत। जइसँ जोताइयो जाएत। नइ तँ पाछू तामि-तामि रोपए पड़त।"

बुधनीक बात सुनि देवन बाजल-

"हँ, ठीके कहै छी दीदी। जाबे सजन भैया अपन खेत जोतत ताबे अपनो दुनू गोरे सभटा बीआ उखाड़ि लेब।"

दुनू गोरे बीओ उखाड़ैत आ गपो करैत।

बेसी काज देख सजन बरद रेबारि कऽ हाँकए लगल। सजन हरो जोतैत आ मने-मन सोचबो करैत जे मनुखेक काज मनुखकेँ होइए। आइ जेकरा हम नीक करबै, एक-ने-एक दिन ओहो जरूर नीक करत। तोहूमे जे गरीब अछि ओ जँ नहियोँ बदला सठाएत तैयो गरीबक उपकारकेँ लोक धरम कहै छइ। काजो भरिगर नहियेँ अछि। पहिल दिन कदबा करैले एलौं हेन, बरदो सभ कोनो थाकल थोड़े अछि। जहिना खेत सहगर अछि तहिना बरदो जीराएले अछि। एकटा चास मेहीसँ कऽ लेब आ समाड़ै-बेरमे लाभरो-जिभर कऽ जोति लेब तैयो कदबा बनबे करत। तहूमे जरल जमीनमे बरखा भेल, खेत ओहिना माँड़-माँड़ भेल अछि।

थोड़े काल बीआ उखाड़ि देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

"दीदी, ताबे अहाँ बीआ उखाड़ू हम सजन भैयाकेँ देखने अबै छी।"

कहि देवन सजन लग आएल। देवनकेँ देखते सजन बाजल-

"बौआ, केते बीआ उखाड़ैले रहलह हेन? हमरा लगिचा गेल।"

चोट्टे देवन घुमि कऽ खेत आबि बुधनीकेँ कहलकैन-

"दीदी, हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ू सजना भैयाकेँ कदबा लगिचा गेलैन।"

दुनू गोरे हाँइ-हाँइ बीआ उखाड़ए लगल। जहाँ तीन गफ्फी बीआ भऽ जाइ आकि आँटी बान्हि लिअए। आँटी बन्हैत बुधनी बजली-

"बौआ, जहिना सजन भैया कदबा कऽ देथुन तहिना हुनको कहिहौन जे आइ-काल्हि तँ अपने रोपब, जखन अपन खेत रोपा जाएत तँ अहूँकेँ सम्हारि देब। किएक तँ हुनका बेसी खेत छैन। जँ अपनो दुनू गोरे हुनका रोपैन सम्हारि देबैन तँ हुनको रोपैन अगते भऽ जेतैन।"

अपन कदबा कऽ सजन चौकी लधले बरद आ हर कान्हपर नेने बुधनीक खेत पहुँचला। खेत पहुँच बरहा लगले चौकी खोलि, घिसियौने जा दोसर खेतमे रखलैन। हर लाधि सजन देवन लग आबि बजला-

“बौआ, बीआ तँ भाइये गेलह। सभ आँटीकेँ आड़ि टपा कऽ रखि दहक, जोतैमे देरी नै हएत।”

कहि सजन बैस कऽ तमाकुल चुनबए लगला। बीआ टपा बुधनी सजनकेँ कहलकैन-

“भैया, हमरा तँ पनरहे कट्ठा खेत अछि जँ दू दिन सम्हारि दैथ तँ अगते काज हमरो ससैर जाएत। हिनका तँ बेसी खेत छैन, हमहूँ दुनू गोरे रोपि देबैन।”

बुधनीक बात सुनि सजनक मनमे उत्साह बढ़लैन। ठोरमे तमाकुल लैत बजला-

“कनियाँ, बेसियो खेत रहने रोपैनमे जन नइ लगबै छी, किए ने लगबै छी से बुझै छिऐ? तेहेन गामक जन सभ अछि जे सोल्होअना धियान ओकरा बोइनेपर रहै छइ। कहैले आँटी गनि कऽ उखाड़ैए मुदा रोपै काल मूठक-मूठ बीआ गाड़ि देत। गिरहत हुअए कि जन, ओकरा मनमे ई हेबा चाही ने जे खेती नीक नहाँति होइ। जखन खेती नीक नहाँति हएत तखने ने उपजो नीक हएत। उपजा नीक हएत तखने ने सबहक हालत सुधरत से केकरो नेतमे छैहे नहि।”

बुधनी बजली-

“भैया, सभ रंगक लोक सभ गाममे रहै छइ। ने सभ नीके होइत आ ने सभ अधले। तखन तँ लोककेँ अपने नीक-अधला देख चलए पड़तै। कियो किछु करह मुदा सभकेँ अपने नीक बनैक चेष्टा करबा चाही?”

तमाकुल खा सजन हर जोतैले उठला, हरक लागैन पकैड़ जहाँ एक मोड़ घुमला कि देखलैन पुबरिया खेतमे, चारि कोला हटि– हरबाहकेँ पटाक-पटाक मारैत।

पहिने तँ हरबाहकेँ कोनो शंके ने रहै जे हमरे मारैले फुसियाहा अबैए। मुदा जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे मारि लगि गेलइ। किसुनमा बुफगर। हर ठाढ़ कऽ फुसियाहाकेँ पकैड़ खेतेमे पटकलक। पटैक कऽ छातीपर बैस किसुनमा मुहेँ-मुँह खूब चोटियेलक। सौंसे बाध हल्ला भऽ गेल। बीओ उखाड़निहार आ हरो जोतनिहार सभ जम्मा भऽ गेला। दुनू गोरेकेँ झगड़ा छोड़ा पुछए लगला। ताबे नवकी बीआ उखाड़ब छोड़ि घर दिस लफरल विदा भेल। नवकी टोलपर जा पहिने फुसियाहाक घरवालीकेँ कहलक-

“कनियाँ, तूँ अँगनामे छह आ घरबलाकेँ किसुनमा खून कऽ देलकह।”

कहि नवकी लफरल किसुनमा अँगना गेल आ किसुनमो भनसियाकेँ कहलक-

“कनियाँ, घरबला खून भऽ गेलह!”

“केना खून भेल?” –किसुनमाक घरवाली पुछलकै।

“ऐँह की कहबह, फुसियाहा लाठी नेने गेल आ हाँइ-हाँइ देहपर चलबए लगलै!”

फुसियाहाक घरवाली किसुनमाकेँ अँगनेसँ गरियबैत विदा भेल। तहिना किसुनमोक घरवाली गरियबैत टोलसँ निकैल, कनीए आगू बढ़ल, जेतएसँ एक्के रस्ता बाधक अछि– कि दुनूक रस्ता एक भेल। दुनूकेँ भेँट भऽ गेलइ। एक दोसरकेँ देखते आरो चिकैर-चिकैर कऽ दुनू गारि पढ़ए लगल। लग होइते दुनूकेँ पकड़ा-पकड़ी भऽ गेल। दुनू-दुनूकेँ झोंटा पकड़लक। घिचम-तीरा होइत-होइत दुनू खसि पड़ल। मुदा झोंटा दुनू-केँ-दुनू पकड़नेहि रहल। तरमे किसुनमाक भनसिया

आ ऊपरमे फुसियाहाक। तरेसँ किसुनमाक भनसिया नाकेमे दाँत काटि लेलकै। छर-छर लहू फुसियाहा भनसियाकेँ बहए लगल।

खून बहैत देख फुसियोहोक भनसिया गालेमे दाँत काटि लेलकै। ओकरो खून बहए लगलै। मुदा तैयो कियो-केकरो छोड़ैले तैयार नहि।

अपना आँगन आबि नवकी भानस करए लगल। नवकीकेँ गामक लोक ऐ दुआरे 'नवकी' कहैत जे पौंरके वसुआसँ चुमौन कऽ ऐ गाम आएल। नवकीक वसुआ चारिम पति। नवकीक पहिल बिआह रतुआर भेल रहइ। तीनटा धियो-पुतो भेलइ। एक दिन पतिसँ झगड़ा भेलै पड़ा कऽ नैहर चलि आएल। धियो-पुतोकेँ छोड़ि देलक। साल भरिक पछाइत दोसर बिआह विसुनपुर केलक। नवकियोकेँ दोसर बिआह रहै आ घरोबलाकेँ। विसुनपुरोमे दूटा बच्चा भेलै, ओकरो छोड़ि कऽ पड़ा गेल। तखन तेसर केलक। तेसरोमे झगड़ा भेलै, छोड़ि कऽ पड़ाएल। ..चारिम सासुरमे अखन नवकी अछि। ई चुमौन चालिस-पैतालिस बर्खक उमेरमे भेलैए। तँए गामक लोक सभ 'नवकी' कहैत।

फुसियाहा आ किसुनमा दुनू भजैत। दुनूकेँ एक-एक्केटा बरद। खेतो कम्मे। अखाढ़क बरखा तँए सबहक खेतो खसले आ बीओ रोपाउ। भोरहरबामे पानि भेल तँए खेत रोपैक जोगार कियो ने केने। सभ दिन अपन-अपन भाँजमे खेत जोतैत। पानि देख फुसियाहा भोरे बरदकेँ घरसँ निकालि, कुट्टी लगा, बीआ उखाड़ए दुनू परानी खेत गेल। किसुनमोक खेत पनिआएल। हर खोलै बेरमे किसुनमा बरद आनए फुसियाहा ऐठाम गेल। फुसियाहा घरपर नहि तँए दुनू गोरेमे भेँट नै भेलइ। भजैती बुझि किसुनमा बरद नेने चलि आएल। घरपर आबि अपना बरदमे जोड़ि कदबा करए खेत गेल। थोड़े बीआ उखाड़ि फुसियाहा हर लइले घरपर आएल तँ बड़दे नहि! हाथमे हरवाही पेना रहबे करइ। किसुनमा ऐठाम आएल। ने बरद ने किसुनमा घरपर।

घरपर भाँज लगा फुसियाहा किसुनमाक खेत गेल। खेतमे किसुनमाकेँ हर जोतैत देखलक। बिनु किछु कहने-सुनने किसुनमापर पेना बरिसाबए लगल। जाबे किसुनमा हर ठाढ़ करै-करै ताबे फुसियाहा सात-आठ पेना लगा देलकै। थाले-पानिमे फुसियाहाकेँ पटैक किसुनमा खूब चोटियेलक। आन-आन हरबाह सभ दुनूकेँ छोड़ौलक। झगड़ा छुटला पछाइतो दुनू-दुनूकेँ अनधुन गरियबैत रहल। दुनूकेँ सभ बुझा-सुझा, हर खोलि विदा केलक। अपन बरद लऽ कऽ फुसियहा घर दिस विदा भेल आ किसुनमा ओत्तै बरदकेँ चरैले छोड़ि देलक।

घरपर अबिते फुसियाहा घरवालीकेँ सौंसे देह खून लगल देखलक। मुदा नाकक खून बन्न भऽ गेल रहइ। घरोवाली फुसियाहाकेँ सौंसे देह थाल लगल देखलक। दुनू अँगनाक ओसारपर बैस एक-दोसरकेँ दुनू परानी देखैत रहल। मने-मन फुसियाहा सप्पत खेलक जे किसुनमासँ बरदक भजैती नै रखब।

दुनूक भजैती छुटि गेल। गामक सभ अपन-अपन खेती करए लगल। ने एक्को धूर फुसियाहा धान रोपलक आ ने किसुनमा। किएक तँ एकटा बरदसँ हर केना जोतैत?”

साँझू-पहर सजन बुधनीक ऐठाम एला। भरि दिनक मेहनतसँ बुधनियोँ आ देवनो थाकल। अँगनामे बिछान बिछा बुधनी पड़ल आ देवन पएरसँ जँतैत। सजनकेँ देखते देवन बाजल-

“आउ-आउ, भैया!”

देवनक बात सुनिते बुधनी फुर-फुरा कऽ उठि देहक साड़ी सेरियबैत सजनकेँ कहलखिन-

“आबौथ भैया। भरि दिन तेते भीर भेल जे देह दुखाइए तँए देवनकेँ जँतैले कहलिऐ।”

सजनो बाजल-

"आइ रोपैनक पहिल दिन छल तँए देह दुखाइए। जखन दू-चारि दिन एकलखाइत रोपैन करबै तखन अभियास भऽ जाएत तब देह नै दुखाएत।"

बुधनी-

"भैया, हमरा तँ कम्मे खेत अछि, हिनका तँ बेसी छैन। आइ जे कदबा कऽ देलैन काल्हि तक ओकरे रोपब। अहिना जँ दू दिन आरो सम्हारि देता तेहीमे हमर सभ खेती भऽ जाएत। अपन खेत जखन भऽ जाएत तँ हिनको जाबे हेतैन ताबे हमहूँ दुनू गोरे रोपि देबैन। अगते खेती दुनू गोरेक भऽ जाएत।"

"देखियौ कनियाँ, अगर लोक मिलानसँ काज करत तँ सबहक काज असान भऽ जेतइ, मुदा से नै ने होइ छइ। आइये फुसियाहा आ किसुनमाकेँ देखलिऐ।"

बिच्चेमे देवन सजनकेँ कहलकैन-

"भैया, ओइ दिन जे खिस्सा कहैत रहिऐ आ कहलिऐ जे दोसर दिन आगू कहब से कहियौ।"

देवनक बात सुनि सजन अखिहासए लगला। मन पड़िते हँसैत बजला-

"अच्छा सुनह...।"

हाथक इशारासँ देखबैत सजन-

"ओ रवियाक घर छिऐ। तूँ अनभुआर छह तँए चिन्हा दइ छिअ। रविया आमक गाछी लगबैक विचार केलक। गाछ तँ पहिनौं रहै मुदा सभटा गाछ बुढ़हा गेल रहै, कएटा सुखियो गेल रहै आ कएटा बेचियो लेलक। सिरिफ एक्केगो पुरना गाछ बँचल रहइ, ओहो पुरना गेल छेलै जे कोनो साल फड़ै आ कोनो साल नइ फड़इ। ..ओ हमरा आबि कऽ पुछलक जे 'कोन-कोन आमक गाछ रोपी?' ..आमक गाछ रोपब सुनि हमरा खूब खुशी भेल। खुशी ऐ दुआरे भेल जे समाजमे केकरो गाछी भेलासँ गाममे आम बेसी हएत। अपनो खएत आ दोसरो

खेतै। हमरो धिया-पुता टुकला बिछत। हम कहलिऐ- 'रवि, नीक-नीक आमक गाछ जे मीठो होइ आ नम्हरो रोपिहह।' ..ओ कहलक- 'गाछ केतएसँ आनब?' ..हम कहलिऐ- 'अगर बजारमे कीनिबह तँ ठका जेबह। कहतह 'कलमी' आमक गाछ दइ छी आ भऽ जेतह 'सरही', तँए आमेक दोकानमे जा चुनि-चुनि कऽ नमहरका आम कीनि लिहह आ गुद्दा खा कऽ सुआद देख लिहक। जे नीक बुझि पड़तह ओकर आँठी रोपि दिहह। पनरहे दिनमे पिपही जनैम जेतह। आमक गाछकेँ पिपही लोक ऐ दुआरे कहै छै जे आँठीक तरमे जे गुद्दा जकाँ रहै छै ओकरा लोक सिलौटपर रगैड़ पिपही बनबैए, तँए ओकरा पिपही कहै छइ। पिपहीकेँ ताक-हेर करैत रहिहह जे बकरी-छकरी ने खा। नमहर गाछकेँ जँ बकरी खेबो करै छै तँ निच्चासँ कनोजैड़ चलै छै मुदा पिपहीबला गाछकेँ खेने सूखि जाइए। जखन पिपही कनी नमहर हेतह तखन उखाड़ि कऽ ओकर मुसरा निच्चाँ दबा कऽ काटि फेर रोपि दिहक। साले भरिमे डेढ़-हाथ-दू-हाथक भऽ जेतह। तखन ओकरा थल्ला काटि दिहक। तीनियेँ सालमे फड़ए लगतह।' ..रविया सएह केलक।"

देवन धियानसँ सुनै छल। सजन अपन आँगुरक इशारासँ छठुआक घर देखबैत आगू बजला-

"ओ छठुआक घर छिऐ। छठुआ की केलक तँ रवियाक आमक गाछ पहिने गनि लेलक, बारहटा गाछ रहैक– आ अपन बाड़ीमे जनमल अनेरूआ बारहटा गाछ उखाड़ि कऽ साँझमे रखि लेलक। रातिमे रवियाक बारहोटा गाछ उखाड़ि अपनामे रोपि लेलक आ अपन रवियामे रोपि देलकै। रविया अनाड़ी, बुझबे ने केलक। तीन सालक पछाइत जखन आम फड़ए लगलै तखन रविया तजबीज करए लगल जे जेहेन आमक आँठी रोपने रही तेहेन तँ एक्कोटा ने अछि! एना किएक भेल? ..छठुआ अपन आमक बड़ाइ जेतए-तेतए करए लगल। रवियाकेँ सेहो छठुआक आम देख मनमे एलै जे जेहने आमक आँठी

रोपने रही तेहने बुझि पड़ैए। मुदा कहबै केना। ..रवियाक आँगनवाली आमक गाछ रोपैए कालमे कबुला केने जे 'पहिल बेरक फलसँ ब्राह्मण भोजन बरहम स्थानमे कराएब।' जखन आम पाकए लगलै तखन सभ गाछक आम मिला कऽ दू चँगेड़ा सैंत कऽ रखलक आ एक मटकुरी दहियो पौरलक तैसंग एक अढ़ैया धानक चूड़ा सेहो कुटलक। बेरागन बुझि शुक्र दिनक नँत पुरहितकेँ दऽ देलकैन। ..सबेरे आठ बजेमे पुरहित स्नान-पूजा कऽ माथमे त्रिपुण्ड केने पहुँच गेलखिन। बरहम स्थानक आगूमे सभ समान–चूड़ा, दही, चीनी, अँचार, आम, रखलक। पुरहितक नजैर आमपर पड़िते झुझुआ गेलैन, मुदा दही आ चूड़ा देख सवुर भेलैन। रविया सभ चीज परसलक। पुरोहित सभ आमकेँ बागि देलखिन जे खट्टा अछि। 'खट्टा' सुनिते दुनू परानी रविया तामसे आगि भऽ गेल। मुदा की करैत। ..चारि सालक मेहनत रविया चोरकेँ उसरैग छातीमे मुक्का मारि लेलक। फेर रविया ओइ गाछीकेँ उपटा दोहरा कऽ रोपैक विचार केलक। हमरा आबि कऽ पुछलक। हम कहलिऐ जे नसीवलाल काका ऐठाम चलि जा ओ सुतिहार छैथ। ओ जेना-जेना कहथुन तेना-तेना करिहह। रविया नसीवलाल काका ऐठाम पहुँच, पहिने पैछला खिस्सा कहलकैन। तखन गाछी लगबैक बात पुछलकैन। नसीवलाल काका रवियाकेँ बुझबैत पुछलखिन- 'केते खेतमे गाछी लगेबह?' ..रविया कहलकैन- 'बहुत खेतबला तँ हम नहियेँ छी, पाँचे कट्ठा ऊँचगर खेत अछि जइमे गाछी लगौने छेलौं, ओहीमे लगाएब।' ...नसीवलाल कहलखिन- 'बड़बढ़ियाँ। छअटा कलमी– एकटा बम्बइ, एकटा रोहनियाँ एकटा जरदालू, एकटा मालदह, एकटा फैजली आ एकटा राइर–लगाबह। ऐ आमकेँ रोपलासँ अदहा जेठसँ अदहा सौन धरि बेराबेरी चलैत रहतह। ई छबो आमक गाछ हम दऽ देबह। पाइ-कौड़ी नइ लेबह। पाँचटा सरही सेहो रोपि दिहक तैसंग एकटा बेल, दूटा धात्री, एकटा गुलजामुन आ दूटा लतामक गाछ सेहो रोपिहह। सभ मिला कऽ बढ़ियाँ बगीचा भऽ

जेतह। जँ सभटा कलमीए आम रोपबह तँ मौका-कुमौकामे जखन जारैनक काज हेतह तँ दिक्कत भऽ जेतह।' ..नसीवलाल कक्काक बात सुनि रवियाक मन खुशी भऽ गेलइ। गाछ लऽ जा रोपलक आ सभ गाछमे बेरही सेहो लगा देलक। दुनू परानी रविया गाछक ताक-हेरि करए लगल। वएह गाछी अखन छइ। दू सालसँ फड़बो करै छइ।"

सजनक बात सुनि देवन बाजल-

"भैया, आरो किछु कहियौ?"

देवनक जिज्ञासा देख सजनक मुहसँ मकइ लाबा जकाँ हँसी निकललैन। हँसीकेँ कम करैत हाथक इशरासँ तेतराक घर देखबैत कहलखिन-

"ओ तेतराक घर छिऐ। वेचारा बड़ मुँहसच्च अछि। मुदा काज करैमे भूते छी। जहिना करीन पटबैमे तहिना कोदरवाहि करैमे। काज करैमे तेहेन पीतमरू अछि जे ओकर जोड़ा गाममे नइ छइ। घरोवाली तेहने होशगर। खानदानी घरक बेटी। ओना, देखैमे पिरशियामे अछि मुदा रिष्ट-पुष्ट देह पाँच हाथक नमगर-छरगर। घर-आँगनसँ लऽ कऽ खेत पथारक सभ काजक लूरि। घरक जुइत अपने हाथमे रखने अछि। तेतरो निधैन रहैए। घरवाली जएह करैले कहलक सएह केलक। वेचारी घरक लक्ष्मी छी। खुट्टापर चारिटा माल रखने अछि। मालक सेवा तेहेन करैए जे अनका सेहन्ता लगै छइ। जखन ओकरा बथानपर जेबहक तँ हेतह जे ओत्तै बैस रही। ने एक्को चोत गोबर कखनो थैरमे देखबहक आ ने थाल-खिचार। चानी जकाँ थैर चमकैत रहै छइ। माल-जाल पोसि कऽ वेचारी सबा बीघा खेतो कीनलक, तीनटा घरो बनौलक आ दुनू बेटीक बिआहो केलक। बेटियो सभ तेहेन लूरिगर छै जे नीक-नाहाँति गुजर करैए। गामक कियो ने कहि सकैए जे तेतरा हमर एक्को-पाइ ठकने हएत आ ने केकरो-कहियो गारि पढ़ने हेतइ। मुदा भगवानो कहियो वेचाराकेँ अधला नै केलखिन। अगर केतौ जाइत रहत आ नजैर पड़तै तँ सहैट कऽ लगमे आबि

तमाकुल खुऔत। ऐ तीन-कोसीमे जँ केतौ नाच हेतै आ ओकरा भाँज लगतै तँ आबि कऽ कहत। खेला-पीला पछाइत रातिमे घरवालीकेँ कहतै जे सजना भैयाक मन खराप भऽ गेलै तँए ओ कहलक जे एतइ आबि कऽ सुतिहह। तँइ ओतै जाइ छी। ..वेचारी घरोवाली मन खराब सुनि मानि जाइ छइ। दुनू गोरे नाच देखए जाइ छी। जैठाम नाच देखए जाइ छी तैठाम बिपटा आ नटुआकेँ एक्को-दू रूपैआ देबे करत। ..बरख आठम छिऐ, सजमैनिया टोलक रूपलाल चौरी खेतक मोटका धानक बीआ सासुरसँ अनलक। वास्तवमे धानो नीक छेलइ। सौंसे गामक गिरहस्त ओइ धानक परसंशा केलकै। पाँच मोनक कट्ठा उपजबो केलइ। ई गाम– विकासपुर, राघोबाबूक जमीनदारीमे पहिने छल। राघोबाबू अपन बेटीकेँ खोंइछमे ई गाम दऽ देलखिन। जइ दिनसँ खोंइछमे बेटीकेँ देलखिन तइ दिनसँ उपजाक सेखिये चलि गेल। केहनो सुन्नर खेत आ केहनो सुन्नर धान होइ मुदा कट्ठा मनसँ बेसी हेबे ने करइ। नइ तँ आध मन, छअ पसेरी, पाँच पसेरी कट्ठा होइ। मुदा जखन रूपलाल पाँच मोनक कट्ठा उपजौलक तखन गिरहतक मनमे सुनगुनी एलइ। तहियासँ गिरहत खेतमे खाधो देमए लगल। आ जोतो-कोर बेसी करए लगल। बेसी उपजनमा धानक बीओ लोक आन-आन गामसँ आनए लगल। मुदा गामक बनाबटो अजीव अछि। जेते धनहर खेत अछि ओ तीन किस्मक अछि। अधहा खेत गहींर अछि, जेकरा चौरी कहै छिऐ, छह-अना खेत उपराड़ि अछि आ दू-अना निचरस, जइसँ की होइ छै जे बेसी बरखा भेल तँ ऊपरका खेत उपैज जाइत आ निचला दहा जाइत। तहिना जँ कम बरखा भेल तँ निचला खेत उपैज जाइत आ ऊपरका मरहन्ना भऽ जाइइ। मोटा-मोटी अदहा उपजा गिरहतकेँ होइत। मुदा तैयो किसान, भगवानक लीला बुझि, हँसैत-खेलैत समए बिता लिअए। ..रूपलालक धानक उपजा देख तेतरा अपन स्त्रीकेँ कहलक। लड़ुवती अपन पनरहो कट्ठा चौरी खेत-ले पनरह सेर धान बदैल अनलक। ओइ धानकेँ तेतरा

नारक झट्टाक मोइर बना रखि लेलक। फागुन-चैतमे जखन चौरी खेत उखड़लै तखन खूब महिया कऽ जोइत धान बाउग केलक। बड़ सुन्नर धानक गाछ जनमलै। सभ दिन तेतरा दुनू परानी बेरा-बेरी जा-जा देखैत। बीत भरि-भरिक जखन गाछ भेलै तखन दुनू परानी आठ दिनमे खुरपीसँ कमठौन केलक। बैशाखमे एकटा बिहड़िया हाल भेलइ। कच्चे-बच्चेकेँ धान चलल। खेत भरि गेल। अखाढ़मे डुमौआ बरखा भेल। आठे दिनमे धानक गाछ सरैक कऽ भरि-भरि जाँघक भऽ गेल। ..दुनू परानी तेतरा विचारलक जे सुर्रा कमठौन करब। परात भने दुनू गोरे कमाइले गेल। आड़िपर ठाढ़ भऽ दुनू परानी हियासि-हियासि धान देखए लगल। धान देख लड़ुवती तेतराकेँ कहलक, तेहेन धान अछि जे थारी छिछैल जाएत।' ..तेतरोक मन गदगद रहै, खिलखिला कऽ हँसए लगल। अपन खेत-देख तेतरा अनको-अनको खेतक धान देख अपन धानसँ तुलना करए लगल। जेहेन धान तेतरा खेतमे छल ओहन आड़ि-पाटिमे केकरो नहि। हँसैत तेतरा लड़ुवतीकेँ कहलक- 'ऐ बेर लक्ष्मी महरानी खुशीसँ तकलैन।' ..तेतराक बातमे अपन बात जोड़ैत लड़ुवती कहलकै- 'जब, भगवान दइपर होइ छथिन तँ छप्पर फाड़ि कऽ दइ छथिन!' ..कहि दुनू परानी हँसए लगल, हँसिते दुनू गोरे कमठौन करए खेतमे पैसल। कमठौन शुरू केलक। कनीए कालक पछाइत दुनू गोरेकेँ ठेंगी पकैड़ लेलकै। बुझलक कियो ने। खून पीब जखन ठेंगी लटकल तखन तेतराक नजैर पड़लै। नजैर पड़िते तेतरा फानि कऽ खेतक आड़िपर ठाढ़ भऽ जोरसँ लड़ुवतीकेँ कहलकै- 'सभटा खून ठेंगी पीने जाइए। झब-दे छोड़ाउ नइ तँ जेहो देहमे खून बँचल अछि सेहो पीब लेत!' ..तेतराक बात सुनि लड़ुवती खेतसँ ऊपर हुअ लगल कि अपनो बाँहिमे ठेंगी लटकल देखलक। बाँहिमे ठेंगी लटकल देख धड़फड़ा कऽ ऊपर हुअ लगल कि धानमे साड़ी लटपटा गेलै, लटपटाइते आड़िपर गिर पड़ल। फेर उठि लड़ुवती पहिने अपन ठेंगी छोड़ौलक, ठेंगीकेँ छोड़ैबते छर-छरा कऽ खून बाँहिसँ बहए

लगलै। चुटकीसँ माटि लऽ दाढ़मे लगौलक। खून बन्न भेलइ। ताबे तेतरो अपन ठेंगी छोड़ा खेतमे फेकलक। फेर कमाइले खेतमे पैसए लगल आकि देखलक जे खेतमे ठेंगी सह-सह करैए। कमठौन छोड़ि दुनू गोरे घर दिस विदा भेल। ..ऊपरका खेत सभ किसान अवादए लगला। पनरहे दिनमे सौंसे गामक खेत अवाद भऽ गेल। खेत तँ अवाद भऽ गेल मुदा बरखो बन्न भऽ गेलइ। ऊपरका खेत सभ सुखए लगलै। जेहो पानि खेतमे छेलै ओहो बहि-बहि निचुलका खेतमे जमा भऽ गेल। जहिना जे गब किसान खेतमे रोपने छल ओहिना ओ लगि कऽ ठाढ़! मने-मन सभ किसान सोचए लगला जे समए रौदियाह भऽ गेल। खेत सभमे दरारि फाटए लगल। धानक निचला पात पीअर भऽ-भऽ सूखए लगल। मुदा चौरी खेतक धान किसानक मुहकेँ हरिअर रखने। ..दुर्गापूजासँ पाँच दिन पहिने एकटा अछार भेल। मुदा ओ पानि रस्ते-पेरे रहि गेल। मात्र चौरीए खेतटा मे ठेहुन भरि पानिक सलाढ़ पकड़ने। आब जँ आगू बरखा नहियोँ हएत तैयो चौरी उपजबे करत, ई बात सभ गिरहस्तक मनमे। हर्ष-विषादक बीच गामक सभ किसान। मुदा जइ गिरहस्तक बेसी खेत चौरीमे रहैन ओ बेसी खुशी छला आ जिनकर कम खेत ओ कम। तेतरा आ लड़ुवतीकेँ बेसी खुशी। दुनू परानी तेतराकेँ ऐ दुआरे बेसी खुशी जे आन सालसँ बेसी धान हएत। डेढ़ बीघा खेत तेतराकेँ रहइ। पनरह कट्ठा उपराड़ि आ पनरह कट्ठा चौरी। कोनो साल बीस मनसे बेसी धान नै होइ मुदा ऐ बेर नवका धानक आशा। चौरी खेतक धान, दुनू परानी तेतराकेँ नव उत्साह आ नव सिनेह बढ़ए लगल। जखन दुनू एकठाम बैस परिवारक गप करए तँ पहिने चौरीए धानक चर्च उठि जाइत। ..गभहा सकराँतिक दिन। आइ गामक सभ गिरहत अपन-अपन खेत जा कहत- 'उक्खैर सनक बीट, समाठ सनक सीस।' ..दुपहरेसँ दुनू परानीक बीच तेतराकेँ रक्का-टोकी हुअ लगल। रक्का-टोकीक कारण छल जे तेतरा कहैत जे 'हम चौरी जा कहबै।' आ लड़ुवती कहै जे 'हम

जा कऽ कहबै।' तेतराक कहब रहै जे पुरुख खेतमे जा कहैत तँए हम जाएब। आ लड़ुवती कहैत जे 'घरक गारजन जा कऽ कहै छै तँए हम कहबै।' ..मुँह दुब्बर तेतरा, खिसिया कऽ लड़ुवतीकेँ कहलकै- 'जाउ, अहीं जा कऽ कहियौ-गे।' ..मने-मन लड़ुवती सोचए लगल जे पनरहे कट्ठा खेत अछि तँए घुमि-घुमि सौंसे खेत कहबै। तँए अँगनाक सभ काज सम्हारि लड़ुवती खेत विदा भेल। मनहूस भेल तेतरा दुआरपर बैस, बीड़ी पिब-पिब मनकेँ शान्त करए लगल। मन शान्त होइते तेतरा कुट्टी काटए लगल। ..घरक गोसाँइकेँ गोड़ लागि लड़ुवती सोचलक जे जँ कियो रस्तामे टोकबो करत तँ उनैट कऽ जवाब नइ देबै, नइ तँ वीध भंग भऽ जाएत।"

बिच्चेमे देवन बाजल-

"तब की भेलै?"

सजन कहलखिन-

"सुनहक ने, समतोलिया आ अँगुरिया, दुनू माय-धी रस्ते कातमे मरहन्ना धान काटैत रहए। लड़ुवतीकेँ देख समतोलिया कहलकै- 'ऐ बेर हिनके बाजी सुतरल छैन। हमरा सबहक कपारमे आगि लगि गेल!' ..समतोलिया बातक जवाब नै दऽ लड़ुवती मुँह घूमा आगू बढ़ि गेली। जखन दस लग्गी आगू बढ़ल तखन अँगुरिया माएकेँ कहलकै- 'एक्को बेर काकी बजबो ने कएल!' ..सन्तोष दैत समतोलियाकेँ कहलकै- 'बुच्ची, धने एहेन चीज छिऐ जे लोककेँ टेँढ़ बना दइ छै, भाए-भाएमे गरदैन कटौवैल करा दइ छै, स्त्री-स्वामीमे गरमेल करा दइ छै तेतबे नहि, बापो-बेटामे खून करा दइ छइ। तइले दुख किए करै छँह। दस कट्ठा अल्हुआ रोपने छी। कहुना-कहुना तँ साए मन हेबे करत। केते खेमे। अदहा बेच कऽ धान कीनि लेब। एक साँझ भात आ एक साँझ अल्हुआ उसैन कऽ चाहे रोटी पका कऽ खाएब। कोनो की सबहक दिन कटतै आ हमर नै कटत?' ..खेतक चारू आड़ि घुमि लड़ुवती धानकेँ गोड़ लगि खेतमे धँसल। तरे-तर गम्हरा धानमे होइत रहइ।

आँगुर सन-सन मोट। एकदम पोछल-पाछल शाही काँट जकाँ। तरे-तर लड़ुवती खुशीसँ गदगद। चारि फेरा खेतमे लगा खेतसँ निकैल मने-मन गोड़ लागि लड़ुवती विदा भेल। अबैकाल रस्तेमे जखन रहए तँ मनमे उठलै जे घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि, एते धान केतए रखब। से नइ तँ अखन महिना दिन धान होइयोमे लगत तँए अखनियेँ एकटा नमहर ढक बनबा लेब। अँगना अबैत-अबैत लड़ुवती तँए कऽ लेलक जे काल्हिये ढक बनौनिहारकेँ कहि देबइ। सूर्यास्त भेने तेतरा मालऽ घरक ओसारक खुट्टा लगि बैसल छल। मुस्की दैत लड़ुवती तेतराक लगमे आबि कहलकै- 'चौरीक धान तँ फाटि कऽ उपजल अछि। घरमे एक्कोटा नमहर कोठी नइ अछि तँए एकटा नमहर ढक बनबा लिअ।' ..लड़ुवतीक बात सुनिते तेतराक दिनका तामस जगि गेलइ। खिसिया कऽ बाजल- 'ढक बनाउ की बखारी तइले हमरा की पुछै छी? हमहूँ कोनो मनुखे छी? बहिया-खबास जकाँ रहै छी आ रहब।' ..तेतराक करुआएल बात सुनि कनडेरिये आँखियेँ लड़ुवती तेतराक आँखिमे आँखि गड़ा दहिना हाथ माथपर दऽ पुचकारि कऽ कहलक- 'एना जँ भैंसा-भैंसीक कनारि दुनू परानीमे लोक करए लगत तखन तँ भऽ गेल। खेते देखैक मन अछि तँ काल्हि जा कऽ देख आएब। खेत केतौ पड़ाएल जाइ छइ। तइले एते तामस किए केने छी।' ..लड़ुवती अपन गलती अपन आँखिएसँ मानि लेलक। तेतरोक आँखि गलती माफ करैत अपन बड़प्पनक आनन्द महसूस केलक। मुस्की दैत तेतरा बाजल- 'छोटे-छोटे दूटा ढक बना लेब। एकटा बनौलासँ गड़बर भऽ जाएत। एकछाहा ओते धान हएत तब ने। जँ से नै हएत तँ मोटका धानमे महिक्का धान केना रखब?' ..मुड़ी डोलबैत लड़ुवती बाजल- 'कहलौं तँ ठीके। जेकरा बेसी खेत रहै छै ओकरा बेसी धानो होइ छै तँए नमहर-नमहर ढक वा बखारी बनबैए। मुदा जे जेहेन गिरहस्त अछि ओ तँ ओहने कोठी आकि ढक बनौत ने। गरीब-गुरबा भुरकुरी वा घैलेमे अन-पानि रखैए।' ..दोसर दिन भोरे तेतरा ढक

बनबै-दे कहैले लेलहा ऐठाम गेल। लेलहा गछि लेलक। दोसर दिन आबि लेलहा चारिटा भौर परहक अधपक्कू बाँस कटलक आ दू दिनमे लेलहा चारू बाँसकेँ चीर-फाड़ि, छील-छालि कऽ तैयार केलक। तेसर दिन ढक बनौनाइ शुरू केलक। बिच्चेमे लेलहा ऐठाम जा लड़ुवती कहलक- 'भैया, एकटा मनही ढकिया सेहो बना दिहैथ। छठिमे घाटो परहक काज कऽ लेब आ धान-तानक लरती-चरती हएत तँ धानो रखब।' ..मने-मन लड़ुवती छठि-मायकेँ हाथियो कबुल देलक।' ..अगहन आएल। धनकटनी शुरू भेल। ऊपरका खेतमे तँ धान तेनाहेँ सन रहै मुदा तैयो जरलो-मरल धान काटि-काटि लोक आनए लगल। पनरह अगहनसँ चौरी खेतमे हाथ लागल। तेतराक खेत बीचमे तँए पहिने किन्हैरक धान कटत तखने रस्ता बनतै। रखबार किन्हैरबला गिरहत सभकेँ धान काटैले कहलक आ बीचक खेतबला केँ मनाही कऽ देलक। आठ दिनक कटनीक पछाइत तेतरा-खेतक रस्ता खुजल। साँझेमे आबि रखबार तेतराकेँ कहि देलकै जे खेतक रस्ता भऽ गेलह। भोरे लड़ुवती भानस कऽ दुनू परानी खेलक आ धान काटै लऽ विदा भेल। जाइसँ पहिने माल-जालकेँ खुआ-पीआ लेलक। शीतलहरी दुआरे पानियोँ ठरल। रौदक पता नहि। आड़िपर पहुँच दुनू परानी तेतरा धानकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। धानक सीस ठारहे मुदा दाना एक्कोटामे नहि! लड़ुवतीक मनमे एलै जे भरिसक लोक चोरा कऽ सुरैर लेलक। रखबारकेँ ताकए लगल। ..कनीए कालक पछाइत मनमे एलै जे कतका ने सुररलक मुदा बीचला तँ नै सुररने हएत। पानिमे पैस कऽ धान देखलक। बीचोमे एक्कोटा धान नहि! झड़ल सीस देख लड़ुवती हतास भऽ गेल। मनमे उठलै- एना भेल किए? ..एमहर तेतरो चारू आड़ि घुमि-फिर देखलक तँ एक्के रंग बुझि पड़लै। ठकुआ कऽ दुनू परानी आड़िपर ठाढ़ भऽ गेल। ने किछु तेतरा बजैत आ ने लड़ुवती। दुनूक देहमे जेना थोड़बो लज्जैत नै रहल। एक तँ खेतक ठरल पानि दोसर धानक सोग, कठुआ कऽ लड़ुवती खेतेमे खसि

पड़ल। जेना अचेत भऽ गेल। ..लड़ुवतीकेँ गिरल देख तेतरा पँजिया कऽ कोरामे उठौलक। मुड़ी उठा-उठा लोककेँ देखैत जे शोर पाड़बै। मुदा लगमे कियो नहि। कहुना-कहुना तेतरा लड़ुवतीकेँ उठा सुखलाहा खेतमे अनलक। लड़ुवती लर-ताँगर भेल, जेना एक्को-पाइ होशे नहि। मने-मन तेतरा सोचए लगल जे आब की करब? किछु फुरबे ने करइ। अनासुरती मनमे एलै जे पएरक दुनू तरबा रगड़ने देहमे गरमी औतै तखन उठि कऽ ठाढ़ हएत। लड़ुवतीक तरबा तेतरा रगड़ए लगल। ..थोड़े कालक पछाइत लड़ुवती आँखि तकलक। आँखि तकिते साड़ी सेरिया चुक्की माली भऽ बैसल। देह गरमाइत-गरमाइत गरमाएल। तखन दुनू गोरे आँगन विदा भेल। अँगना अबिते तेतरा घूर पजारलक। दुनू परानी भरि मन आगि तपलक। ..बेरू-पहर तेतरा हमरा ऐठाम आबि कहलक- 'भैया, गरदैन कटि गेल। एक्कोटा धान खेतमे नइ अछि। जेना कियो सुरैर नेने हुअए तहिना बुझि पड़ैए।' ..हम पुछलिऐ- 'धान सुररने छह कि झड़ल छह?' ..कहलक- 'अगर सुररने कियो रहितए तँ अदहो-छिदहो तँ बँचल रहैत से एक्कोटा ने बँचल अछि।' ..हम कहलिऐ- 'तोहर बीये खराब छेलह। अपने घरक बीआ छेलह कि केकरोसँ नेने छेलह?' ..कहलक- 'रूपलालसँ नेने छेलौं।' ..कहलिऐ- 'वएह तोरा ठकि लेलकह। उ चोट्टा औझुका ठक छी। गाममे केकरो नीक देखए चाहैए। ओते जे चीज ढेरियौने अछि से सभटा अपने कमेलहा छिऐ। मुँह दुब्बर लोक डरे किछु कहबे ने करै छै तँए छजल जाइ छइ। जेहने चोट्टाक मुँह छुटल अछि तेहने लठिघरो अछि तँए कियो किछु कहबे ने करै छइ। आब की करबह। सवुर करह।' ..टुटल आशा, विचलित मन, कनैत आँखि तेतराक देख किछ ने फुरैत रहए। कहलक- 'भैया, एक्को कनमा धान नहि भेल, भरि साल की खाएब?' ..आशा जगबैत हम कहलिऐ- 'तोरा अपन सम्पैतक पते नै छह। बहुत धन छह। एकटा बच्छा बेच लेबह तेहीसँ छह मासक बुतात चलि जेतह। तेकर बाद बुझल जेतइ। ताबे छह महिना कि

कोनो हाथपर हाथ धऽ बैसल रहबह। चिन्ता नै करह।' ..कहलक- 'जाइ छी भैया?' ..कहलिऐ- 'तमाकुल खा लएह तब जइहह।' ..कहलक- 'तमाकुल खाइक मन नै होइए।' ..कहलिऐ- 'मन असथिर करह। कमाइबला बेटा लोकक मरि जाइ छै, सेहो सवुर लोक करिते अछि। तोरा तँ खेतक उपजा गेलह। खेत छह तँ फेर ओइसँ नीक उपजा देखबहक।' ..अँगना जा तेतरा सभ बात लड़ुवतीकेँ कहलकै। लड़ुवतीक आँखि लाल भऽ गेलै, जोर-जोरसँ बाजए लगल- 'रूपललवा गरदैनकट्टा छी। जेहने फौतिबा अपने अछि तेहने बौहु छै! अहाँ अँगनेमे रहू, हम ओइ रूपललबाकेँ सराध-बिटारि केने अबै छी। जाबे ओकरा सिरा आगू थूक नै फेकबै ताबे नै बूझत।' ..विचित्र असमंजसमे तेतरा पड़ि गेल। करवनो होइ जे अनेरे घरवालीकेँ कहलिऐ। तँ करवनो होइ जे दुनू गोरे जा कऽ रूपलालक दरबज्जापर गरियाबी। फेर होइ जे रूपलाल समंगर अछि, बिनु मारने छोड़त नहि। धनो गेल आ नाँहकमे मारियो खाएब। अन्तमे सोचलक जे भने अँगनेसँ घरवाली गरियबैए। लड़ुवती अँगनासँ रूपलालकेँ गरियबैत रस्तापर चलि आएल। तेतरा आगूमे ठाढ़ भऽ बाँहि पकैड़ लेलक। जेते तेतरा लड़ुवतीक बाँहि पकैड़ रोकैत तइसँ बेसी लड़ुवती कुदि-कुदि आगू बढ़ैक चेष्टा करैत। आ चिकैर-चिकैर गरियेबो करैत। ..रस्ता धेने रूपलाल केतौसँ घर दिस अबै छल। लड़ुवतीक गारि सुनि चौंक गेल मुदा आँखि निच्चाँ केने अपना ऐठाम चलि आएल। हल्ला सुनि हमहूँ गेलौं। तेतराक घरवालीकेँ देह परहक साड़ी उड़ियाएल, केश खुजल, आँखि लाल, गरैज-गरैज गारि पढ़ैत सुनि कहलिऐ- 'कनियाँ, चुप रहू। धैनवाद अहींकेँ दइ छी जे रूपलालकेँ मुँहपर गरियेलौं। की करबै? जाबे अपना चीज नइ अछि ताबे अहिना ठक सभ ठकत। देखबे केलिऐ जे रवियाक आमक गाछ छठुआ उखारि कऽ रोपि लेलकै। चुप हउ, चुप हउ।' ..हमर बात सुनि वेचारी साड़ी सरियौलक, माथ झँपैत

घुनघुना कऽ बाजल- 'हिनका पैघ बुझै छिऐन भैया, तँए बात मानि लेलिऐन नइ तँ आइ ओइ डकूबाकेँ खापैड़सँ चानि तोड़ि दितिऐ।'

आँखि मूनि देवन धियानसँ सजनक खिस्सा सुनैत रहए। 'चानि तोड़ि दितिऐ' सुनि आँखि खुजलै। मने-मन देवन सोचए लगल जे रूपलालकेँ जेते सजा हेबा चाही से नै भेलइ। किए ने भेल? शायद एकर यएह कारण रहल हएत जे समाजोमे शासक आ शासित लोक अछि। शासकक गलतीक जवाब दइबला कियो ने अछि। मुदा गरीब-गुरबाक गलतीकेँ उचितोसँ बेसी सजा देल जाइ छइ। कनी काल गुम्म रहि देवन सजनकेँ कहलकैन-

"अहाँ गियानक बखारी रखने छी।"

हँसैत सजन बजला-

"बौआ, रातियो बेसी भऽ गेल आ भरि दिनक थाकल सेहो छी। तोहूँ खा कऽ अराम करह आ हमहूँ जाइ छी।"

◌

शब्द संख्या : 4937

10.

भोर होइते एका-एकी टोलक लोक बचेलालक ऐठाम आबए लगल। लोककेँ अबैत देख सुमित्रा आँगन बहारब छोड़ि दरबज्जापर आबि सभकेँ बैसैले कहए लगलखिन। सबहक मनमे जेहने खुशी तेहने जिज्ञासा।

लोकक गल-गुल सुनि बचेलालो बिछानसँ उठि बोलीकेँ अकानए लगला जे केतौ किछु भऽ ने तँ गेलइ। मुदा गल-गुलक तेहेन बाढ़ि जे कोनो बात साफ-साफ बुझाइए ने पड़ैत रहैन। आँखि मीड़िते

बचेलाल दरबज्जापर आबि देखलैन। किछु गोरे चौकियोपर बैसल, किछु ठाढ़ो आ किछु गोरे रस्ते-रस्ते अबितो। सबहक मन खुशी तँए मुँहमे हँसी।

बचेलालकेँ सुमित्रा कहलखिन-

“बच्चा, काल्हि जे दरी-लाइट-बरतन कीनि कऽ अनलह वएह देखैले समाज सभ एलखुन हेन।”

सुमित्राक बात सुनि बचेलाल कलपर जा माटियेसँ चारि घूसा दाँतमे लगा कुरुर कऽ आबि दरबज्जाक कोठरी खोलि, सभ समान निकाललैन। दरी आ जाजीमकेँ खरिहाँनमे बिछा सभकेँ बैसबैत बचेलाल बजला-

“हम सिरिफ कीनिलौं मुदा छी अहाँ सबहक। जिनका जाहिया काज हुअए, लऽ जाएब। ऐ दरी, जाजीम, लाइट आ बरतनकेँ अपन बुझि उपयोग करब।”

बचेलालक बात सुनि सभ थोपड़ी बजौलक। अछेलाल सेहो आएल। सुमित्रा चाहक ओरियानमे आँगन गेली। लोकक हिसाबे हुनका गरे ने अँटैन जे कथीमे चाह बनाएब आ पीबैले कथीमे देब। घरमे चाहो-चीनी आ दूधो कम्मे अछि, ऐसँ पारो ने लागत। विचित्र असमंजसमे सुमित्रा। मुदा मनमे ईहो होइत रहैन जे दरबज्जापर आएल समाजकेँ जँ चाहो ने पिएबैन तँ घरक की रहत...।

अँगनेसँ सुमित्रा हाथक इशारा दैत अछेलालकेँ बजौलैन। सहैट कऽ अछेलाल सुमित्रा लग एला। सुमित्रा कहलखिन-

“बौआ, आइ पहिल दिन समाज दुआरपर एला आ अगर चाहो नै पिएबैन से केहेन हएत।”

हुँहकारी भरैत अछेलाल कहलकैन-

“हँ, ई तँ बड़ पैघ अपमान समाजकेँ हेतैन आ समाजोसँ पैघ अपन घरक प्रतिष्ठाक हएत। सभ चीज तँ ऐछे तखन प्रतिष्ठाकेँ मंगनीमे किए जाए देब। हम दूध नेने अबै छी। चाह-चीनी दोकानसँ

लऽ आनब। चाह बनबैले बड़का बरतन ऐछे। पीबैले जँ कप-गिलास नइ अछि तँ दोकानेसँ सैकड़ा हिसाबसँ प्लास्टिकक गिलास कीनि आनब। कनी करैये पड़त ने मुदा असम्भव काज तँ नइ अछि। जुगायोकेँ शोर पाड़ै छिऐ, ओ दोकानक काज करत आ अहाँ चुल्हि पजाइर बरतन चढ़ा दियौ। जाबे बरतन सेरियाएब आ चुल्हि पजारब ताबे ईहो दुनू काज भऽ जाएत।”

सुमित्रा बजली-

“हँ! जुगायकेँ शोर पड़ियौ।”

जुगायकेँ अछेलाल शोर पाड़ि कहलक-

“जुगाय, तूँ कनी दोकान जा। चाह, चीनी, गिलास, तमाकुल, बीड़ी आ सुपारी कीनने आबह। हौ भागमन्ते ऐठाम दस गोरे अबैए।”

जुगाय दोकान गेल आ अछेलाल दूध-ले। एमहर सुमित्रा हाँइ-हाँइ गिलासमे पानि लऽ चुल्हिकेँ शुद्ध करैले छीटए लगली।

ओसारपर बैस रूमा गुम्हरैत मुदा बजैत किछु नहि, जेना बिनु आगिये मन छन-छन जरैत रहैन। होनि जे सभ जान मारैपर लगल अछि। खुशीसँ बचेलालक मन ओहिना दहलाइत रहैन जेना पानिक ऊपरका चीज हवा पेब दहलाइत रहैए।

चाह बनल। सभ कियो चाह पीलैन कियो तमाकुल तँ कियो बीड़ी तँ कियो सुपारीक टूक मुँहमे दऽ जूट बान्हि-बान्हि विदा भेला। जहिना पुरुखक जुटान बचेलालक दरबज्जापर तहिना टोलक बुढ़-बुढ़ानुसक जुटान परती परहक जामुनक गाछक निच्चाँमे। ढेरबा बच्चिया सबहक बैसार पोखैरक मोहारक कनैलिक फूलक गाछक निच्चाँमे..। सभ अपना-अपनामे मस्त। जेना केकरो घर-आँगनमे कोनो काजे ने होइ, तहिना।

ठीठर, डोमन, कुजाइ आ बोतल संगे चारू गोरे ठीठरक दलानपर बैसल। सबहक मन खुशी। आइ धरि जे टोल भानस करैक

बरतन, इजोत आ बिछान-ले दुख भोगैत आएल ओ दुख पड़ा गेल। डोमन बोतलकेँ कहलक-

"बोतल भाय, अपनो सबहक ऊपरमे किछु जिम्मा आबि गेल। ओना तँ गामक चीज भेल मुदा मुख रूपसँ अपना टोलक तँ भेबे कएल। अपना सबहक जिम्मा भेल जे एक लगनमे दू या दूसँ बेसी काज नै करब। किएक तँ समान कम अछि। तँए एक लगनमे एक्केटा बिआह करब नीक हएत।"

डोमनक बात सुनि बोतल तँ नइ बाजल मुदा ठीठर कहलकै-

"बेस कहलहक डोमन। जेतबे नुआ रहए तेतबे पएर पसारी। ओहो तँ बचेलालेकेँ धैनवाद दी जे एतबो केलक। कमाइ तँ बहुत लोक गाममे अछि मुदा केकरो एहेन बुधि किए ने भेल। 'वन राखे सिंह आ सिंह राखे वन।' जहिना वेचारा बचेलाल समाजक कल्याण-ले डेग उठौलक तहिना अपनो सभ डेग-मे-डेग मिला कऽ चलह। ओइ वेचाराक परिवार लटपटा गेलै, मसोमाती कारोबार भऽ गेलै मुदा तैयो ओइ मसोमातकेँ धैनवाद दी जे घर थथमारि कऽ रखलक।"

खेनाइ-पीनाइ, काज-उदम जेना सभ बिसैर गेल। चारू गोरे गप-सप्प करिते रहल।

नअ बाजि गेल। बचेलाल, अछेलाल आ जुगाय, तीनियेँ गोरे दरबज्जापर रहल। जुगायकेँ बचेलाल कहलखिन-

"जुगाय भाय, हम स्कूल जाइ छी आ ओइ बेरमे अहाँ दुनू परानी डाक्टर ऐठाम पहुँच जाएब। स्कूलसँ हमहुँ सोझे डाक्टर ऐठाम आएब। जाबे आँखि तकै छी ताबे ई दुनियाँ, जखने आँखि मूनि लेब दुनियाँ बिला जाएत। तँए शरीरक रोगकेँ मजाक नहि बुझि दुश्मन बुझए पड़त। अखन अहाँक उमेरे की भेल हेन तखन तँ गरीबी लोककेँ अछैते औरुदे मारि दइ छइ। अखन अहूँ सभ जाउ, घर परहक काज देखियौ, हमहूँ नहा-खा कऽ स्कूल जाइ छी।"

जुगाय उठि कऽ विदा भेल। अछेलाल बचेलालकेँ कहलकैन-

"बौआ, जहिना भुमकम भेलापर गाम दलमलित भऽ जाइ छै तहिना आइ बुझि पड़ल।"

बचेलालक मन खुशीसँ गदगद रहबे करैन, हँसैत बजला-

"काका, जहिना अहाँ असगर छी तहिना तँ हमहूँ छी। जखन स्कूल चलि जाइ छी तखन दुआर-दरबज्जा भकोभन रहैए तँए एहेन काज ठाढ़ कऽ लेलासँ काजो चलत आ दरबज्जो सून नै रहत। अहूँकेँ एक्केटा घर अछि आ कम्मे घराड़ियो। तँए एत्तै घर लऽ आनू। एकठाम घर भेलासँ दुनू गोरेक रक्षो हएत आ मालो-जालक सेवा हएत। खुट्टापर जे गाए अछि ओ पुरना नश्लक अछि, जइसँ दूधो कम होइए, तँए एकटा नीक जरसी गाए सेहो कीनि लेब। अपन चीज रहलासँ कोनो बेर-बेगरता नै खगत। एते दिन आन्हर जकाँ छेलौं जइसँ परिवार समाजकेँ नै बुझै छेलौं। आब जखन नजैर खुजल तखन ई सभ बुझए लगलिऐ। हमरे रूपैआसँ बड़का-बड़का उद्योगपति कमा कऽ मोट भेल जाइए आ जे कमाइए ओ बेटे-बेटीक पढ़ौनाइ-लिखौनाइसँ लऽ कऽ बिआह-दुरागमन करैत-करैत जिनगी समाप्त कऽ लइए। हमरो साइकिल भाइये गेल। जेते समए बँचत ओइमे टोलक बच्चा सभकेँ पढ़ा देबइ। स्कूलमे दरमाहा भेटते अछि तँए केकरोसँ एक्को पाइ नइ लेबै। खेती करैक लूरि नइए मुदा पढ़ै-पढ़बैक लूरि तँ अछि, तँए खेतीक किताब पढ़ि, रेडियो सुनि खेती करैक लूरि अपनो सीखि लेब आ अहूँ सभकेँ नव ढंगक खेतीक जानकारी देब। आब अपनो बुझए लगलौं जे शिक्षक भेनौं जिनगी जीबैक ज्ञान नइ अछि। जहियासँ स्कूल छोड़लौं आ शिक्षक भेलौं तहियासँ बड़ पढ़ै छी तँ साँझू-पहर-के दू-चारि पाँति रामायण वा महाभारत। सेहो पढ़ै नइ छी गाबि लइ छी। ओकरामे जे गूढ़ विषय छिपल छै से बुझबे ने करै छी जइसँ जिनगी अन्हराएलक अन्हराएले रहि जाइए। जाबे सभ मनुखकेँ जिनगी जीबैक ढंग नइ हेतै ताबे जिनगी अपन कोनो माने नै राखत। आब

समैयो भऽ गेल, हमहूँ स्कूल जाइ छी, गप्पेमे लगल रहब तँ देरी भऽ जाएत, अहूँ जाउ।"

साढ़े चारि बजे बचेलाल डाक्टर ऐठाम पहुँचल। दुनू परानी जुगाय तइसँ पहिनहि पहुँच चुकल छल। सौंझुका समए भेने डाक्टर ऐठाम रोगियोक बेसी भीड़ नहि। बचेलालकेँ देख डाक्टर पुछलखिन-

"मास्टर साहैब, अपने देखाएब कि कियो रोगी छैथ?"

जुगायकेँ देखबैत बचेलाल बजला-

"डाक्टर साहैब, हिनके पत्नीकेँ देखबैक अछि।"

डाक्टरक कुरसीक बगलमे एकटा स्टूल राखल छेलै, ओइपर जा जुगायक पत्नी बैसली। डाक्टर आला लगा जाँचि कऽ सभ किछु बुझि बचेलालकेँ कहलखिन-

"तीन-चारि तरहक जाँच करबए पड़त। जाँचक रिपोट देखला पछाइत दबाइ लिखि देबैन। अखन ताबे दू खोराक दबाइ दऽ दइ छिऐन, काल्हि बाजाप्ता लिखि देब। पनरहसँ बीस दिनमे मरीज नीक भऽ जेती।"

डाक्टरक बात सुनि जुगायक मनमे घरवालीक नव जिनगी नाचए लगल। नचबो केना ने करत, वेचारा जुगाय घरवालीक आशा तोड़ि चुकल छल। जहिना पानिक वेगमे भँसैत चुट्टीकेँ खढ़ोक सहारा भेटने जिनगीक आश जगैए, तहिना जुगायोकेँ जगल।

रूमाक दाबल क्रोध मिझाएल नहि, तरे-तर धधैकते रहल। साँझू-पहर बचेलाल टहैल-बुलि कऽ आबि, हाथ-पएर धोइ दरबज्जापर बैसला। सुमित्रो एली आ जरैत लालटेनकेँ तेज कऽ देलखिन। तखने रूमा चाह नेने आबि बगलमे रखि कऽ विदा हुअ लगली कि बचेलाल कहलकैन-

"देखू, अखन तीनियेँ गोरे छी। तीनू गोरे एक्के परिवारक सेहो छी। परिवार एकटा संस्था होइत, जेकरा अहाँ मन्दिरो, देवस्थानो कहि सकै छिऐ। जहिना पुजेगरी मन्दिरकेँ जीवित रखैले दिन-राति लगल

रहैए तहिना परिवारोकेँ जीवित रखैले परिवारक सभकेँ ओइ रूपमे लागि कऽ करए पड़त। परिवारमे एक गोरे मेहनत करी आ दोसर गोरे बैस कऽ रहए चाहबै तँ ओ घर कए दिन ठाढ़ रहत। प्रश्न पजेबा आकि खढ़-बाँसक नइ अछि, प्रश्न अछि मनुखक। जेकर पहिल मापदंड अछि जे मनुख केहेन हेबा चाही? नजैर उठा कऽ देखबै तँ बुझि पड़त जे अनेको चालि-ढालिक मनुख अछि मुदा से नहि, जखन मनुखक मापदंडकेँ आगूमे रखि विचार करब तखन बुझि पड़त। सभ मनुखक दायित्व होइत जे मनुख बनि जिनगी जीबी। आब कोनो बच्चा नइ छी। जँ कोनो काज वा बात अपने नहि बुझैत होइ तँ दोसरसँ बुझैमे कोनो मान-अपमानक बात नहि होइत।"

जुगायक पत्नीक रोग रसे-रसे कमए लगल। जेना-जेना रोग कमलै तेना-तेना काजो करै दिस शक्ति बढ़लै आ अन्नो दिस रूचि बढ़लै। पत्नीक हालत सुधरैत देख जुगाय दबाइक संग पथ्य लेल गाइक दूध सेहो उठौना कऽ लेलक। आठ दिन बितैत-बितैत धनमाक देह चिष्टा गेल। स्त्रीकेँ टनगर होइत देख जुगायक टुटल आशा जागए लगल।

अखन धरि रूमाक नजैर सासुक प्रति जेहेन हेबा चाही से नै भऽ 'कियो छी' छेलैन। सासुक प्रति पुतोहुक केहेन बेवहार हेबा चाही? से जेना रूमा बुझिते नहि आकि बुझियो कऽ अनठबै छेली से तँ ओ जनती। जँ किछु करैले सुमित्रा पुतोहुकेँ अढ़बैत रहथिन तँ सुनिते-देरी रूमा बड़बड़ाए लगैत, करब तँ दूरक बात। देखैत-देखैत सुमित्रा अढ़ौनाइए छोड़ि देलखिन। मनमे यएह छेलैन जे जँ हम केकरो गारजन नइ छी तँ हमरो गारजन कियो ने अछि। मने-मन बजैत जे सासु-ससुरक प्रति वा बेटा-बेटीक प्रति जे कर्तव्य होइए ओ तँ नीक नहाँति निमाहि चुकल छी तँए कियो जिनगीमे आँगुर उठा कए नै देखा सकैए। पुतोहु अप्पन कर्तव्य करती आ बेटा अपन करत। जँ बेटा-पुतोहु नहियेँ सेवा करत तँ नै करह। जाधैर अन्न खाइ छी, देहमे सक्क

अछि ताधैर आँखि निच्चाँ केना कऽ लेब, कोनो कि फेर दोहरा कऽ जन्म लेब। सभ मनुख अपन कर्मसँ मनुखता प्राप्त करैए आ जेकरा मनुखता प्राप्त भऽ जाइ छै, ओकरा देहक सुख-दुख थोड़े पथभ्रष्ट कऽ सकत। हँ! भऽ सकैए जे पुतोहु हमरा बैधव्य बुझि निःसहाय मानैत होथि। मुदा ई तँ जिनगीक क्रम छिऐ। की सभ महिला पुरुखक अछैते मरै छैथ? एकदम नहि। मरैक कारण भिन्न अछि आ परिवारिक सम्बन्ध भिन्न। भऽ सकैए जे ओ अपन नैहरमे कोनो बैधव्य महिलाकेँ कष्टमय जिनगी देखने होथि वा पुतोहुक बेवहार सहन करैत देखने होथि...।

..एते बात सुमित्राकेँ मनमे अबिते जेना आँखि लाल हुअ लगलैन। निर्भीक स्वरमे बुदबुदेली-

“आन महिला हमरा नै बुझौथ, हम जिनगीकेँ जनै छी तँए जीबैक अप्पन ढंग अछि। पुतोहु जे हमरा माए तुल्य बुझती तँ हमहूँ बेटी तुल्य बुझबैन नइ तँ अपन मनक मालिक जँ छैथ तँ हमहूँ अपना मनक मालिक छी।”

मुदा किछु दिनसँ रूमाक बदलल रूप सुमित्रा देखए लगली। मने-मन तारतम करए लगली जे देखबैले करै छैथ वा जिनगीमे सुधार एलैन। मुदा सुमित्राक मन पुतोहुक दोषकेँ ओते महत नै दऽ बेटाकेँ बेसी बुझैत रहैन। किएक तँ आन घरक मनुख आन घरमे आबि एते केना बढ़ि सकत। बढ़ैक तँ कारण होइ छइ। ओना, कारणो तँ अनेक होइए मुदा सभसँ महतपूर्ण कारण अछि पुरुखक दुर्बलता। जे पुरुख हाथी सन अबोध जानवरकेँ बसमे कऽ लैत, की ओकरा बुते एकटा सबोध स्त्रीकेँ मनुख बनौल नइ हेतइ..?

किछु दिन पहिने तक रूमा, आँगनमे सभसँ पाछू सुति कऽ उठै छेली जे आब सभसँ पहिने उठए लगली। उठि कऽ बिनु मुँह-कान धोनहि आँगन-घर बहारि, चीनमार नीपि आ बरतन-बासन धोइ कऽ अपन क्रिया-कर्ममे लगि जाइ छैथ। तेतबे नहि, सासुकेँ माए तुल्य

सेहो बुझए लगली। माने माइक प्रति पुतोहुक जे कर्तव्य होइत ओ कर्तव्य पूर्ति हेतु रूमा जे अपने बुझैत से करए लगली। जे काज नहि बुझैत ओ सासुसँ सीखि-सीखि करए लगली। ..सुमित्रो, पुतोहुक बदलैत रूप देख, बुझा-बुझा कहए लगलखिन-

"कनियाँ, आइ धरिक जे अनुभव हमरा अछि ओ सीखि जिनगीमे उतारू तैसंग नैहरोसँ जे सीखि कऽ आएल छी तहूमे नीक-अधलापर नजैर रखैत विचारि-विचारि अधलाकेँ छोड़ि नीककेँ पकैड़ चलू। अखन धरिक जे परिवारक बेवहार रहल आ आइ जे समयानुकूल बदलाउ आबि रहल अछि ओइपर धियान दऽ आगू बढ़ू, तखने समैक संग चलि सकब। जे कियो ऐसँ अलग भऽ जीबए चाहत ओकरे मन सदिछन उत्तेजित रहतै आ चैन मनसँ पड़ाएल रहतै।"

सासुक विचारकेँ रूमा अँगीकार करए लगली।

पावैनक दिन। स्कूल बन्न। मुदा बचेलाल पहिलुका जकाँ नहि, चारि बजे उठि गेला। उठि कऽ अछेलालकेँ शोर पाड़लैन। जाबे अछेलाल आबैथ तइसँ पहिने सुमित्रो दरबज्जापर आबि गेली। तीनू गोरे गप-सप्प करए लगला। बचेलाल अछेलालकेँ पुछलकैन-

"काका, आब तँ खेती-वाड़ीक काज असानीसँ करैत हएब?"

बचेलालक बात सुनि अछेलाल बजला-

"बौआ, ऐठामक गिरहस्तक जे रूपरेखा अछि ओ नीक कम आ अधला बेसी अछि। गिरहस्तक जिनगी आ खेतीक ढाँचा बदलैले बहुत किछु करए पड़त। जाबे से नै करब ताबे जे चाहै छी से नै हएत। ओना, हम सभ बात बुझतो नहियेँ छी। अखन तक हम बोनिहार रहलौं तँए गिरहस्ती जिनगीकेँ नीक-नहाँति केना बुझब। मुदा भौजी तँ नैहरसँ ऐठाम धरि गिरहस्ते परिवारमे रहबो केली आ बहुत दिन गिरहस्तियो केलैन तँए हिनका बेसी अनुभव छैन।"

अछेलालक बात सुनि सुमित्रा मने-मन सोचए लगली-अछेलाल तँ ठीके कहलक। मुदा हमहूँ तँ आब बुढ़ भेलौं तँए बहुत

किछु बिसैरियो गेलौं किएक तँ काजो बहुत छुटि गेल आ छोड़ियो देलौं। मुदा बिनु माटिपर ठाढ़ भेने ने मनुख रस्तापर औत आ ने परिवार। जाबे मनुख जमीनपर ठाढ़ नै हएत ताबे आगू-मुहेँ केना ससरत। हँ, ई भऽ सकैए जे हवा-बिहाड़िमे उड़ि कियो बहुत आगू चलि जाए, मुदा ओ अनिश्चित जिनगी हेतइ? भऽ सकैए एक पीढ़ी बहुत आगू चलि जाएत मुदा ऐगला पीढ़ी ओइसँ आगू बढ़त कि पाछू हएत, ई कहब तँ कठिन अछि। किएक तँ जेते ऊपर जे चलि जाएत ओ ओतइ लसैक जाएत। ने ओकरा जमीन पकड़ैक बोध हेतै आ ने आगू बढ़ैक रस्ता भेटतै। किएक तँ दू विचारधारा आ दू रस्ताक संघर्ष चलैए आ आगू आरो मजगूत भऽ चलत। तँए जाधैर दुनू रस्ताकेँ बिनु बुझने जँ कियो आँखि मूनि चलए चाहत तँ ओ निश्चित लटपटेबे करत। मुदा प्रश्न अछि जहिना मनुख समैक संग चलैत आएल तहिना चलैक। जे कठिन अछि...।

एते बात मनमे अबिते सुमित्रा बाजए लगली-

“बौआ, कोनो परिवार ताबे तक नीक नहाँति नै चलि सकैए जाबे तक परिवारक सभ आदमी रस्ता धऽ नै चलत। अपने परिवार छह, तूँ भरि दिन अपसियाँत रहै छह मुदा पुतोहुजनी-ले धैनसन। जहिना ओ भरि दिन काजसँ छिटकैत रहै छैथ तहिना जँ तोहूँ छोड़ि दहक तखन घरक दशा की हेतह? मुदा जहिना तूँ नोकरी करि कमा अनै छह तहिना जँ ओहो घरेपर काज करैथ तँ घरक उन्नैत हेतह की नहि। तँए परिवारमे जे जेहेन रहए ओकरा ओही रूपमे मेहनत करैक चाही। परिवारक जे गारजन होथि हुनको आदमी देख काज ठाढ़ करक चाहिऐन जइसँ घरक आमदनियोँ बढ़त आ बेकारियो भागत। अहिना देखै छी बाढ़ि-रौदीक दुआरे सभ परिवार निच्चे-मुहेँ जा रहल अछि। मुदा बारह मासक सालमे चारि मास बरसातक होइए वएह चारि मास सालकेँ संचालन करैत। तज्जुब लगैए जे बरसातक चारि मास छोड़ि शेष आठ मासक कोनो महत्ते ने अछि। सभसँ दुखद बात

तँ ई अछि जे ऐ आठ मास-ले गिरहस्त किछु सोचबे ने करैए। खेतीक मुख्य चीज पानि छी। जेकरा दिस लोक तकबे ने करैए। अगर खेत पटबैक उपाए लोक कऽ लिअए तँ जहिना उपजामे बढ़ोतरी हएत तहिना फसिलोमे। जखन कियो पानि-खाद आ नीक बीआ नै बुझै छल तखनो गिरहस्ती चलै छल। अपन खेत एक बध्धु छह, एकठाम नै छह मुदा थोड़े हटि-हटि कऽ तँ छेबे करह। अगर बोरिंग गड़ा पटबैक जोगार कऽ लएह तँ की बुझि पड़ै छह जे जहिना उपजा अखन खेतसँ अनै छी तहिना औत? जहिना चौबिसे घन्टाक दिन रातिमे देखै छहक जे रातिमे केहेन अन्हार रहैए आ दिन होइते केहेन इजोत भऽ जाइ छै, तहिना सभ चीजक अछि। अखन दू परानी तूँ छह आ दू परानी अछेलालो अछि। चारि गोरे तँ समकस काज करैबला छह मुदा काज केते होइ छह? ई हिसाब जोड़ि कऽ काज शुरू करए पड़तह। आ ई नहि जे अनाड़ी-धुनाड़ी जकाँ कहबह 'कोन काज ठाढ़ करब?' ..आँखिक सोझहामे छह जे खेतमे पानिक सुविधा बनौने, खेतमे सालो भरि फसिल लहलहेतह। खाद देबहक, नीक बीआ रहतह तँ तेते उपजा हेतह जे घरमे रखैक जगह नै रहतह। नारो-पात तेते हेतह जे दूटा चारिटा माल हराएले रहतह। माल पोसबह तँ दुघो खेबह आ बेसी हेतह तँ बेचबो करबह। जेते घरक आमदनी बढ़तह तेते ने आगू-मुहेँ ससरबह।"

माइक बात सुनि बचेलालकेँ भक खुजलैन। भक खुजिते माएकेँ कहलखिन-

"माए, आइ धरि ऐ दिस नजैरे ने गेल छल। मुदा आब देखै छी काज केनिहार लोक हँसी-खुशीसँ जिनगी बिता सेकैए। काका, सभसँ पहिने एकटा बोरिंग आ दमकलक जोगार करैक अछि। आइ तँ छुट्टी नइ अछि। परसू रवि छी। दुनू गोरे बजार चलि पहिने बुझि लेब। तखन जे जेना गर लागत से करब।"

अछेलाल-

“बौआ, बैंकोबला सभ बोरिंग दमकल दइ छइ। ओकरा साले-साल बिआज लगा रूपैआ दैत जेबै तैयो भऽ जाएत।”

बचेलाल-

“जखन अपने एते दरमाहा अछि तखन कर्जा किए लेब। अखन जे रूपैआ जमा छल से सठि गेल। मुदा ऐगला सोमे दिन तँ दस हजार रूपैआ भेटत। जँए एते दिन बितल तँए आठ दिन आरो बीतह। मुदा बिनु उपारजनक साधन बनौने तँ बेकारी नइ भागत।”ः

भोरे सुमित्रा उठि दलानपर आबि बाढ़ैन लऽ दरबज्जा बाहरैक ओरियान करितै रहैथ आकि अछेलालो एला। अछेलालक चुनौटीमे चुन नहि, तँए चुन लिअ एला। आन दिन अछेलाल निन टुटिते ओछाइनपर सँ उठि, लोटामे रौतुके राखल पानि लऽ दू बेर कुर्रा करै छला आ जे पानि बँचैत रहैन ओ पीब तमाकुल खा पराती गबै छला। मुदा आइ चुनक दुआरे पराती नै गाबि चुन-ले एला। आँगनसँ चुन आनि कऽ सुमित्रा देलखिन। चुन लऽ अछेलाल तमाकुल चुनबए लगला। तेही बीच दुनू गोरेमे गप-सप्प सेहो हुअ लगलैन। दुनू गोरेक गप-सप्पकेँ अकानि बचेलाल सेहो लगमे आबि कऽ ठाढ़ भेला। सुमित्रा अछेलालकेँ कहैत रहथिन-

“बौआ, जहिया अपन घर भरल-पूरल छल साउसो-ससुर जीबै छला। तखन हम जुआन छेलौं। गामक चुनल गीतहारि रही। गाममे जेतए केतौ कोनो काज होइ तँ हमरा हकार अबिते छल। हमहूँ राति-दिन किछु बुझबे ने करिऐ। अपन अँगना-घरक काज सम्हारि हकार पुरए जाइ छेलौं। हमर नैहर पचही परगनामे पड़ैए। ओइठामक गीत-नाद, बोली-वाणी, चालि-ढालि अल्लापुर परगनासँ नीक अछि। मुदा अपना गाममे बेसी अल्लेपुरक सुआसिन बसैए, गोटि-पँगरा भौरो परगनाक अछि। पचही आ भौरक तँ बहुत किछु मिलबो-जुलबो करै छै मुदा अल्लापुरक दोसरे रंगक छइ। हँ, एकटा बात जरूर छै जे

अल्लापुरक सुआसिन बेसी कमासुत होइए। मरदे जकाँ साड़ीक फाँड़ बान्हि लेत आ भरि-भरि दिन खेते-पथारमे काज करैत रहत। रौद-बसात किछु बुझबे ने करत। एक बेरक गप कहै छी। नैहरमे, हमरा घरे लग पण्डित कक्काक घर सेहो छैन। पण्डित काका इलाकाक सभ संस्कृत विद्यालयमे पढ़ौनी केने छला। ओ तेते निअम-निष्ठाबला छेलखिन जे कोनो विद्यालयमे शिक्षक सभसँ पटबे ने करैन। जाबे कियो टोकैन नहि ताबे ओहो केकरो नै टोकै छेलखिन आ ने बिनु काजे केकरो ऐठाम जाइ छेलखिन। ओना हुनका कखनो निचेनसँ बैसल नै देखिऐन। सदिछन कोनो-ने-कोनो काजमे लगले रहै छला। एक दिन पछबरिया इलाकाक एकटा पण्डित एलखिन। ओहो बड़ भारी पण्डित। भिनसरे दुनू गोरे पूजा-पाठ करि कऽ दू-दू छिमैर केरा खेलैन आ शास्त्रार्थ करैले बैस गेला। पण्डित काका की कहथिन आ ओ कि कहैन से आन कियो बुझबे ने करैत। गप-सप्पमे दुनू अपस्याँत। बड़ी कालक पछाइत पण्डित काका तीन बेर थुक माटिपर फेक देलखिन। ओइ पछबरिया पण्डितक मुँह कनै-कनै सन भऽ गेलैन। दुपहरमे खूब नीक नहाँति खुआ-पीआ कऽ बेरूपहरमे धोती-कुरता-चद्दैर-पाग दऽ अरियाति कऽ विदा केलखिन। ..हँ कहै छेलौं-सौंसे गाम हकार पुरै छेलौं...। जखन अपने मरि गेला तहियासँ हकार पूरब छोड़ि देलौं। अखुनका आ पहिलुका लोककेँ मिलबै छी तँ अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ैए। हमरे दूटा बच्चा भेल, ने एकोगो सुइआ लेलौं आ ने एकोटा गोटी खेलौं, तैयो कोनो रोग कहाँ दबलक। पहिल सन्तानक बेरमे, सासु हाटपर सँ सठौरा कीनि अनलैन, सएह खेलौं। अखन देखै छी जे हाट-बजार घुमै बेरमे, सिनेमा-सरकस देखै बेरमे, मेला-ठेला घुमै बेरमे निरोग रहैए मुदा काजक बेरमे जेते दुनियाँमे रोग छै से सभटा ओकरे दाबि दइ छइ। ..जाइ जाउ आब काजोक बेर भऽ गेल।”

भिनसुरका चाह पीब, सभ दिन बचेलाल टोलक बच्चा सभकेँ पढ़बए लगला। जाबे स्कूल जाइक समए होइत ताबे धरि पढ़बैत रहथिन। केकरोसँ एक्को पाइ नै लैथ। टोलक सभ धिया-पुता पढ़ैमे सुढ़िया गेल जइसँ बचेलालक अपनो प्रतिष्ठा बढ़ए लगलैन। बचेलालक काज देख सुमित्रा मने-मन खुशी होइत रहैथ।

◌

शब्द संख्या : 3127

11.

शिवकुमार आ रामनाथ फस्ट डिवीजनसँ मैट्रिक पास केलक। बिर्ड़ो जकाँ रिजल्टक प्रचार भऽ गेल मुदा ने स्कूलमे रिजल्ट आएल आ ने अपने आँखियेँ दुनूमेसँ कियो अखबारमे देखलक। ..शिवकुमार बचेलालक बेटा आ रामनाथ अछेलालक। रिजल्टक समाचार तँ सबहक कानमे पहुँच गेलै मुदा बिनु अपने देखने सोलहन्नी बिसवास केना कएल जाएत। ..शिवकुमारकेँ शोर पाड़ि बचेलाल कहलखिन-

"बौआ, आन दिन तँ आठे बजे अखबार दऽ जाइ छल मुदा आइ एबे ने कएल। तँए झंझारपुर जा कऽ अखबार कीनने आबह।"

दुनू गोरे–शिवकुमार आ रामनाथ साइकिलसँ झंझारपुर अखबार आनए विदा भेल। ..बचेलाल मने-मन तारतम करए लगला जे बिनु रिजल्ट निकलने लोक केना बुझलक। जे अखबारबला सभ दिन अखबार बेचए अबै छल ओकर अखबार रस्तेमे विद्यार्थियो आ गारजनो कीनि नेने हएत। तँए भरिसक अखबार नै बँचलै जे अपन गहिंकीकेँ दइत...।

स्कूलमे सेहो विद्यार्थी सभ रिजल्ट देखैले पहुँचए लगल। मुदा हेडमास्टर अखबारसँ अपन रजिष्टरमे लाल रंगक पेनसँ, प्रथम श्रेणी,

द्वितीय श्रेणी आ तृतीय श्रेणीक चेन्ह लगा बहरामे रिजल्टक कटिंगकेँ टाँगि देलखिन। ..अछेलाल मने-मन खुशी होइत रहैथ। खुशीक कारण रहैन जे एकटा मुरुखक बेटा, जे सभ तरहेँ विपन्नताक जिनगी जीबैत आएल से पास केलक। सुमित्राक मन ऐ दुआरे खुशी जे जेकरा जन्मसँ लऽ कऽ अखन धरि सेवा केलौं ओ आइ एक सीढ़ी पार केलक। रूमा तँ खुलि कऽ नइ बजैथ मुदा मनमे अपन बेटाकेँ मैट्रिक पास केने ओते खुशी नइ होइत रहैन जेते रामनाथक पास केने दुख।

रामनाथ आ शिवकुमार ओइ बुक स्टालपर पहुँचल जे अखबारक होलसेलर अछि। ओहूठाम सभ अखबार सठि गेल छेलइ। दुनू गोरे अचताइत-पचताइत बजार गेल। बजारमे एकटा दोकानमे अखबार देखलक। शिवकुमार ससैर कऽ दोकानदार लग जा बाजल-

“अहाँ तँ अखबार पढ़ि लेलौं। हमरा एकर काज अछि। ऐमे मैट्रिकक रिजल्ट निकलल छै तँए हमरा दऽ दिअ। जे दाम अखबारक छै ओ हम दऽ दइ छी।”

दोकानदार राजी भऽ गेला। मुदा आँखि लाल करैत बेटा कहलकैन-

“दू रूपैआमे अखबार नै दियौ। आइ एकर दाम पचास रूपैआ हेतइ।”

बेटाक बात सुनि पिता जवाब देलखिन-

“बौआ, कमाइ-ले तँ एतेटा दोकान छहे, तखन एहेन काज किए करबह?”

तरैंग कऽ बेटा कहलकैन-

“बाबू, जँ अहाँ एहेन दयालु छी तँ लौका-तुम्मा लऽ कऽ वृन्दावन चलि जाउ।”

‘लौका-तुम्मा’ सुनि पिताकेँ नरसिंह तेज भऽ गेलैन। बाघ जकाँ झपटैत बेटाकेँ कहलखिन-

"जिनगी भरिक कमाइक ई दोकान छी। ऐ चारि कोसीमे हमरा सभ इमानदार बनियाँ बुझैए तेकरा हम माटिमे मिला देब।"

गद्दीपर सँ अखबार उठा, शिवकुमारक हाथमे दैत बजला-

"बच्चा लऽ जाउ, एक्को पाइ दाम नइ लेब।"

अखबार लऽ दुनू गोरे अपन-अपन रिजल्ट देखलक। रिजल्ट देख दुनूक हृदैमे खुशीक हिलकोर उठए लगलै। साइकिल पकैड़ विदा भेल। रस्तामे होइ जे हवाइ जहाज जकाँ उड़ि कऽ घर पहुँची। दुइएटा विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणी भेल छेलइ..।

एकटा शिक्षक अखबार नेने बचेलाल ऐठाम आबि दुनू गोरेकेँ कहैले एलखिन। ओइ शिक्षकक अपनत्व देख बचेलालक मनमे उठलैन, अखनो नीक लोकक कमी नइ अछि। मास्टर साहैब जलखै कऽ चाह पिबते रहैथ आकि दुनू विद्यार्थी आएल। दुनू गोरे गुरुदेवकेँ प्रणाम केलकैन।"

सुमित्राक मन गदगद। बचेलाल लग आबि बजली-

"बौआ मास्टरो साहैब छैथे। जेते बच्चाकेँ घरपर पढ़बै छह सभकेँ नोत दऽ दहक। जहिना तोहर बेटा तहिना हमरो तँ पोते छी, खुशनामामे भोज कए कऽ सभकेँ खुआबह।"

बीस बरख पहिने, ग्रामीणक सहयोगसँ एकटा हाई स्कूल खुजल। तीन-चारि साल धरि मात्र दुइए साए विद्यार्थी स्कूलमे छल। शिक्षको सभ पचासे रूपैआ दरमाहापर शिक्षण करैथ। देहातमे पढ़लो-लिखलक संख्या कम्मे रहइ। मुदा सभ शिक्षकक मनमे ई धारणा बनल जे इलाकामे शिक्षाक प्रसार हुअए। तँए किछु कष्ट उठेनौं जँ स्कूल चलै तँ किए ने चलत। सभ शिक्षक अपन-अपन घरेसँ अबैत-जाइत स्कूल चलबैत रहला।

लगमे स्कूल भेने शिवकुमारो आ रामनाथो नाओं लिखौलक। स्कूलक पढ़ाइयो नीक। अठमेसँ शिवकुमार फस्ट करैत आ रामनाथ सेकेण्ड। जे मैट्रिकक टेस्ट परीछा धरि करैत रहल। शिवकुमार साइंस

रखने आ रामनाथ आर्ट। नवमा धरि बचेलाल दुनू गोरेकेँ घरोपर खूब मेहनत करबथिन। पढ़ैक रस्ता दुनू सीखि लेलक। हिसाबमे जेहने तेज शिवकुमार तेहने तेज भूगोलमे रामनाथ। वार्षिक परीक्षामे साए-क-साए अँक शिवकुमार हिसाबमे अनैत तहिना दू-चारि नम्बर कम रामनाथ भूगोलमे अनैत। सालमे एक्को दिन स्कूल दुनू गोरे नागा नै करैत। दुनू गोरे स्कूल जाइ काल पँच-पँचटा अंग्रेजी शब्द अपन तरहत्थीमे लिखि रटैत जाइत। स्कूल पहुँचैत-पहुँचैत दुनू, दुनूकेँ सुना दइत। स्कूल लग पहुँच दुनू गोरे अपन तरहत्थी कलपर जा घोइ लइत। फेर छुट्टी भेलापर पँच-पँचटा शब्द लिखि घरपर अबैत-अबैत यादि कऽ लइत।

ओना तँ जाड़क मासमे दिनो छोट होइत मुदा जाड़क कारणे विद्यार्थी बिलम्मोसँ स्कूल पहुँचैत तैयो हेडमास्टर साहैब, समैकेँ बुझि हाजरी बना दइ छेलखिन। ई सोचि जे कनी बिलम्मोसँ तँ विद्यार्थी स्कूल अबैए, तँए विद्यार्थीक बीच काफी प्रतिष्ठा रहैन। शिक्षको सभकेँ ओ बरबैर कहैत रहै छेलखिन- 'पढ़बैसँ बेसी छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा पैदा करू। जइ छात्रमे पढ़ैक जिज्ञासा जगि जाएत ओ निश्चित पढ़बे करत। जइसँ हमरो-अहाँकेँ पढ़बैमे सहोलियत हएत।' ..जइ विद्यार्थीकेँ किताब नै रहै वा देहपर मैल-कुचैल कपड़ा देखथिन, ओकरा ऑफिसमे बजा परिवारक दशा पुछि, मदैत सेहो करै छेलखिन। ओना हेडमास्टर सुखी सम्पन्न परिवारक मुदा जहिना गरीबो मनुखक देहमे धनिकक बुधि धोंसिया जाइत तहिना हुनका सुभ्यस्त रहनौं गरीबक दया देहमे घोंसियाएल रहैन।

स्कूलमे रिजल्टक कॉपी आ मार्कसीट आबि गेल। सभ विद्यार्थी अपन-अपन मार्क-सीट आनए स्कूल जाए लगल। शिवकुमारो आ रामनाथो गेल। दुनू गोरेक नम्बर, एक टकसँ हेडमास्टर देख दुनू गोरेकेँ पुछलखिन-

"बौआ, आगू नाओं लिखेबह किने। अगर जँ कोनो दिक्कत हुअ तँ कहिहह। अखन मार्कसीट नेने जा काल्हि दुनू गोरे अपन-अपन पिताकेँ बजेने अबिहौन।"

दुनू गोरे अपन-अपन अंक पत्र लऽ विदा भेल।

हेडमास्टर–दिनेशबाबूक योगदान स्कूल बनबैमे अग्रगण्य छेलैन। ओ अपनाकेँ सिरिफ शिक्षके नै बुझैथ। आजुक शिक्षक जकाँ सदिछन दरमहेपर गिद्ध-दृष्टि नै राखैथ। ओ सोचैथ जे जहिना अपन बेटा-बेटी तहिना छात्र-छात्रा। माए-बाप बेटा-बेटीकेँ जन्म दैत, पालैत-पोसैत मुदा गुरु तँ ओ ब्रह्मस्वरूप कुम्हार छैथ जे मनुखकेँ चाकपर गढ़ैत। अपन परिवारोसँ दिनेशबाबू बेहद खुशी रहै छैथ। दिनेशबाबूक पिता लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक छेलखिन। हुनकेँ पढ़ौल आ रस्ता देखौल दिनेशबाबू। जइसँ बी.ए. पास कऽ हाइ स्कलमे शिक्षक बनला। जखन दिनेशबाबूक बेटा–शुशील सेहो एम.ए. पास कऽ कौलेजमे प्राध्यापक भेलखिन, तखन दुनू परानीक हृदए ओहन सरोवर जकाँ बनि गेलैन जइमे हजारो कमल फुलाइत रहैए आ रंग-बिरंगक चिड़ै-चुनमुनी ओइमे विहार करैत रहैए। जहियासँ दिनेशबाबूक बेटा सुनील नोकरी शुरू केलैन तहियेसँ ओ अपन दरमाहा गरीब विद्यार्थीकेँ देमए लगलखिन।

बचेलाल आ अछेलाल दुनू गोरे दिनेशबाबूसँ भेँट करए विदा भेला। दुनू गोरे शिवकुमारो आ रामनाथोकेँ संग कऽ लेलैन। दिनेशबाबू सेहो दुनू गोरेक प्रतीक्षेमे रहैथ। दुनू गोरे दिनेशबाबूकेँ प्रणाम कऽ आफिसमे बैसला। बचेलाल पुछलखिन-

"शिवकुमार आ रामनाथक माध्यमसँ अपने बजेलौं?"

दिनेशबाबू-

"हँ। बजबैक कारण अछि जे दुनू विद्यार्थी पढ़ैबला अछि तँए दुनूकेँ नाओं बढ़ियाँ कौलेजमे लिखा दियौ।"

“विचार अपनो अछि। स्कूलक सभ कागजात भेटलापर जेते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी नाओं लिखा देबइ।”

“स्कूलक सभ कागजात आइये दऽ दइ छी। जँ सम्हैर जाए तँ काल्हिये नाओं लिखा दियौ, नइ तँ परसू।”

“हमहूँ तँ प्राइमरी स्कूलमे काज करै छी। काल्हि जा कऽ परसूका छुट्टी लऽ लेब आ परसू जा कऽ नाओं लिखा आएब।”

दिनेशबाबू किरानीकेँ बजा सभ काज कऽ देलखिन। सभ कियो विदा भऽ गेला।

दोसर दिन बचेलाल स्कूल जा छुट्टीक आवेदन दऽ एला। साँझू-पहर सुमित्राकेँ कहलखिन-

“माए, काल्हि शिवकुमारो आ रामनाथोक नाओं लिखबैले मधुबनी जाएब।”

कौलेजमे पोताक नाओं लिखाएब सुनि सुमित्रा कहए लगली-

“बच्चा, शिवकुमार तोहर बेटा छिअ मुदा पोता तँ हमरो छी। रामनाथोकेँ जनमेसँ सेवा करैत एलौं तँए ओकरो मदैत करब उचित भऽ जाइ छह। वेचारा अछेलाल मुरुख अछि मुदा समांग जकाँ तँ ओहो अछि। जब तूँ मैट्रिक पास केलह तब हमरो मनमे छेलए जे तोरा कौलेजमे नाओं लिखा दिअ। मुदा घरक जरजर हालत देख मनक बात मनेमे रहि गेल। ओना तइले बहुत दुखो ने भेल। किएक तँ दुख तखन होइत जखन पिता हाइ स्कूल धरि पढ़ने रहितथुन। हम अबला रहितो बहुत केलियह। मुदा आइ तोरा-ले अनिवार्य भऽ जाइ छह जे कम-सँ-कम बी.ए. तक बेटाकेँ पढ़ा दहक। ओना रामनाथ-ले से भार नै छह मुदा ओकरो तँ बेटे बनौने छी। काल्हि जखन मधुबनी जेबह तँ अछेलालोकेँ संग कऽ लिहह। किएक तँ एहेन-एहेन काज लोककेँ जिनगी भरि मन रहै छै जे सिरिफ अछेलालेटाकेँ नै रामनाथोकेँ मन रहतै।”

निर्मलीसँ जयनगर जाइवाली गाड़ी पाँचे बजे निर्मलीसँ खुजैए तँए अपन स्टेशन–तमुरिया साढ़े पाँच तक पहुँच जाइक अछि। ई बात बचेलाल मने-मन सोचैत रहैथ। साढ़े नअ बजे मधुबनी गाड़ी पहुँच जाइए। दस बजे कौलेजक ऑफिसो खुजैत हएत तँए दस बजे ऑफिस पहुँच शुरूहेमे अपन काज केलासँ साढ़े तीन बजे धरि स्टेशन चलि आएब। जइसँ वएह गाड़ी, जयनगर-निर्मलीवाली फेर पकैड़ लेब आ सबेर-सकाल घरपर चलि आएब। जाइ कालमे गाड़ीसँ उतैर टीशने कातक होटलमे सभ खा लेब आ रिक्शा पकैड़ चलि जाएब। ई बात बचेलाल विद्यार्थियो आ अछेलालोकेँ कहि देलखिन।

साढ़े चारिये बजे बचेलाल उठि तीनू गोरेकेँ उठा देलखिन। पर-पैखानासँ आबि स्नानो कऽ लेलैन। अछेलालो तैयार भऽ गेला। एमहर शिवकुमारो आ रामनाथो नहा कऽ तैयार भऽ गेल। पौने पाँच बजे गाड़ी पकड़ैले चारू गोरे विदा भेला। छअ बजे गाड़ी तमुरिया पहुँच गेल।

चारू गोरेक टिकट शिवकुमार कटा नेने छल। सभ कियो गाड़ीमे बैस गेला। बचेलाल छोड़ि कियो ने मधुबनी देखने। तँए तीनूक मनमे रंग-बिरंगक बात अबै छल। मने-मन बचेलाल अपन काजक हिसाब जोड़ैथ जे कोन काज पहिने आ कोन काज पाछू करब। ..तहिना अछेलालो मनमे उठैत रहैन जे गाममे झगड़ा-झंझट कऽ मधुबनीए आबि लोक केस-फौदारी लड़ैए। आइ हमहूँ कोट-कचहरी देख लेब, जहलो देखबै जे केहेन होइ छइ। फेर कहिया जाएब कहिया नहि तँए जब मधबन्नी जाइए रहल छी तँ सभ देखने आएब।

साढ़े नअ बजे गाड़ी मधुबनी पहुँच गेल। गाड़ीसँ उतैर चारू गोरे विदा भेला। टीशने कातक होटलमे चारू गोरे खेनाइ खेलैन आ थोड़े कालक पछाइत रिक्शा पकैड़ आर.के. कौलेज विदा भेला।

ऑफिस जा अपन सभ कागज-पत्र किरानीकेँ देलखिन। सभ कागज-पत्र देख किरानी लगले नाओं लिखि रसीद दऽ देलकैन।

बचेलाल रूपैआ निकालि दऽ देलखिन। किताबक सूची दैत किरानी कहलकैन जे पनरह तारीखसँ पढ़ौनी चलत। एगारहे बजे सभ कौलेजसँ विदा भऽ गेला। बजार आबि किताबक दोकानपर पहुँचला।

दोकानपर जाइते किताबक सूची दोकानदारकेँ दऽ सभ किताब दिअ कहलखिन। बचेलालकेँ दोकानक भीतरे बैसा दोकानदार एक-एक विषयक तीन-तीन-चरि-चरि लेखकक किताब निकालि आगूमे देमए लगलैन। मने-मन बचेलाल सोचैथ, ओते तँ समए नइ अछि जे पढ़ि-पढ़ि कऽ किताब चुनब तँए सभ किताबक संस्करण देख-देख छँटियबए लगला। जइ विषयक दूटा किताब पसिन होनि ओ दुनू लऽ लैथ। कोर्सक किताब कीनि एकटा हिन्दी शब्दकोष आ एकटा अंग्रजी शब्दकोष सेहो कीनलैन। सभ विषय-ले कॉपी सेहो कीनलैन। बचेलालक विचार देख दोकानदार मने-मन खुशी होइत। ओ नोकरकेँ चाह-पान अनैले पठौलक। चाह पीबैत बचेलालकेँ दोकानदार पुछलकैन-

"अपनेक की जीविका अछि?"

मने-मन बचेलाल सोचए लगला जे हमरा जीविकासँ दोकानदारकेँ कोन मतलब छइ। मुदा जब पुछलक तँ नहियोँ कहब नीक नहि। मुस्कियाइत बचेलाल बजला-

"लोअर प्राइमरी स्कूलमे शिक्षक छी।"

शिक्षकक नाओं सुनि दोकानदार एकटा `अष्टावक्र गीता' ओहिना दैत कहलकैन-

"जहिया मधुबनी आबी तहिया हमरो भेँट जरूर दी।"

'बड़बढ़ियाँ।' कहि बचेलाल किताबक दाम दऽ चारू गोरे विदा भेला। किताबक एकटा थाक शिवकुमारक हाथमे आ एकटा रामनाथक हाथमे आ अखबारमे चौपेत कऽ बान्हल गीता बचेलालक हाथमे। बचेलालक मनमे उठलैन जे जखन आएले छी आ अढ़ाइ-तीन

घन्टा समैयो ऐछे तँ डेरो किए ने ठीक काइये ली। अखन अपनो छी। जँ डेरा ठीक भेल रहत तँ फेर नइ आबए पड़त।

नवका-नवका, मोट-मोट किताब देख शिवकुमार मने-मन सोचैत जे सभ विषयक कॉपियो भाइये गेल, खूब मेहनतसँ पढ़ब। दस-दसटा अंग्रेजी आ हिन्दी शब्द सभ दिन रटब। ओना सभ विषयक अपन-अपन शब्द होइ छै ओहो यादि करए पड़त। जाबे कौलेज खुजत ताबे सएह सभ शब्द सीखि लेब जइसँ क्लासमे बुझैमे परेशानी नै हएत। सभ विषय पढ़ैले समए बाँटि लेब नइ तँ एकभग्गू पढ़ब भऽ जाएत। महत तँ सभ विषयक छै आ पासो तँ सभमे करए पड़त, तखने ने पासो हएब। नइ तँ कोनो विषयमे खूब नम्बर औत आ कोनोमे फेल भऽ जाएब तँए पहिने सभ विषयक तैयारी ओइ रूपे करए पड़त जे पास नम्बर सभ विषयमे आबए। तखन ने बेसी नम्बर आ नीक डिवीजन औत...।

रामनाथ व्याकरणक किताब खोलि कऽ दोकानेपर देखने छल। जइमे वएह सभ देखलक जे हाइयो स्कूलमे पढ़ने छल, थोड़े विस्तारसँ अछि, तँए कम्मे नव चीज पढ़ए पड़त। तँए मने-मन खुशी होइत।

चारू गोरे आगू-पाछू स्टेशन दिस अबै छला आकि एक गोरे आगूमे साइकिल रोकि बचेलालकेँ प्रणाम केलकैन। मुड़ी निच्चाँ केने बचेलाल चलैत रहैथ। प्रणाम सुनि मुँह उठा कऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणामक जवाब देलखिन। प्रणामक जवाब तँ दऽ देलखिन मुदा चिन्हलखिन नहि। तँए ओइ आदमी दिस तकैत जेना किछु मन पाड़ए लगला। ओ आदमी बुझि गेल जे भरिसक नै चिन्हलैन। धाँइ-दे ओ कहलकैन-

"मास्सैब, हम रमेसरा छी। ऐठाम कोओपरेटिव बैंकमे नोकरी करै छी।"

रमेसराक बात सुनिते बचेलालकेँ धक-दे मन पड़लैन जे ई तँ पढ़ौल विद्यार्थी छी। मुस्कियाइत बजला-

“बौआ, चेहरा देख तोरा चिन्हबे ने केलियह। एक चेराक देह छेलह जे अखन हाथी जकाँ भऽ गेलह। परिवारो एतै रखै छह?”

बिहुँसैत रमेसरा कहलकैन-

“अपन घर बना नेने छी। आइ एतै पहुँनाइ करए पड़त। हमर सौभाग्य जे अहाँ एतए आएल छी। हमहूँ गाम कम्मे जाइ छी। तोहूमे धड़फड़ाएल गेलौं आ धड़फड़ाएले एलौं। तँए किनको भेँटो-घाँट करए नै जा होइए।”

बचेलाल-

“बाल-बच्चा कएटा छह?”

रमेसरा-

“दूटा अछि। दू परानी अपने छी। चारि गोरेक परिवार अछि। अपने केमहर-केमहर आएल छलिऐ?”

“दुनू बच्चाकेँ कौलेजमे नाओं लिखबए आएल छेलौं। आब रहैले डेराक भाँज लगबैक अछि।”

जँ नजैरपर केतौ एकान्त डेरा बुझल हुअ तँ ठीक कऽ दएह।”

जखन हम ऐठाम रहै छी तखन अपनेकेँ डेरा नै हएत। पहिने चाह पीब लेल जाउ। तखन आगूक गप-सप्प हेतइ।”

रमेसरा एकटा होटलमे सभकेँ लऽ गेलैन। सभकेँ जलखै करा चाह पिऔलकैन। पान खुऔलकैन। पाँचो गोरे रेलबे स्टेशन दिस विदा भेला। मुसाफिरखाना आबि रमेसराकेँ बचेलाल कहलखिन-

“अखन बैंकक समए अछि, तूँ जाह?”

“मास्सैब, आब बैंक नहियोँ जाएब तैयो ने किछु हएत। बैंके काजसँ एक गोरे ऐठाम नोटिश दइले गेल छेलौं, तँए अखन बाहरेक काजमे छी। काल्हिये जवाब देबइ।”

“अखन गाड़ी अबैमे देरी अछि। ताबे डेराक भाँज लगा दएह। अच्छा एकटा बात कहह जे होस्टल नीक हएत कि लाउज?”

मास्सैब, ने होस्टल नीक हएत आ ने लाउज। मधुबनीक हवा एहेन अछि जे विद्यार्थी सभ पढ़नाइ छोड़ि-छोड़ि भरि दिन जातिवादी गुट बना-बना झंझटे-फसादमे रहैए। पढ़ैबला विद्यार्थी अपन-अपन अंगीतक ऐठाम रहि-रहि पढ़ैए। हमरो डेरामे चारिटा कोठरी अछि। तीनियेँ कोठरीसँ अपन काज चलि जाइए। एकटा कोठरी पड़ले रहैए।"

"भाड़ा केना की लेबहक?"

मुस्कियाइत रमेसरा कहलकैन-

"अपनेसँ भाड़ा नइ लेब। अहींक परसादे हम नोकरी करै छी। अहाँक विद्यार्थी तँ हमरो भैयारीए भेला किने?"

"दस-पाँच दिनक बात रहैत तँ ठीक छल मुदा से तँ नइ अछि।"

"भाड़ाक सम्बन्ध मे हम किछु ने कहब। एते जरूर कहब जे दुनू बच्चाकेँ रहैले डेरा जरूर देब।"

असमंजसमे पड़ल बचेलाल अछेलालकेँ कहलखिन-

"काका, अहीं भाड़ा कहियौ?"

धड़फड़ा कऽ अछेलाल पचास रूपैआ महिना कहि देलकैन। दुनू गोरे सहमत भऽ गेला। सहमत होइत बचेलाल रमेसराकेँ पुछलखिन-

"खाइ-पीबैक जोगार केना हेतइ?"

"चाउर-दालि गामसँ पठा देबइ। अपनो परिवारमे खेनाइ बनिते अछि, ईहो दुनू गोरे ओहीमे खेता।"

"चाउर-दालिक अतिरिक्तो तँ नून-तेल-तीमन-तरकारीमे खर्च हएत। तइले साए रूपैआ महिना सेहो देबह।"

"बड़बढ़ियाँ।"

सभ जोगार लगि गेलैन। बचेलाल अछेलालकेँ कहलखिन-

"काका अहाँ सभ जा कऽ डेरा देख लियौ। हम एत्तै अराम करै छी।"

तीनू गोरेकैं संग केने रमेसरा विदा भेल। स्टेशनक पूबारि भाग–चकदहमे रमेसराक घर। एकान्त जगह। सभ कियो डेरा देख लगले घुमि कऽ आबि गेला। गाड़ीक टिकट कटौलैन। थोड़े कालक पछाइत गाड़ी आएल। चारू गोरे गोसाँइ उगले अपना स्टेशन पहुँच गेला।

तमुरियासँ गाम अबैक रस्तामे अछेलाल बचेलालकैं कहलखिन-

“बौआ, औझुका दिन बड़ सगुनिया छल।”

बचेलाल-

“से की?”

“एक्के दिनमे केते काज भेल। हमरा तँ होइ छल जे कए दिन लगत कएक दिन-ने। जाइए कालमे हमरा होइ छल जे धोती, चद्दैर लऽ लइले कही, मुदा नै कहलौं।”

“काका, काज करैक ढंग होइ छइ। ओना संयोगो होइ छइ। जेकरा काज करैक ढंग रहै छै ओ कम्मे समैमे बहुत काज कऽ लइए। आ जेकरा ढंग नै होइ छै ओकरा कम्मो काजमे बेसी समए लगै छइ। संयोग ऐ दुआरे कहलौं जे जेना कौलेज गेलौं आ किरानीए नै रहैत। चाहे किरानियों रहैत आ कोनो कागजे नै रहितै। चाहे जेबा कालमे गाड़ीए छुटि जाइत। इहए सभ कुसंयोग छिऐ।”

शिवकुमारक आ रामनाथक मन चटपट करैत जे कखन घरपर पहुँच किताब देखब। रामनाथ अखबारक विशेषांक सभ गत्ता लगबैले रखने छल। किएक तँ बिनु गत्ता लगौल किताबक ऊपरका पन्ना गन्दो भऽ जाइ छै आ ओदरबोक डर रहै छइ। स्टेशनसँ घरक दूरी चारिये किलोमीटर, तँए अबैमे बेसी देरियो नइ लगलैन। तहूमे घरमुहाँ पहर।

घरपर अबिते शिवकुमार हाथ-पएर धोइ, अँगा निकालि दलानक चौकीपर बैस दादीकैं शोर पाड़लक। दादीकैं अबिते किताब सभ देखबए लगल। किताब देख सुमित्रा कहलखिन-

“बौआ मन लगा कऽ पढ़िहह। औझुका दिन तोरा जिनगीक एकटा चौबट्टीपर पहुँचा देलकह। ऐठामसँ जिनगीक आगूक रस्ता

खुलतह। अखन, ने तोरा कोनो घरक भार छह आ ने आन कोनो। मात्र पढ़ैक छह। अखन जेते मेहनत कऽ कऽ पढ़बह ओते अपने गुण करतह। मैट्रिक धरि बापो पढ़ल छथुन, तँए ओते धरि सरस्वतीक बास घरमे भऽ गेल छह। आब आगू केना रहथुन ई तँ तोरेपर छह। भगवान केकरो अधला थोड़े करै छथिन, ओ तँ सभकेँ नीके करै छथिन। तोरे अधला किए करथुन। रामनाथोकेँ अपन सहोदरे भाए जकाँ बुझिहक।"

शिवकुमारकेँ सुमित्रा बुझैबते छेली आकि अछेलालो एला। अबिते सुमित्राकेँ कहए लगलैन-

"भौजी, एते उमेर बित गेल मुदा आइ मधमन्नी देखलौं। बाप रे! बड़ीटा बजार छइ। बड़का-बड़का दोकानो सभ छइ। जाइ कालमे तँ नीक-नाहाँति नै देखलिऐ किए तँ रिक्शापर चढ़ल रही। मुदा अबै कालमे देखलिऐ। बड़कीटा कौलेज छइ। मारे मास्टर आ मारे चटिया देखलिऐ। बचेलाल दुनू गोरेकेँ नाओं लिखबैत रहए आ हम घुमि-घुमि देखबे करी। बड़का-बड़का कोठा। एकटा घरमे मारे साइकिल देखलिऐ। ओते गनलो ने होइत। एक गोरे ओइ ठीन बैठल रहै ओ हमरा कहलक- 'भायजी, तमाकुल खाइ छी।' ..हमहूँ बुझलौं जे किए ने तमाकुले लाथे किछु बुझियो ली। हम कहलिऐ- 'हँ।' ..ससैर कऽ ओकरा लग गेलौं। मुदा वेचाराकेँ एक्केटा कुरसी रहै, जैपर उ बैठल रहए। हम बगलेमे ईंटा-सिमटीक बनौल कम्मे खड़ा देवाल रहै ओहीपर बैसलौं। दुनू गोरे गप-सप्प करए लगलौं। ओ कहलक- 'अपना जिलाक सभ गामक विद्यार्थी ऐ कौलेजमे पढ़ैए।' ..एह! केते कहब भौजी, ओते कि मनो अछि।"

◌

शब्द संख्या : 2834

12.

विकासपुर एला देवनकेँ साल लगि गेल। साल भरिक समैयो नीक रहलै। ने बेसी बरखा भेल आ ने कम। जँ बेसी बरखा होइत तँ दहार आ जँ नहियेँ होइत तँ रौदी। एहेन समए गोटे-गोटे साल संयोगसँ होइए। किएक तँ अखन धरिक जे समए होइत आएल अछि ओ अहिना होइत आएल अछि। गोटे साल बेसी बरखा भेल तँ गोटे साल जरूरतसँ कम। समए नीक भेने उपजो नीक भेलै तँए सबहक मन हरिअर। चारिये मास–अखाढ़सँ लऽ कऽ आसिन धरि, सालक ताला-कुञ्जी रखैत। मुदा आठ मास–कातिकसँ लऽ कऽ जेठ–धरिक कोनो मोजरे ने होइत। यएह, अपन मिथिलाक किसानक इतिहास रहल। ..सालो भरि देवन नसीवलाल काकासँ खेतीक लूरि सीखि-सीखि खेती करैत रहल। देवनकेँ नसीवलाल काका खेतीक लूरियो सीखबैत रहलखिन आ बीओ-बाइल दैत रहलखिन। नसीवलाल कक्काक बतौल रस्ता आ मदैतसँ बुधनीक टुटल मन जागृत भऽ ऐगला सालमे हँसी-खुशीसँ प्रवेश केलक।

एक मनसँ ऊपरे टुकला बीछि कऽ बुधनी आमील बनौने छेली जे बहरबैया वेपारी हाथे पाँच रूपैए सेर बेचलैन। दू साए रूपैआ भेलैन। जइसँ तीनू गोरेकेँ माने बुधनी, देवन आ रमुआकेँ नुआ-वस्तर भऽ गेल। दुनू आमोक गाछमे तेते आम भेलै जे माइर-धुइस कऽ खेबो केलक आ तीन साए रूपैआक बेचबो केलक। पनरह सेर अम्मटो बेचलक। पाँच सेर अपनो लऽ रखलक। जे कहियो काल खेबो करब आ मातृनवमी, जितिया-ले रखबो करब। आमक आँठी फकुआ बनबैले दुनू घरक चारपर अदहा फेकलक आ अदहा गाछ जनमइले बाड़ीमे जमा केलक। जखन पिपहीमे हरिअरी धेलकै कि सभकेँ उखाड़ि-उखाड़ि बाड़ीमे एक-एक हाथपर रोपि देलक। आठे-नअ

मासमे डेढ़-दू हाथक गाछ भऽ गेलइ। बैशाखमे माटियो सक्कत भेलै आ गाछ रोपैक समैयो आबि गेल। सभ गाछक थल्ला काटि-काटि देवनो आ बुधनियोँ उखाड़ि लेलैन। धानक नारक खोंचैढ़ बना सभ थल्लाकेँ बान्हि लेलक।

मधुबनीक एकटा वेपारी जे नर्सरी खोलने अछि, आबि पँच-पँच रूपैए छबो साए गाछ कीनि लेलकैन। तीन हजार रूपैआ एक्केठाम भऽ गेल। अपनो-ले देवन दसटा गाछ रोपि लेलक। मोटगर आमदनी देख बुधनी देवनकेँ कहलखिन-

“बौआ, चरि-कठबा खेतमे चापाकल गड़ा लएह। ओइ दिन तूँ बजलो रहह जे नसीवलाल काका कहलैन जे कम्मो खेत किए ने हुअए मुदा पानिक जोगार भेने खेतक हस्तियो बढ़ि जाइ छै आ उपजो।”

घरक छप्परपर जे आमक आँठी फेकने रहए ओ सूखि गेल। कातिकमे सभ आँठीकेँ उतारि लेलक। दुनू गोरे सभटा आँठीकेँ सिलौटपर लोढ़ीसँ फोरि फकुआकेँ एक भाग रखलक आ बखलोइयाकेँ दोसर भाग। बखलोइयाकेँ चुल्हिमे जरा लेलक आ फकुआकेँ जत्तामे पीसि चिक्कस बना रोटी पका कऽ खाइले रखि लेलक। थोड़े फकुआकेँ देवन फोरि-फोरि सुपारी टूक जकाँ बना मलसीमे रखि लेलक। जखन-जखन काज करए जाइत तँ पान-सातटा टुक डाँरमे खोंसि कऽ नेने जाइत आ सुपारीए जकाँ खाइत।

बारहे साएमे कल गड़ा गेल। अठारह साए रूपैआ बँचिये गेलैन। ओइ अठारह साएमे सँ, चारि साए रूपैए कट्ठा चारि कट्ठा खेत अपने खेतक आड़िमे कीनि लेलैन। डेढ़ साए रूपैआ रजिष्ट्रीमे खर्च भेलैन। कल गड़ौलासँ आठ कट्ठा खेतमे धान पटबैक ओरियान भऽ गेलइ। अखाढ़मे बुधनी अपन पनरहो कट्ठा खेत रोपने छेली। ओना खेतमे जोत-कोर तेनाहे सन भेल रहै मुदा तैयो बीआ आ समैक परसादे डेढ़ मोनक कट्ठा धान भेलैन। जँ खेतमे नीक-जकाँ जोत-कोर, ढकिया-पथिया आ खाद पड़ल रहैत तँ दोबरोसँ बेसी धान होइत मुदा से नै

भेल। साढ़े बाइस मन धान देख बुधनीक मनमे जीबैक आशा जागि गेलैन। पतिक मुइने बुधनीकेँ जीबैक आशा टुटि गेल छल। अगर बेटा नै रहितै तँ वेचारी या तँ जहर-माहूर खा मरि गेल रहैत वा चुमौन कऽ दोसर घर चलि गेल रहैत। मुदा खेतक उपजा आ अपन मेहनतक हूबासँ जीबैक भरपुर आशा बुधनीक मनमे जगि गेलैन।

बरसात खतम भऽ गेल। धानो सभ आसिने-कातिकमे कटि गेल। देवनकेँ नसीवलाल काका कहि देने रहथिन जे कम खेतबलाकेँ तरकारी खेती जरूर करक चाही। एगारह कट्ठामे गहुम बाउग केलक आ चारि कट्ठामे तरकारी-खेती। एगारहो कट्ठामे गहुमक गाछ तँ नीक जनमलै मुदा पटबैक कोनो आशा रहबे ने करइ। जइ बाधमे बुधनीक खेत ओइ बाधमे एक्केटा बोरिंग जे बुधनीक खेतसँ बहुत हटि कऽ अछि। ने नाला ने पाइप। पटबैले देवन औना-पौना कऽ रहि गेल मुदा नहियेँ पटलै। संयोगसँ पूसमे एकटा बरखा भेल। बर्खाक पानि पिबते गहुमक गाछ हुहुआ कऽ उठलै। बियानो खूब केलकै। ओसो खूब गिरइ, तँए हाल बेसी दिन धरि धेने रहलै। ओही हालपर गहुम गम्हरा गेल। गहुमक गम्हरा देख बुधनीकेँ मनमे आशा जगलैन। पटौलहा गहुम जकाँ तँ नहियेँ भेलैन मुदा तैयो एक-तरहक भेलैन। हरा-हरी पान-छह पसेरी कट्ठा गहुम उपजल। सभटा मिला कऽ साढ़े छह मन गहुम भेलइ।

नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे चैतक-अन्हरियामे बाउग खेरही बढ़ियाँ होइ छै तँए चारिये दिनमे दुनू गोरे एगारहो कट्ठाकेँ तामि-कोरि खेरही बाउग कऽ लेलक। अदहा जेठमे खेरही पाकए लगल। दुनू गोरे–बुधनी आ देवन, खेरही बिछ-बिछ तोड़ए लगल। अन्तिम जेठ धरि सभटा खेरही तैयार कऽ लेलक।

तरकारी खेती-ले जे चारि कट्ठा रखने रहए, ओइ खेतक धान कटिते, तैयार करए लगल। अदहा कातिक अबैत-अबैत खेत तैयार कऽ लेलक। नसीवलाल काका देवनकेँ कहने रहथिन जे तरकारी

उपजबैले पानिक ओरियान करए पड़त। जेकरा पोखैर छै ओ पोखैरसँ पटबैए आ जेकरा बोरिंग छै ओ बोरिंगसँ पटबैए। मुदा जेकरा ने पोखैर छै आ ने बोरिंग आ ने चापाकल ओ की करत? मुदा नसीवलाल काकाकेँ अपन जिनगीक अनुभव छेलैन, ओ देवनकेँ कहने रहथिन जे चारि कट्ठामे जँ दूटा कूप खुइन ली आ गर लगा कऽ खेती करी तँ काज चलि सकैए।

खेत तैयार कऽ देवन दूटा कूप, खेतक दूटा कोणपर खुइन लेलक। कुपो खुनैमे देवनकेँ बेसी भीर नहियेँ भेल। दुइए दिनमे एकटा कूप खुइन लिअए। छबे-साते हाथ खुनलासँ पानि छुटि जाइ। मुदा सभसँ कठिन बात ई अछि जे तरकारीमे तँ एक्के रंग पटौनियोँ नै लगैत। किछु चीजक खेतीमे बेसी पटौनी लगैत आ किछुमे कम। बोरिंग जकाँ तँ पानियोँ कूपमे नहियेँ होएत मुदा दुनू बेर-भिनसर आ साँझ-मिला कऽ दस धूर तक खेत जरूर पटि जाइत। दुनू कूपमे बाँसक खुट्टा गाड़ि दूटा ढेकुल गाड़ि पटबैक ओरियान देवन कऽ नेने रहए।

तरकारी खेती देवन दू हिसाबसँ केलक। पहिल अपन परिवार-ले आ दोसर आमदनी-ले। गिरहस्त-ले कातिक धरम मास होइत किएक तँ जेते रंगक अन, जेते रंगक तरकारी आ जेते रंगक फलक खेती कातिकमे लगौल जाइत, ओते सालक कोनो मासमे नै लगौल जाइए। मसल्लोक खेती करैक मुख्य मास कातिके छी। परिवारमे सभ कथुक जरूरत होइत जेना- अन, तीमन, तरकारी, फल, मसल्ला इत्यादि। ..नोकरिया वा वेपारीक परिवार तँ पाइ कमाइत आ सभ चीज कीनि-बेसाहि कऽ काज चला लइत। मुदा किसान जँ नै करत तँ ओ औत केतएसँ। ई सोचि देवन सभ वस्तुक खेती करैक विचार केलक। जे किसान जेते नमहर अछि ओ ओते बेसी करैत आ जे जेते छोट अछि ओ ओते कम करैत। संगे जइ किसानकेँ बेसी खेते छै आ अपने नोकरी करैए वा खेते छै मुदा ने पानिक जोगार छै आ ने होशगर

अछि ओ तँ पछुएबे करत। मुदा जे किसान लूरिगर आ हिम्मतगर अछि जँ ओकरा अपन साधनक, कमियो छै तैयो ओ आगू बढ़िये जाइए किएक तँ अपना इलाकाक सौभाग्य रहल जे पोखैरकेँ धर्मक वस्तु मानल गेल आ एहेन-एहेन धरमात्मा सभ भऽ चुकल छैथ जे गाहीक-गाही पोखैर खुनौने छैथ। एहनो-एहनो गाम सभ अछि जइमे अठारह गण्डासँ ऊपरे पोखैर अछि। तेतबे नहि, उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ दरजनो नदी बहि रहल अछि। तेतबे नहि, गामो सबहक जे बनाबट अछि जइमे एक-चौथाइसँ लऽ कऽ तीन चौथाइ धरि गहींर खेत अछि माने चौरी खेत, जे अपना पेटमे जेठ-अखाढ़ धरि पानि भरने रहैए। तैपर सँ बोरिंग, नहर वा आन-आन सेहो साधन मौजूद अछि। तहिना माटिक आछि। दुनियाँमे जेते किस्मक नीक माटि अछि ओ मिथिलाक धरोहर छी। इन्द्रो भगवान कहियो काल खिसिआइ छैथ, बेसी काल खुशीए रहै छैथ। जीव-जन्तु आ चिड़ै-चुनमुनी ऐ रूपे भरल अछि जे सदिछन मनुखक सेवा लेल तैयार अछि, सतत् धरती माताक गोदमे रहि रक्षा करैए।

नसीवलाल कक्काक विचारकेँ मनमे अरोपि देवन तरकारी खेतीमे जी-जानसँ लागि गेल। अपन परिवार-ले एक कट्ठामे तीमन-तरकारी आ साग लगौलक, जेना- मुरै, गाजर, कोबी, अल्लू, मटर, टमाटर आ ठढ़िया, पालक, लफ इत्यादि लगौने रहए। तहिना दस धूरमे मसल्ला-ले सेरसो, धनियाँ, लसुन, जमाइन, मेथी मिरचाय आ पिऔज सेहो लगौने रहए। आमदनी-ले- कोबी, टमाटर अल्लू फुट्टे लगौने। ..फागुन अबैत-अबैत बन्धा कोबी आ टमाटर छोड़ि सभ कटि गेल। ओना टमाटर माघेसँ तोड़ब शुरू केने रहए मुदा अखनो माने फागुनोमे मनसम्फे अछि।

तरकारीक आमदनीसँ बुधनी एकटा घर बनौली। ओना, वेचारीक मनमे रहैन जे एकटा बरद कीनब। मुदा घरक जरजर हालत देख विचार बदैल लेलैन।

बुधनी ऐठाम देवनकेँ एला बरख दिन भऽ गेल। बरखे दिनमे देवन बहुत किछु सीखबो केलक आ विकासेपुरमे किछु दिन आरो रहैक विचारो केलक। मुस्की दैत देवन बुधनीकेँ कहलकैन-

“दीदी, बड़ सुन्नर गाम अछि। जइ गाममे नसीवलाल काका सन ज्ञानी आ खेतिहर सजन सन इमानदार आ बेर-बेगरतामे ठाढ़ रहनिहार लोक हुअए ओ गाम किए ने नीक हएत।”

अपन दुखड़ा सुनबैत बुधनी देवनकेँ कहलखिन-

“बच्चा, जहिया रमुआक बाप मरि गेलखिन तहिया हुअए जे हमहूँ हुनकेँ लगल मरि जाइ। किएक तँ ने कोनो लूरि छल आ ने कियो कमा कऽ खुऔनिहार, दुख काटब छोड़ि दोसर रस्ते की छल। खेते बेच-बेच कए दिन खैतौं। मुदा रमुआकेँ देख आँखिसँ नोरो खसए आ देहो भुटैक जाए। मनमे आएल जे अखन ने रमुआ बच्चा अछि मुदा पाँच बर्खक पछाइत तँ नोकरी-चाकरी करै जोकर भाइये जाएत। ताबे कुटौन-पिसौन कऽ कहुना-कहुना गुजर करब। जँ केतौ चलि जाएब वा जहर-माहूर खा मरि जाएब तखन तँ वंश-खनदान सभटा उपैट जाएत। मुदा तोरा पाबि आ नसीवलाल कक्काक देखौल रस्ता आ मदैतसँ आब बुझि पड़ैए जे हँसी-खुशीसँ जिनगी काटि लेब। पैछला सुख ने भगवान छीनि लेलैन मुदा ऐगला सुख तँ भगवान देबे करता।”

दोसर दिन भोरे देवन जलखै खा बुधनीकेँ कहलक-

“दीदी, जेते बीआ-बाइल नसीवलाल काका देलैन, ओकर सबाइ लगा सभ चीज दऽ दिअ, हुनका सभ किछु घुमा देबैन, जइसँ आगूओक रस्ता बनल रहत। नइ तँ मने-मन कहता जे देवन बेइमान अछि।”

देवनक बात सुनि बुधनी घरसँ धान, गहुम आ खेरही निकालि ओसारपर रखलक। हिसाब जोड़ि-जोड़ि देवन तीनू चीज लऽ मोटा बान्हलक। तीमन-तरकारीक तँ बीआ नै रहै तँए अन्दाजेसँ ओइ

सबहक दाम जोड़ि रूपैआ लेलक। माथपर मोटा लऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल।

नसीवलाल दरबज्जापर बैस बेटाकेँ बुझबैत रहथिन-

“बौआ, मनुखक समरथाइ जे होइ छै वएह जिनगीक सार अवस्था छी। ऐ उमेरक सदुपयोग करैक चाही, माने घरमक काजमे लगेबाक चाही। ऐ उमेरमे जे जेते कठिन मेहनत करत ओकर जिनगी ओतेक सुन्नर बनतै। सुन्नरे जिनगी महामानवक जिनगी होइए। जेते मेहनत कएल हुअए ओइमे कंजूसी नै करी। कंजूसी केलासँ लोक चढ़ाइक रस्तासँ भटैक जाइए। तँए इमानदारीसँ मेहनत करह। जँ अपनासँ बेसी उपारजन हुअए तँ ओकरा बाँटि दी। बँटबाक प्रवृति बड़ पैघ वस्तु छी। किएक तँ बँटलासँ जमा नै होइत। संगे, जे अपने बँटनिहार अछि ओ दोसराक वस्तुक लोभे किएक करत। लोभ तँ ओकरा होइ छै जे संचय करए चाहैए मुदा जेकरामे संचयक प्रवृति जगबे ने करतै ओकरामे लोभ आएत कोन रस्ते।”

नसीवलाल बेटाकेँ कहिते रहथिन कि माथपर मोटरी नेने देवन पहुँचल। देवनकेँ देख नसीवलाल हँसैत पुछलखिन-

“देवन, बड़का मोटा माथपर देखै छी। की आइ विकासपुरसँ विदा भऽ गेलिऐ?”

नसीवलालक आगूमे मोटा रखि देवन कहलकैन-

“काका, साल भरिसँ जे ऐठामसँ मोटरी बान्हि-बान्हि बहुत चीज लऽ गेलौं, वएह दइले आइ एलौं।”

नसीवलाल-

“अच्छा, पहिने बैसू। भारी मोटा उठौने एलौं हेन तँए सुसता लिअ। तखन आगू गप-सप्प करब।”

देवन बैस कऽ पसीना पोछए लगला। पसीना पोछि उठि कऽ कलपर जा भरि पेट पानि पीलक। पानि पीब कऽ आबि बाजल-

"काका, अहाँक असिरवादसँ बुधनी दीदीक हालत एते सुधैर गेल जे हँसैत जिनगी जीब रहल अछि। हमरा तँ अहाँसँ बहुत आशा अछि तँए पैछला लेलहा दइले एलौं आ आगू जे लेब ओ आगू देब।"

नसीवलाल-

"बौआ, तोरा हम कोनो कर्जा देने रहिहह जे तूँ घुमबैले एलह। हम अपन काज केलौं जइसँ तोरा लाभ भेलह। मोटा घुमौने जा। ई कखनो, मनमे नै अनिहह जे काका खिसिया गेला तँए आब किछु नै देता। सभ मनुखकेँ अपन-अपन कर्तव्य होइत। जेकरा करब ओकर धरम होइत। जे हमहूँ केलौं। तोरो अपन कर्तव्य छह जे तोरा करए पड़तह। जहिना हम तोरा बुझेबो केलियह आ थोड़-थाड़ मदैतो केलियह, तहिना तोहूँ करह।"

मोटा नेने देवन अपना ऐठाम चलि आएल। मोटा घूमल देख बुघनी बजली-

"बौआ, मोटा किए घुमौने एलह?"

ओसारपर मोटा रखि देवन बाजल-

"दीदी, काका कहलैन जे कोनो हम कर्जा देने छेलिअ जे घुमबए एलह। हम अपन कर्तव्य केलौं, तोहूँ जा अपन कर्तव्य करह।"

असगरे नसीवलाल दरबज्जापर बैस, मने-मन सोचैत रहैथ जे चालीस बर्खसँ हम विकासपुरमे रहि अनबरत अपनो आ समाजोक उन्नैत-ले सोचबो आ करबो करैत एलौं जइसँ अपने तँ आगू जरूर बढ़लौं मुदा समाज ओते नै बढ़ि सकल जेते चाहै छेलौं! सवाल साधारण रहितौ जटिल अछि। जेना पोखैरमे नमहर गोला फेकलासँ पानिमे हिलकोर उठैए मुदा धीरे-धीरे असथिर होइत-होइत ओहिना-के-ओहिना भऽ जाइए, जेना पहिने रहैत। एना किए होइए? समाजक तरमे एहेन कोन शक्ति छिपल अछि जे पानिक हिलकोरकेँ शान्त करैत फेर ओइ रूपमे लऽ अबैए..?

◌

शब्द संख्या : 1980

13.

चारि बर्खक पछाइत शिवकुमार हिसाबमे आ रामनाथ भूगोलमे आनर्स केलक। दुनूकेँ आनर्समे सत्तैर प्रतिशतसँ ऊपरे अंक एलइ। कौलेजोमे पढ़ाइ नीक चलै छेलइ। अरुण कुमार दत्त प्रिसिपल रहथिन। ओ अपनो गणितक जानल-मानल विद्वान। दत्त साहैब मात्र विद्वानेटा नहि बल्कि एक कुशल शासक आ कुशल अभिभावक सेहो। अपने बच्चा जकाँ विद्यार्थियोक संग बेवहार करै छेलखिन। जइ विद्यार्थीकेँ कोनो वस्तुक अभाव देखै छेलखिन ओकरा भरपूर मदैत सेहो करै छेलखिन। सदिछन मनमे रहै छैन जे हमरा कौलेजक विद्यार्थी केना नीक नहाँति पढ़त। आन शिक्षक जकाँ हुनकामे एक्को पाइ जाति-पातिक भेद-भाव नहि। रिजल्ट निकलला पछाइत शिवकुमारो आ रामनाथो जा कऽ दत्त साहैबसँ भेँट केलकैन। दुनूकेँ देखते दत्त साहैब वेहद खुशी भेला। हँसैत दुनू गोरेकेँ कहलखिन-

“बौआ, आब अहाँ सभ देशक सुयोग्य नागरिक भेलौं, अहीं सभपर देशक भविस निर्भर करैए। तँए एक सुयोग्य नागरिकक जे दायित्व होइ छै, ओकरा अपन लगन आ इमानदरीसँ पुरा करब। परिवारसँ लऽ कऽ समाज होइत देश भरिक भार अहाँ सबहक कन्हापर अछि, तँए ओकरा नीक नहाँति निमाही, यएह हमर असिरवाद अछि।”

दत्त साहैबक विचारसँ शिवकुमारो आ रामनाथोक आँखिमे सिनेहक नोर आबि गेल। भरभराएल अवाजमे शिवकुमार दुनू हाथ जोड़ि बाजल-

"गुरुदेव, अपनेक असिरवादकेँ जिनगी भरि निमाहैक चेष्टा करब।"

बचेलाल, अछेलाल आ सुमित्रा– तीनू गोरे दरबज्जापर बैस कऽ शिवकुमारो आ रामनाथोक सम्बन्धमे गप-सप्प करैत रहैथ। तीनूक हृदए खुशीसँ गदगद रहैन। मुदा आगू की करब से किनको मनमे अबिते ने रहैन। बचेलाल बजला-

"काका, दुनू गोरे बी.ए. पास तँ कऽ लेलक मुदा आगू की करबै?"

बिनु कोनो लागि-लपट केने अछेलाल कहलकैन-

"बौआ, हम तँ मुरुख छी, पढ़ै-लिखैक बात बुझबे ने करै छी तँए की कहब।"

सुमित्रा दुनू गोरेकेँ शोर पाड़लखिन। शिवकुमारो आ रामनाथो आएल। अबिते सुमित्रा कहलखिन-

"बौआ अहाँ दुनू गोरेक पढ़ाइसँ हमर छाती जुड़ा गेल। जखन बचेलालक पिता मुइला तखन हमरो हृदैमे छल जे बेटाकेँ खूब पढ़ाबी। मुदा सभ तरहेँ दुखी रही तँए मैट्रिके धरि पढ़ा सकलौं। मुदा आइ ओ इच्छा पुरि गेल। आब अहूँ दुनू गोरे पढ़ल-लिखल भेलौं तँए आगू की करैक विचार अछि से तँ अहीं सभ सोचब।"

शिवकुमार बाजल-

"दादी, काल्हि ललित मास्टर साहैब कहलैन जे मड़वाड़ी कौलेज दरभंगामे टीचर्स ट्रेनिंगक पढ़ाइ दू सालसँ होइ छइ। दस मासक कोर्स छइ। हमर मन होइए जे ट्रेनिंग कऽ ली। जखन ट्रेण्ड भऽ जाएब तँ कोने-ने-कोनो हाइ स्कूलमे नोकरी भाइये जाएत।"

शिवकुमारक बात सुनि बचेलालक मनमे हूबा जगलैन। गुम्म भऽ किछु मन पाड़ए लगला। किछु कालक पछाइत मन पड़लैन जे बरख पाँचम धनश्यामपुर गेल रही। चुनावक समए रहइ। ओइठाम मड़वाड़ी कौलेजक उप प्राचार्य देवीदत्त पौद्दार सेहो चुनावी प्रचारमे

आएल रहैथ। देवीदत्त समाजिक कार्यकर्ता। मड़वाड़ी रहितो अलग चालि-ढालिक लोक। एक्को मिसिया मड़वाड़ी जकाँ नहि बुझि पड़ैत। घुमैत-घुमैत, जेतइ हम रही ओतै ओहो चारि-पाँच गोरेक संग एला। जीप स्कूलेपर लगा देने रहथिन आ पएरे गाममे घुमैत रहैथ। जइ चौकीपर हम बैसल रही ओहीपर ओहो आबि बैसला। हुनक नाओं सुननहि रही मुदा चेहरासँ नै चिन्हैत रहिऐन। साधारण बगए-बाणि। मड़वाड़ी रहितो धुर-झार मैथिली बजैथ। चौकीपर बैसते कहए लगलखिन-

"जाधैर अपना देशमे समाजवादी शासन नै हएत ताधैर किछु गनल गूथल धनीक पूजीपति बहुसंख्यक गरीबकेँ लूटिते रहत आ ऐश-मौज करिते रहत। १९४७ ई.मे अपना सभकेँ आजादी भेटल मुदा ओ पूर्ण आजादी नहि, नेँगड़ा आजादी भेटल। मोटा-मोटी यएह बुझू जे अंग्रेज भारतक गद्दीपर सँ उतरल। कोनो देश कानून-कायदासँ चलैए। अपना ऐठाम अखनो अंग्रजेक बनौल कानूनसँ शासन चलैए! तँए सभ गरीबकेँ एकजुट भऽ ओइ बेवस्थाकेँ तोड़ए पड़त।"

ओ बजिते रहैथ कि हम पुछलयैन-

"समाजवाद केकरा कहै छइ?"

जेना सभ बात हुनका जीएपर रहैन तहिना हमर प्रश्न सुनिते देवीदत्त पौद्दार धाँइ-धाँइ कहए लगला-

"उत्पादनक जे साधन अछि ओइपर बेकतीगत नै सामूहिक अधिकार समाजवाद होइत। जेना खेत, खान आ कारखाना अछि। अखनो देखै छी जे एक-एकटा जमीनदार छैथ जे साए कोन, हजार कोन जे लाख-लाख बीघा जमीन हथियौने छैथ। दोसर दिस देखै छी जे जोतैले कोन बात जे घरो बन्हैक जमीन नइ छइ। तहिना खानोक अछि। खानसँ अमूल्य वस्तु सभ निकलैए। ओहो किछु गनल-चुनल लोकक पल्लामे अछि। तहिना कारखनोकेँ देखै छी। एक-एकटा

कारखानामे लाखो-लाख मजदूर काज करैए मुदा ओकरा केते दरमाहा भेटै छइ।"

एते कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलैन-

"अखन चुनावी दौड़मे छी तँए समैक अभाव अछि।"

हुनका संग हमहूँ उठि कऽ ठाढ़ भेलौं। परिचए पुछलैन। हम कहलयैन-

"एतए कुटुमैतीमे आएल छी। हमर घर ऐठामसँ तीस-पैंतीस किलोमीटर उत्तर मधुबनी जिलामे अछि।"

तखन ओ कहलैन-

"हम मड़वाड़ी कौलेजमे उप-प्राचार्य छी। जँ कहियो कोनो काज हुअए तँ भेँट करब।"

एते बात मन पड़िते बचेलाल नमहर साँस छोड़ैत शिकुमारकेँ कहलखिन-

"बौआ, काज भऽ जेबा चाही, काल्हि हम भोरूके गाड़ीसँ दरभंगा जा पहिने बुझि अबै छी तखन जे-जेना हएत से एला पछाइत कहब।"

दोसर दिन भोरे गाड़ी पकैड़ बचेलाल दरभंगा विदा भेला। नअ बजे, गाड़ी दरभंगा पहुँचल। मुदा बचेलालकेँ कौलेज देखल नहि। स्टेशनसँ निकैल दोकानमे जलखै करए गेला। दोकानदारेकेँ कौलेजक सम्बन्धमे पुछलखिन। दोकानदार कहलकैन- 'अहाँ देहातक छी वौआ जाएब। तँए नीक हएत जे रिक्शा पकैड़ लिअ, पहुँचा देत।'

बचेलालो सएह केलैन। रिक्शाबला कौलेजक गेँटपर बचेलालकेँ उतारि देलकैन। संयोगसँ देवीदत्त पौद्दारो तखने पहुँचला। दुनू एक-दोसर दिस ताकए लगला। चेहरा चिन्हार दुनू गोरेकेँ बुझि पड़लैन। बचेलाल देवीदत्त पौद्दारकेँ पुछलखिन-

"हमरा देवीदत्त बाबूसँ भेँट करैक अछि।"

ओ कहलखिन-

"कोन काज अछि? हमहीं छी।"

प्रणाम कऽ बचेलाल कहलखिन-

"टीचर्स ट्रेनिंगमे दूटा विद्यार्थीकेँ नाओं लिखबैक अछि।"

देवीदत्त-

"विद्यार्थी कहाँ छैथ?"

बचेलाल-

"आइ बुझैले एलौं हेन, जँ भऽ जाएत तँ काल्हिये तैयार भऽ कऽ आएब।"

देवीदत्त-

"जाउ, भऽ जाएत। काल्हि निश्चित चलि आएब।"

लगले बचेलाल घुमि कऽ स्टेशन आबि बारह बजे गाड़ी पकैड़ लेला। दोसर दिन दुनू विद्यार्थीक संग बचेलाल जा नाओं लिखा देलखिन।

दस मासक उपरान्त रामनाथो आ शिवकुमारो प्रशिक्षित शिक्षक भऽ गेला।

जइ हाइ स्कूलमे शिवकुमार आ रामनाथ पढ़ने छला, ओही हाई स्कूलमे पहिलुका बैचक चारि गोट शिक्षक मासे दिनक अन्तरमे सेवा निवृत्त भेला। सुदूर देहातमे स्कूल। चारू शिक्षकक जगहपर नव शिक्षकक नियुक्ति-ले भेकेन्सी भेल। अखबारोमे निकलल। मुदा एहेन हवा बहि गेल अछि जे नवयुवक गामक वातावरणमे रहए नै चाहैत। इलाकाक जे पढ़ल-लिखल युवक अछि ओ अधिकांश बम्बइ, कलकत्ता, दिल्ली जा कियो कारखानामे तँ कियो सेठ-साहुकारक दोकानमे तँ कियो सड़कपर रिक्शा चलबैत शहरमे रहैए। गाममे मात्र बुढ़-बुढ़ानुस आ धिया-पुता रहि गेल छैथ। फलत: किसान परिवार दिनानुदिन टुटि-टुटि निच्चे-मुहेँ ढुलैक रहल अछि। ने मेहनत करैबला आ ने आधुनिक ढंगक खेती करैबला लोक गाममे अछि। जइसँ ग्रामीण सम्पदा दिनानुदिन नष्ट भऽ रहल अछि। जाधैर देहातमे पढ़ल-

लिखल आ कर्मठ लोक जी-जाँति कऽ नै रहत ताधैर गामक उत्थान मात्र कल्पना बनि रहत। शहर-बजार देहातेक श्रम-शक्तिसँ गन-गनाइत आगू-मुहेँ बढ़ि रहल अछि जखन कि गामक देश कहैबला भारत पाछू-मुहेँ तेजीसँ ससैर रहल अछि।

शिक्षकक बहालीसँ पनरह दिन पहिने विज्ञापन निकलल। अखबारोक माध्यमसँ प्रसारित भेल। स्कूलक हेड-मास्टरकेँ बुझल जे शिवकुमार आ रामनाथ प्रशिक्षित अछि। हेडमास्टर एकटा पत्र शिवकुमारकेँ लिखि चपरासीकेँ पठौलखिन।

प्रिय शिष्य शिवकुमार,

अहाँकेँ बुझले हएत जे स्कूलमे चारि गोट शिक्षक सेवा निवृत्त भेलाहेँ। हुनका जगहपर नव शिक्षकक बहाली अछि तँए अहाँ दुनू गोर–शिवकुमार आ रामनाथ- अबस्स आवेदन दी। अहाँ दुनू गोरे छात्र रहि चुकल छी, संगे घर लग स्कूलो अछि। बहालीक पूर्ण आश्वासन तँ हम नै दऽ सकै छी किएक तँ कमिटीक माध्यमसँ बहाली हएत। मुदा एते जरूर आश्वासन दइ छी जे अनुचित बहाली नै हएत।

-प्रधानाध्यापक।

प्रधानाध्यापकक चिट्ठी देख शिवकुमारक मनमे पूर्ण बिसवास भऽ गेलैन जे हमरा दुनू गोरेकेँ बहाली जरूर हएत। पराते भने दुनू गोरे, अपन सभ कागजात नेने स्कूल पहुँचला। ऑफिससँ फारम लऽ ओकरा भरि, अपन सभ कागजातक नकल लगा दुनू गोरे आवेदन देलखिन।

आवेदन देनिहारक रफ्तार बहुत मन्द। पहिल-पहिल आवेदन शिवकुमारे आ रामनाथे केलैन। आवेदनक रफ्तार मन्द रहैक कारण छल जे गाम-घरमे बेसी पढ़लो-लिखल नहि। शहर-बजारक लोक गाममे नोकरी नै करए चाहैत। बहालीमे चारि दिन बँचल। अखन धरि मात्र दुइएटा आवेदन पड़ल। स्कूलक सचिव स्कूल आबि प्रधानाध्यापककेँ पुछलखिन-

“अखन धरि केतेक दरखास्त पड़ल?”

प्रधानाध्यापकोकेँ नीक नहाँति नै बुझल रहैन। ओ किरानीकेँ बजा पुछलखिन। किरानी दुइएटा दरखास्तक नाओं कहलकैन। हेडोमास्टर आ सेक्रेट्रियो गुम्म। दुनू गोरेक मनमे यएह होइत जे एते बेरोजगारी रहनौं आवेदन किए ने भऽ रहल अछि। मुदा दुनू गोरे गुम्मे-गुम्म रहि गेला। अन्तिम दिन तीनटा दरखास्त पड़ल। नियुक्तिक तिथि पुर्ब निर्धारित छल, तँए हेबे करत।

सभ उम्मीदवार नियुक्तिक दिन पहुँचल। तीन गोरेक समिति बनल। हेडमास्टर, सेक्रेट्री आ जिला शिक्षा पदाधिकारी ओइ समितिक सदस्य छला। बिनु कोनो झड़-झमेलक नियुक्ति भऽ गेल। एक गोरे अनट्रेन्ड छला तँए हुनका नै भेलैन। हाथक-हाथे चारू गोरेकेँ चिट्ठियो भेट गेलैन।

घरपर आबि शिवकुमार दादीकेँ गोड़ लागि सभ बात कहलकैन। गोड़ लागि रामनाथ पँजरामे चुपचाप ठाढ़। रामनाथकेँ सुमित्रा कहलखिन-

“बेटा रामू, तोरा देख हमरा एते खुशी भऽ रहल अछि जेकर पारावार नइ अछि। शिवूक तँ बापो मास्टर छथिन मुदा तूँ तँ उस्सर खेतक आमक गाछ जकाँ भेलह।”

शब्द संख्या : 1359

14.

शिवकुमारकेँ नोकरी होइते बचेलाल स्कूलमे तियाग पत्र दऽ एला। बचेलालक तियाग पत्रसँ सौंसे गाम टीका-टिप्पनी चलए

लगल। किछु गोरेकेँ दुख ऐ दुआरे होइत जे बेर-बेगरतामे पाइसँ मदैत भऽ जाइत। किछु गोरेकेँ खुशियो होइत। किएक तँ भने आमदनी बन्न भऽ गेलैन। मुदा सुमित्राकेँ ने हरख आ ने विस्मय। किएक तँ ओ नीक नहाँति बुझै छथिन जे जेते मनुखक भीतर कमाइक शक्ति छै, ओते नोकरीमे नहियेँ होइत। आ ने जिनगी भरिले होइत। जाधैर लोक जुआन रहैए मात्र ताधैर नोकरी। मुदा जखन शरीरक शक्ति कमए लगै छै तखन नोकरी छुटिये जाइत। नोकरी छुटलापर दरमाहाक अदहोसँ कम पेंशन भेटैत। जखन कि उमेर बेसी भेने शरीरक सभ अँग धीरे-धीरे कमजोर हुअ लगैत, जइले नीक-निकुत भोजन आ दबाइक जरूरत होइत। पेंशन कम भेटने सभ खर्चक पुरती नै भऽ पबैत। जइसँ जिनगी बोझ बनि जाइत। संगे गिरहस्त परिवारमे जे काज चलैत ओकर लूरियो नै भऽ पबैत। जइसँ नोकरिया लोक अथबल भऽ जिनगी जीबैत।

..आब प्रश्न उठैए जे नोकरी केतए करी? चाहे तँ सरकारमे वा पूजीपतिक ऐठाम। ई बात सत्य जे प्रजातंत्र शासनमे सरकारो अपने होइत तँए शासन पद्धति चलैले सहयोग करब अनिवार्य अछि, नइ तँ शासन चलत केना। मुदा जँ सरकारो गनल-गूथल लोकक सेवा करैबला होइ आ विशाल जनसमूह-ले मात्र जहलेटा होइ, तेहेन शासनमे कोन रूपे सहयोग कएल जाए? दोसर बात अछि कारखाना। कल-कारखानामे नोकरी केनिहारक संग जे बेवहार होइ छै ओ की गुलामीसँ कम होइ छइ। अगर स्वतंत्र देशक नागरिककेँ गुलामीक जिनगी जीबए पड़ै तखन आजादीक महत्ते की? जे देश गामक देश कहबैए, आ गामक सम्पदा या तँ ठमकले रहै वा पाछुए-मुहेँ ससरैत जाए तखन देशक उन्नैत कल्पना छोड़ि आर की हएत? तँए जरूरत अछि जे गामक सम्पदा– खेत, पोखैर-नदी इत्यादिक समुचित बेवस्था दुनू दिससँ–सरकारो दिससँ आ गामोक श्रम शक्तिसँ- कएल जाए। ई के करत? हम गाममे रहनिहार जँ गाम छोड़ि बजार दिस पड़ाइ छी

तखन केना हएत? ऐ सभ बातपर तर्क-वितर्क करैत बचेलाल नोकरीसँ तियाग पत्र देलैन।

साँझक समए। अन्हारक तृतीया रहने बेसी अन्हारो नहि। बचेलाल, खेतसँ रिंच-हथौड़ीक झोरा आ अछेलाल पटबैबला प्लास्टिकक पाइप आ कोदारि नेने घरपर अबै छला। अबेर भेने रूमा दलानक आगूमे ठाढ़ भऽ दच्छिन-मुहेँ रस्ता देखैत रहथिन। आगू-आगू बचेलाल आ पाछू-पाछू अछेलालकेँ अबैत देख रूमा ससैर कऽ थोड़े आगू बढ़ि बजली-

"भगवान हमरो दुनू परानीपर खूब खुशी छैथ। एक परानी गोबर पाथै छी आ दोसर परानी डीजल-मोबीलसँ देह-हाथ रंगै छी।"

रूमाक बात सुनि अछेलाल भभा कऽ हँसला मुदा किछु बजला नहि। मुस्की दैत बचेलाल बजला-

"अगर भगवान खुशी नै छैथ तँ जीबैले एते लूरि आ करैक शक्ति केना देने छैथ। काजकेँ खेलौना बना कर्मशीले टा खेलैए।"

बजैत दरबज्जापर पहुँच गेला। दरबज्जापर अबिते सभ समान रखि साबुन लऽ स्नान करए कलपर गेला। सुमित्रा लालटेन नेस, चारक बत्तीमे लटका देलखिन। रूमा चाह बनबए गेली। जाबे बचेलाल नहा कऽ दरबज्जापर एला ताबे रूमो चाह बना लेलैन। चाह बना दरबज्जापर आबि बचेलालक आगूमे रखि देलकैन। ताबे अछेलालो नहा कऽ आबि गेला। तीनू गोरे चाह पिबए लगला। एक घोंट चाह पीब बचेलाल रूमाकेँ कहलखिन-

"अही रूपे काज केलासँ परिवार आगू-मुहेँ ससरैए। अखने देखियौ, जाबे हम नहेलौं ताबे अहाँ चाह बनेलौं। माए लालटेन नेस लेलक। दसे मिनटमे केते काज भऽ गेल। अगर जँ अहलाइत-महलाइत सभ करितौं तँ केते समए लगैत।"

तीनू गिलास लऽ रूमा भानस करए आँगन विदा भऽ गेली। अछेलाल तमाकुल चुनबए लगला। बचेलाल माएकेँ पटौनीक

सम्बन्धमे कहिते छेलखिन आकि ताबे गोनर आबि अछेलाल लग बैसल। अछेलाल अपनो तमाकुल खेलैन आ गोनरोकेँ देलखिन। तमाकुल मुँहमे लैत गोनर अछेलाल दिस तकैत बाजल-

"भाय, ऐ सालसँ दुख पड़ा गेल।"

उत्सुक भऽ अछेलाल पुछि देलकैन-

"से की?"

गोनर बाजल-

"भाय, जहियासँ मोन अछि तहियासँ आइ धरि नदी कातक खेतमे एते धान कहियो नै भेल छल जेते ऐ बेर भेल। बारह कट्ठाक कोला अछि, जइमे पनरह मनसे बेसी धान कहियो ने भेल छल मुदा ऐ बेर बारह क्विन्टल धान भेल। जे खेत फागुनसँ अखाढ़ धरि परती बनल रहै छल। गैवार-महींसबार सभ गाइयो-महींस चरबै छेलै आ गुल्लियो-डन्टा खेलैत रहै छल। ओइमे एते उपजा भेल जे सालो भरिक बुतात भेल। घरवाली कहै छेली जे ऐबेर घरमे लक्ष्मी एली। तँए पाँचो मुरते साधूकेँ चूड़ा-दहीक भनडारा करब।"

गोनर बजिते छल कि एका-एकी टोलक लोक आबए लगल। जेना बरियातीमे हँसी-मजाक होइत तहिना अपनामे सभ करए लगल। हँसी-चौल समाप्त होइते एका-एकी अपन-अपन भरि दिनुका काजक गप शुरू केलक। अपन-अपन हूसलाहा काजक चर्च अपने-मुहेँ कऽ अपनो हँसैत आ दोसरोकेँ हँसबैत। एक हरफी सभ अपन-अपन बात बाजि चुकल। सबहक बात सुनि बचेलाल समूहकेँ पुछलखिन-

"आगू की करैक विचार केने छी?"

बचेलालक सवाल सुनि धनिकलाल बाजल-

"भाय, एकटा नवका धानक बीआ मामा गामसँ अनलौं हेन। हमरे सोझहामे दाउन भेलइ। ममियौत भाय जोखलैन। जोखि कऽ कहलैन जे चारि कट्ठामे छह क्विन्टल धान भेल।"

गोनर पुछलक-

"देखैमे धान केहेन अछि?"

धनिकलाल-

"नमगर-नमगर, खूब मेही, उज्जर-उज्जर धान अछि। गमकबो करैए।"

"भात केहेन होइ छइ?"

"एह भैया! जखने थारी आगूमे औतह कि गम-गम करए लगतह। ओना हम तँ टटके धानक चाउर कुटा कऽ भात खेलौं मुदा तैयो की कहबह।"

"केते बीआ अनलह?"

"एक्के पसेरी अनलौं ऐसँ पाँच कट्ठा रोपाएत। ऐगला साल तँ सभकेँ बीआ देबइ।"

"तूँ तँ एक्केटा खेतमे रोपबह। मुदा दू-दू आँटी जँ आनो बाधबलाकेँ देबहक तँ ओइसँ आनो बाधमे जँचा जाएत। किएक तँ सभ धान सभ तरहक माटिमे एक्के रंग नै धड़ै छइ। ओहो जाँच भऽ जाएत।"

धनिकलाल-

"बड़बढ़ियाँ बात कहलह। जँ दस आँटी बीआ देलासँ सभ बाधक उपजा जँचा जाएत तँ ओहो नीके हएत।"

गाममे सिरिफ खेत पटबैक सुविधा भेलासँ गामक रूप-रेखा बदलए लगल, गृहस्तमे नव उत्साह जगल, अनिश्चितताक खेती निश्चिततामे बदलए लगल...। जखन कि खेती-ले पानि सिरिफ एकटा साधन छी। नीक बीआ, खाद, जोतै-कोरै-ले नीक ओजार, नव ढंगक खेती करैक लूरि इत्यादि सभ बाँकीए अछि। सिरिफ एकटा साधन भेलासँ उपजामे दोबर-तेबर वृद्धि भेल, गृहस्तक बीच प्रेम-भाव सेहो बढ़ल। खेतीक जिज्ञासा सेहो बढ़ए लगल। जइ किसानकेँ गरीबी कखनो मुँहमे हँसी नइ आबए दैत ओइ किसानक मुँहमे सदिछन हँसी आबए लगल।

खाइ-पीबै राति भऽ गेल। दरबज्जा खाली देख शिवकुमार आ रामनाथ आएल। दुनू गोरेकेँ देख बचेलाल पुछलखिन-

“बौआ, पढ़बैमे मन लगै छह किने?”

दुनू गोरे कहलकैन-

“हँ।”

दुनू गोरेकेँ प्रसन्न देख बचेलाल बजला-

“बौआ, मनमे कखनो ई नै अनिहह जे दरमाहा लइ छिऐ तँए पढ़बै छी। सभ बच्चाकेँ अपन छोट भाए बुझि पढ़बिहह। ओ केना पढ़त तैपर हदिघड़ी धियान रखिहह। बच्चा सबहक जिनगी ओइ अवस्थामे होइ छै जइ अवस्थामे उगैत सुरूजक होइत। उगैत सुरूजक समैमे जँ मेघ लगि जाइ छै तँ रातिये जकाँ दिनो बुझि पड़ए लगै छै ने, तँए जेते शक्ति अछि ओइमे एक्को मिसिया कलछप्पन पढ़बैमे नै करिहह। अखन तक तूँ दुनू गोरे एक-पेरिया रस्तासँ चलैत एलँहें मुदा आब चौबट्टीपर पहुँच गेलह। तँए चारू दिस देख कऽ चलए पड़तह। जेना पहिल भेल नोकरीकेँ इमानदारीसँ निमाहब, दोसर भेल परिवार, तेसर भेल माए-बाप आ चारिम भेल समाज। एकरा संग-संग अपन अध्ययन सेहो अछि। आइ हाइ स्कूलक शिक्षक भेलह तँए कि एतबेमे अपनाकेँ समैट कऽ रखि लेबह? आगूक डिग्री प्राप्त कएलासँ कौलेजोक शिक्षक भऽ सकै छह। जिनगीमे सतत चलैत रहैक चेष्टा करक चाही। सतत चलनिहारे जिनगीक महत बुझैए। हमहीं शिक्षक छेलौं। स्कूलसँ तियाग पत्र दऽ गृहस्तीक जिनगीमे प्रवेश केलौं। पहिनेसँ कनियोँ कम आनन्दित अखन नै छी। नव-नव काजक लूरि सेहो सीखि रहल छी आ नव-उत्साहक संग जिनगी सेहो बितबै छी मुदा तैयो एकटा अभाव जिनगीमे अखन धरि रहिये गेल ओ अभाव छी देशाटन। धुमब-फिरब सेहो जिनगी-ले बड़ पैध काज छी। बिनु घुमने-फिरने दुनियाकेँ देख केना सकब। कोन ठामक मनुख केहन अछि, केना रहैए, कोन तरहक जिनगी जीबैए। से तँ घुमला पछाइते

बुझबै। अनेको पहाड़, अनेको पठार, अनेको झील, अनेको टापू, अनेको सागर, अनेको झरना, अनेको जंगल आ अनेको रंगक माटिक इलाकाक देश भारत अछि। अनेको तरहक प्राचीनसँ अद्यतन सभ्यता-संस्कृतिसँ सम्पन्न देश, बिनु देखलासँ केना बुझल जाएत। पहाड़क ऊपरसँ लऽ कऽ समुद्रक किनछैर धरिमे बसैबला लोक, हजारो रंगक फल-फूलसँ सजल देशकेँ बिनु देखलासँ केना कियो बुझि सकैए। तँए देशक भ्रमण सभ-ले ओहने जरूरत अछि जेहने जिनगीक दोसर-तेसर जरूरत। तँए जे समए बित गेल ओ तँ घुमि कऽ नै औत मुदा जे बँचल अछि ओइमे जहाँ धरि सम्भव भऽ सकत ओ तँ पुरबैक चेष्टा करब।”

◌

शब्द संख्या : 1278

15.

फागुन मास। मौसमक बदलल रूखि। समुद्री तूफानक चलैत सौने जकाँ मेघो लटकल आ हवो चलैत। कखनो-कखनो बुन्दा-बुन्दी पानियोँ पड़ैत आ हवो कम-बेसी होइत। कखनो काल तेज बरखो आ तेज हवो बहए लगैत जइसँ सभ जाड़े सिड़सिड़ाइए लगैत। समैक रूखि देख, बाध-बोनक काज छोड़ि सभ घरे-अँगनाक आइ-पाइमे लागल। कियो-कियो घूर पजाइर आगि तपैत तँ कियो चद्दैर ओढ़ि पड़ल। ..देवन मने-मन सोचैत जे फागुन सनक मासमे एना किए होइए। मौसमोक कोनो ठेकान नइ छइ। जहिना लोकक कोनो ठेकान नहि जे बजत किछु आ करत किछु, तहिना भगवानोक कोनो ठेकान नहि। कहू जे फागुन सनक सुन्नर मासमे एना किए होइए। एते हवा

केतए जमा छै जे एते बहि कऽ पच्छिम-मुहेँ चलि गेल मुदा अखनो धरि सठल नहि! कहू जे केते आशा लगा कऽ लोक मौसरी, केराउ, खेसारी आ आनो-आन जिनिसक खेती केने छल जे उखाड़ि-उखाड़ि सभ घर अँगनासँ लऽ कऽ खरिहाँन धरि सुखैले पसारने अछि आ ई पानि सभकेँ सड़ौत। ने भुस्सी मालक खाइ जोकर रहत आ ने दाना। सभ दाना पानिमे भीज-भीज सड़त। कनी-मनी जे जाड़ो चलि गेल छल सेहो घुमि कऽ चलि औत।

..फेर मनमे एलै जे भने हमहीं केने छी जे खेसारी-मौसरीक खेतीए ने केने छी। गहुमक लेखे तँ सोना बरैस रहल अछि। ऐ बेर एक्कोटा दाना मिरहिन्नी नै हएत। नसीवलाल कक्काक हिसाब ठीके छैन जे 'कतिका धान, गहुम आ खेरही एक खेतमे करी।' फगुनियाँ हाल भेल मन खुशी कऽ देलक। आठे दिनक पछाइत गहुम काटि लेब आ खेरही बाउग कऽ देबइ। पटबीए खेत जकाँ खेरही भुभुआ कऽ जनमत। फँकलो-फूँकल बीआ जनमियेँ जाएत। मुदा पिऔजमे गरदैन कटि जाएत। काल्हिये पटेलौं तैपर सँ तेहेन बरखा होइए जे पनरहो दिनमे खेत फरहर नै हएत जइसँ सड़त। मुदा की करबै। लोक अपनो भरि ने सोचि कऽ करैए मुदा अनहोनीकेँ के रोकत...।

असगरे देवन मालक घरक दलानमे बैस सोचैत रहए। एक्केटा घर अदहामे माल बन्हैत आ अदहामे बैसै-उठैले दरबज्जा बनौने। असगरे देवनकेँ बैसल देख बुधनियोँ एली। बुधनीकेँ बैसते देवन बाजल-

"दीदी, आब हम छबे मास रहब। किएक तँ एगारह बरख छअ मास भऽ गेल। तँए जहियासँ हम एलौं तहियासँ कोन-कोन काज भेल आ कोन-कोन पछुआएल अछि से दुनू गोरे हिसाब जोड़ि लिअ।"

देवनकेँ नै रहब सुनि बुधनीक मनमे धक्का लगलैन। उदास भऽ बुधनी बजली-

"बौआ, तोरा पाबि हमरा बहुत भेल। हमरा सन-सन केते लोक वौआ-ढहना कऽ मरैए। मुदा तूँ हमरेटा नहि हमरा कुल-खनदानकैं जीआ कऽ रखलँह...।"

बुधनी देवनकैं कहिते छेली कि सजन सेहो चद्दैर ओढ़ने एला। सजनकैं चौकीपर बैसबैत देवन पुछलकैन-

"भैया, अखन कोन काज करै छेलह जे हाथ-पएरमे थाल लागल देखै छिअ?"

सजन-

"बौआ कि कहिह, मालक घर छाड़ैले खढ़ अँटिया कऽ रखने छेलौं। ओहो भीज गेल आ घरो खूब चुअल। बरदक देह परहक झोली भीज गेल। वएह हटा कऽ सुखलाहा बोरा देहपर देलिऐ। थैरमे पानि अँटैक गेल छेलै, ओकरे खड़ैर कऽ बहार केलौं। सएह थाल लागल अछि।"

अदहा मुँह झँपने मुस्की दैत बुधनी बजली-

"भैयाक जेहने बरद मोटाएल छैन तहिना दीदियो मोटाएल जाइ छैन।"

बुधनीक बात सुनि सजन खुशियो भेला आ मने-मन सोचौ लगला जे एहेन बात किए कहलैन। कनीए काल चुप रहि बाजल-

"कनियाँ, भनसिया मोटाएल जाइए कि फुलैए से अपनो मनमे अबैत रहैए। आन चीज तँ नै देखै छिऐ मगर अल्लू बड़ खाइए। जनु अल्लुऐ कोनो करामत तरे-तर करै छइ।"

बात बदलैत बुधनी बजली-

"आइ तँ हमरा बड़का पहपैट भऽ गेल। कुसमैमे बरखा होइए, एक्कोटा सूखल जारैन-काठी घरमे नइ अछि। कथी लऽ कऽ भानस करब? गोरहो मचानेपर अछि आ चिपरी पाथि-पाथि सुखा-सुखा जे भानस करै छेलौं सेहो सभटा भीजिये गेल।"

सजन-

"हमरो तँ सएह भेल, मुदा एकटा सूखल ढेंग छेलै ओकरे फाड़ि कऽ चुल्हि लगमे दऽ भनसियाकेँ कहलिऐ जे आइ खिच्चैड़े आ अल्लूक सन्ना बनाउ। हुअए तँ सेरसोक चटनी सेहो बना लेब।"

बुधनी-

"सेरसोक चटनी केना बनबै छथिन?"

"से नै बूझल अछि! बड़ सुन्नर चटनी होइ छइ। जेते गोरे-ले बनाबी ओइ हिसाबसँ सेरसो लऽ ली। ओइ हिसाबसँ लसुन सेहो लऽ ली, जँ जमिरी नेबो हुअए तँ बड़बढ़ियाँ नइ तँ कागजियो नेबोसँ काज चलि जाइ छइ। हिसाबेसँ नून आ मिरचाय सेहो लऽ ली। सेरसो, लसुन, नून- मिरचायकेँ खूब हलसँ पीसि कऽ ओइमे नेबो गाड़ि दियौ, भऽ गेल चटनी।"

"बाह, ई तँ सबदिना चटनी हएत!"

..सजन आ बुधनीक बातकेँ विराम दैत देवन बाजल-

"भैया, भने दुनू गोरे छी। ऐठाम एला हमरा साढ़े एगारह बरख भऽ गेल। छअ मास पुरिते हम चलि जाएब। तीनू गोरे छी तँए कहि देलौं, जँ नै कहितौं आ चलि जैतौं, तँ अहूँ सभकेँ खटैकतए जे बिनु कहने-सुनने किए चलि गेल।"

देवनकेँ प्रशंसा करैत सजन बजला-

"तोरा पाबि वेचारीकेँ सभ किछु भऽ गेलइ। खेतो-पथार भऽ गेलै, मालो-जाल भऽ गेलै, घरो-दुआर भऽ गेलइ। रमुआ सेहो बिआह करै जोकर भाइये गेल। हमरा बुझने आब वैहटा काज पछुआएल अछि।"

सजनक बात सुनि देवन बाजल-

"भैया, अपनो मनमे अछि मुदा मन अचताइ-पचताइ छी। किएक तँ इलाका-इलाकाक कन्याँक अलग-अलग चालि ढालि आ जिनगी छै, तँए कोन इलाका कुटुमैती करी, ई बड़ भारी सवाल अछि। ओना समाजमे नवका हवा लगने किछु बदलबो कएल। मुदा अखनो

ग्रामीण इलाकामे सत्तैरसँ अस्सी प्रतिशत वएह छइ। अपना इलाकाक कुटुमैती, पूबमे भागलपुर, पच्छिममे मुजफ्फरपुर, दच्छिनमे गंगाकात आ उत्तरमे नेपालक तराइ इलाका धरि होइए। मुदा सभ जातिक नहि। राजपूत, भूमिहारक कुटुमैती पच्छिम आ दच्छिन बेसी होइत, जे भोजपुरी आ मगही भाषाक इलाका छी। जइसँ ऐठामक भाषापर बहुत बेसी प्रभाव पड़ैत। किएक तँ ओइ इलाकाक सुआसिनक संग भाषो आ बेवहारो चलि अबैत, तहिना ब्राह्मणक कुटुमैती भागलपुर दिस होइत जइसँ अन्तिका बोली आ भगलपुरिया बेवहार सेहो चलि अबैत। मुदा पछुएलहा जातिक कुटुमैती नेपालक तराइसँ लऽ कऽ अल्लापुर, धरमपुर, पचही, नारे दिगर, भौर परगनामे बेसी होइत। पचही परगनाक बोली आ बेवहार अल्लापुर परगना आ नेपालक तराइ इलाकाक बोली आ बेवहारसँ बहुत नीक अछि। मुदा जे मेहनती कन्याँ अल्लापुरक, नेपालक आ कोसी इलाकाक होइत ओ पचही, नारेदिगर आ भौरक नै होइत। तँए गरीब लोक-ले अल्लापुर, कोसी इलाका आ नेपालक नीक होइत।”

देवनक बात धियानसँ सुनि बुधनी मुस्कियाइत बजली-

“हमरो नैहर भौरे परगनामे पड़ैए। दुरागमनसँ पुर्ब जाबे नैहरमे छेलौं ताबे घास छीलब छोड़ि ने दोसर काज केलौं आ ने लूरि भेल। हँ, अँगना-घरक काज नीपनाइ, बहारनाइ, कोठी पाड़नाइ, चुल्ही पाड़नाइ, भानस-भात केनाइ माए जरूर सिखा देलक। मुदा जिनगी जीबैले तँ कमाइक लूरि जरूरी होइत, से नहि भेल। मुदा अहीठीन देखै छी जे अल्लापुरवाली अछि, पुरुखोक कान कटैए। हर जोतनाइ छोड़ि एहेन एक्कोटा काज नइ अछि जेकर लूरि ओकरा नइ छइ।”

बुधनीक बात सुनि सजन मुड़ी डोलबैत बजला-

“कनियाँ, हमरा-अहाँ घरमे कमासुते कनियाँ चाही।”

बुधनी-

“हँ भैया, ढोरबा काकाकेँ देखै छथिन, दान-दहेजक लोभे केहेन चमचिकनी पुतोहु उठा कऽ लऽ अनलैन जइसँ घरमे हदिघड़ी मुहेँ फुल्ला-फुल्ली होइत रहै छैन। ओहन पुतोहु हम नइ करब। हमरा दान-दहेजक लोभ नइ अछि। पुतोहु कमासुत हुअए।”

चारि मास बित गेल। रमुआक बिआहो भऽ गेल। जेहने पुतोहु बुधनी चाहै छेली तेहने पुतोहु भेलैन। मुदा समाज अखनो बुधनीकेँ उपराग दइते छैन जे एहेन दब खेनाइ बरियातीमे केतौ ने खेने छेलौं। जहिना खेनाइ देलक तहिना सुतैले पटेरक पटिया आ नारक आँटीक सिरमा देलक। मुदा दही ओहन खुऔलक जे जिनगीमे नै खेने छेलौं।”

परसू देवनकेँ बारह बरख पुरि जाएत। एक दिस विकासक प्रक्रियामे आगू बढ़ैत समाजक मोह तँ दोसर दिस दुनियाँ देखैक जिज्ञासा। देवनक मनमे विचित्र द्वन्द उत्पन्न कऽ देलक। तर्क-वितर्क करैत देवन ऐ निष्कर्षपर आबि गेल जे आर्थिक विकासक प्रक्रिया गाममे चलि रहल अछि मुदा दुनियाँ देखैक जिज्ञासा तँ बौद्धिक विकासक प्रक्रिया छी। विकास तँ ओहो छी। बिनु बौद्धिक विकास भेने आर्थिको विकास तँ रस्ता धऽ कऽ नहियेँ चलत। किएक तँ जेतबे ऊँचाइपर बुधि रहत तेतबे तक ने आर्थिक विकास हएत। जइसँ जिनगीक विकास अवरूद्ध भऽ जाएत। मनुख, समाज आ दुनियाँ केते आगू तक बढ़त ई तँ अखन अनुमानेसँ कहल जा सकैए, जे सहियो आ गलतियो भऽ सकैए, तँए दुनियाँ देखब जरूरी अछि...।

जहिना बौद्धिक विकास-ले देवनक मन छटपटाइत तहिना आर्थिक विकासक सुख सेहो शरीरकेँ अपना दिस घीचैत। किएक तँ जइ देवनकेँ बच्चासँ लऽ कऽ किछु दिन पुर्ब तक ने भरि पेट अन्न भेटल आ ने भरि देह वस्त्र, ने नीक घरक सुख भेटलै आ ने बिसवासू जिनगी। ..अही बिचमे देवनक मन आ शरीरक घिचा-तीरी करैत कखनो एमहर झुकैत तँ कखनो ओमहर। मुदा जिनगीक संकल्प मनुखकेँ सिद्धान्तनिष्ट बनबैत। ..ई विचार मनमे अबिते देवन बुधनी

ऐठामसँ जाइक विचार पक्का कऽ लेलक। फेर देवनक मनमे एलै जे विकासपुर छोड़ैसँ पहिने नसीवलाल काकासँ भेंट कऽ लेब जरूरी अछि। किएक तँ हुनकेँ पाबि हम ऐ गाममे बारह बरख हँसी-खुशीसँ बितेलौं, खाली जिनगीए नै बितेलौं बल्कि बहुत किछु अनुभवो भेल आ सिखबो केलौं।

दोसर दिन भोरे सुति-उठि कऽ देवन नसीवलाल ऐठाम विदा भेल। गाएकेँ सानी लगा, हाथ धोइ नसीवलाल दरबज्जापर आबि चौकीपर बैस मने-मन सोचैत रहैथ जे मनुख खूब पढ़ि-लिखि लिअए, खूब समृद्धिशाली बनि जाए, परिवारसँ लऽ कऽ देशो समृद्धिशाली बनि जाए, मुदा की तेतबेसँ जिनगीमे शान्ति आ चैन आबि जाएत? की मनुख मनुखकेँ मनुख बुझए लगत? की मनुखक बीचसँ अपराध मेटा जाएत? की मनुखक बीचसँ भोगक प्रवृत्ति समाप्त भऽ जाएत..?

ऐ तरहक ढेरो प्रश्न नसीवलालक मनमे उपकैत रहैन। जहाँ कोनो प्रश्नपर गौरसँ विचार करए लगैथ कि घौंदा जकाँ प्रश्न-पर-प्रश्न मनमे आबि जाइन। आइ अमेरिका सभसँ समृद्धिशाली आ शिक्षित देश अछि। अनेको देश ओकरासँ कर्जा लऽ कऽ अपन विकास कऽ रहल अछि। मुदा की अमेरिकामे चोरी, डकैती, लूट, हत्या, बलात्कार नै होइ छइ? की अमेरिकामे भिखमंगा नै अछि? की अमेरिकामे सभ मनुखकेँ मनुख बुझल जाइ छै आकि जानवरोसँ बदतर बुझल जाइ छइ? की अमेरिकामे माए-बहिनक इज्जत-आबरू सुरक्षित अछि..?

मन जेते दौगैत तेते समस्याक बोनमे नसीवलाल औनाइत रहला। ने सोझ रस्ता देखैथ आ ने भेटैन। मन असथिर करै दुआरे चुनौटीसँ चुन आ तमाकुल निकालि चुनबए लगला। तमाकुल चुना मुँहमे लेलैन। मन बहटै दुआरे उठि कऽ टहलए लगला। टहलैत-टहलैत थूक फेकैले मुँह उठौलैन कि देवनकेँ अबैत देखलखिन। देवनपर नजैर पड़िते मनमे उठलैन जे एहेन-एहेन बच्चा, प्रतिदिन केते मरैत हएत तेकर कोनो ठेकान नहि। मुदा धैनवाद दी ऐ बच्चाकेँ जे एते

पैघ संकल्पक संग हँसी-खुशीसँ जीब रहल अछि। आब तँ जुआन भेल। आब तँ ओहन शक्ति ओकरा भीतर जागि चुकल छै जे किछु कऽ सकैए। ..एते बात नशीवलाल मने-मन विचारिते रहैथ आकि देवन लगमे आबि पएर छूबि गोड़ लगलकैन। असिरवाद नसीवलालक मनमे घुरियाइत रहैन आ आँखि देवनक जिनगीकेँ पढ़ए लगलैन। ने किछु देवन बजैत आ ने नसीवलाल बाजैथ। दुनू अपन-अपन दुनियाँमे। देवनक मन अन्तिम असिरवाद तकैत आ नसीवलाल देवनक पुरुषत्वकेँ देखए लगला। ..उत्साहित मन, विचलित करेजसँ देवन कहलकैन-

“काका, काल्हि हम ऐ गामसँ चलि जाएब, तँए आइ अन्तिम असिरवाद लइले एलौं हेन।”

नसीवलाल कलखिन-

“बौआ, तोरा हम अन्तिम असिरवाद अखन केना देबह। अखन तोरो नमहर जिनगी जीबैक छह आ हमहूँ अखन मरब नहि। एकटा दुनियाकेँ खण्ड-परखण्ड कऽ लोक देश, राज्य, गाम, टोल बना नेने अछि। मुदा अछि तँ एक्केटा धरती। अही धरतीपर तोहूँ केतौ रहबह आ हमहूँ केतौ रहब। दुनियाँक कोनो कोणमे चाहे तूँ रहह आकि हम, हमहूँ तोरा देखबह आ तोहूँ हमरा देखबह।”

बिच्चेमे देवन बाजल-

“काका, हम जे असिरवाद लइले एलौं ओ दैहिक छी। बारह बर्खसँ दुनू गोरे एकठाम रहलौं, आब कनी हटि कऽ रहब। वएह जे कनी हटब अछि तइले असिरवाद मंगै छी।”

देवनक बात सुनि नसीवलाल मुस्की दैत बजला-

“असिरवाद कि कोनो मुहक बोलीसँ होइ छै ओ तँ हृदैक उद्गार छी। तोहूमे तूँ हमरासँ असिरवाद मांगह आ हम परसादी जकाँ दऽ दिअ से कहूँ भेलैए। जखन कौल्हुका नियार कऽ नेने छह तँ जरूर

जइहह। मुदा आइ ऐठाम रहह, खा-पीअ, भरि मन गप करब तखन साँझमे चलि जइहह।”

सभतूर बुधनी सुतले छेली। गामोक सभ सुतले। सूर्योदयसँ पहिनहि देवन उठि कऽ उत्तर-मुहेँ विदा भऽ गेल। जेतबे वस्त्र पहिरने छल, बस ओतबे। ने किछु खाइले लेलक आ ने कोनो आन वस्तु। ज्ञानक भूख देवनकेँ एते लागल जे कोनो आन वस्तुक सुधिये ने रहइ। मुदा जिनगी जीबैक लूरि ओ सीखि नेने छल। ..गामक सिमानपर पहुँच देवन मने-मन सोचए लगल जे गामो-घर देख लेलिऐ आ गाम-घरक लोककेँ देख लेलिऐ तँए आब देव स्थान दिस जाइ। एते बात मनमे अबिते देवन देव स्थान दिस विदा भेल। जाइत-जाइत जखन बहुत दूर गेल तखन देखलक जे साइयो मन्दिर, साइयो मस्जिद आ साइयो गिरिजाघर अछि! देख कऽ अबूह लगि गेलै जे केते देखब। जँ सभकेँ देखए लगब तँ केते बरख लगि जाएत। मनुखक औरुदे केते होइ छइ। ठाढ़ भऽ देवन सोचलक जे छोटका स्थान सभकेँ रस्ते-रस्ते देख लेब आ बड़का-बड़का स्थानकेँ भीतर जा-जा देखब।

मन्द-मन्द हवा सिहकैत। रौदोमे ओते गरमी नहि। मुदा बेसी चललासँ थाइक गेल। रस्ता कातेमे एकटा खूब झमटगर गाछ। गाछकेँ ऊपरसँ निच्चाँ धरि देखलक तँ अनठिया गाछ बुझि पड़लै। गाछक निच्चाँमे दूबि पसरल। हरिअर कचोर दूबि। मनमे भेलै जे जेमा तँ जेबे करब मुदा थोड़ेकाल ऐठान सुसता ली...।

गाछक निच्चाँमे देवन बैस रहल। कनीए काल बैसल आकि मन अलिसाए लगलै। दुभिएपर पड़ि रहल। पड़िते निन आबि गेलइ। कनीए काल पड़ल कि चहा कऽ उठल। निन टुटि गेलइ। मनमे दू तरहक विचार उठए लगलै। एकटा विचार होइ जे थाकल छी तँए भरि मन अराम कऽ ली। दोसर विचार होइ जे जँ सुतिये कऽ समए बिता लेब तँ देखब कथी?

उठि कऽ ठाढ़ भेल। आगू तकलक तँ झल बुझि पड़लै। दुनू हाथसँ दुनू आँखि मीड़ि कऽ पोछलक। आँखि पोछिते साफ-साफ देखए लगल। मुदा सभ किछु बदलैत बुझि पड़लै। जहिना चाउरसँ भात बनैए, दूधसँ दही बनैए, तहिना दुनियाँक सभ किछु तेज गतिसँ आगू-मुहेँ बढ़ैत देखलक। ठाढ़ भऽ देवन हियाबए लगल जे कियो खाधि दिस आँखि मूनि कऽ दौगल जाइए तँ कियो काँटक बोन दिस तहिना कियो आगि दिस दौगल जाइ तँ कियो सुन्नर फुलवाड़ी दिस...। देवनक मनमे द्वन्द उठल। पहिल विचार भेलै जे बिनु खाधिमे खसने खाधिक अनुभव केना हएत आ बिनु आगिमे गेने आगिक ताप केना बुझब?

फेर मनमे उठलै जे जँ खाधिमे खसि पड़ब तँ ऊपर केना हएब? आ जँ आगिमे झड़ैक जाएब तँ जीब केना? जँ मरिये जाएब तँ दुनियाँ केना देखब? ..असमंजसमे पड़ल देवन फेर बैस रहल। बैसले-बैसल मनमे उठए लगलै जे मृत्युक रस्तामे जीवन छै आकि जीवनक रस्तामे मृत्यु? सुखक रस्तामे दुख छै आकि दुखक रस्तामे सुख? पापक रस्तामे पुण्य छै आ कि पुण्यक रस्तामे पाप..?

विचित्र सवाल देवनक मनमे आबए लगल, गुलाबक फूल तोड़ै काल हाथमे काँट गड़िते अछि। रस्तापर चलनिहार पिछैर कऽ खसिते अछि। मुदा की काँट गड़ैक डरे लोक गुलाब फूल नै तोड़त? पिछैर कऽ खसै दुआरे लोक चलबे ने करत..? अजीव प्रश्न देवनक मनमे उठए लगल। जिनगीए पाछू तँ मृत्युओ छाँह जकाँ सदिछन चलिते अछि। मुदा सबहक पाछू संकल्प छै...।

जे कियो गुलाबक फूल तोड़ैक संकल्प कऽ लेत, ओ काँट गड़ैक चिन्ता नै करत। जे आगिक गुण बुझि आगिमे जाएत ओ झड़कैक परबाह नै करत, तहिना हमरो दुनियाँ देखैक संकल्प मनमे अछि तँए जाबे जीब ताबे चलिते रहब, भलेँ रस्ता केतबो कठिन किए ने हुअए। ..ई बात देवनक मनमे अबिते फेर उठि कऽ विदा भेल।

उत्तर दिसक रस्ता देवन धेलक। थोड़े आगू बढ़लापर काँटक बोन देखलक। बोन देख देवन हियाबए लगल जे केना ऐ बोनमे जाएब। चिक्कन रस्ता तँ अछि नहि! हियबैत-हियबैत देखलक जे ने चिक्कन रस्ता अछि आ ने चौड़गर, मुदा खुरपेड़िया रस्ता जरूर अछि जइ देने मालो-जाल आ चरबाहो अबै-जाइए। अपना दिस देवन देखलक। देखलक जे हमरो तँ किछु अछि नहि, मात्र देहेटा अछि। मनमे बिसवास जगलै जे हमहूँ टपि सकै छी। आगू बढ़ल। थोड़े आगू गेलापर देवन देखलक जे काँटक बोन पूबे-पछिमे नमती तँ बेसी अछि मुदा चौराइ कम छइ। बोन टपि गेल। रस्तामे केतौ किछु खेने नइ तँए भूखो लगि गेलइ। मुदा ऐ बोनमे भोजन की भेटत। ..भूखकेँ दबैत आगू बढ़ल। आगू बढ़िते देखलक जे फेर दोसर बोन अछि। बड़का-बड़का गाछ-बिरीछ ओइ बोनमे मुदा काँट नहि, फलक बोन। अनेरूआ फलक गाछ तँए सभ रंगक फलक गाछ, एकछाहा नहि। ..हिया कऽ देवन फल सबहक गाछ देखए लगल। रंग-बिरंगक फलसँ लदल गाछ देख मन शान्त भेलइ। शान्त चित्तसँ देवन सोचए लगल जे अखन तँ छोटके बोनमे प्रवेश केलौं हेन, तखन तँ एते रंग-बिरंगक फल चकचकाइए, जँ अहूसँ आगू बढ़ी तखन तँ ओहूसँ बेसी नम्हरो आ सुन्दरो-सुन्दरो फल भेटत। तँए जँ पैघ फल प्राप्त करए चाहै छी तँ ऐ छोटका फलक बोनकेँ टपि आगू बढ़ए पड़त। ..फेर मनमे एलै जे चौबेसँ छबे नइ भऽ कहीं दुबे बनि जाएब, तखन तँ सभ गुड़ गोबर भऽ जाएत। मुदा नहि! जिनगीमे कोनो वस्तुक प्राप्ति दू तरहेँ होइए। एक- वस्तुक प्राप्ति आ दोसर- विचारक प्राप्ति। ओना, कखनो काल दुनूक प्राप्ति सेहो भऽ जाइ छै आ कखनो काल विचारक प्राप्ति होइत मुदा वस्तुक नहि। तँए जिनगीमे कखनो ऐ बातक चिन्ता नै करक चाही जे प्राप्ति हएत आकि नहि। सतत् मनुखकेँ आगू बढ़ैक उत्साहक संग कर्म करैले डेग उठबैक चाही। जिनगीमे हारि केकरा कहबै आ जीत केकरा कहबै? अन्धकार-प्रकाशक लड़ाइ तँ हदिघड़ी मनुखक

भीतर चलिते रहैए, जँ एक रूपमे अन्धकार हारैए तँ दोसर अहूसँ पैघ रूपमे आगू आबि ठाढ़ भऽ जाइए। सुरूज सन प्रकाशमान सेहो अन्धकारक चद्दैरमे झँपा जाइए। हमरा सबहक बीच सेहो एकटा जबरदस भ्रम पसरल अछि जे पैछला जनमक केलहा ऐ जन्ममे भेटै छइ। मुदा अहू प्रश्नकेँ दू दृष्टिए देखल जा सकैए। पहिल, पैछला जन्म जे विकासक प्रक्रियामे एक-दोसरमे बदलैत जाइए आ दोसर, अही जन्मक पुर्बक समए। जेना अफसरक पुर्ब समए विद्यार्थीक होइत, डाक्टरक पुर्ब समए सेहो विद्यार्थीक होइत। मुदा हमरा सबहक बीच पहिल बातकेँ मानल जाइए, तँए ई जबरदस भ्रम अछि। जेते बात देवन सोचैत तेते मन घोर-मट्ठा होइते जाइत। खिसिया कऽ देवन उठि कऽ विदा भऽ भेल। मुदा विदा होइते तामस मुझा गेलइ। शरीरमे नव शक्तिक संचार भेलइ। अपन संकल्पकेँ माथपर उठा साहससँ डेग उठबैत आगू बढ़ल।

देवनक पेटक भूख तँ मिझा गेल मुदा मनक भूख बढ़िते गेलइ। जाइत-जाइत जखन किछु दूर गेल तँ एकटा विशाल आमक गाछ देखलक। रस्ताक बामा भाग ओ गाछ। गाछमे काँच-सँ-पाकल धरि फल लटकल। निच्चोमे खसल। ..गाछ लग ठाढ़ भऽ देवन सोचए लगल जे ई गाछ अनेरूआ छी आकि लगौल अछि? चारूकात देवन आँखि उठा-उठा देखए लगल। देखैत-देखैत पिताक सुनौल एकटा खिस्सा मन पड़लै। पिताकेँ अपना एक्को धूर खेत नहि जे गाछी-कलम लगा दितिऐ। तीरथ-बरथ करैले पाइ नहि, पूजा-पाठ करैक लूरि नहि मुदा धरमक काज तँ सभकेँ होइ छइ। तँए रस्ता कातमे पाँचटा आमक गाछ रोपि देलिऐ। ..कहीं ओहने रोपनिहार तँ ने ईहो रोपने अछि। पाँचटा पाकल आम बीछि देवन गाछक अलगलहा सिरपर बैस खाए लगल। आम स्वादिष्ट। पाँचो आम खा देवन सोचलक जे आइ एतै रहि जाएब। दुबिमे हाथ पोछि, हाथेसँ मुहोँ पोछि लेलक। पानिक जरूरते नहि। असगरे देवन ओइ गाछक छाहैरमे पड़ि रहल। गाछक

ऊपरमे अनेको रंगक चिड़ै-चुनमुनी पकलाहा आमो खाइत आ अपनामे गपो-सप्प करैत आ चोरो-नुक्की खेलैत आ हँसियो-चौल करैत। रंग-बिरंगक चिड़ै रहनौं सभ अपन-अपन डारिपर बैस अपना जिनगीक गप करैत। ..चीत गरे देवन पड़ल छल तँए गाछक ऊपर सभ चिड़ैकेँ देखैत रहए। ऐगला-पैछला सभ जिनगी बिसैर देवन चिड़ै सबहक दुनियाँमे पहुँच गेल।

किरिण डुमि गेल। आनो-आनो गाछ परहक चिड़ै सभ ओइ गाछपर आबए लगल। जेना सभकेँ बुझले रहै तहिना सभ अपन-अपन ठौर धऽ लेलक। किछु काल धरि, जाबे मौसम साफ रहै, सभ गप-सप्प करैत रहल आ जेना-जेना अन्हार पसरैत गेलै तेना-तेना ओहो सभ गबदी मारैत गेल। तेसर साँझ होइत-होइत सभ चिड़ै सकदम भऽ गेल। देवनकेँ ओ गाछ कल्प वृक्ष जकाँ बुझि पड़लै। नव-नव विचार, नव-नव जिनगी जीबैक ढंग देवनक मनमे आबए लगलै। विचारेक दुनियाँमे विचरण करैत देवनकेँ कखन निन एलै से अपनो ने बुझलक।

पोह फटिते एकटा चिड़ैकेँ नीन्न टुटलै। निन टुटिते ओ सभकेँ जगबए लगल। धीरे-धीरे फरिचो होइत गेलै आ चिड़ैयो सभ जागि गेल। जगिते सभ चिड़ै अपन-अपन जिनगीक करम-लीलामे उड़ि-उड़ि विदा भेल। चिड़ैकेँ उड़ैत देख देवनो उठल। उठि कऽ अपन सौंसे देह देखलक। पानि तँ रहै नहि जे मुँह-कान धोइतए मुदा हाथेसँ आँखि-कान पोछि विदा भेल। उभर-खाभर रस्ता। केतौ सोझ, केतौ टेँढ़, केतौ भौक तँ केतौ खाइध। मगन भऽ देवन तेजीसँ सरासर आगू बढ़ए लगल। रस्तामे जानवरक कमी नहि मुदा मनुख एक्कोटा नहि। मुदा तैयो देवनक मनमे ने शंका आ ने कोनो घबराहट। असगरे देवन आगू बढ़ैत गेल। किछु दूर गेलापर बजार जकाँ देखलक। देवनक मनमे सवुर भेल जे आब मनुखसँ भेँट हएत। मुदा ओ बजार नै कसबा छल। छोट-छोट कारोबार चलैत। दुनू भाग घर बीच देने रस्ता। गोटे-गोटे

घर पुरने ढंगक मुदा गोटे-गोटे टिपटापसँ सजल। मनुखोक वएह रूप। मुदा अकसरहाँ लोक रूढ़िवादी विचारसँ ग्रसित। किछु गोरे पुरान रूढ़िसँ जकड़ल तँ किछु नवका रूढ़िसँ। रूढ़िवादी रहितो सभमे मिलान नहि! एक दोसरकेँ गरियबैत। सभ-सभकेँ कहैत-

"तूँ गलत तँ तूँ गलत।"

रस्ता धेने देवन आगूओ बढ़ैत आ लोकक करतूतो देखैत। थोड़े दूर आरो आगू बढ़लापर देवन एकटा पैघ पीपरक गाछक निच्चाँमे नमहर मन्दिर देखलक। मन्दिरक आगूमे यात्री सभकेँ रहैले एकटा धरमशालो छेलइ। खाइ-पीबैक सभ बेवस्था ओइ धरमशालामे। मन्दिरक चारूकात फुलवाड़ी। छोटका-छोटका फूलक गाछक संग बड़को-बड़को फूलक गाछ। जहिना रंग-बिरंगक गाछ तहिना रंग-बिरंगक फूलो। ..पहिने तँ देवन रस्तेपर ठाढ़ भऽ कातेसँ देखलक मुदा मनमे भेलै जे छहरदेबालीक भीतर जा कऽ देखिऐ। अनभुआर जकाँ भीतर प्रवेश केलक। रस्ताक बगलेमे इनार। पानि भरैले ढेकुलमे डोल बान्हल। डोलमे लोहाक जिंजीरक उगहैन बान्हल। इनारपर जा देवन डोलमे पानि भरि हाथो-पएर धोलक, देहपर एक चुरूक छिटियो लेलक आ दोसर डोल पानि भरि पीबो लेलक। पानि पीब देवन पहिने मन्दिर दिस बढ़ल। मन्दिरक ओसारपर महंथजीकेँ एक गोरे ताड़क पातक बनौल बड़का पंखाकेँ पएरक ओंगरीमे डन्टाक निचला भाग लगा, ठाढ़े-ठाढ़ डोलबैत। दोसर गोरे महंथजीक पसारल पएरमे कड़ु-तेलसँ मालिश करैत आ तेसर गोरे महंथजीक बाँहिमे तेल लगा ओम्ठैत-ससारैत। ..महंथजी आँखि बन्न केने असुआएल पड़ल...।

देवन महंथजीकेँ देख मने-मन सोचए लगल जे पकिया साधक जकाँ बुझि पड़ै छैथ। किएक तँ सए-बरिखा गाछक सील जकाँ देह, हाथी पएर जकाँ दुनू जाँध आ क्विनटलिया बोरा जकाँ पेट महंथजीक। लालबुन्द शरीर, दाढ़ी-केश नमहर-नमहर। तीस-पैंतीसटा अगरबत्ती एक्केठाम जरैत। रंग-बिरंगक सेन्टक शीशी, गमकौआ तेलक

शीशी महंथजीकेँ पजराक खिड़कीपर राखल। देवनक मनमे एलै जे जखन ऐठाम धरि आबिये गेलौं तखन भगवानक दर्शन आ महंथोजीकेँ प्रणाम काइये लेबैन। ..ओसारसँ आगू बढ़ि दर्शन कऽ महंथजीकेँ ठाढ़े-ठाढ़ प्रणाम केलकैन। प्रणाम सुनि महंथजी आँखि तकलैन। एक टकसँ देवनकेँ देख महंथजी मने-मन गुम्हरए लगला, जे पएर छूबि किए ने गोड़ लगलक..!

देवन अपना ढंगक लोक, मने-मन विचारए लगल जे हमरा कोनो ऐठाम रहैक अछि जे खुशामद रहत। राही छी रस्ता धऽ कऽ एलौं, कनी कालक पछाइत चलि जाएब।

मने-मन महंथजी गुम्हैरते रहैथ ताबए देवन बाहर चलि आएल। महंथजी पुजेगरीकेँ शोर पाड़ि कहलखिन-

“अखन जे एकटा दर्शनार्थी आएल छल, ओ हमरा उचक्का बुझि पड़ल तँए ओकरा जल्दी हातासँ निकालू।”

महंथजीक आदेश सुनि पुजेगरी देवनकेँ ताकए लगल...।

मन्दिरक चारूकात जे फुलवाड़ी लगौल छेलै, ओइ फुलवाड़ीमे देवन घुमि-घुमि कऽ देखै छल। ..पुजेगरी धरमशालामे तकैत एकटा अनठिया बबाजीकेँ पुछलक-

“अखन कियो अनठियो आएल छल?”

ओ वेचारे एक टकसँ पुजेगरी दिस ताकि, बिनु किछु बुझनहि-सुझनहि, बजला-

“जे आएल छला से चलियो गेलैथ। नवका एक्को गोरे नै छैथ। हम तँ परसूऐ एलौं आ आरो जे सभ छैथ ओ पहिनेसँ छैथ।”

चोट्टे पुजेगरी घुमि महंथजी लग जा कहलकैन-

“ओ चलि गेल।”

एमहर देवन फुलवाड़ीमे फूल सभकेँ तजबीज करैत। किछु फूल सुगन्धित आ किछु बिनु सुगन्धक। किछु देशी फूल आ किछु विदेशी फूल। सौंसे फुलवाड़ी देख देवन मन्दिरक पाछूमे जे पीपरक गाछ

रहए, ओकरा देखए लगल। गाछ पुरान बुझि पड़लै। किएक तँ मोटका-मोटका डारि सभ, खूब नमहर गाछ। मुदा गाछक एक भाग सूखल आ दोसर भाग हरिअर। देवन सोचए लगल जे एना किए छै, जे अदहा सूखल अछि आ अदहा जीअल। छगुन्तामे पड़ि गेल। तत्-मत् करैत देवन गाछक जड़ि लग पहुँचल। गाछक जड़ियोमे बुझि पड़ै जे एक भागसँ सूखल छै आ एक भागसँ जीवित। मुँहपर हाथ लऽ देवन विचारए लगल। किछु कालक पछाइत देवनक मनमे एलै जे भरिसक गाछक जड़िमे गराड़ लगल छइ। गराड़ मनमे अबिते ओ एकटा सूखल मजगूत ठौहरी लऽ जड़िमे खोधियाबए लगल। चारिये आँगुर खोधियेलक कि एकटा मोटगर गराड़केँ देखलक गाछक खोंइचा खाइत। देखते देवनक मनमे खुशी एलइ। खुशी अबिते देवन ओही ठौहरीसँ गराड़केँ निकालि कातमे फेकलक। माटिपर खसिते गराड़केँ कौआ लऽ कऽ मन्दिरेक गुम्बजपर बैस कऽ खाए लगल। ..देवन फेर गाछक जड़िकेँ खोधियाबए लगल। मुदा जड़िक माटियो आ गाछक सिरो सभ सक्कत रहए तँए ठौहरीसँ खोधियाएले ने होइत। हारि-थाकि कऽ छोड़ि देवन इनारपर जा हाथ-पएरमे लगल माटिकेँ धोलक आ इनारपर सँ सोझे आबि धरमशालामे बैस गेल। कनीए कालक पछाइत रसोइया आबि, धरमशालामे बैसल आदमी सभकेँ, गनए लगल। नृद्वन्द्व देवन। कोनो गम नहि। बगलमे बैसल दाढ़ी-केश बढ़ौने बबाजीकेँ पुछलक-

"अहाँ केते दिनसँ बबाजी छी?"

देवनक मुँह देख ओ बबाजी कहए लगल-

"बौआ, अहाँ तँ जुआन-जहान छी। मुदा जखन पुछलौं तँ कहबे करब। हम गिरहस्त परिवारक छी। चारिटा बेटा अछि। सभकेँ बिआह-दुरागमन करा देलिऐ। सभकेँ धियो-पुतो छइ। हमर स्त्री मरि गेल। चारू बेटा बरबैर कऽ खेत बाँटि लेलक। हमरा सझीए रखलक। साल भरि तँ बड़बढ़ियाँ तीन-तीन मास खुऔलक। मुदा दोसर साल

चढ़िते सभ अनठा देलक। कियो खाइले देबे ने करए। दू-चारि दिन, अपन जे हित-अपेछित सभ रहए ओकरे ऐठाम खेबो केलौं आ बेटाक किरदानी कहबो केलिऐ। ओहो वेचारा सभ आबि-आबि कहलकै। मुदा केकरो बातक मोजर नै देलकै। घरसँ निकलैत मोह लगए मुदा की करितौं। गामेक एकटा बबाजीक संग धऽ लेलौं। घुमैत-घामैत ऐठाम छी।”

देवन-

“ऐठाम केते दिन रहबै?”

“जाबे रहए देत ताबे रहब। जखन भगा देत तखन कोनो दोसर असथानपर चलि जाएब।”

देवन चुप भऽ गेल। मुदा मनमे ढेरो सवाल उठए लगलै। ओइठामसँ उठि इनारपर जा कऽ बैस रहल। इनारक लहरामे ओंगैठ मने-मन सोचए लगल जे सिरिफ एहेन परिस्थिति अही वेचाराटा कैँ नहि भेल, बल्कि एहेन परिस्थिति तँ सभ गाममे होइ छइ। तँए एहेन समस्या-ले समाजकैँ सोचए पड़त। सिरिफ सोचैए नै पड़तै बल्कि समाधान-ले किछु करैयो पड़तै। गामे-गाम निःसहाय औरत, निःसहय पुरुख आ अपलांग-विकलांग सेहो सभ अछि, जे अछैते औरुदे काहि कटैए। तँए सभ गाममे एहेन-एहेन लोक-ले सार्वजनिक तौरपर बेवस्था करए पड़त...।

ऐ समस्याक बीच देवनक मन ओझरा गेल। सोचैत-सोचैत सुति रहल। खेबो ने केलक।

रातिक बारह बजे। हवाक सिहकी चललै। हवाक सिहकीसँ देवनकैँ जाड़ हुअ लगलै। जाड़ होइते निन टुटि गेलइ। निन टुटिते इनारपर सँ उठि धरमशालाक कोणमे आबि कऽ बैस गेल। हवा जोरे होइत गेलइ। देवन धरमशालासँ निकैल बाहर आबि अकास दिस तकलक। अकास दिस देखते बुझि पड़लै जे अन्हड़-बिहाड़ि औत तँए

धरमशालासँ नीक बहरेमे रहब हएत। फेर इनारक निचला लहरापर आबि कऽ बैस गेल।

महंथजी, पुजेगरी मन्दिरमे सूतल। हवाक ठंढसँ महंथजीकेँ निन आरो गाढ़ भऽ गेलैन। किएक तँ मन्दिर तीन भागसँ घेरल, मात्र एक्के भाग अबै-जाइले खुजल। फोंफ कटैत महंथजी आ पुजेगरी। संयोगसँ कर घुमैकाल महंथजीक बामा हाथ छातीपर चलि आएल तँ सपनाए लगल। सपनामे महंथजी देखैत रहैथ जे हम रथपर चढ़ि स्वर्ग जा रहल छी। देवलोकक रथ। बड़का-बड़का घोड़ा ओइ रथमे जोतल। अप्सरा सभ नचैत। देवलोकक दूत सभ रथक आगू-पाछू अरियातने चलि रहल अछि...।

तखने जबरदस अन्हड़-बिहाड़ि उठल। महंथजी आरो निनभेर भऽ गेला। बिहाड़िमे मन्दिरक पैछला पीपरक गाछक सुखलाहा भाग टुटि कऽ मन्दिरपर गिरल। ओना, माटिक तर तक गाछ सूखल छेलै मुदा गाछक जड़ि चिराएल नहि। दू फेड़ा लगसँ टुटल। विशाल डारि। मन्दिरपर डारिकेँ खसिते पहिने मन्दिरक गुम्बज टुटल तेकर पछाइत सौंसे मन्दिर टुटि कऽ खसि पड़ल। पुरान मन्दिर तँए टुटैमे देरियो नै लगलै। महंथजी निनभेर तँए मन्दिरकेँ खसैत बुझबे ने केलैन। तरमे महंथजी आ पुजेगरी तइ ऊपर मन्दिरक ओसाराक छत आ तइ ऊपर गाछक मोटका डारि। महंथजीक ऊपर जखन सभटा टुटि कऽ लदा गेलैन तखन निन टुटलैन। मुदा निन टुटनहि की? थोकचा-थोकचा देह, मात्र साँसेटा चलैत रहैन। कनीए कालक पछाइत साँसो अवरूद्ध भऽ गेलैन। दुनू गोरे पराण तियाग केलैन। मुदा तैयो अन्हड़ कमल नहि। ओना, आन दिनक अन्हड़ ओहन होइ छल जे अबै छल आ लगले चलि जाइ छल। मुदा औझुका अन्हड़ बड़ी खान धरि रहल।

धरमशाला मन्दिरसँ थोड़ेक हटल। चारूकातसँ खूजल तँए हवाक झोंक एक भागसँ पइसे आ दोसर भागसँ निकैल जाइ। धरमशाला गिरल नहि, बँचि गेल। इनारपर बैसल-बैसल देवन सभ

किछु देखैत मुदा ने हल्ला केलक आ ने उठल। अन्हड़ चलि गेल। मुदा पानि-पाथर नै खसलै।

अन्हड़कें जाइते धरमशालाक सभ निकैल हल्ला करए लगल जे मन्दिर खसि पड़लै। महंथजी आ पुजेगरी ओइ तरमे दबाएल छैथ। मुदा अन्हड़ तँ सिरिफ स्थाने भरि नइ आएल छल, सभ अपन-अपन उड़ियाएल घर-अँगना सम्हारैमे लागल रहए तँए कियो ने आएल।

पोह फटिते देवन विदा हुअ चाहलक मुदा फेर मनमे एलै जे जाइसँ पहिने कनी महंथजीक अन्तिम दर्शन कऽ लेब उचित हएत। रूकि गेल। मुदा अन्हारक दुआरे ने अखन धरि मन्दिरक छज्जीपर सँ गाछक डारि हटौल गेल आ ने महंथजी छज्जी तरसँ निकालल गेल। किएक तँ डारियो छोट-छीन नहि जे दू-चारि गोरे धींच कऽ कात कऽ दइत। बिनु कुरहैरसँ कटने डारि हटैबला नहि। सेहो अन्हारमे केना होएत। डारिक तरमे मन्दिरक छज्जी आ मन्दिरक छज्जी तरमे महंथजी आ पुजेगरी। फेर देवनक मनमे एलै जे जइ महंथजी आ पुजेगरीकें देखैले अँटकल छी, ओ जीवित हेता आकि मुइल? ..तर्क-वितर्क करैत देवनक मनमे एलै जे जखन मन्दिरे खसि पड़ल तखन महंथ आ पुजेगरी केना बँचत। अनेरे हम कोन भाँजमे पड़ल छी। ऐठामसँ रबाना भऽ जाइ। ऐठाम जेते काल रहब तेते काल असमसानमे रहनाइ हएत। असमसानमे रहि अनेरे किए जिनगी गमाएब। ओह! जेते जल्दी हुअए तेते जल्दी ऐठामसँ विदा भऽ जाइ। देवन विदा भऽ गेल। ..रस्तामे थोड़े दूर गेलापर देवनक मनमे उपकल जे मृत्यु की छी? आइ धरि देवनक मनमे एहेन प्रश्न कहियो ने उठल छेलइ। उठबो केना करितै अखन धरि आँखिसँ जे मृत्यु देखै छल, ओकरे मृत्यु बुझैत रहए। मुदा आइ महंथजीक मृत्यु देखलापर, देवनक मनमे ऐ दुआरे प्रश्न उठल जे लोकक मुँहक सुनल बात झूठ बुझि पड़लै। लोकक-मुहें सुनैत आएल छल जे जे जेहेन करत ओकर मृत्यु ओहने हेतइ। मुदा

महंथजी आ पुजेगरी तँ भरि दिन भगवानेक मन्दिरमे रहि, हुनकेँ टहल-टिकोरा करैत, तखन एहेन मृत्यु..!

'मृत्यु' छिऐ कथी ऐ प्रश्नपर देवन सोचए लगल जे मृत्युकेँ जीवनक पुर्ब पक्ष कहबै आकि उत्तर पक्ष? पुर्ब पक्ष ऐ दुआरे जे नीक विचारक जन्म होइते पुरान विचारक मृत्यु भऽ जाइ छइ। तहिना नव जीवक जन्म होइते पुरना जीवन समाप्त भऽ जाइ छइ। ऐ द्वन्द्वमे देवनक मन नीक नहाँति ओझरा गेल। फेर दोसर प्रश्न मनमे उठलै जे संगीत शास्त्री लोकैन सभ, गीतकेँ अवसर विशेषक आधारपर गीतक निर्माण केलैन मुदा 'सोहर' आ 'समदाउन'केँ किएक जन्मोत्सवोमे आ मृत्योत्सवोमे मानि लेलखिन? जखन कि दुनू दू अवसर छी? ..देवनक मन घोर-मट्ठा भऽ गेल। जहिना नसेरी अपने धुनियेँ रस्ता कटैत तहिना देवनो आगू बढ़ैत जाइत। चलैत-चलैत देवन बिनु खेने-पीने, दुपहर तक चलिते रहल। ने भूख दिस मन जाइ छेलै आ ने पियास दिस। जेना कोनो सुधिये ने रहलै। जाइत-जाइत देवन एकटा फूलक गाछ लग पहुँचल। फूलक गाछ लग पहुँचते देवनक भक खुजलै। रूकि गेल। ओइ फूलक गाछकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। फूलक गाछ देख देवनक मुहसँ अनासुरती निकलल-

"एहेन फूल तँ आइ धरि नै देखने छेलौं!"

सुन्नर आ सुडौल गाछ। जगह-जगह डारि फुटल। जेहने गाछक धड़ चिक्कन तेहने डारि। हरिअर-हरिअर, चौड़गर-चौड़गर पात नमहर-नमहर, लाल-लाल फूल। मखानी गुलाब जकाँ फूलसँ लदल गाछ। एकान्त जगह। फुलक गाछ देख देवन मने-मन सोचलक जे अखन भरि-दुपहर एतै रहब। रहैक विचार कऽ गाछक निच्चाँमे बैस रहल...।

मन्द-मन्द शीतल हवा बहैत बारह बजेक समए। तेज धूप। गरमीसँ वायुमण्डल गर्म होइत जाइत। राही-बटोही, जहाँ-तहाँ रूकि-रूकि, दुपहर बितबैक ठौर पकैड़ लेलक। भूख-पियास देवनक मेटा गेल। गाछक निच्चेमे ओ चीत गरे सुति फूल सभकेँ देखए लगल।

आँखि फूलेपर रहै मुदा मन अपन जिनगीक उदेसपर पहुँच गेलइ। जिनगीक उदेसपर मनकेँ पहुँचते देवन सोचए लगल जे मनुखक जिनगीक रस्तामे कहियो फुलवाड़ी भेटैत तँ कहियो काँटक बोन। दुनूक बीच होइत जिनगी चलैत। मुदा काँटक बोन देख मनुख घबड़ा जाइत जखन कि फुलवाड़ीमे सतत रहैक चेष्टा करैत। मुदा फूलेक गाछमे काँटो होइत आ काँटेक गाछमे फूलो, तखन मनुख केना अगबे फुलवाड़ीमे रहि पौत?

चारि बजि गेल। राही-बटोही अपन-अपन रस्ता-बाट धऽ चलए लगल। राही-बटोहीकेँ देख देवनोक मनमे एलै जे सुतलासँ तँ नै हएत, जँ किछु हएत तँ चलनहि। जँ आइ चलि कऽ ऐ फूलक गाछ लग नै पहुँचल रहितौं तँ एहेन फूलक गाछक दर्शन केना होइतए।

उठि कऽ बैस देवन हियाबए लगल आकि एकटा बटोहीकेँ उत्तरसँ दच्छिन-मुहेँ अबैत देखलक। बटोहीकेँ देख देवनक मनमे एलै जे भरिसक हमरे जकाँ ईहो बटोही अछि, किए तँ ने देहमे अँगा देखै छिऐ आ ने माथपर कोनो वस्तु। सिरिफ हाथमे एकटा छोट-छीन मोटरी लटकौने अछि। मुदा उत्तरसँ आबि रहल अछि तँए उत्तर दिशाक रस्ता तँ हिनका जरूर बुझल हेतैन। किएक तँ हमरो ओम्हरे जेबक अछि। अबैत-अबैत बटोही ओइ फूलक गाछ लग आबि रूकि गेला। बटोहीक नजैर देवनपर आ देवनक नजैर बटोहीपर पड़ल। मुदा दुनूमे कियो केकरो नै टोकैत। दुनू मगन। अपना-अपना तालमे दुनू बेहाल। मुदा देवनक मनमे एलै जे हम हिनका आगूमे बच्चा छी तँए हमर पूछब उचित हएत। देवन ओइ बटोहीकेँ पुछलक-

"दादा, हमरा उत्तर-मुहेँ जेबक अछि तँए अपने रस्ताक सम्बन्धमे किछु बता दिअ?"

देवनक बात गौरसँ बटोही सुनि बजला-

"बौआ, तूँ भूखल बुझि पड़ै छह, किएक तँ तोहर मुँह सुखाएल छह, तँए पहिने खा लएह। हमरो ई मोटरी भारी लगैए। तोरो पेट भरि जेतह आ हमरो जान हल्लुक भऽ जाएत।"

बटोहीक बात सुनि देवन किछु नै बाजल। बटोही बुझि गेलखिन जे वेचारा भूखल अछि। खाइक इच्छा भऽ रहल छै तँए ने किछु बाजल। ..उठि कऽ देवन लग आबि मोटरी आगूमे दऽ देलखिन। देवन मोटरी खोलकक तँ देखलक जे खाइ-पीबैक ओहन-ओहन विन्यास सभ अछि जे आइ धरि खाइक कोन बात जे देखनौं ने छेलौं! भरि पेट खा देवन फेर बाजल-

"दादा, अपने उत्तर दिशाक रस्ता बता दिअ?"

बटोही-

"आगूक रस्ता बुझि कऽ कि करबहक?"

"दादा, दुनियाकेँ देखैक लिलसा मनमे अछि तँए घरसँ निकलल छी।"

मुस्कियाइत बटोही कहए लगलखिन-

"दुनियाँ किछु ने छी। माटि, पानि, अकास आ हवाक बनल एकटा गोला छी। अही सभसँ जनैम-जनैम, जइ दुनियाकेँ देखै छहक से ठाढ़ भेल अछि। मुदा सौंसे एक रंग नै भऽ एक-भगाह भऽ गेल अछि। एक भाग निरोग अछि आ दोसर भाग सड़ल। तहूमे सभसँ अजीब बात ई अछि जे दुनियाँक बीचो-बीच एकटा रेखा घिचल अछि, जेकरा लोक विषुवत रेखा कहै छइ। रेखा पूबे-पछिमे अछि। रेखाक दुनू भाग समान दूरीपर एक्के रंग रौद-वसात आ उपजा-बाड़ी-ले मौसम होइ छइ। गाछो-बिरीछ एकरंगाहे अछि। मुदा सभ किछु एक रंग रहितो, मनुख दू रंगक अछि। एक भागक अगुआएल अछि आ दोसर भागक पछुआएल। तहिना देखबहक जे दुनियाँक मनुखो दू दिस भऽ गेल अछि। एक भागक खूब पछुआएल अवनतिक शिखरपर अछि। मुदा सभ किछुमे विषमता रहितो एक चीजमे समता अछि।

ओ छी नंगापन। जे अगुआएल मनुख अछि ओ देखैमे दूध जकाँ उज्जर धप-धप, गाए-महींस जकाँ ओकर देह आ हाथ-पएर छइ। खाइयो-पीबैक आ रहैयोक बेवस्था नीक छइ। मुदा ओ महिला सभ जे कपड़ा पहिरैए से ओहन झकझकौआ मेही होइ छै जे देखलासँ बुझि पड़तह जे कपड़ा पहिरनहि ने अछि। ओहिना सौंसे देह देखबहक। तहूमे जँ केतौ देखैमे झल बुझि पड़ह तँ चश्मा लगा लिहह। ..तहिना दोसर दिस देखबहक जे मनुखकेँ गरीबी ओइ रूपे जकड़ने अछि जे ने भरि पेट अन्न भेटै छै आ ने देहमे वस्त्र। तँए अभावे ओ सभ नाँगट रहैए। ने खाइक ठेकान आ ने रहैक। ने वस्त्रक कोनो उपए, तँए नाँगट रहैए। देहक हाड़ चारि लग्गी हटलेसँ गनि लेबहक। कंकाल जकाँ देह, कारी खट-खट रंग, साबे जकाँ केश वेचारी सबहक रहै छइ। ..मनुखक समाजमे वस्त्रकेँ परदा मानल गेल अछि आ अहीसँ इज्जत-आबरू देखल जाइ छइ। मुदा एकटा सवाल पुछै छिअ, कहह जे दुनू औरतमे केकर इज्जत-आबरू बँचल छै आ केकर नहि?”

बटोहीक बात सुनि देवन धड़फड़ा कऽ बाजल-

“जेकरा देहपर वस्त्र छै ओ इज्जतदार।”

बटोही-

“धुर्र बुड़ि! एतबो ने बुझै छहक। अच्छा कोनो बात ने। तूँ अखन बच्चा छह तँए नै बुझै छहक। देखहक, लोके-लाज दुआरे ने लोक कपड़ा पहिरैए किएक तँ मनुखमे बुधि-विवेक होइ छै। तँए किछु अँगकेँ गुप्त अँग मानल गेल अछि। जेकरा देहपर वस्त्र छै ओकरापर आँखि गड़ा कऽ देखनिहारो बेसी अछि। मुदा जेकरा देहपर वस्त्र नइ छै, नरकंकाल जकाँ अछि ओकरापर नजैरे केकर पड़त जे लोक-लाजक प्रश्न उठतै। आब कहह जे केकर इज्जत-आबरू बँचल अछि। जेकर बँचल छै सएह ने इज्जतदार।”

बटोहीक बात सुनि देवन मुड़ी डोलबैत हुँहकारी भरलक।

हुँहकारी पेब बटोही बजला-

“आब दोसर बात सुनह। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ मनुख छी। सभकेँ एक्के रंग सभ अँग छइ। हाथ, पएर, मुँह, नाक, कान इत्यादि। सभ अन्न खाइए, पानि पीबैए, कपड़ा पहिरैए आ रौद-वसात, पानि, पाथर आ जाड़सँ बँचै दुआरे घरमे रहैए। अस्सक पड़लापर दबाइक जरूरत होइ छइ। बुधिक दुआरे पढ़ैए। मनोरंजनक दुआरे नचबो करैए आ गेबो करैए। तँए सभ-ले एक रस्ता हेबा चाही। नीक रस्ताकेँ धर्मक रस्ता मानल गेल अछि आ अधला रस्ताकेँ पापक। तखन आब तोँही कहह जे भदबरिया बेंग जकाँ एते सम्प्रदाय किएक अछि? एक काज-ले रस्ता अनेको भऽ सकैए मुदा सभसँ नीक रस्ता तँ एक्केटा हएत। जखन एक्केटा रस्ता नीक हएत तखन एते रस्ताकेँ कोन जरूरत। तइले लोक एते मारि-मरौवैल, गारि-गरौवैल किए करैए?”

मुड़ी डोला देवन समर्थन केलक। देवनक मुड़ी डोलौनाइ आ मुँहक रूखि देख बटोहीक मनमे खुशी होइत रहैन। मनमे खुशी ऐ दुआरै होनि जे हम्मर बात देवनक हृदैमे चुभि रहल अछि। औरो आह्लादित होइत बटोही कहए लगलखिन-

“बौआ, अजीव अछि दुनियाँ। कहए तँ बहुत चाहै छी मुदा तोहूँ अनतए छह आ हमहूँ अनतए छी। तोहूँ केतौ जा रहल छह आ हमहूँ बाटेमे छी। मुदा तैयो जेतबे समए अछि तेहीमे किछु बुझि लएह, जिनगीमे काज औतह। तहूमे अखन तूँ बच्चा छह बहुत दिन ऐ धरतीपर जीबैक छह। जहिना घर बान्हैले एक्के ढंगसँ अनेको घर बनैत, एक्के किताब पढ़लासँ अनेको लोककेँ ज्ञान होइत तहिना तँ जिनगीक आवश्यकता-ले एक्के लूरिसँ काज चलि सकैए। तखन एते रंग-बिरंगक चालि किए महंथ–सम्प्रदाय चलौनिहार–धरबैए? केते अजगूत बात अछि जे कियो खा कऽ पूजा करैले कहैए तँ कियो भूखले। तहिना कियो दाढ़ी-केश बढ़ा पूजा करैए तँ कियो दाढ़ी-केश कटा कऽ। कियो माटिक भगवान बना, तँ कियो पाथरक तँ कियो ओहिना, बिनु मूर्तियेक। तहिना कियो मन्दिर बना, तँ कियो मस्जिद

बना, तँ कियो गिरिजाघर बना कऽ पूजा करैए। ..नहि जानि केते रंगक देवालय होइत। तँ कियो ओहिना, बिनु मन्दिरे, मस्जिदेक- कियो भगवानकें परसाद चढ़बैत तँ कियो बिनु परसादेक पूजा करैत। कियो ताड़ी-दारू पीब, माछ-मौसु खा पूजा करैत तँ कियो ओकरा अधला कहि निन्दा करैत। कियो नारीकें मुक्तिक मार्गक बाधा बुझैत तँ कियो नारिये पूजाकें उद्धारक रस्ता बुझैत। अजीव अछि ई दुनियाँ आ अजीव अछि ऐ दुनियाँक लोक। कियो वेश्याकें अधला बुझैत तँ कियो पूजा करैकाल वेश्या नचबैत। कियो-ढोलक-झालि, मजीरा बजा कीर्तन-भजन करैत तँ कियो ओहिना बिनु साजे-बाजक।"

जहिना कोनो खेलौना वा पढ़ै-लिखैक कोनो वस्तु-ले बच्चा सभ अपनामे छीना-छीनी करैत तहिना देवनक मनमे, हुअ लगल। देवनक मुँहक बिजकब देख बटोही मने-मन सोचए लगला। जे वेचारा द्वन्द्वमे पड़ि गेल अछि। कखनो मन गुड़ैक कऽ एमहर तँ कखनो ओमहर भऽ रहल छइ। मन असथिरे ने भऽ रहल छइ। कनी काल बटोही गुम्म भऽ देवनक भावनाकें अँकए लगला। देवनक मन कखनो खुश होइत तँ कखनो चिन्तित भऽ जाइत। कखनो मुहसँ हँसी निकलैत तँ कखनो कानै सन भऽ जाइत। ओना, बटोही मने-मन हँसैत रहैथ मुदा मुहसँ बाहर हँसीकें निकलए नइ दैत रहथिन। बटोहीक मनमे एलैन जे आब विषय बदैल दी। बजला-

"बौआ, देखै छहक ने जे केकरो घरमे अन्न सड़ैए तँ कियो भूखले रहैए। केकरो गामक-गाम खेत छै, तँ केकरो घरो बन्हैले ने छइ। केकरो धरमे कपड़ा सड़ै छै तँ कियो नँगटे रहैए। कियो कोठाक भीतर कोठा बनौने अछि तँ कियो गाछक निच्चाँमे रहैए। केकरो बोरे-बोरा नून तँ केकरो रोटियोपर ने होइत। कियो दबाइकें सड़ा-सड़ा पानिमे फेकैत तँ कियो दबाइ बिनु मरैए। केते कहबह पहिनहि कहि देलियह जे ऐ दुनियाँक एक भाग निरोग अछि तँ दोसर भाग सड़ल छइ।"

देवनक चेहरा उदास हुअ लगल। मुँह मलीन आ आँखिक ज्योति बदलए लगल मुदा ज्ञानक भूख मनमे आरो जागए लगलै। मने-मन देवन सोचलक जे जखन एतबे दूर एलापर एतेक भेटल तँ ऐसँ आगू गेलापर केते भेटत। ई बात मनमे अबिते देवन बटोहीकेँ कहलकैन-

“दादा, जखन एते दूर आबिये गेलौं तँ ऐगलो रस्ता बता दिअ, ओहो देखिये कऽ घूमब।”

मुस्कियाइत बटोही आगूक अनुभव बाजए लगला-

“ऐठामसँ कोस भरिपर मनपुर अछि। जखन ओइठाम पहुँचबह तँ देखबहक जे किछु गोरे पल्था मारि बैसल अछि आ मने-मन जिनगीक हिसाब जोड़ैए जे जेते समए खटै छी ओइसँ जे उपारजन होइए, ओहिक भीतर अपन जिनगीकेँ रखि जीबी। आ सएह करबो करैए। मुदा भेड़िया-धसान लोककेँ देखबहक जे खड़क बैलून जकाँ हवामे उड़ैए जइसँ केते फुटिये जाइत अछि आ केते गिरबो करैए, जेकर कोनो ठेकानो ने छइ। तँए तूँ ओइ बैसलाहा लोक सबहक दर्शन करिहह। ओकर दर्शन सीखि जिनगी बनबिहह। जिनगी की छी? जिनगी तँ वएह छी जे मनुख बनि जिनगी जीब लेब छी। ..मनपुरसँ कोस भरि आगू बुधिपुर अछि। जखन बुधिपुर पहुँचबह तँ देखबहक जे ऐठाम जेते लोक अछि सभ जुआरी अछि। भरि दिन, भरि राति जुए खेलाइए। ओ जुआ खेलाइक पासा तीन तरहक अछि। एक तरहक पाशा अछि जइमे बाप-बेटा खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत अपनामे गारि-गरौवैल करए लगैए। बाप बेटाकेँ कहै छै, ‘सार तूँ बेइमान छँह।’ तहिना बेटो बापकेँ कहै छै, ‘सार, तूँ बेइमान छह।’ ..देखबहक जे बाप-बेटा सार-बहानचो करैए। मुदा ओइठाम बेसी नै अँटकिहह। देख कऽ आगू बढ़ि जइहह। किएक तँ ओ सार दुनू चोट्टा छी। जहिना छोटका माछक बोर दऽ बंशी खेलेनिहार, बड़का माछ मारि लइए तहिना ओ सभ छोटका गारि देखा फंसा लेतह आ गारि

पढ़तह। तँए देख कऽ तुरन्त हटि जइहह। ..दोसर पासा देखबहक जे भाए-भैयारी आमने-सामने बैस जुआ खेलाइए। खेलाइत-खेलाइत देखबहक जे दुनू एक-दोसरकेँ बेइमानी करए लगैए। जइसँ गारि-गरौवैल, मारि-मरौवैल करए लगैए। मुदा ओहो दुनू नमरी चोट्टा छी। तँए ओकरो देख कऽ लगले हटि जइहह। जँ अँटकबह तँ धोखामे पड़ि जेबह। ..तेसर पासा जे देखबहक ओ असली पासा छी। ओइमे देखबहक जे दू परिवारक लोक जुआ खेलाइए। कसमकस खेल ओइ पासापर होइ छइ। दुनू खेलाड़ी सभ तरहक शक्ति लऽ कऽ खेलाइए। गारिक जवाब गारिसँ, मारिक जवाब मारिसँ, लाठीक जवाब लाठीसँ आ बम-बारूदक जवाब बम-बारूदसँ देल जाइ छइ। ओइ पासाकेँ देख मनमे हेतह जे हमहूँ एक भाँज खेलि ली। ओइठाम अँटैक जइहह। जेते दिन देखैक मन हुअ तेते दिन ओतै रहिहह... ।"

बटोहीक बात सुनि देवनकेँ मनमे खुशी भेलइ। मुस्की दैत पुछलक-

"ओइठिनसँ कियो भगौत तँ ने?"

बटोही-

"हँ! एक पासाक खेलाड़ी भगौनिहार अछि मुदा दोसर रखनिहार। जे बचेनिहार हेतह। ओकरा 'भाय' बुझि पिठपर रहिहक। ओ जे जीतत तइसँ तोरो लाभ हेतह। ओ सिरिफ अपनेटा लऽ नै खेलैए तोरोले खेलैए, सभ-ले खेलैए।"

बटोहीक बातकेँ गौरसँ सूनि देवन मुड़ी डोला सोचिते छल आकि फेर बटोही बजला-

"ओइठाम देख आगू बढ़ि जइहह। ओइठामसँ कोसे भरि आगू विवेकपुर अछि। जखन बुधिपुरसँ आगू बढ़बह तँ विवेकपुर लगे बुझि पड़तह। जाइ कालमे सेहो नहि बुझि पड़तह। मुदा बिनु विवेकपुर गेने आपस नै घुमिहह। जखन विवेकपुर पहुँच जेबह तखन विवेक बाबासँ भेँट हेतह। विवेके बाबाकेँ लोक ज्ञानेश्वर, धर्मगुरु, जगत पिता सेहो

कहै छैन। ओइठाम देखबहक जे रंग-बिरंगक ढेरो घोड़ा अछि। एक-सँ-एक सुन्नर, एक-सँ-एक तेज दौड़ैबला। केकरो बान्हल नै देखबहक। ओहिना बिनु बन्हले सभ रहैए। विवेके बाबाक टहलू हम छी। टहैल-टहैल दुनियाँ देखै छी।"

'विवेक बाबाक टहलू सुनि बिच्चेमे देवन पुछि देलकैन-

"ऐठाम किए आएल छेलौं?"

बटोही-

"अही फुलक गाछकेँ देखैले आएल छेलौं। हँ, जे कहै छेलियह से सुनह। ओइठाम पहुँचते विवेक बाबा भेँट भऽ जेथुन। घोड़ा सभ हिहियाइत देखबहक। अनेरे लगमे आबि-आबि चारूभरसँ घोड़ा सभ घेर लेतह।"

देवन-

"घोड़ा बदमाशियो करै छइ?"

बटोही-

"नहि। हँ! तखन एकटा बात जरूर छै जे गोटे-गोटे घोड़ा एहेन अछि जे घोड़ी देख कऽ थोड़े रस्ता काटि दइ छै, मुदा घुमि कऽ फेर रस्तापर चलि अबैए।"

साँझ पड़ि गेल। मुदा अन्हार नहि बुझि पड़ैत। बजैत-बजैत बटोही केमहर चलि गेला से देवन देखबे ने केलक। देवनो तँ असगरे चलनिहार तँए मनमे कोनो शंको नहियेँ भेलइ। एक मन कहै जे आइ एतै रहि जाइ छी आ दोसर मन कहै जे जेते रस्ता काटि लेब ओते तँ अपने असान हएत, किएक तँ जेते चाहै छी ओ तँ केनहि हएत। दोसर दिन भोरे देवन विदा भेल।

पहिलुका जकाँ देवन आब नै रहल। सोलहन्नी तँ नै मुदा अठन्नी जरूर बदैल गेल। रस्तामे मन्दिरपर नजैर पड़ै तँ आँखि निच्चाँ केने आगू बढ़ि जाइत रहए। भिनसुरका समए तँए रौदो बेसी तीख नहि। हवाक सिहकी चलैत तँए चलैमे बेसी मन लगैत। जाइत-जाइत देवन

एकटा बड़का मन्दिर देखलक। शंखमरमरसँ बनल। हालेमे रंग-टीप भेने विशेष आकर्षक। मन्दिरक चारूभाग छहरदेबाली। साइयो बीघासँ ऊपर मन्दिरक अगवास। छहरदेबालीक भीतर एकटा नमहर पोखैर, करीब दस बीघाक कलम, जइमे अगबे बम्बइ आम। हजारोसँ ऊपर नारियलक गाछ। कमोवेश सभ फल। पोखैरक मोहारपर धरमशाला। नहाइले पोखैरमे सिमटीक घाट बनौल। रस्ताक तर देने बिजली तार। एक्केटा रस्ता। जइमे लोहाक फाटक लगल। फाटकमे खूब नमहर पितरिया ताला झूलैत। चारि बजे भोरमे फाटक खुलैत आ आठ बजे साँझमे बन्न भऽ जाइत। फाटक बन्न भेलापर ने बाहरक लोक भीतर आबि सकैत आ ने भीतरक बाहर जा सकैत। ई महंथजीक कड़गर आदेश छेलैन। इलाकाक लोक महंथजीकेँ जेहने कड़गर बुझैत तेहने चरित्रवान, तँए विशेष इज्जत।

मन्दिर लग पहुँचते देवनक मन डोलि गेलै जे कनी भीतर जा कऽ देखिऐ। थोड़े काल रस्तापर ठाढ़ भेल। बाहरोक लोककेँ भीतर जाइत देखलक आ भीतरोक लोककेँ बहराइत देखलक। देवन सेहो भीतर गेल।

भीतर पहुँच देवन हियासि-हियासि मनुखोकेँ आ मन्दिरक बेवस्थोकेँ देखए लगल। बड़ सुन्नर बेवस्था बुझि पड़लै। चकचक करैत मन्दिर। मन्दिरक आगूमे पानिसँ धुअल अग्रेय। अगरबत्तीक सुगन्धसँ मन्दिरक चारू भाग मह-मह करैत। फुलडालीमे फूल लेने कियो तमही लोटामे तँ कियो पितरिया लोटामे जल लऽ पूजा करैले जाइत। तँ कियो पूजा कऽ घुमितो। मन्दिरक आगूमे ठाढ़ भऽ देवन गोड़ लगलक। गोड़ लगिते देवनकेँ बुझि पड़लै जे जहिना ई तीर्थ स्थान अछि तहिना तँ मनुखक देहो छइ। एकाकार भऽ गेल। अपना देहेमे तीर्थ स्थान बुझि पड़लै। मन्दिरसँ निकैल देवन धुमए लगल।

फुलवाड़ीक फूल देख मन गदगद भऽ गेलइ। फुलवाड़ीसँ निकैल सोझे धरमशालामे पहुँचल। धरमशालाक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ

स्थानोक बबाजी आ बाहरोसँ आएल यात्रीकेँ हियासि-हियासि देखए लगल। मन्दिरक बाबाजी आ यात्री दू रंग देवनकेँ बुझि पड़लै। दुनू तरहक लोकमे दू रंग विचार आ काज देखलक। दू रंग देख देवन आरो लगमे जा देखए लगल। बाहरक जे यात्री रहै, ओकर मन आ हृदए पवित्र बुझि पड़लै। छल-प्रपंचसँ दूर। भगवानक प्रति श्रद्धा। ..यात्री सभपर सँ नजैर हटा देवन स्थानक बबाजी सभपर गड़ा कऽ देखलक। मन्दिरक जे बबाजी सभ छल, ओकर चालियो-चलन आ मनो अशुद्ध बुझि पड़लै। बबाजी सभ अपन-अपन रूप बना रहल अछि। कियो सौंसे देह भष्म लगा-लगा, कियो डाँरमे मात्र चारि आँगुरक बिस्टी पहिर रहल अछि तँ कियो सोलहन्नी सौंसे देह छाउर ओंसि नंगे तैयार भऽ रहल अछि। कियो रेशमी धोती कुरता पहिर साधारण तिलक लगा तैयार भऽ रहल अछि, तँ कियो भिखमंगाक रूप बना रहल अछि। रूप बना-बना कियो गांजा पीब, कियो अफीम खा, कियो दारू पीब तँ कियो भाँग खा तैयार भेल। सबहक आँखि तरेगन जकाँ चमकए लगल। अपन-अपन सभ समान ओरिया कऽ धरमशालामे रखि निकलए लगल। धरमशालामे मात्र बाहरक जे यात्री छल ओतबे रहल। ओहो सभ अपन-अपन मोटरी सम्हारि जाइक तैयारी करए लगल।

रंग-बिरंगक रूप देख, देवनक मनमे सबहक करतूत बुझैक जिज्ञासा जोर मारलक। मुदा कहत के? मने-मन देवन सोचए लगल जे के एहेन लोक भेटत जेकरासँ पुछिऐ। ..गुन-धुन करैत देवन धरमशालाक भनसिया लग पहुँचल। भनसिया सभ बरतन-बासन मँजैत। एकटा बरतन लऽ देवनो मँजए लगल। अनठिया देवनकेँ देख एक गोरे पुछलकै-

“भाय, तूँ केतए रहै छह?”

भनसियाक बात सुनि देवनमे सन्तोष भेलै जे एकरासँ सभ बातक भाँज लगि जाएत। उत्तर देलकै-

“भाय, हम तँ बहुत दूर देहातमे रहै छी। बहू दिनसँ ऐ स्थानक विषयमे सुनै छेलौं। मुदा ने बटखर्चा होइ छलए आ ने अबै छेलौं। ऐ बेर खरचाक जोगार भऽ गेल तँ आबि गेलौं।”

भनसिया-

“केते दिन रहबह।”

देवन-

“जेते दिन मन लागत।”

भनसिया-

“बड़बढ़ियाँ, हमरे सभ संगे भंडारमे रहह। कोनो-कोनो काजो करिहह आ जे मन हेतह से खेबो करिहह।”

देवन-

“बड़बढ़ियाँ।”

देवनकेँ बात बुझैक जोगार भऽ गेलइ। जोगार देख देवन मने-मन खुश होइत पुछलक-

“भाय, अखन जे बबाजी सभ निकलल ओ कखन घुमि कऽ औत?”

“किरिण डुमैत।”

“भरि दिन केतए रहत आ की करत?”

देवनक प्रश्न सुनि हँसैत एक गोरे कहलकै-

“कियो स्थानक नाओंसँ चन्दा करत, कियो हाथ देख-देख दैछना लेत, कियो भीख मांगत इत्यादि। जेतए जेकरा जेहेन गर भेटतै से करत।”

“जखन सभकेँ खाइले भेटते छै तखन चन्दा, दैछना आ भीख की करत?”

“जे भीख मांगत ओ एक्को पाइ स्थानमे जमा नै करत मुदा जे रसीद काटि चन्दा करत ओ अदहा-अदही स्थानमे जमा करत।”

“बाँकी रूपैआ लऽ कऽ की करतै?”

देवनक बात सुनि सभ भनसिया ठहाका मारलक। एक गोरे हँसिते-हँसिते बाजल-

"भने ऐठाम एलह। दू-चारि दिन रहह तखन सभ किरदानी आँखिएसँ देखबहक। मुहसँ कहलापर किछु बिसवासो हेतह आ किछु नहियेँ हेतह।"

"महंथजी कोन मकानमे रहै छैथ?"

ओंगरीसँ देखबैत कहलकै-

"ओ दू महला कोठा देखै छहक, ओकर निचला हन्नामे स्थानक राशन-पानी रहै छै आ ऊपरका हन्नामे आठ गो कोठली छइ। आठो कोठली असगरे रखने अछि।"

"ओइमे सभकेँ जाए नै दइ छै, कनी हमहूँ जा कऽ देखतिऐ?"

"नहि। ओइमे सभ नै जाइए। अगर देखैक मन हुअ तँ भिनसुरका पूजा समाप्त भेलापर कातमे ठाढ़ भऽ कऽ देखिहक।"

"की सभ होइ छइ?"

"पूजाक पछाइत सभ अपन-अपन ठौरपर चलि जाइए। तेकरा पछाइत लीला शुरू होइ छइ। मुदा बेसी नै कहबह। ओइ कोठा छोड़ि सौंसे सभ घुमि सकैए। तँए जलखै खा लएह आ सौंसे देख आबह।"

"बड़बढ़ियाँ।" कहि देवन जलखै खा धुमैले विदा भेल।

दच्छिन-मुहेँ देवन विदा भेल। दछिनबारि भाग बजार जकाँ बनल। कनी हटि कऽ देखलापर छोटे बुझाइ मुदा भीतर पसिते खूब नमहर देख पड़लै। उत्तरे-दछिने रस्ता। रस्ताक दुनू बगल डेरानुमा घर। पानि, बिजली सौंसे। घरक ओसारपर गद्दीदार कुरसी लागल। साइयोसँ ऊपरे डेरा, जइमे ढेरबा लड़कीसँ लऽ कऽ अधवयसू औरत धरि। मरदक नामो-निशान नहि। वेश्यावृत्तिसँ लऽ कऽ गान विद्यामे सभ निपुण। स्थानक धूप-आरतीसँ लऽ कऽ अपन वृत्ति धरि सबहक काज। रस्ते-रस्ते देवन आगूओ बढ़ैत आ दुनू बगली देखबो करैत। जाइत-जाइत देवन दछिनबरिया छोर लग पहुँचल। डेरा सबहक रूप-

रंग देख देवनक मनमे एलै जे किछु दिन ऐठाम रहब जरूरी अछि। बिनु रहने नीक-नहाँति नहि बुझि सकब। जखन ऐठाम आबि गेलौं तखन सेरिया कऽ बुझने बिना चलि जाएब बचपना हएत। फेर मनमे होइ जे अबैत-अबैत केतए आबि गेलौं। लोक अधलासँ नीक दिस बढ़ैए आ हम अधले दिस चलि एलौं। फेर मनमे होइ जे अधला जगह होइ छै, अधला काज होइ छै, अधला विचार होइ छै, मुदा ओहो तँ ज्ञान रूपमे होइए, तँए ज्ञान अरजन करब तँ अधला नइ छी। तोहूमे अधला काज केनिहारो तँ कम नइ अछि। अगर जँ हम अधला काजकेँ नै जानब तँ ओइकेँ अधला बुझि परहेज केना करब...।

तत्-मत् करैत देवन दछिनबरिया छोरपर ठाढ़ भऽ आँखि उठा-उठा चारू भाग देखए लगल। पूबारि भागक डेराक ओसारपर एकटा शील भंग जुआन लड़की देवन दिस छल। ओइ लड़कीकेँ अपना दिस देखैत देवनो ओकरे दिस ताकए लगल। दुनू दुनूकेँ दखैत मुदा आँखिमे आँखि मिलिते लड़की आँखि निच्चाँ कऽ लइत। देवनोक मनमे ओइ लड़कीक प्रति उत्सुकता जगलै। मुदा धड़फड़ा कऽ पूछत की? बड़ीकाल धरि देवन ओतै ठाढ़ रहल। डरो होइ तँए मुँह सूखल जाइ। देवनक उतरैत चेहरा देख ओ लड़की पुछलक-

"किनको तकै छिऐन?"

देवन-

"तकै नै छिऐन। देखैले एलौं हेन।"

"आउ, ऐठाम आबि कऽ बैसू।"

'बैसू' सुनि देवन ससरैत आगू बढ़ल। बेर-बेर ओ लड़की देवनो दिस मुड़ी उठा कऽ देखैत आ फेर मुड़ी निच्चो कऽ लइत। जहिना कियो आन मुलुकक जहलमे जिनगी भरिक सजा कटैत, जैठाम ने अपना मुलुकक एकोटा लोक रहैत आ ने घुमि कऽ अपना मुलुक अबैक आशा रहैत, वएह दशा ओइ लड़कीकेँ मने-मन होइत। ..देवन आबि कऽ ओसारक कुरसीपर बैसल। देवनक सूखल मुँह देख ओ

लड़की मने-मन सोचलक जे भरिसक भूखल अछि। मुदा देवनक मुँह भूखसँ नहि, डरसँ सूखल छेलइ। ओ लड़की पुछलकै-

"किछु खाएब?"

देवन-

"अखने खेलौं हेन। खाइक इच्छा नइ अछि।"

"ऐठाम अहाँ किएक एलौं? ई जगह मनुखक नइ छी।"

लड़कीक बात सुनि देवन चौंक गेल। मुदा अपनाकेँ सम्हारि कऽ पुछलक-

"अगर मनुखक रहैक जगह नइ छी तँ अहाँ केना रहै छी?"

देवनक बात सुनि शान्तीक दुनू आँखिमे नोर आबि गेल। मनक सिमानेपर बोली अँटैक गेलइ। चकभौर कटैत चिड़ै जकाँ आँखि घुमए लगलै। ऊपरसँ नीचा धरि देवनकेँ निंगहारए लगल। बड़ीकाल धरि शान्तीक आँखि देवनकेँ देखैत रहल आ मन जिनगीक समुद्रमे उग-डूम करए लगलै। ने किछु शान्ती बजैत आ ने देवन। दुनू दुनूकेँ पढ़ैत। बड़ीकालक पछाइत शान्ती देवनकेँ कहलक-

"अहाँक प्रश्नक जवाब हम अखन नै देब। भानसो नै केलौं हेन। अहूँ आएल छी, तँए अखन भानस करए जाइ छी। निचेनमे अहाँक सवालक जवाब देब। ताबे अहूँ नहा लिअ।"

देवनकेँ शान्ती भीतर लऽ गेल। भीतरमे आँगन जकाँ बनल। चारू भरसँ छहरदेबाली। बाहरक केबाड़ शान्ती बन्न कऽ देलक। भीतरेमे सभ कथुक बेवस्था। नहेबोक, भानसोक। छोटे आँगन तइमे टहलबोक बेवस्था।

शान्ती भानस करैले चुल्हि पजारलक। देवन अँगा निकालि नहाइक जोगारमे लगि गेल। मुदा, जेना शान्तियोक मन आ देवनोक मन एक-दोसरकेँ शोर पाड़ए लगलै। टंकीपर देवन ठाढ़ आ चुल्हि लग शान्ती बैसल। मुदा दुनू एक दोसर दिस देखैत। जहिना अजेगर साँपक आँखि-सँ-आँखि मिललापर ओकर आँखिक आकर्षण मनुख वेवस

भऽ हटि नहि सकैत तहिना देवनो आ शान्तियोक बीच भऽ गेल। ..टंकीपर सँ ससैर देवन चुल्हि लग आबि गेल। खुला देह। सिरिफ धोतीएटा पहिरने। शान्तियो देहक आंगी निकालि सिरिफ सये-साड़ीटा पहिरने। देहक चिन्ता ने देवनकें आ ने शान्तीकें। जहिना बच्चामे भाए-बहिन नँगटे खेलाइत तहिना दुनू भाए-बहिन जकाँ एकठाम बैस जिनगीक गप-सप्प करए लगल।

शान्ती-

“अहाँ ऐठाम किए एलौं?”

देवन-

“बहिन, दुनियाँ देखैक खियालसँ घरसँ निकलल छी तँए ऐठाम एलौं। मुदा अहाँ किए एहेन बात पुछलौं?”

देवनक बात सुनि शान्तीक हृदए दहलए लगलै। मन विचलित भऽ गेलइ। बोली थरथराए लगलै। नमहर साँस छोड़ैत शान्ती कहलक-

“भैया, जँ अहाँ ऐठाम पहुँच गेलौं तँ नीक केलौं। किएक तँ बिनु देखने दुनियाकें बुझबै केना। जइ जगहपर आबि गेल छी, तैठाम दिनक क्रिया-कलाप भिन्न छै आ रातिक भिन्न। तँए दिनुका जे देखबै, ठीक ओकर विपरीत रौतुका देखबै। ओना, जँ अहाँ देखैले आएल छी तँ दिनुको आ रौतुको दुनू देख लिअ। मुदा तइ सभसँ पहिने हमर जिनगी सेहो.. ।”

शान्तीक बात सुनिते देवनक मनमे जुआर-भाटा उठए लगल। शरीर काँपए लगलै। जहिना तेज हवा, ठाढ़ भेल मनुखकें अपन झोकासँ ठेलि दैत तहिना देवनक मन शान्तीक बातसँ घुसकए-फुसकए लगल। लाख परियास केलौपर देवनक मन डोलिते रहल। जहिना रथमे जोतल घोड़ा जखन अपन चालि पकैड़ लैत आ सहीस जँ केतबो छोर खींच काबू करए चाहैत तैयो किछु-ने-किछु दूर घोड़ा बेकाबू भऽ बढ़िये जाइत, तहिना देवनोक मन भऽ गेल। मुदा, मनकें

काबू करै दुआरे देवन मुँह बन्न कऽ आँखिएसँ अध्ययनो आ गपो करए लगल। जहिना शान्तीक मनमे विचित्र स्थिति पैदा लऽ लेलक तहिना देवनोक मनमे। दुनू दुनूकेँ निंगहारि-निंगहारि देखए लगल। ने किछु शान्ती बजैत आ ने देवन। जेना दुनूक मन, एकठाम भऽ धारक रेतमे भँसियाएल जाइत।

बड़ीकाल पछाइत देवनक मन असथिर भेल। ताबे चुल्हिक आगि सेहो मिझा गेल। जहिना गाइक बच्चा, देहपर हाथ सहलेलासँ आँखि बन्न कऽ असुआ जाइत तहिना शान्ती सभ सुधि-बुधि बिसैर गेल। मन असथिर होइते देवन पुछलकै-

“अहाँक जिनगी!”

“हँ, हम्मर जिनगी!”

विस्मित भऽ देवन पुछलकै-

“कहू।”

शान्ति बाजए लगल-

“हमर जन्म एकटा सुभ्यस्त किसान परिवारमे भेल। जखन सात-आठ बर्खक छेलौं तखन माइक संग मेला देखए गामसँ दू कोस हटि गेलौं। सहस्र चण्डी यज्ञ होइत रहइ। नअ दिनक यज्ञो आ मेलोक कार्यक्रम रहइ। तीन दिन तक तँ मात्र यज्ञेक कार्यक्रम चललै, चारिम दिनसँ नाच-तमाशा शुरू भेल। बड़का रास, थियेटर, नाच सभ रहइ। दिनमे खाली यज्ञक प्रक्रिया, विषय कीर्तन आ छकरबाजी चलै मुदा रातिक मेला जबरदस होइ। इजोतक एहेन बेवस्था रहै जे जहिना दिन तहिना राति बुझि पड़इ। दोकानो-दौड़ी तहिना पतियानी लगा कऽ सजल रहइ। बगलमे पच्चीस-तीस बीघाक आमक गाछी रहै जइमे मेला लागल छेलइ। पाँचम दिन, हमरा गामक लोक सभ मेला देखए गेल। हमहूँ माइक संग गेलौं। सौंसे मेला एक्के बेर घुमैत-घुमैत पएर दुखा गेल। सभ कियो जा कऽ एकटा आमक गाछक निच्चाँमे बैस गेलौं। सबहक विचार भेल जे रौतुको मेला देखनहि जाएब। खाइ-

पीबैक कोनो कमीए ने रहए। ढेरो दोकान रहइ। आठ बजे रातिमे रासो आ थियेटरो शुरू भेल। दुनूक ऊँचगर मंच बनल रहै, तँए केतौ-सँ-केतौक लोक असानीसँ देखैत रहए। इजोतक नीक बेवस्था रहइ। दर्जनो जेनरेटर चलैत रहइ। लोकोक तेहने भीड़ छेलइ। मरद-मौगी मिझराएले। ..करीब दस बजे, एक्के बेर सभ जेनरेटर बन्न भऽ गेलइ। बिजली गुम्म होइते सौंसे मेला हल्ला हुअ लगलै। तैबीच एक गोरे हमरा उठा लेलक आ दोसर गोरे मुँह दबने, भीड़सँ निकैल गेल। हम जे किछु बजबो करी ओ बोली निकलबे ने करए। तहूमे तेतेक हल्ला होइत रहै जे के सुनत। दुनू गोरे एकटा जीपमे बैसा देलक। जीपोमे अन्हार। तँए नीक नहाँति देखबो ने करिऐ। तीनटा जीप आगू-पाछू लगल। तीनू एक्के बेर खुजल। ..मेलासँ करीब अदहा मील जीप गेल तखन मेलामे इजोत भेलै आ हल्लो कम भेलइ। जीपक इजोतो बड़ल। ..जखन जीपमे इजोत भेल, तखन आठटा आरो लड़कीकेँ जीपमे देखलिऐ। मन उड़ि गेल। डर हुअए जे केतौ मारि कऽ फेक देत। अबधारि लेलौं जे आइ मरले छी। मन पड़ल अपन गाम, अपन परिवार आ अपन कुटुम-परिवार। मुदा की करितौं।”

शान्तीक मुहसँ एते बात निकैलते शान्तियोक दुनू आँखिसँ आ देवनो आँखिसँ दहो-बहो नोरो खसए लगलै आ दुनू बोम फाड़ि कानए लगल। देवनक मनमे अपन मरल माए-बाप एलै आ शान्तीक मनमे जीवित माए-बाप। दुनूकेँ देहमे, जेना एक्को पाइ लज्जैत नहि रहल। जेना मुइला पछाइत मुरदा लर-ताँगर होइत तहिना गारा-जोड़ी कऽ दुनू छातीमे छाती लगा, कानए लगल। आँखिसँ नोर टघरै, मुहसँ दुख निकलैत आ छातीमे छाती सटौने पैछला जिनगीक अन्त आ ऐगला जिनगीक रूप-रेखा बनए लगलै। मुँह-मे-मुँह सटा, दुनूक मन अपन-अपन शेष बात एक-दोसरकेँ कहए लगलै।

बड़ीकाल धरि दुनू एक-दोसरसँ सटल रहल। ताधैर दुनू सटल रहल जाधैर दुनूक मनक सभ बेथा नै निकैल गेल। जहिना अन्हार

रातिमे दुनियाँक सभ किछु अन्हारक चद्दैर ओढ़ि सटि जाइए तहिना देवनो आ शान्तियो सटि गेल। मुदा सुरूजकेँ उगिते सभ अलग-अलग भऽ जाइत तहिना सभ बेथा कहला पछाइत दुनू हटि गेल।

दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछि देवन शान्तीकेँ कहलक-

“ऐठामसँ निकलैक कोन उपए अछि?”

शान्ती-

“जखन फाटकक ताला खुलि जाइ छै तखन बहराइक उपए अछि। मुदा किछु लऽ कऽ नहि, छुच्छे देहे।”

देवन-

“आब पहिने ऐठामसँ निकैल चलू तखन आरो गप-सप्प।”

चारि बजे भोरमे फाटकक ताला खुजल। ताला खुजलाक अदहा घन्टाक पछाइत लोकक आबाजाही शुरू भेल। पाँच बजे दुनू गोरे दस लग्गा आगू-पाछू विदा भेल।

देवनो चारूभर तकैत जे कियो देखै तँ ने अछि आ शान्तियो। मुदा देखियो कऽ कियो किछु ने पुछलकै।

फाटक टपिते शान्ती नव दुनियाँ देखलक। दुनियाँक सभ किछु नव। दुनू सोझे दच्छिन-मुहेँ विदा भेल। ने देवन शान्तीकेँ किछु पुछैत आ ने शान्ती देवनकेँ।

जाइत-जाइत दुनू मनपुर पहुँच गेल। मनपुर पहुँचते दुनूक मनमे शान्ती एलइ। दुनू एक दोसरसँ किछु पुछए चाहलक आकि तैबीच ओइ पैछला बटोहीकेँ अबैत देखलक। धियानसँ ओइ बटोहीकेँ देखते देवनक मुहसँ हँसी निकलल। ताबे ओहो लग आबि देवनकेँ पुछलक-

“बौआ, तूँ अखन धरि एतै छह! हम तँ विवेकपुरसँ घुमि, दोहरा कऽ एलौं!”

देवन-

“दादा, रस्तामे शान्ती भेट गेल तँए गप-सप्प करैमे समए लगि गेल।”

बटोही-

“बड़ सुन्दर। भने दुनू गोरे एक संग भऽ गेलह। जे देखैक मन छेलह से आब नीक नाहाँति देखबह। अखन हम काजे जा रहल छी तँए नै अँटकबह, जाह।”

देवन-

“दादा, जेते काल ऐठाम छी तेते कालमे किछु कहि दिअ।”

देवनक बात सुनि मुस्की दैत बजला-

“बौआ, सबहक इच्छा रहै छै जे हमर बात बेसीसँ बेसी लोक सुनए। मुदा ओइ सुनने हेतै कथी। जेते मनुख अछि सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, सभ तँ एक्केठाम ठाढ़ो नइ अछि जे एक्के बात सुनने सरपट चालि पकड़त। जँ से होइतै तँ सभ दौगैत रहितए, से कहाँ छइ। ..तँए जरूरी अछि जे सभसँ पहिने अपने उठि कऽ मनुखक रस्तापर ठाढ़ भऽ चली। जखन मनुखक रस्तापर ठाढ़ भऽ चलए लगब, तखन जे गिरल मनुख अछि ओकरा उठबैक चेष्टा करक चाही। उठबैक दुनू उपाए अछि, केकरो बाँहि पकैड़ घींच कऽ, तँ केकरो पाछूसँ धक्का लगा ठेल कऽ। ..यएह जिनगीक जीत छी जे हमरा केने केते मनुख मनुख बनल। हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता।”

◌

शब्द संख्या : 9314